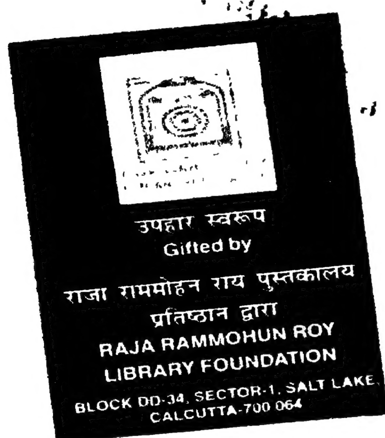


प्रेमचंद रचनावली

10

प्रेमचंद रचनावली

10



नाटक : 1923-1933

संग्राम, कर्बला, प्रेम की वेदी

प्रेमचंद रचनावली

खण्ड : दस

भूमिका एवं मार्गदर्शन

डॉ० रामविलास शर्मा



प्रकाशकीय

'प्रेमचंद रचनावली' का प्रकाशन **जनवाणी** के लिए गौरव की बात है। कॉपीराइट समाप्त होने के बाद प्रेमचंद साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित-प्रचारित हुआ। पर उनका सम्पूर्ण साहित्य अब तक कहीं भी एक जगह उपलब्ध नहीं था। लगातार यह जरूरत महसूस की जा रही थी कि उनके सम्पूर्ण साहित्य का प्रामाणिक प्रकाशन हो।

श्रेष्ठ और कालजयी साहित्यकारों के समग्र कृतित्व का एकत्र प्रकाशन कई दृष्टियों से उपयोगी होता है। इसी आलोक में **'प्रेमचंद रचनावली'** की कुछ विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख बहुत आवश्यक है। इस रचनावली में पहली बार सम्पूर्ण प्रेमचंद साहित्य सर्वाधिक शुद्ध और प्रामाणिक मूल पाठ के साथ सामने आया है। सम्पूर्ण रचनाओं का विभाजन पहले विधावार तत्पश्चात् कालक्रमानुसार किया गया है। रचनाओं के प्रथम प्रकाशन एवं उनके कालक्रम संबंधी प्रामाणिक जानकारी प्रत्येक रचना के अन्त में दी गई है जिससे प्रेमचंद के कृतित्व के अध्ययन और मूल्यांकन में विशेष सुविधा होगी। इसकी अधिकांश सामग्री प्रथम संस्करणों या काफी पुराने संस्करणों से ली गई है। प्रेमचंद साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध के लिए इस रचनावली का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसमें प्रेमचंद की अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण तथा अद्यतन सामग्री का समावेश कर लिया गया है। रचनावली के बीस खण्डों का क्रमबद्ध प्रारूप इस प्रकार है—

> **खण्ड 1-6 :** मौलिक उपन्यास; **खण्ड 7-9 :** लेख, भाषण, संस्मरण, संपादकीय, भूमिकाएं, समीक्षाएं, **खण्ड 10 :** मौलिक नाटक; **खण्ड 11-15:** सम्पूर्ण कहानियां (302); **खण्ड 16-17 :** अनुवाद (उपन्यास, नाटक, कहानी); **खण्ड 18 :** जीवनी एवं बाल साहित्य; **खण्ड 19 :** पत्र (चिट्ठी-पत्री); **खण्ड 20 :** विविध।

रचनावली की विस्तृत भूमिका मूर्धन्य आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखी है, जो इस रचनावली की सबसे बड़ी उपलब्धि है। डॉ० शर्मा ने अपनी साहित्य-साधना के व्यस्त क्षणों में भी हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया। रचनावली का जो यह उत्कृष्ट रूप सामने आया है यह सब उन्हीं के आशीर्वाद का प्रतिफल है। इस कृपा और सहयोग के लिए मैं उनके प्रति नतमस्तक हूं।

बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति, हिन्दी और उर्दू के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० जाबिर हुसेन ने प्रेमचंद रचनावली के संपादक-मण्डल का अध्यक्ष होना स्वीकार किया और रचनावली के संपादन कार्य में हमारा उचित मार्गदर्शन किया, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। साथ ही संपादक-मण्डल के विद्वान सदस्यों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

श्री केशवदेव शर्मा ने अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद सम्पादन कार्य में जिस गहरी लगन, समझदारी और आत्मीयता से सहयोग किया है उसके लिए उनके प्रति अनेकश: धन्यवाद। उनका अहर्निश सानिध्य मुझे स्फूर्ति प्रदान करता रहा। डॉ० गीता शर्मा एवं डॉ० अशोक कुमार शर्मा, वेद प्रकाश सोनी तथा डॉ० विनय के प्रति भी उनके हार्दिक सहयोग के लिए आभारी हूं।

भाई राम आनंद साहित्य क्षेत्र में प्रवेश करते ही प्रेमचंद द्वारा स्थापित प्रकाशन संस्थान **'सरस्वती प्रेस'** से जुड़ गए थे। लगभग बीस वर्षों तक उन्होंने स्व॰ श्रीपत राय (प्रेमचंद के ज्येष्ठ पुत्र) के मार्गदर्शन में अप्राप्य प्रेमचंद साहित्य पर शोध कार्य किया। वे स्व॰ श्रीपत राय के संपादन में प्रकाशित होने वाली विख्यात कथा-पत्रिका **'कहानी'** के सहायक संपादक रहे। श्रीपत राय के देहांत के बाद उन्होंने **'कहानी'** का स्वतंत्र रूप से संपादन किया और उसे नया रूप तथा गरिमा प्रदान की। उन्होंने जिस गहरी सूझ-बूझ, लगन, धैर्य और निष्ठा से इस रचनावली के संपादन कार्य को इतने सुरुचिपूर्ण और वैज्ञानिक ढंग से संपन्न किया, इसके लिए वे हम सबों के साधुवाद के पात्र हैं।

श्री हरीशचन्द्र वार्ष्णेय, श्री प्रेमशंकर शर्मा, श्री उदयकान्त पाठक ने प्रूफ-संशोधन और सम्पूर्ण मुद्रण कार्य में विशेष जागरूकता और मनस्विता का परिचय दिया; इनके साथ विमलसिंह, आर॰ के॰ यादव, सुनील जैन, शिवानंदसिंह तथा संस्था के अन्य सभी सहकर्मियों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं क्योंकि इन सबके सहयोग और सद्भाव के बिना यह काम पूरा होना लगभग असंभव था।

मेरी भ्रातृजा रीमा और भ्रातृज संदीप, संजीव, मनीष, विक्रांत, चेतन की लगन और सूझबूझ ने भी मुझे सदैव प्रेरित और उत्साहित किया वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

रचनावली के मुद्रण का कार्य श्री कान्तीप्रसाद शर्मा की देखरेख में हुआ है। उनकी सूझबूझ और श्रमनिष्ठा के लिए वे हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

सर्वश्री विजयदान देथा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', रामकुमार कृषक, स्वामी प्रेम जहीर, डॉ॰ कुसुम वियोगी, रामकुमार शर्मा आदि सभी मित्रों के सुझावों के लिए भी आभारी हूं।

इस कार्य में पूज्य माताजी श्रीमती जसवन्ती देवी का आशीर्वाद और पिताश्री प्रेमनाथ शर्मा का दीर्घकालीन प्रकाशन-व्यवसाय का अनुभव और आशीर्वाद मेरे विशेष प्रेरणा स्रोत रहे। इनके साथ मातृतुल्या भाभी श्रीमती ललिता शर्मा, अग्रज राजकुमार शर्मा, चमनलाल शर्मा, धर्मपाल शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी इन्दु शर्मा के साथ भाई हरीशकुमार शर्मा एवं सुभाषचन्द्र शर्मा के साथ ही चाचा श्री दीनानाथ शर्मा का भी आभारी हूं जिन्होंने पग-पग पर मेरा मार्ग-दर्शन किया। और सबसे अंत में सहधर्मिणी श्रीमती गीता शर्मा ने जो सहयोग और संबल प्रदान किया उसके लिए आभार अथवा धन्यवाद जैसा शब्द बहुत कम होगा। सारा श्रेय उन्हीं का है।

नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता के सहयोग से दुर्लभ पुस्तक 'महात्मा शेखसादी' लगभग सत्तर वर्ष बाद एक बार फिर इस रचनावली के मार्फत पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। मैं नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। उन समस्त संस्थानों, पुस्तकालयों, विभागों, संस्थाओं, लेखकों, संपादकों, अधिकारियों और व्यक्तियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस रचनावली के आयोजन में सहयोग किया।

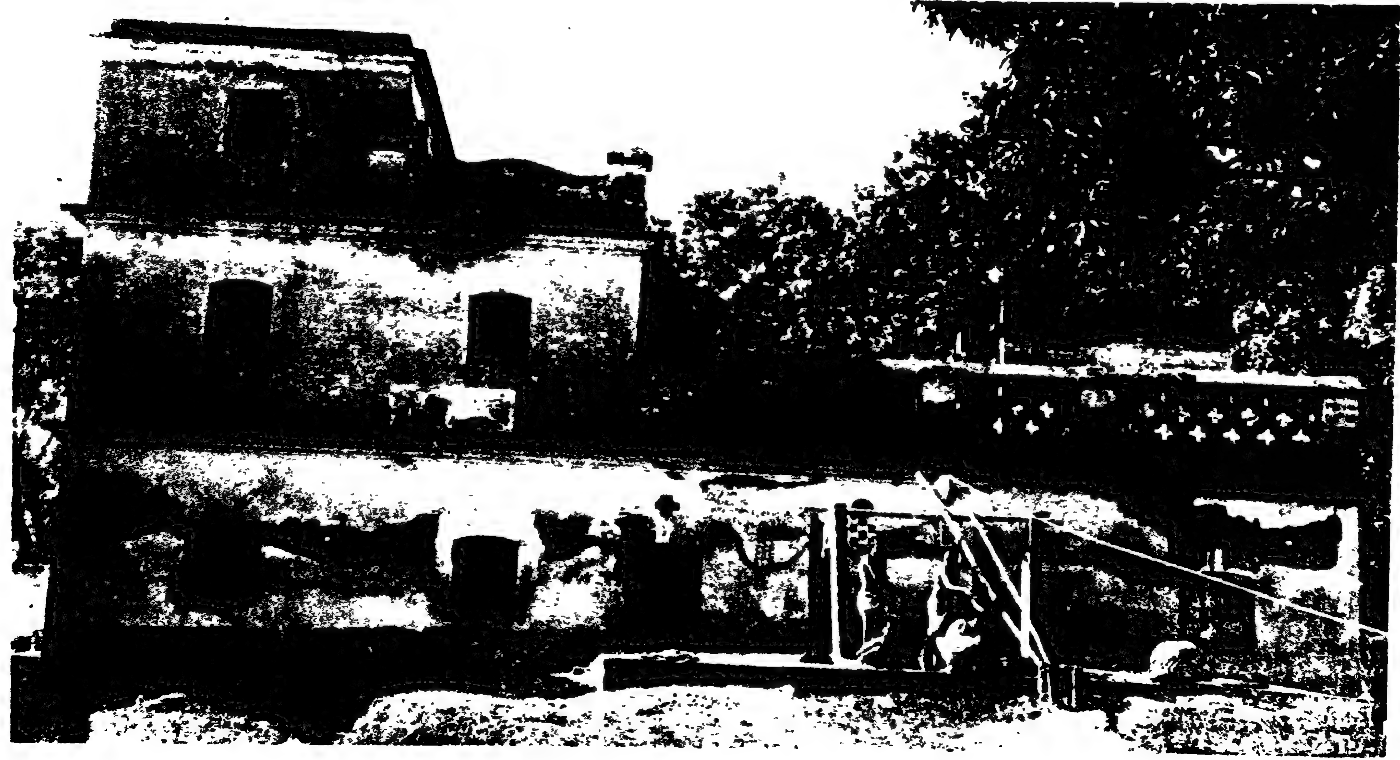
अन्त में विद्वान पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे इस रचनावली की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करें ताकि आगामी संस्करणों में उन्हें दूर किया जा सके।

हम आशा करते हैं कि हिन्दी जगत् इस बहु-प्रतीक्षित रचनावली का हार्दिक स्वागत करेगा।

अरुण कुमार
(प्रबंध निदेशक)



प्रेमचंद की प्रतिमा के साथ खड़े हैं बायें से डॉ॰ कमल किशोर गोयनका,
डॉ॰ रामकुमार राय और श्री राम आनंद (संपादक : प्रेमचंद रचनावली)
प्रेमंचद के अप्राप्य साहित्य की खोज



साहिबे मकान



संग्राम

रचनाकाल : 1922

प्रकाशनकाल : फरवरी, 1923

संग्राम

(एक सामाजिक नाटक)



लेखक—

श्रीयुत प्रेमचन्द



हिन्दी पुस्तक एजेन्सी
१२६, हरिसन रोड, कलकत्ता

प्रथम बार] माघ १९७९ [मूल्य १॥)

प्रथम संस्करण का मुख पृष्ठ

पात्र-परिचय

हलधर	:	मधुबन का किसान नायक
फत्तू	:	मधुबन का किसान
मंगरू	:	मधुबन का किसान
हरदास	:	मधुबन का किसान
सबलसिंह	:	मधुबन का जमींदार
कंचनसिंह	:	सबलसिंह का भाई
अचलसिंह	:	सबलसिंह का पुत्र
चेतनदास	:	एक संन्यासी
भृगुनाथ	:	गुलाबी का पुत्र
राजेश्वरी	:	हलधर की पत्नी
सलोनी	:	मधुबन की एक वृद्धा
ज्ञानी	:	सबलसिंह की पत्नी
गुलाबी	:	सबलसिंह की महराजिन
चम्पा	:	भृगुनाथ की पत्नी

इंस्पेक्टर, थानेदार, सिपाही, डाकू, आदि

पहला अंक

पहला दृश्य

प्रभात का समय। सूर्य की सुनहरी किरणें खेतों और वृक्षों पर पड़ रही हैं। वृक्षपुंजों में पक्षियों का कलरव हो रहा है। बसंत ऋतु है। नई-नई कोपलें निकल रही हैं। खेतों में हरियाली छाई हुई है। कहीं-कहीं सरसों भी फूल रही है। शीत-बिंदु पौधों पर चमक रहे हैं।

हलधर : अब और कोई बाधा न पड़े तो अबकी उपज अच्छी होगी। कैसी मोटी-मोटी बालें निकल रही हैं।

राजेश्वरी : यह तुम्हारी कठिन तपस्या का फल है।

हलधर : मेरी तपस्या कभी इतनी सफल न हुई थी। यह सब तुम्हारे पौरे की बरकत है।

राजेश्वरी : अबकी से तुम एक मजूर रख लेना। अकेले हैरान हो जाते हो।

हलधर : खेत ही नहीं है। मिलें तो अकेले इसके दुगुने जोत सकता हूं।

राजेश्वरी : मैं तो गाय जरूर लूंगी। गऊ के बिना घर सूना मालूम होता है।

हलधर : मैं पहले तुम्हारे लिए कंगन बनवाकर तब दूसरी बात करूंगा। महाजन से रुपये ले लूंगा। अनाज तौल दूंगा।

राजेश्वरी : कंगन की इतनी क्या जल्दी है कि महाजन से उधार लो। अभी पहले का भी तो कुछ देना है।

हलधर : जल्दी क्यों नहीं है। तुम्हारे मैके से बुलावा आएगा ही। किसी नए गहने बिना जाओगी तो तुम्हारे गांव-घर के लोग मुझे हंसेंगे कि नहीं ?

राजेश्वरी : तो तुम बुलावा फेर देना। मैं करज लेकर कंगन न बनवाऊंगी। हां, गाय पालना जरूरी है। किसान के घर गोरस न हो तो

किसान कैसा ! तुम्हारे लिए दूध-रोटी का कलेवा लाया करूंगी। बड़ी गाय लेना, चाहे दाम कुछ बेशी देना पड़ जाए।

हलधर : तुम्हें और हलकान न होना पड़ेगा। अभी कुछ दिन आराम कर लो, फिर तो यह चक्की पीसनी ही है।

राजेश्वरी : खेलना-खाना भाग्य में लिखा होता तो सास-ससुर क्यों सिधार जाते ? मैं अभागिन हूं। आते-ही-आते उन्हें चट कर गई। नारायण दें तो उनकी बरसी धूम से करना।

हलधर : हां, यह तो मैं पहले ही सोच चुका हूं, पर तुम्हारा कंगन बनना भी जरूरी है। चार आदमी ताने देने लगेंगे तो क्या करोगी ?

राजेश्वरी : इसकी चिंता मत करो, मैं उनका जवाब दे लूंगी लेकिन मेरी तो जाने की इच्छा ही नहीं है। जाने और बहुएं कैसे मैके जाने को व्याकुल होती हैं, मेरा तो अब वहां एक दिन भी जी न लगेगा। अपना घर सबसे अच्छा लगता है। अबकी तुलसी का चौतरा जरूर बनवा देना, उसके आस-पास बेला, चमेली, गेंदा और गुलाब के फूल लगा दूंगी तो आंगन की शोभा कैसी बढ़ जाएगी !

हलधर : वह देखो, तोतों का झुंड मटर पर टूट पड़ा।

राजेश्वरी : मेरा भी जी एक तोता पालने को चाहता है। उसे पढ़ाया करूंगी।

हलधर गुलेल उठाकर तोतों की ओर चलाता है।

राजेश्वरी : छोड़ना मत, बस दिखाकर उड़ा दो।

हलधर : वह मारा ! एक गिर गया।

राजेश्वरी : राम-राम, यह तुमने क्या किया? चार दानों के पीछे उसकी जान ही ले ली। यह कौन-सी भलमनसी है ?

हलधर : **(लज्जित होकर)** मैंने जानकर नहीं मारा।

राजेश्वरी : अच्छा तो इसी दम गुलेल तोड़कर फेंक दो। मुझसे यह पाप नहीं देखा जाता। किसी पशु-पक्षी को तड़पते देखकर मेरे रोयें खड़े हो जाते हैं। मैंने तो दादा को एक बार बैल की पूंछ मरोड़ते देखा था। रोने लगी। तब दादा ने वचन दिया कि अब कभी बैलों को न मारूंगा। तब जाके चुप हुई। मेरे गांव में सब लोग औंगी से बैलों को हांकते हैं। मेरे घर कोई मजूर भी औंगी नहीं चला सकता।

हलधर : आज से परन करता हूं कि कभी किसी जानवर को न मारूंगा।

फत्तू मियां का प्रवेश।

फत्तू : हलधर, नजर नहीं लगाता, पर अबकी तुम्हारी खेती गांव भर से ऊपर है। तुमने जो आम लगाए हैं वे भी खूब बौरे हैं।

हलधर : दादा, यह सब तुम्हारा आशीर्वाद है। खेती न लगती तो काका की बरसी कैसे होती ?

फत्तू : हां बेटा, भैया का काम दिल खोलकर करना।

हलधर : तुम्हें मालूम है दादा, चांदी का क्या भाव है। एक कंगन बनवाना था।

फत्तू : सुनता हूं अब रुपये की रुपये-भर हो गई है। कितने की चांदी लोगे ?

हलधर : यही कोई चालीस-पैंतालीस रुपये की।

फत्तू : जब कहना चलकर ले दूंगा। हां, मेरा इरादा कटरे जाने का है। तुम भी चलो तो अच्छा। एक अच्छी भैंस लाना। गुड़ के रुपये तो अभी रखे होंगे न ?

हलधर : कहां दादा, वह सब तो कंचनसिंह को दे दिए। बीघे-भर भी तो न थी, कमाई भी अच्छी न हुई थी, नहीं तो क्या इतनी जल्दी पेल-पालकर छुट्टी पा जाता ?

फत्तू : महाजन से तो कभी गला ही नहीं छूटता।

हलधर : दो साल भी तो लगातार खेती नहीं जमती, गला कैसे छूटे !

फत्तू : यह घोड़े पर कौन आ रहा है ? कोई अफसर है क्या ?

हलधर : नहीं, ठाकुर साहब तो हैं। घोड़ा नहीं पहचानते ? ऐसे सच्चे पानी का घोड़ा दस-पांच कोस तक नहीं है।

फत्तू : सुना, एक हजार दाम लगते थे पर नहीं दिया।

हलधर : अच्छा जानवर बड़े भागों से मिलता है। कोई कहता था अबकी घुड़दौड़ में बाजी जीत गया। बड़ी-बड़ी दूर से घोड़े आए थे, पर कोई इसके सामने न ठहरा। कैसा शेर की तरह गर्दन उठा के चलता है।

फत्तू : ऐसे सरदार को ऐसा ही घोड़ा चाहिए। आदमी हो तो ऐसा हो। अल्लाह ने इतना कुछ दिया है, पर घमंड छू तक नहीं गया। एक बच्चा भी जाए तो उससे प्यार से बातें करते हैं। अबकी

ताऊन के दिनों में इन्होंने दौड़-धूप न की होती तो सैकड़ों जानें जातीं।

हलधर : अपनी जान को तो डरते ही नहीं। इधर ही आ रहे हैं। सबेरे-सबेरे भले आदमी के दर्शन हुए।

फत्तू : उस जन्म के कोई महात्मा हैं, नहीं तो देखता हूं जिसके पास चार पैसे हो गए वह यही सोचने लगता है कि किसे पीस के पी जाऊं। एक बेगार भी नहीं लगती, नहीं तो पहले बेगार देते-देते धुर्रे उड़ जाते थे। इसी गरीब-परवरी की बरकत है कि गांवों में न कोई कारिंदा है, न चपरासी, पर लगान नहीं रुकता। लोग मीयाद के पहले ही दे आते हैं। बहुत गांव देखे पर ऐसा ठाकुर नहीं देखा।

सबलसिंह घोड़े पर आकर खड़ा हो जाता है। दोनों आदमी झुक-झुककर सलाम करते हैं। राजेश्वरी घूंघट निकाल लेती है।

सबल : कहो बड़े मियां, गांव में सब खैरियत है न ?

फत्तू : हुजूर के अकबाल से सब खैरियत है।

सबल : फिर वही बात। मेरे अकबाल को क्यों सराहते हो। यह क्यों नहीं कहते कि ईश्वर की दया से या अल्लाह के फज़्ल से खैरियत है। अबकी खेती तो अच्छी दिखाई देती है ?

फ़त्तू : हां सरकार, अभी तक तो खुदा का फज़्ल है।

सबल : बस, इसी तरह बातें किया करो। किसी आदमी की खुशामद मत करो, चाहे वह जिले का हाकिम ही क्यों न हो। हां, अभी किसी अफसर का दौरा तो नहीं हुआ ?

फत्तू : नहीं सरकार, अभी तक तो कोई नहीं आया।

सबल : और न शायद आएगा। लेकिन कोई आ भी जाए तो याद रखना, गांव से किसी तरह की बेगार न मिले। साफ कह देना, बिना जमींदार के हुक्म के हम लोग कुछ नहीं दे सकते। मुझसे जब कोई पूछेगा तो देख लूंगा। **(मुस्कराकर)** हलधर ! नया गौना लाए हो। हमारे घर बैना नहीं भेजा ?

हलधर : हुजूर, मैं किस लायक हूं।

सबल : यह तो तुम तब कहते जब मैं तुमसे मोतीचूर के लड्डू या घी के खाजे मांगता। प्रेम से शीरे और सत्तू के लड्डू भेज देते तो मैं

उसी को धन्य-भाग्य कहता। यह न समझो कि हम लोग सदा घी और मैदे खाया करते हैं। मुझे बाजरे की रोटियां और तिल के लड्डू और मटर के चबेना कभी-कभी हलवा और मुरब्बे से भी अच्छे लगते हैं। एक दिन मेरी दावत करो, मैं तुम्हारी नयी दुलहिन के हाथ का बनाया हुआ भोजन करना चाहता हूं। देखें यह मैके से क्या गुन सीख कर आई है। मगर खाना बिल्कुल किसानों का-सा हो। अमीरों का खाना बनवाने की फिक्र मत करना।

हलधर : हम लोगों के लिट्ट सरकार को पसंद आएंगे ?

सबल : हां, बहुत पसंद आएंगे।

हलधर : जब हुक्म हो।

सबल : मेहमान के हुक्म से दावत नहीं होती। खिलाने वाला अपनी मर्जी से तारीख और वक्त ठीक करता है। जिस दिन कहो, आऊं। फत्तू, तुम बतलाओ, इसकी बहू काम-काज में चतुर है न ? जबान की तेज तो नहीं है ?

फत्तू : हुजूर, मुंह पर क्या बखान करूं, ऐसी मेहनतिन औरत गांव में और नहीं है। खेती का तार-तौर जितना यह समझती है उतना हलधर भी नहीं समझता। सुशील ऐसी है कि यहां आए आठवां महीना होता है, किसी पड़ोसी ने आवाज नहीं सुनी।

सबल : अच्छा तो मैं अब चलूंगा, जरा मुझे सीधे रास्ते पर लगा दो, नहीं तो यह जानवर खेतों को रौंद डालेगा। तुम्हारे गांव से मुझे साल में पंद्रह सौ रुपये मिलते हैं। इसने एक महीने में पांच हजार रुपये की बाजी मारी। हलधर, दावत की बात भूल न जाना।

फत्तू और सबलसिंह जाते हैं।

राजेश्वरी : आदमी काहे को है, देवता हैं। मेरा तो जी चाहता था उनकी बातें सुना करूं। जी ही नहीं भरता था। एक हमारे गांव का जमींदार है कि प्रजा को चैन नहीं लेने देता। नित्य एक-न-एक बेगार, कभी बेदखली, कभी जाफा, कभी कुड़की, उसके सिपाहियों के मारे छप्पर पर कुम्हड़े-कद्दू तक नहीं बचने पाते। औरतों को राह चलते छेड़ते हैं। लोग रात-दिन मनाया करते हैं कि इसकी मिट्टी उठे। अपनी सवारी के लिए हाथी लाता है, उसका दाम असामियों से वसूल करता है। हाकिमों

की दावत करता है, सामान गांव वालों से लेता है।

हलधर : दावत सचमुच करूं कि दिल्लगी करते थे ?

राजेश्वरी : दिल्लगी नहीं करते थे, दावत करनी होगी। देखा नहीं, चलते-चलते कह गए। खाएंगे तो क्या, बड़े आदमी छोटों का मान रखने के लिए ऐसी बातें किया करते हैं, पर आएंगे जरूर।

हलधर : उनके खाने लायक भला हमारे यहां क्या बनेगा ?

राजेश्वरी : तुम्हारे घर वह अमीरी खाना खाने थोड़े ही आएंगे। पूरी-मिठाई तो नित्य ही खाते हैं। मैं तो कुटे हुए जौ की रोटी, सावां की महेर, बथुवे का साग, मटर की मसालेदार दाल और दो-तीन तरह की तरकारी बनाऊंगी। लेकिन मेरा बनाया खाएंगे ? ठाकुर हैं न ?

हलधर : खाने-पीने का इनको कोई विचार नहीं है। जो चाहे बना दे। यही बात इनमें बुरी है। सुना है अंग्रेजों के साथ कलपघर में बैठकर खाते हैं।

राजेश्वरी : ईसाई मत में आ गए ?

हलधर : नहीं, असनान, ध्यान सब करते हैं। गऊ को कौरा दिए बिना कौर नहीं उठाते। कथा-पुराण सुनते हैं। लेकिन खाने-पीने में भ्रष्ट हो गए हैं।

राजेश्वरी : उंह, होगा, हमें कौन उनके साथ बैठकर खाना है। किसी दिन बुलावा भेज देना । उनके मन की बात रह जाएगी।

हलधर : खूब मन लगा के बनाना।

राजेश्वरी : जितना सहूर है उतना करूंगी। जब वह इतने प्रेम से भोजन करने आएंगे तो कोई बात उठा थोड़े ही रखूंगी। बस, इसी एकादशी को बुला भेजो, अभी पांच दिन हैं।

हलधर : चलो, पहले घर की सफाई तो कर डालें।

दूसरा दृश्य

सबलसिंह अपने सजे हुए दीवानखाने में उदास बैठे हैं। हाथ में एक समाचार-पत्र है, पर उनकी आंखें दरवाजे के सामने बाग की तरफ लगी हुई हैं।

सबलसिंह : (आप-ही-आप) देहात में पंचायतों का होना जरूरी है। सरकारी अदालतों का खर्च इतना बढ़ गया है कि कोई गरीब आदमी

वहां न्याय के लिए जा ही नहीं सकता। जार-सी भी कोई बात कहनी हो तो स्टाम्प के बगैर काम नहीं चल सकता।....उसका कितना सुडौल शरीर है, ऐसा जान पड़ता है कि एक-एक अंग सांचे में ढला है। रंग कितना प्यारा है, न इतना गोरा कि आंखों को बुरा लगे, न इतना सांवला....होगा, मुझे इससे क्या मतलब। वह परायी स्त्री है, मुझे उसके रूप-लावण्य से क्या वास्ता। संसार में एक-से-एक सुंदर स्त्रियां हैं, कुछ यही एक थोड़ी है? ज्ञानी उससे किसी बात में कम नहीं, कितनी सरल हृदया, कितनी मधुर-भाषिणी रमणी है। अगर मेरा जरा-सा इशारा हो तो आग में कूद पड़े। मुझ पर उसकी कितनी भक्ति, कितना प्रेम है। कभी सिर में दर्द भी होता है तो बावली हो जाती है। अब उधर मन को जाने ही न दूंगा।

कुर्सी से उठकर आल्मारी से एक ग्रंथ निल्कालते हैं, उसके दो-चार पन्ने इधर-उधर से उलटकर पुस्तक को मेज पर रख देते हैं और फिर कुर्सी पर जा बैठते हैं। अचलसिंह हाथ में एक हवाई बंदूक लिए दौड़ा आता है।

अचल दादाजी, शाम हो गई। आज घूमने न चलिएगा ?

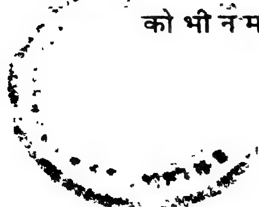
सबल नहीं बेटा ! आज तो जाने का जी नहीं चाहता। तुम गाड़ी जुतवा लो। यह बंदूक कहां पाई ?

अचल इनाम में। मैं दौड़ने में सबसे अव्वल निकला। मेरे साथ कोई पच्चीस लड़के दौड़े थे। कोई कहता था, मैं बाजी मारूंगा, कोई अपनी डींग मार रहा था। जब दौड़ हुई तो मैं सबसे आगे निकला, कोई मेरे गर्द को भी न पहुंचा, अपना-सा मुंह लेकर रह गए। इस बंदूक से चाहूं तो चिड़िया मार लूं।

सबल मगर चिड़ियों का शिकार न खेलना।

अचल : जी नहीं, यों ही बात कहता था। बेचारी चिड़ियों ने मेरा क्या बिगाड़ा है कि उनकी जान लेता फिरूं। मगर जो चिड़ियां दूसरी चिड़ियों का शिकार करती हैं उनके मारने में तो कोई पाप नहीं है।

सबल : **(असमंजस में पड़कर)** मेरी समझ में तो तुम्हें शिकारी चिड़ियों को भी न मारना चाहिए। चिड़ियों में कर्म-अकर्म का ज्ञान नहीं



होता। वह जो कुछ करती हैं केवल स्वभाव-वश करती हैं, इसलिए वह दण्ड की भागी नहीं हो सकतीं।

अचल : कुत्ता कोई चीज चुरा ले जाता है तो क्या जानता नहीं कि मैं बुरा कर रहा हूं। चुपके-चुपके, पैर दबाकर इधर-उधर चौकन्नी आंखों से ताकता हुआ जाता है, और किसी आदमी की आहट पाते ही भाग खड़ा होता है। कौवे का भी यही हाल है। इससे तो मालूम होता है कि पशु-पक्षियों को भी भले-बुरे का ज्ञान होता है; तो फिर उनको दंड क्यों न दिया जाए ?

सबल : अगर ऐसा ही हो तो हमें उनको दंड देने का क्या अधिकार है? हालांकि इस विषय में हम कुछ नहीं कह सकते कि शिकारी चिड़ियों में वह ज्ञान होता है, जो कुत्ते या कौवे में है या नहीं।

अचल : अगर हमें पशु-पक्षी, चोरों को दंड देने का अधिकार नहीं है तो मनुष्य में चोरों को क्यों ताड़ना दी जाती है ? वह जैसा करेंगे उसके फल आप पाएंगे, हम क्यों उन्हें दंड दें ?

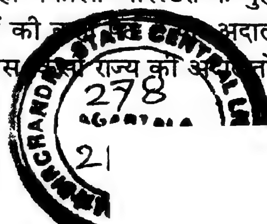
सबल : **(मन में)** लड़का है तो नन्हा-सा बालक मगर तर्क खूब करता है। **(प्रकट)** बेटा ! इस विषय में हमारे प्राचीन ऋषियों ने बड़ी मार्मिक व्यबस्थाएं की हैं, अभी तुम न समझ सकोगे। जाओ सैर कर आओ, ओरवरकोट पहन लेना, नहीं तो सर्दी लग जाएगी।

अचल : मुझे वहां कब ले चलिएगा जहां आप कल भोजन करने गए थे? मैं भी राजेश्वरी के हाथ का बनाया हुआ खाना खाना चाहता हूं। आप चुपके से चले गए, मुझे बुलाया तक नहीं, मेरा तो जी चाहता है कि नित्य गांव ही में रहता, खेतों में घूमा करता।

सबल : अच्छा, अब जब वहां जाऊंगा तो तुम्हें भी साथ ले लूंगा।

अचलसिंह चला जाता है।

सबल : **(आप-ही-आप)** लेख का दूसरा पाइंट **(मुद्दा)** क्या होगा ? अदालतें सबलों के अन्याय की पोषक हैं। जहां रुपयों के द्वारा फरियाद की जाती हो, जहां वकीलों-बैरिस्टरों के मुंह से बात की जाती हो, वहां गरीबों की [illegible] अदालत नहीं, न्याय की बलिवेदी है। जिस [illegible] राज्य की अ[illegible]तों का यह



हाल हो....जब वह थाली परस कर मेरे सामने लाई तो मुझे ऐसा मालूम होता था जैसे कोई मेरे हृदय को खींच रहा हो। अगर उससे मेरा स्पर्श हो जाता तो शायद मैं मूर्च्छित हो जाता। किसी उर्दू कवि के शब्दों में 'यौवन फटा पड़ता था।' कितना कोमल गात है, न जाने खेतों में कैसे इतनी मेहनत करती है। नहीं, यह बात नहीं। खेतों में काम करने ही से उसका चम्पई रंग निखर कर कुंदन हो गया है। वायु और प्रकाश ने उसके सौंदर्य को चमका दिया है। सच कहा है हुस्न के लिए गहनों की आवश्यकता नहीं। उसके शरीर पर कोई आभूषण न था, किंतु सादगी आभूषणों से कहीं ज्यादा मनोहारिणी थी। गहने सौंदर्य की शोभा क्या बढ़ाएंगे, स्वयं अपनी शोभा बढ़ाते हैं। उस सादे व्यंजन में कितना स्वाद था ? रूप-लावण्य ने भोजन को भी स्वादिष्ट बना दिया था। मन फिर उधर गया, यह मुझे क्या हो गया है। यह मेरी युवावस्था नहीं है कि किसी सुंदरी को देखकर लट्टू हो जाऊं, अपना प्रेम हथेली पर लिए प्रत्येक सुंदरी स्त्री की भेंट करता फिरूं। मेरी प्रौढ़ावस्था है, पैंतीसवें वर्ष में हूं। एक लड़के का बाप हूं जो छः-सात वर्षों में जवान होगा। ईश्वर ने दिए होते तो चार-पांच संतानों का पिता हो सकता था। यह लोलुपता है, छिछोरापन है। इस अवस्था में, इतना विचारशील होकर भी मैं इतना मलिन-हृदय हो रहा हूं। किशोरावस्था में तो मैं आत्मशुद्धि पर जान देता था, फूंक-फूंककर कदम रखता था, आदर्श जीवन व्यतीत करता था और इस अवस्था में जब मुझे आत्मचिंतन में मग्न होना चाहिए, मेरे सिर पर यह भूत सवार हुआ है। क्या यह मुझसे उस समय के संयम का बदला लिया जा रहा है। अब मेरी परीक्षा की जा रही है ?

ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : तुम्हारी ये सब किताबें कहीं छुपा दूं ? जब देखो तब एक-न-एक पोथा खोले बैठे रहते हो। दर्शन तक नहीं होते।

सबल : तुम्हारा अपराधी मैं हूं, जो दंड चाहे दो। यह बेचारी पुस्तकें बेकसूर हैं।

ज्ञानी : गुलबिया आज बगीचे की तरफ गई थी। कहती थी, आज वहां

कोई महात्मा आए हैं। सैकड़ों आदमी उनके दर्शनों को जा रहे हैं। मेरी भी इच्छा हो रही है कि जाकर दर्शन कर आऊं।

सबल : पहले मैं आकर जरा उनके रंग-ढंग देख लूं तो फिर तुम जाना। गेरुए कपड़े पहनकर महात्मा कहलाने वाले बहुत हैं।

ज्ञानी : तुम तो आकर यही कह दोगे कि वह बना हुआ है, पाखण्डी है, धूर्त है, उसके पास न जाना। तुम्हें जाने क्यों महात्माओं से चिढ़ है।

सबल : इसीलिए चिढ़ है कि मुझे कोई सच्चा साधु नहीं दिखाई देता।

ज्ञानी : इनकी मैंने बड़ी प्रशंसा सुनी है। गुलाबी कहती थी कि उनका मुंह दीपक की तरह दमक रहा था। सैकड़ों आदमी घेरे हुए थे पर वह किसी से बात तक न करते थे।

सबल : इससे यह तो साबित नहीं होता कि वह कोई सिद्ध पुरुष हैं। अशिष्टता महात्माओं का लक्षण नहीं है।

ज्ञानी : खोज में रहने वाले को कभी-कभी सिद्ध पुरुष भी मिल जाते हैं। जिसमें श्रद्धा नहीं है उसे कभी किसी महात्मा से साक्षात् नहीं हो सकता। तुम्हें संतान की लालसा न हो पर मुझे तो है। दूध-पूत से किसी का मन भरते आज तक नहीं सुना।

सबल : अगर साधुओं के आशीर्वाद से संतान मिल सकती तो आज संसार में कोई निस्संतान प्राणी खोजने से भी न मिलँता। तुम्हें भगवान् ने एक पुत्र दिया है। उनसे यही याचना करो कि उसे कुशल से रखें। हमें अपना जीवन अब सेवा और परोपकार की भेंट करना चाहिए।

ज्ञानी : **(चिढ़कर)** तुम ऐसी निर्दयता से बातें करने लगते हो इसी से कभी इच्छा नहीं होती कि तुमसे अपने मन की बात कहूं। लो, अपनी किताबें पढ़ो इनमें में तुम्हारी जान बसती है, जाती हूं।

सबल : बस रूठ गईं। चित्रकारों ने क्रोध की बड़ी भयंकर कल्पना की है, पर मेरे अनुभव से यह सिद्ध होता है कि सौंदर्य क्रोध ही का रूपांतर है। कितना अनर्थ है कि ऐसी मोहिनी मूर्ति को इतना विकराल स्वरूप दे दिया जाए ?

ज्ञानी : **(मुस्कराकर)** नमक-मिर्च लगाना कोई तुमसे सीख ले। मुझे भोली पाकर बातों में उड़ा देते हो; लेकिन आज मैं न मानूंगी।

सबल : ऐसी जल्दी क्या है ? मैं स्वामीजी को यहीं बुला लाऊंगा, खूब जी भरकर दर्शन कर लेना। वहां बहुत से आदमी जमा होंगे, उनसे बातें करने का भी अवसर न मिलेगा। देखने वाले हंसी उड़ाएंगे कि पति तो साहब बना फिरता है और स्त्री साधुओं के पीछे दौड़ा करती है।

ज्ञानी : अच्छा, तो कब बुला दोगे ?

सबल : कल पर रखो।

ज्ञानी चली जाती है।

सबलसिंह : **(आज-ही-आप)** संतान की क्यों इतनी लालसा होती है ? जिसके संतान नहीं है वह अपने को अभागा समझता है, अहर्निश इसी क्षोभ और चिंता में डूबा रहता है। यदि यह लालसा इतनी व्यापक न होती तो आज हमारा धार्मिक जीवन कितना शिथिल, कितना नीरव होता। न तीर्थयात्राओं की इतनी धूम होती, न मंदिरों की इतनी रौनक, न देवताओं में इतनी भक्ति, न साधु-महात्माओं पर इतनी श्रद्धा, न दान और व्रत की इतनी धूम। यह सब कुछ संतान-लालसा का ही चमत्कार है ! खैर कल चलूंगा, देखूं इन स्वामीजी के क्या रंग-ढंग हैं... अदालतों की बात सोच रहा था। यह आक्षेप किया जाता है कि पंचायतें यथार्थ न्याय न कर सकेंगी, पंच लोग मुंह-देखी करेंगे और वहां भी सबलों की ही जीत होगी। इसका निवारण यों हो सकता है कि स्थायी पंच न रखे जाएं। जब जरूरत हो, दोनों पक्षों के लोग अपने-अपने पंचों को नियत कर दें।...किसानों में भी ऐसी कामिनियां होती हैं, यह मुझे न मालूम था। यह निस्संदेह किसी उच्च कुल की लड़की है। किसी कारणवश इस दुरवस्था में आ फंसी है। विधाता ने इस अवस्था में रखकर उसके साथ अत्याचार किया है। उसके कोमल हाथ खेतों में कुदाल चलाने के लिए नहीं बनाए गए हैं, उसकी मधुर वाणी खेतों में कौवे हांकने के लिए उपयुक्त नहीं है, जिन केशों से झूमर का भार भी न सहा जाए उन पर उपले और अनाज के टोकरे रखना महान् अनर्थ है, माया की विषम लीला है। भाग्य का क्रूर रहस्य है। वह अबला है, विवश है, किसी से अपने हृदय की व्यथा कह नहीं सकती। अगर मुझे मालूम हो जाये

कि वह इस हालत में सुखी है, तो मुझे संतोष हो जाएगा। पर वह कैसे मालूम हो। कुलवती स्त्रियां अपनी विपत्ति-कथा नहीं क़हतीं, भीतर-ही-भीतर जलती हैं पर ज़बान से हाय नहीं करतीं।....मैं फिर उसी उधेड़-बुन में पड़ गया। समझ में नहीं आता मेरे चित्त की यह दशा क्यों हो रही है। अब तक मेरा मन कभी इतना चंचल नहीं हुआ था। मेरे युवाकाल के सहवासी तक मेरी अरसिकता पर आश्चर्य करते थे। अगर मेरी इस लोलुपता की जरा भी भनक उनके कान में पड़ जाए तो मैं कहीं मुंह दिखाने लायक न रहूं। यह आग मेरे हृदय में ही जले, और चाहे हृदय जलकर राख हो जाए पर उसकी कराह किसी के कान में न पड़ेगी। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ नहीं होता। यह प्रेम-ज्योति उद्दीप्त करने में भी उसकी कोई-न-कोई मसलहत जरूर होगी।

घंटी बजाता है।

एक नौकर : हुजूर हुकुम ?

सबल : घोड़ा खींचो।

नौकर : बहुत अच्छा।

तीसरा दृश्य

समय—आठ बजे दिन।

स्थान—सबलसिंह का मकान। कंचनसिंह अपनी सजी हुई बैठक में दुशाला ओढ़े, आंखों पर सुनहरी ऐनक चढ़ाए मसनद लगाए बैठे हैं, मुनीमजी बही में कुछ लिख रहे हैं।

कंचन : समस्या यह है कि सूद की दर कैसे घटाई जाए। भाई साहब मुझसे नित्य ताकीद किया करते हैं कि सूद कम लिया करो। किसानों की ही सहायता के लिए उन्होंने मुझे इस कारोबार में लगाया। उनका मुख्य उद्देश्य यही है। पर तुम जानते हो धन के बिना धर्म नहीं होता। इलाके की आमदनी घर के जरूरी खर्च के लिए भी काफी नहीं होती। भाई साहब ने किफ़ायत का पाठ नहीं पढ़ा। उनके हजारों रुपये साल तो केवल अधिकारियों के सत्कार की भेंट हो जाते हैं। घुड़दौड़ और पोलो और क्लब के

लिए धन चाहिए। अगर उनके आसरे रहूं तो सैकड़ों रुपये जो मैं स्वयं साधुजनों की अतिथि-सेवा में खर्च करता हूं, कहां से आएं ?

मुनीम : वह बुद्धिमान पुरुष हैं, पर न जाने यह फ़ज़ूलखर्ची क्यों करते हैं?

कंचन : मुझे बड़ी लालसा है कि एक विशाल धर्मशाला बनवाऊं। उसके लिए धन कहां से आएगा ? भाई साहब के आज्ञानुसार नाम-मात्र के लिए ब्याज लूं तो मेरी सब कामनाएं धरी ही रह जाएं। मैं अपने भोग-विलास के लिए धन नहीं बटोरना चाहता, केवल परोपकार के लिए चाहता हूं। कितने दिनों से इरादा कर रहा हूं कि एक सुंदर वाचनालय खोल दूं। पर पर्याप्त धन नहीं। यूरोप में केवल एक दानवीर ने हजारों वाचनालय खोल दिए हैं। मेरा हौसला इतना तो नहीं पर कम-से-कम एक उत्तम वाचनालय खोलने की अवश्य इच्छा है। सूद न लूं तो मनोरथ पूरे होने के और क्या साधन हैं ? इसके अतिरिक्त यह भी तो देखना चाहिए कि मेरे कितने रुपये मारे जाते हैं? जब असामी के पास कुछ जायदाद ही न हो तो रुपये कहां से वसूल हों। यदि यह नियम कर लूं कि बिना अच्छी जमानत के किसी को रुपये ही न दूंगा तो गरीबों का काम कैसे चलेगा ? अगर गरीबों से व्यवहार न करूं तो अपना काम नहीं चलता। वह बेचारे रुपये चुका तो देते हैं। मोटे आदमियों से लेन-देन कीजिए तो अदालत गए बिना कौड़ी नहीं वसूल होती।

हलधर का प्रवेश।

कंचन : कहो हलधर, कैसे चले ?

हलधर : कुछ नहीं सरकार, सलाम करने चला आया।

कंचन : किसान लोग बिना किसी प्रयोजन के सलाम करने नहीं चलते। फारसी कहावत है—सलामे दोस्ताई बेग़रज़ नेस्त।

हलधर : आप तो जानते ही हैं फिर पूछते क्यों हैं ? कुछ रुपयों का काम था।

कंचन : तुम्हें किसी पंडित से साइत पूछकर चलना चाहिए था। यहां आजकल रुपयों का डौल नहीं। क्या करोगे रुपये लेकर?

हलधर : काका की बरसी होने वाली है। और भी कई काम हैं।

कंचन : स्त्री के लिए गहने भी बनवाने होंगे ?

हलधर : **(हंसकर)** सरकार, आप तो मन की बात ताड़ लेते हैं।

कंचन : तुम लोगों के मन की बात जान लेना ऐसा कोई कठिन काम नहीं, केवल खेती अच्छी होनी चाहिए। यह फसल अच्छी है, तुम लोगों को रुपये की जरूरत होना स्वाभाविक है। किसान ने खेत में पौधे लहराते हुए देखे और उनके पेट में चूहे कूदने लगे; नहीं तो ऋण लेकर बरसी करने या गहने बनवाने का क्या काम, इतना सब्र नहीं होता कि अनाज घर में आ जाए तो यह सब मनसूबे बांधें। मुझे रुपयों का सूद दोगे, लिखाई दोगे, नजराना दोगे, मुनीमजी की दस्तूरी दोगे; दस के आठ लेकर घर जाओगे, लेकिन यह नहीं होता कि महीने-दो-महीने रुक जाएं। तुम्हें तो इस घड़ी रुपये की धुन है, कितना ही समझाऊं, ऊंच-नीच सुझाऊं मगर कभी न मानोगे। रुपये न दूं तो मन में गालियां दोगे और किसी दूसरे-महाजन की चिरौरीं करोगे।

हलधर : नहीं सरकार, यह बात नहीं है, मुझे सचमुच ही बड़ी जरूरत है।

कंचन : हां-हां, तुम्हारी जरूरत में किसे संदेह है, जरूरत न होती तो यहां आते ही क्यों; लेकिन यह ऐसी जरूरत है जो टल सकती है, मैं इसे जरूरत नहीं कहता, इसका नाम ताव है, जो खेती का रंग देखकर सिर पर सवार हो गया है।

हलधर : आप मालिक हैं जो चाहे कहें। रुपयों के बिना मेरा काम न चलेगा। बरसी में भोज-भात देना ही पड़ेगा, गहना-पाती बनवाए बिना बिरादरी में बदनामी होती है, नहीं तो क्या इतना मैं नहीं जानता कि करज लेने से भरम उठ जाता है। करज करेजे की चीर है। आप तो मेरी भलाई के लिए इतना समझा रहे हैं, पर मैं बड़ा संकट में हूं।

कंचन : मेरी रोकड़ उससे भी ज्यादा संकट में है। तुम्हारे लिए बंकधर से रुपये निकालने पड़ेंगे। कोई और कहता तो मैं उसे सूखा जवाब देता, लेकिन तुम मेरे पुराने असामी हो; तुम्हारे बाप से भी मेरा व्यवहार था, इसलिए तुम्हें निराश नहीं करना चाहता। मगर अभी से जताए देता हूं कि जेठी में सब रुपया सूद समेत चुकाना पड़ेगा। कितने रुपये चाहते हो ?

हलधर : सरकार, दो सौ रुपये दिला दें।

कंचन : अच्छी बात है, मुनीमजी लिखा-पढ़ी करके रुपये दे दीजिए। मैं पूजा करने जाता हूं। **(जाता है)**

मुनीम : तो तुम्हें दो सौ रुपये चाहिए न। पहिले पांच रुपये सैकड़े नजराना लगता था। अब दस रुपये सैकड़े हो गया है।

हलधर : जैसी मर्जी।

मुनीम : पहले दो रुपये सैकड़े लिखाई पड़ती थी, अब चार रुपये सैकड़े हो गई है।

हलधर : जैसा सरकार का हुकुम।

मुनीम : स्टाम्प के पांच रुपये लगेंगे।

हलधर : सही है।

मुनीम : चपरासियों का हक दो रुपये होगा।

हलधर : जो हुकुम।

मुनीम : मेरी दस्तूरी भी पांच रुपये होती है, लेकिन तुम गरीब आदमी हो, तुमसे चार रुपये ले लूंगा। जानते ही हो मुझे यहां से कोई तलब तो मिलती नहीं, बस इसी दस्तूरी पर भरोसा है।

हलधर : बड़ी दया है।

मुनीम : एक रुपया ठाकुर जी को चढ़ाना होगा।

हलधर : चढ़ा दीजिए। ठाकुर तो सभी के हैं।

मुनीम : और एक रुपया ठकुराइन के पान का खर्च।

हलधर : ले लीजिए। सुना है गरीबों पर बड़ी दया करती हैं।

मुनीम : कुछ पढ़े हो ?

हलधर : नहीं महाराज, करिया अच्छर भैंस बराबर है।

मुनीम : तो इस स्टाम्प पर बाएं अंगूठे का निशान करो।

सादे स्टाम्प पर निशान बनवाता है।

मुनीम : **(संदूक से रुपये निकालकर)** गिन लो।

हलधर : ठीक ही होगा।

मुनीम : चौखट पर जाकर तीन बार सलाम करो और घर की राह लो।

हलधर रुपये अंगोछे में बांधता हुआ जाता है। कंचनसिंह का प्रवेश।

मुनीम : जरा भी कान-पूंछ नहीं हिलाई।

कंचन : इन मूर्खों पर ताव सवार होता है तो इन्हें कुछ नहीं सूझता,

आंखों पर पर्दा पड़ जाता है। इन पर दया आती है, पर करूं क्या? धन के बिना धर्म भी तो नहीं होता।

चौथा दृश्य

स्थान—मधुबन। सबलसिंह का चौपाल।

समय—आठ बजे रात। फाल्गुन का आरंभ।

चपरासी : हुजूर, गांव में सबसे कह आया है। लोग जादू के तमाशे की खबर सुनकर उत्सुक हो रहे हैं।

सबल : स्त्रियों को भी बुलावा दे दिया है न ?

चपरासी : जी हां, अभी सब-की-सब घरवालों को खाना खिलाकर आई जाती हैं।

सबल : तो इस बरामदे में एक पर्दा डाल दो। स्त्रियों को पर्दे के अंदर बिठाना। घास-चारे, दूध-लकड़ी आदि का प्रबंध हो गया न ?

चपरासी : हुजूर, सभी चीजों का ढेर लगा हुआ है। जब यह चीजें बेगार में ली जाती थीं तब एक-एक मुट्ठी घास के लिए गाली और मार से काम लेना पड़ता था। हुजूर ने बेगार बंद करके सारे गांव को बिन दामों गुलाम बना लिया है। किसी ने भी दाम लेना मंजूर नहीं किया। सब यही कहते हैं कि सरकार हमारे मेहमान हैं। धन्य-भाग ! जब तक चाहें सिर और आंखों पर रहें। हम खिदमत के लिए दिलोजान से हाजिर हैं। दूध तो इतना आ गया है कि शहर में चार रुपये को भी न मिलता।

सबल : यह सब एहसान की बरकत है। जब मैंने बेगार बंद करने का प्रस्ताव किया तो तुम लोग, यहां तक कि कंचनसिंह भी, सभी मुझे डराते थे। सबको भय था कि असामी शोख हो जाएंगे, सिर पर चढ़ जाएंगे। लेकिन मैं जानता था कि एहसान का नतीजा कभी बुरा नहीं होता। अच्छा, महराज से कहो कि मेरा भोजन भी जल्द बना दें।

चपरासी चला जाता है।

सबल : **(मन में)** बेगार बंद करके मैंने गांव वालों को अपना भक्त बना लिया। बेगार खुली रहती तो कभी-न-कभी राजेश्वरी को भी

बेगार करनी ही पड़ती, मेरे आदमी जाकर उसे दिक करते। अब यह नौबत कभी न आएगी। शोक यही है कि यह काम मैंने नेक इरादों से नहीं किया, इसमें मेरा स्वार्थ छिपा हुआ है। लेकिन अभी तक मैं निश्चय नहीं कर सका कि इसका अंत क्या होगा ? राजेश्वरी के उद्धार करने का विचार तो केवल भ्रांत है। मैं उसकी अनुपम रूप-छटा, उसके सरल व्यवहार और उसके निर्दोष अंग-विन्यास पर आसक्त हूं। इसमें रत्ती-भर भी संदेह नहीं है। मैं कामवासना की चपेट में आ गया हूं और किसी तरह मुक्त नहीं हो सकता। खूब जानता हूं कि यह महाघोर पाप है ! आश्चर्य होता है कि इतना संयमशील होकर भी मैं इसके दांव में कैसे आ पड़ा। ज्ञानी को अगर जरा भी संदेह हो जाय तो वह तो तुरंत विष खा ले। लेकिन अब परिस्थिति पर हाथ मलना व्यर्थ है। यह विचार करना चाहिए कि इसका अंत क्या होगा ? मान लिया कि मेरी चालें सीधी पड़ती गईं और वह मेरा कलमा पढ़ने लगी तो? कलुषित प्रेम ! पापाभिनय ! भगवन् ! उस घोर नारकीय अग्निकुंड में मुझे मत डालना। मैं अपने मुख को और उस सरलहृदय बालिका की आत्मा को इस कालिमा से वेष्ठित नहीं करना चाहता। मैं उससे केवल पवित्र प्रेम करना चाहता हूं, उसकी मीठी-मीठी बातें सुनना चाहता हूं, उसकी मधुर मुस्कान की छटा देखना चाहता हूं, और कलुषित प्रेम क्या है....जो हो, अब तो नाव नदी में डाल दी है, कहीं-न-कहीं पार लगेगी ही। कहां ठिकाने लगेगी ? सर्वनाश के घाट पर ? हां, मेरा सर्वनाश इसी बहाने होगा। यह पाप-पिशाच मेरे कुल का भक्षण कर जाएगा। ओह ! यह निर्मूल शंकाएं हैं। संसार में एक-से-एक कुकर्मी व्यभिचारी पड़े हुए हैं, उनका सर्वनाश नहीं होता। कितनों ही को मैं जानता हूं जो विषय-भोग में लिप्त हो रहे हैं। ज्यादा-से-ज्यादा उन्हें यह दंड मिलता है कि जनता कहती है, बिगड़ गया, कुल में दाग लगा दिया। लेकिन उनकी मान-प्रतिष्ठा में जरा भी अंतर नहीं पड़ता। यह पाप मुझे करना पड़ेगा। कदाचित मेरे भाग्य में यह बदा हुआ है। हरि इच्छा। हां, इसका प्रायश्चित करने में कोई कसर न रखूंगा। दान, व्रत, धर्म, सेवा इनके पर्दे में मेरा अभिनय होगा। दान, व्रत, परोपकार,

सेवा ये सब मिलकर कपट-प्रेम की कालिमा को नहीं धो सकते। अरे, लोग अभी से तमाशा देखने आने लगे। खैर, आने दूं। भोजन में देर हो जाएगी। कोई चिंता नहीं। बारह बजे सब फिल्म खत्म हो जाएंगे। चलूं सबको बैठाऊं। **(प्रकट)** तुम लोग यहां आकर फर्श पर बैठो, स्त्रियां पर्दे में चली जाएं। **(मन में)** है, वह भी है ! कैसा सुंदर अंग-विन्यास है ! आज गुलाबी साड़ी पहने हुए है। अच्छा, अब की तो कई आभूषण भी हैं। गहनों से उसके शरीर की शोभा ऐसी बढ़ गई है मानो वृक्ष में फूल लगे हों।

दर्शक यथास्थान बैठ जाते हैं, सबलसिंह चित्रों को दिखाना शुरू करते हैं।

पहला चित्र : कई किसानों का रेलगाड़ी में सवार होने के लिए धक्कम-धक्का करना, बैठने का स्थान न मिलना, गाड़ी में खड़े रहना, एक कुली को जगह के लिए घूस देना, उसका इनको एक मालगाड़ी में बैठा देना। एक स्त्री का छूट जाना और रोना। गार्ड का गाड़ी को न रोकना।

हलधर बेचारी की कैसी दुर्गति हो रही है। लो, लात-घूंसे चलने लगे। सब मार खा रहे हैं।

फत्तू यहां भी घूस दिए बिना नहीं चलता। किराया दिया, घूस ऊपर से। लात-घूंसे खाए उसकी कोई गिनती नहीं। बड़ा अंधेर है। रुपये बड़े जतन से रखे हुए हैं। कैसा जल्दी निकाल रहा है कि कहीं गाड़ी न खुल जाए।

राजेश्वरी : **(सलोनी से)** हाय-हाय, बेचारी छूट गई ! गोद में लड़का भी है। गाड़ी नहीं रुकी। सब बड़े निर्दयी हैं। हाय भगवन्, उसका क्या हाल होगा ?

सलोनी : एक बेर इसी तरह मैं भी छूट गई थी। हरदुआर जाती थी।

राजेश्वरी : ऐसी गाड़ी पर कभी न सवार हो, पुण्य तो आगे-पीछे मिलेगा, यह विपत्ति अभी से सिर पर आ पड़ी।

दूसरा चित्र : गांव का पटवारी खाट पर बस्ता खोले बैठा है। कई किसान आस-पास खड़े हैं। पटवारी सभी से सालाना नजर वसूल कर रहा है।

हलधर : लाला का पेट तो फूल के कुप्पा हो गया है। चुटिया इतनी बड़ी है जैसे बैल की पगहिया।

फत्तू : इतने आदमी खड़े गिड़गिड़ा रहे हैं, पर सिर नहीं उठाते, मानो कहीं के राजा हैं ! अच्छा, पेट पर हाथ धरकर लोट गया। पेट अफर रहा है, बैठा नहीं जाता। चुटकी बजाकर दिखाता है कि भेंट लाओ। देखो, एक किसान कमर से रुपया निकालता है। मालूम होता है, बीमार रहा है, बदन पर मिरजई भी नहीं है। चाहे तो छाती के हाड़ गिन लो। वाह, मुंशीजी ! रुपया फेंक दिया, मुंह फेर लिया, अब बात न करेंगे। जैसे बंदरिया रूठ जाती है और बंदर की ओर पीठ फेरकर बैठ जाती है। बेचारा किसान कैसे हाथ जोड़कर मना रहा है, पेट दिखाकर कहता है, भोजन का ठिकाना नहीं, लेकिन लाला साहब कब सुनते हैं।

हलधर : बड़ी गलाकाटू जात है।

फत्तू : जानता है कि चाहे बना दूं, चाहे बिगाड़ दूं। यह सब हमारी ही दशा तो दिखाई जा रही है।

तीसरा चित्र : थानेदार साहब गांव में एक खाट पर बैठे हैं। चोरी के माल की तफतीश कर रहे हैं। कई कांस्टेबल वर्दी पहने हुए खड़े हैं। घरों में खानातलाशी हो रही है। घर की सब चीजें देखी जा रही हैं। जो चीज जिसको पसंद आती है, उठा लेता है। औरतों के बदन पर के गहने भी उतरवा लिए जाते हैं।

फत्तू : इन जालिमों से खुदा बचाए।

एक किसान : आए हैं अपने पेट भरने। बहाना कर दिया कि चोरी के माल का पता लगाने आए हैं।

फत्तू : अल्लाह मियां का कहर भी इन पर नहीं गिरता। देखो बेचारों की खानातलाशी हो रही है।

हलधर : खानातलाशी काहे की है, लूट है। उस पर लोग कहते हैं कि पुलिस तुम्हारे जान-माल की रक्षा करती है।

फत्तू : इसके घर में कुछ नहीं निकला।

हलधर : यह दूसरा घर किसी मालदार किसान का है। देखो हांडी में सोने का कंठा रखा हुआ है। गोप भी है। महतो इसे पहनकर

नेवता खाने जाते होंगे। चौकीदार ने उड़ा लिया। देखो, औरतें आंगन में खड़ी की गई हैं। उनके गहने उतारने को कह रहा है।

फत्तू : बेचारा महतो थानेदार के पैरों पर गिर रहा है और अंजुली भर रुपये लिए खड़ा है।

राजेश्वरी : (सलोनी से) पुलिसवाले जिसकी इज्जत चाहें ले लें।

सलोनी : हां, देखते तो साठ बरस हो गए। इनके ऊपर तो जैसे कोई है ही नहीं।

राजेश्वरी : रुपये ले लिए, बेचारियों की जान बची। मैं तो इन सभी के सामने कभी न खड़ी हो सकूं चाहे कोई मार ही डाले।

सलोनी : तस्वीरें न जाने कैसे चलती हैं।

राजेश्वरी : कोई कल होगी और क्या !

हलधर : अब तमाशा बंद हो रहा है।

एक किसान : आधी रात भी हो गई। सबेरे ऊख काटनी है।

सबल : आज तमाशा बंद होता है। कल तुम लोगों को और भी अच्छे-अच्छे चित्र दिखाए जाएंगे, जिससे तुम्हें मालूम होगा कि बीमारी से अपनी रक्षा कैसे की जा सकती है। घरों की और गांवों की सफाई कैसे होनी चाहिए, कोई बीमार पड़ जाए तो उसकी देख-रेख कैसे करनी चाहिए। किसी के घर में आग लग जाए तो उसे कैसे बुझाना चाहिए। मुझे आशा है कि आज की तरह तुम लोग कल भी आओगे।

सब लोग चले जाते हैं।

पांचवां दृश्य

प्रातःकाल का समय। राजेश्वरी अपनी गाय को रेवड़ में ले जा रही है। सबलसिंह से मुठभेड़।

सबल : आज तीन दिन से मेरे चंद्रमा बहुत बलवान हैं। रोज एक बार तुम्हारे दर्शन हो जाते हैं। मगर आज मैं केवल देवी के दर्शनों ही से संतुष्ट न हूंगा। कुछ वरदान भी लूंगा।

राजेश्वरी असमंजस में पड़कर इधर-उधर ताकती है और सिर झुकाकर खड़ी हो जाती है।

सबल : देवी, अपने उपासकों से यों नहीं लजाया करतीं। उन्हें धीरज देती हैं, उनकी दुःख-कथा सुनती हैं, उन पर दया की दृष्टि फेरती हैं। राजेश्वरी, मैं भगवान को साक्षी देकर कहता हूं कि मुझे तुमसे जितनी श्रद्धा और प्रेम है उतनी किसी उपासक को अपनी इष्ट देवी से भी न होगी। मैंने जिस दिन से तुम्हें देखा है, उसी दिन से अपने हृदय-मंदिर में तुम्हारी पूजा करने लगा हूं। क्या मुझ पर जरा भी दया न करोगी ?

राजेश्वरी : दया आपकी चाहिए, आप हमारे ठाकुर हैं। मैं तो आपकी चेरी हूं। अब मैं जाती हूं। गाय किसी के खेत में पैठ जाएगी। कोई देख लेगा तो अपने मन में न जाने क्या कहेगा।

सबल : तीनों तरफ अरहर और ईख के खेत हैं, कोई नहीं देख सकता। मैं इतनी जल्द तुम्हें न जाने दूंगा। आज महीनों के बाद मुझे यह सुअवसर मिला है, बिना वरदान लिए न छोड़ूंगा। पहले यह बतलाओ कि इस काक-मंडली में तुम जैसी हंसनी क्यों कर आ पड़ी ? तुम्हारे माता-पिता क्या करते हैं ?

राजेश्वरी : यह कहानी कहने लगूंगी तो बड़ी देर हो जाएगी। मुझे यहां कोई देख लेगा तो अनर्थ हो जाएगा।

सबल : तुम्हारे पिता भी खेती करते हैं ?

राजेश्वरी : पहले बहुत दिनों तक टापू में रहे। वहीं मेरा जन्म हुआ। जब वहां की सरकार ने उनकी जमीन छीन ली तो यहां चले आए। तब से खेती-बारी करते हैं। माता का देहांत हो गया। मुझे याद आता है, कुंदन का-सा रंग था। बहुत सुंदर थीं।

सबल : समझ गया। **(तृष्णापूर्ण नेत्रों से देखकर)** तुम्हारा तो इन गंवारों में रहने से जी घबराता होगा। खेती-बारी की मेहनत भी तुम जैसी कोमलांगी सुंदरी को बहुत अखरती होगी।

राजेश्वरी : **(मन में)** ऐसे तो बड़े दयालु और सज्जन आदमी हैं, लेकिन निगाह अच्छी नहीं जान पड़ती। इनके साथ कुछ कपट-व्यवहार करना चाहिए। देखूं किस रंग पर चलते हैं। **(प्रकट)** क्या करूं भाग्य में जो लिखा था वह हुआ।

सबल : भाग्य तो अपने हाथ का खेल है। जैसे चाहो वैसा बन सकता है। जब मैं तुम्हारा भक्त हूं तो तुम्हें किसी बात की चिंता न करनी चाहिए। तुम चाहो तो कोई नौकर रख लो। उसकी तलब मैं दे दूंगा, गांव में रहने की इच्छा न हो तो शहर चलो, हलधर को

अपने यहां रख लूंगा, तुम आराम से रहना। तुम्हारे लिए मैं सब कुछ करने को तैयार हूं, केवल तुम्हारी दया-दृष्टि चाहता हूं। राजेश्वरी, मेरी इतनी उम्र गुजर गई लेकिन परमात्मा जानते हैं कि आज तक मुझे न मालूम हुआ कि प्रेम क्या वस्तु है। मैं इस रस के स्वाद को जानता ही न था, लेकिन जिस दिन से तुमको देखा है, प्रेमानंद का अनुपम सुख भोग रहा हूं। तुम्हारी सूरत एक क्षण के लिए भी आंखों से नहीं उतरती। किसी काम में जी नहीं लगता, तुम्हीं चित्त में बसी रहती हो। बगीचे में जाता हूं तो मालूम होता है कि फूलों में तुम्हारी ही सुगंधि है, श्यामा की चहक सुनता हूं तो मालूम होता है कि तुम्हारी ही मधुर ध्वनि है। चंद्रमा को देखता हूं तो जान पड़ता है कि वह तुम्हारी ही मूर्ति है। प्रबल उत्कंठा होती है कि चलकर तुम्हारे चरणों पर सिर झुका दूं। ईश्वर के लिए यह मत समझो कि मैं तुम्हें कलंकित कराना चाहता हूं। कदापि नहीं ! जिस दिन यह कुभाव, यह कुचेष्टा, मन में उत्पन्न होगी उस दिन हृदय को चीरकर बाहर फेंक दूंगा। मैं केवल तुम्हारे दर्शन से अपनी आंखों को तृप्त करना, तुम्हारी सुललित वाणी से अपने श्रवण को मुग्ध करना चाहता हूं। मेरी यही परमाकांक्षा है कि तुम्हारे निकट रहूं, तुम मुझे अपना प्रेमी और भक्त समझो और मुझसे किसी प्रकार का पर्दा या संकोच न करो। जैसे किसी सागर के निकट के वृक्ष उससे रस खींचकर हरे-भरे रहते हैं उसी प्रकार तुम्हारे समीप रहने से मेरा जीवन आनंदमय हो जाएगा।

चेतनदास भजन गाते हुए दोनों प्राणियों को देखते चले जाते हैं।

राजेश्वरी : **(मन में)** मैं इनसे कौशल करना चाहती थी पर न जाने इनकी बातें सुनकर क्यों हृदय पुलकित हो रहा है। एक-एक शब्द मेरे हृदय में चुभ जाता है। **(प्रकट)** ठाकुर साहब, एक दीन मजूरी करने वाली स्त्री से ऐसी बातें करके उसका सिर आसमान पर न चढ़ाइए। मेरा जीवन नष्ट हो जाएगा। आप धर्मात्मा हैं, जसी हैं, दयावान हैं। आज घर-घर आपके जस का बखान हो रहा है, आपने अपनी प्रजा पर जो दया की है उसकी महिमा मैं नहीं गा सकती। लेकिन ये बातें अगर किसी के कान में पड़ गईं तो यही

परजा, जो आपके पैरों की धूल माथे पर चढ़ाने को तरसती है, आपकी बैरी हो जाएगी, आपके पीछे पड़ जाएगी। अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। मुझे भूल जाइए। संसार में एक-से-एक सुंदर औरतें हैं। मैं गंवारिन हूं। मजूरी करना मेरा काम है। इन प्रेम की बातों को सुनकर मेरा चित्त ठिकाने न रहेगा। मैं उसे अपने बस में न रख सकूंगी। वह चंचल हो जाएगा और न जाने उस अचेत दशा में क्या कर बैठे। उसे फिर नाम की, कुल की, निंदा की लाज न रहेगी। प्रेम बढ़ती हुई नदी है। उसे आप यह नहीं कह सकते कि यहां तक चढ़ना, इसके आगे नहीं। चढ़ाव होगा तो वह किसी के रोके न रुकेगी। इसलिए मैं आपसे विनती करती हूं कि यहीं तक रहने दीजिए। मैं अभी तक अपनी दशा में संतुष्ट हूं। मुझे इसी दशा में रहने दीजिए। अब मुझे देर हो रही है, जाने दीजिए।

सबल : राजेश्वरी, प्रेम के मद से मतवाला आदमी उपदेश नहीं सुन सकता। क्या तुम समझती हो कि मैंने बिना सोचे-समझे इस पथ पर पग रखा है। मैं दो महीनों से इसी हैस-बैस में हूं। मैंने नीति का, सदाचरण का, धर्म का. लोकनिंदा का आश्रय लेकर देख लिया, कहीं संतोष न हुआ तब मैंने यह पथ पकड़ा। मेरे जीवन को बनाना-बिगाड़ना अब तुम्हारे ही हाथ है। अगर तुमने मुझ पर तरस न खाया तो अंत यही होगा कि मुझे आत्महत्या जैसा भीषण पाप करना पड़ेगा, क्योंकि मेरी दशा असह्य हो गई है। मैं इसी गांव में घर बना लूंगा, यहीं रहूंगा, तुम्हारे लिए भी मकान, धन-संपत्ति, जगह-जमीन किसी पदार्थ की कमी न रहेगी। केवल तुम्हारी स्नेह-दृष्टि चाहता हूं।

राजेश्वरी : **(मन में)** इनकी बातें सुनकर मेरा चित्त चंचल हुआ जाता है। आप-ही-आप मेरा हृदय इनकी ओर खिंचा जाता है। पर यह तो सर्वनाश का मार्ग है। इससे मैं इन्हें कटु वचन सुनाकर यहीं रोक देती हूं। **(प्रकट)** आप विद्वान हैं, सज्जन हैं, धर्मात्मा हैं, परोपकारी हैं, और मेरे मन में आपका जितना मान है वह मैं कह नहीं सकती। मैं अब से थोड़ी देर पहले आपको देवता समझती थी। पर आपके मुंह से ऐसी बातें सुनकर दु:ख होता है। आपसे मैंने अपना हाल साफ-साफ कह दिया। उस पर भी आप वही बातें करते जाते हैं। क्या आप समझते हैं कि मैं अहीर जात और

किसान हूं तो मुझे अपने धरम-करम का कुछ विचार नहीं है और मैं धन और संपत्ति पर अपने धरम को बेच दूंगी ? आपका यह भरम है। आपको मैं इतनी सिरिद्धा से न देखती होती तो इस समय आप यहां इस तरह बेधड़क मेरे धरम का सत्यानाश करने की बातचीत न करते। एक पुकार पर सारा गांव यहां आ जाता और आपको मालूम हो जाता कि देहात के गंवार अपनी औरतों की लाज कैसे रखते हैं। मैं जिस दशा में भी हूं संतुष्ट हूं, मुझे किसी वस्तु की तृषना नहीं है। आपका धन आपको मुबारक रहे। आपकी कुशल इसी में है कि अभी आप यहां से चले जाइए। अगर गांव वालों के कानों में इन बातों की जरा भी भनक पड़ी तो वह मुझे तो किसी तरह जीता न छोड़ेंगे, पर आपके भी जान के दुश्मन हो जाएंगे। आपकी दया, उपकार, सेवा एक भी आपको उनके कोप से न बचा सकेगा।

चली जाती है।

सबल : **(आप-ही-आप)** इसकी सम्मत्ति मेरे चित्त को हटाने की जगह और भी बल के साथ अपनी ओर खींचती है। ग्रामीण स्त्रियां भी इतनी दृढ़ और आत्माभिमानी होती हैं, इसका मुझे ज्ञान न था। अबोध बालक को जिस काम के लिए मना करो, वही अदबदाकर करता है। मेरे चित्त की दशा उसी बालक के समान है। वह अवहेलना से हतोत्साह नहीं, वरन् और भी उत्तेजित होता है।

प्रस्थान।

छठा दृश्य

स्थान—मधुबन गांव।

समय—फागुन का अंत, तीसरा पहर, गांव के लोग बैठे बातें कर रहे हैं।

एक किसान : बेगार तो सब बंद हो गई थी। अब यह दहलाई की बेगार क्यों मांगी जाती है ?

फत्तू : जमींदार की मर्जी। उसी ने अपने हुक्म से बेगार बंद की थी।

वही अपने हुक्म से जारी करता है।

हलधर : यह किस बात पर चिढ़ गए ? अभी तो चार-ही-पांच दिन होते हैं, तमाशा दिखाकर कर गए हैं। हम लोगों ने उनके सेवा-सत्कार में तो कोई बात उठा नहीं रखी।

फत्तू : भाई, राजा ठाकुर हैं, उनका मिजाज बदलता रहता है। आज किसी पर खुश हो गए तो उसे निहाल कर दिया, कल नाखुश हो गए तो हाथी के पैरों तले कुचलवा दिया। मन की बात है।

हलधर : अकारन ही थोड़े किसी का मिजाज बदलता है। वह तो कहते थे, अब तुम लोग हाकिम-हुक्काम किसी को भी बेगार मत देना। जो कुछ होगा मैं देख लूंगा। कहां आज यह हुकुम निकाल दिया। जरूर कोई बात मर्जी के खिलाफ हुई है।

फत्तू : हुई होगी। कौन जाने घर ही में किसी ने कहा हो, असामी अब सेर हो गए, तुम्हें बात भी न पूछेंगे। इन्होंने कहा हो कि सेर कैसे हो जाएंगे, देखो अभी बेगार लेकर दिखा देते हैं। या कौन जाने कोई काम-काज आ पड़ा हो। अरहर भरी रखी हो, दलवा कर बेच देना चाहते हों।

कई आदमी : हां, ऐसी ही कोई बात होगी। जो हुकुम देंगे वह बजाना ही पड़ेगा, नहीं तो रहेंगे कहां !

एक किसान : और जो बेगार न दें तो क्या करें ?

फत्तू : करने की एक ही कही। नाक में दम कर दें, रहना मुसकिल हो जाए। अरे और कुछ न करें लगान की रसीद ही न दें तो उनका क्या बना लोगे ? कहां फरियाद ले जाओगे और कौन सुनेगा ? कचहरी कहां तक दौड़ोगे ? फिर वहां भी उनके सामने तुम्हारी कौन सुनेगा !

कई आदमी : आजकल मरने की छुट्टी ही नहीं है, कचहरी कौन दौड़ेगा ? खेती तैयार खड़ी है, इधर ऊख बोना है, फिर अनाज मांड़ना पड़ेगा। कचहरी के धक्के खाने से तो यही अच्छा है कि जमींदार जो कहे, वही बजाएं।

फत्तू : घर पीछे एक औरत जानी चाहिए। बुढ़ियों को छांटकर भेजा जाए।

हलधर : सबके घर बुढ़िया कहां ?

फत्तू : तो बहू-बेटियों को भेजने की सलाह मैं न दूंगा।

हलधर : वहां इसका कौन खटका है ?

फत्तू : *तुम क्या जानो, सिपाही हैं, चपरासी हैं, क्या वहां सब-के-सब देवता ही बैठे हैं। पहले की बात दूसरी थी।*

एक किसान : हां, यह बात ठीक है। मैं तो अम्मां को भेज दूंगा।

हलधर : मैं कहां से अम्मां लाऊं ?

फत्तू : गांव में जितने घर हैं क्या उतनी बुढ़िया न होंगी। गिनो एक-दो-तीन, राजा की मां चार....उस टोले में पांच, पच्छिम ओर सात, मेरी तरफ नौ—कुल पच्चीस बुढ़ियां हैं।

हलधर : घर कितने होंगे ?

फत्तू : घर तो अबकी मरदुमसुमारी में तीस थे। कह दिया जाएगा, पांच घरों में कोई औरत ही नहीं है, हुकुम हो तो मर्द ही हाजिर हों।

हलधर : मेरी ओर से कौन बुढ़िया जाएगी ?

फत्तू : सलोनी काकी को भेज दो। लो वह आप ही आ गईं।

सलोनी आती है।

फत्तू : अरे सलोनी काकी, तुझे जमींदार की दलहाई में जाना पड़ेगा।

सलोनी : जाय नौज, जमींदार के मुंह में लूका लगे, मैं उसका क्या चाहती हूं कि बेगार लेगा। एक धुर जमीन भी तो नहीं है। और बेगार तो उसने बंद कर दी थी ?

फत्तू : जाना पड़ेगा, उसके गांव में रहती हो कि नहीं ?

सलोनी : गांव उसके पुरखों का नहीं है, हां नहीं तो। फतुआ, मुझे चिढ़ा मत, नहीं कुछ कह बैठूंगी।

फत्तू : जैसे गा-गाकर चक्की पीसती हो उसी तरह गा-गाकर दाल दलना। बता कौन गीत गाओगी ?

सलोनी : डाढ़ीजार, मुझे चिढ़ा मत, नहीं तो गाली दे दूंगी। मेरी गोद का खेला लौंडा मुझे चिढ़ाता है।

फत्तू : कुछ तू ही थोड़े जाएगी। गांव की सभी बुढ़ियां जाएंगी।

सलोनी : गंगा-असनान है क्या ? पहले तो बुढ़ियां छांटकर न जाती थीं। मैं उमिर-भर कभी नहीं गई। अब क्या बहुओं को पर्दा लगा है। गहने गढ़ा-गढ़ा कर तो वह पहनें, बेगार करने बुढ़ियां जाएं।

फत्तू : अबकी कुछ ऐसी ही बात आ पड़ी है। हलधर के घर कोई बुढ़िया नहीं है। उसकी घरवाली कल की बहुरिया है, जा नहीं सकती। उसकी ओर से चली जा।

सलोनी : हां, उसकी जगह पर चली जाऊंगी। बेचारी मेरी बड़ी सेवा करती है। जब जाती हूं तो बिना सिर में तेल डाले और हाथ-पैर दबाए नहीं आने देती। लेकिन बहली जुता देगा न ?

फत्तू : बेगार करने रथ पर बैठकर जाएगी।

हलधर : नहीं काकी, मैं बहली जुता दूंगा। सबसे अच्छी बहली में तुम बैठना।

सलोनी : बेटा, तेरी बड़ी उम्मिर हो, जुग-जुग जी। बहली में ढोल-मजीरा रख देना। गाती बजाती जाऊंगी।

सातवां दृश्य

समय—संध्या।

स्थान—मधुबन। ओले पड़ गए हैं। गांव के स्त्री-पुरुष खेतों में जमा हैं।

फत्तू : अल्लाह ने परसी-परसायी थाली छीन ली।

हलधर : बना-बनाया खेल बिगड़ गया।

फत्तू : छावत लागत छह बरस और छिन में होत उजाड़। कई साल के बाद तो अबकी खेती जरा रंग पर आई थी। कल इन खेतों को देखकर कैसी गज-भर की छाती हो जाती थी। ऐसा जान पड़ता था, सोना बिछा दिया गया है। बित्ते-बित्ते भर की बालें लहराती थीं, पर अल्लाह ने मारा सब सत्यानाश कर दिया। बाग में निकल जाते थे तो बौर की महक से चित्त खिल उठता था। पर आज बौर की कौन कहे पत्ते तक झड़ गए।

एक वृद्ध किसान : मेरी याद में इतने बड़े-बड़े ओले कभी न पड़े थे।

हलधर : मैंने इतने बड़े ओले देखे ही न थे, जैसे चट्टान काट-काटकर लुढ़का दिया गया हो।

फत्तू : तुम अभी हो कै दिन के ? मैंने भी इतने बड़े ओले नहीं देखे।

एक वृद्ध किसान : एक बेर मेरी जवानी में इतने बड़े ओले गिरे थे कि सैकड़ों ढोर मर गए। जिधर देखो मरी हुई चिड़ियां गिरी मिलती थीं। कितने ही पेड़ गिर पड़े। पक्की छतें तक फट गई थीं। बखारों में अनाज सड़ गए, रसोई में बर्तन चकनाचूर हो गए। मुदा अनाज की सड़ाई हो चुकी थी। इतना नुकसान नहीं हुआ था।

सलोनी : मुझे तो मालूम होता है कि जमींदार की नीयत बिगड़ गई है, तभी ऐसी तबाही हुई है।

राजेश्वरी : काकी, भगवान न जाने क्या करने वाले हैं। बार-बार मने करती थी कि अभी महाजन से रुपये न लो। लेकिन मेरी कौन सुनता है। दौड़े-दौड़े गए दो सौ रुपये उठा लाए, जैसे धरोहर हो। देखें अब कहां से देते हैं। लगान ऊपर से देना है। पेट तो मजूरी करके मर जाएगा, लेकिन महाजन से कैसे गला छूटेगा ?

हलधर : भला पूछा तो काकी, कौन जानता था कि क्या सुदनी हैं। आगम देख के तब रुपये लिए थे। यह आफत न आ जाती तो एक सौ रुपये का तो अकेले तेलहन निकल जाता। छाती-भर गेहूं खड़ा था।

फत्तू : अब तो जो होना था वह हो गया। पछताने से क्या हाथ आएगा ?

राजेश्वरी : आदमी ऐसा काम ही क्यों करे कि पीछे से पछताना पड़े।

सलोनी : मेरी सलाह मानो। सब जने जाकर ठाकुर से फरियाद करो कि लगान की माफी हो जाए। दयावान आदमी हैं। मुझे तो बिस्सास है कि माफ कर देंगे। दलहाई की बेगार में हम लोगों से बड़े प्रेम से बातें करते रहे। किसी को छटांक-भर भी दाल न दलने दी। पछताते रहे कि नाहक तुम लोगों को दिक किया। मुझसे बड़ी भूल हुई। मैं तो फिर कहूंगी कि आदमी नहीं देवता हैं।

फत्तू : जमींदार के माफ करने से थोड़े माफी होती है; जब सरकार माफ करे तब न ? नहीं तो जमींदार को मालगुजारी घर से चुकानी पड़ेगी। तो सरकार से इसकी कोई आशा नहीं। अमले लोग तहकीकात करने को भेजे जाएंगे। वह असामियों से खूब रिसवत पाएंगे तो नकसान दिखाएंगे, नहीं तो लिख देंगे ज्यादा नकसान नहीं हुआ। सरकार बहुत करेगी चार आने की छूट कर देगी। जब बारह आने देने ही पड़ेंगे तो चार आने और सही। रिसवत और कचहरी की दौड़ से तो बच जाएंगे। सरकार को अपना खजाना भरने से मतलब है कि परजा को पालने से। सोचती होगी, यह सब न रहेंगे तो इनके और भाई तो रहेंगे ही। जमीन परती थोड़े पड़ी रहेगी।

एक वृद्ध किसान : सरकार एक पैसा भी न छोड़ेगी। इस साल कुछ छोड़ भी देगी तो अगले साल सूद समेत वसूल कर लेगी।

फत्तू : बहुत निगाह करेगी तो तकावी मंजूर कर देगी। उसका भी सूद

लेगी। हर बहाने से रुपया खींचती है। कचहरी में झूठी कोई दरखास देने जाओ तो बिना टके खर्च किए सुनाई नहीं होती। अफीम सरकार बेचे, दारू, गांजा, भांग, मदक, चरस सरकार बेचे। और तो और नोन तक बेचती है। इस तरह रुपया न खींचे तो अफसरों की बड़ी-बड़ी तलब कहां से दे ! कोई एक लाख पाता है, कोई दो लाख, कोई तीन लाख। हमारे यहां जिसके पास लाख रुपये होते हैं वह लखपती कहलाता है, मारे घमंड के सीधे ताकता नहीं। सरकार के नौकरों की एक-एक साल की तलब दो-दो लाख होती है। भला वह लगान की एक पाई भी न छोड़ेगी।

हलधर : बिना सुराज मिले हमारी दसा न सुधरेगी। अपना राज होता तो इस कठिन समय में अपनी मदद करता।

फत्तू : मदद करेंगे ! देखते हो जब से दारू, अफीम की बिक्री बंद हो गई है अमले लोग नसे का कैसा बखान करते फिरते हैं। कुरान शरीफ में नसा हराम लिखा है, और सरकार चाहती है कि देस नसेबाज हो जाए। सुना है, साहब ने आजकल हुकुम दे दिया है कि जो लोग खुद अफीम-सराब पीते हों और दूसरों को पीने की सलाह देते हों, उनका नाम खैरखाहों में लिख लिया जाए। जो लोग पहले पीते थे, अब छोड़ बैठे हैं, या दूसरों को पीना मना करते हैं, उनका नाम बागियों में लिखा जाता है।

हलधर : इतने सारे रुपये क्या तलबों में ही उठ जाते हैं ?

राजेश्वरी : गहने बनवाते हैं।

फत्तू : ठीक तो कहती हैं। क्या सरकार के जोरू-बच्चे नहीं हैं ? इतनी बड़ी फौज बिना रुपये के ही रखी है ! एक-एक तोप लाखों में आती है। हवाई जहाज कई-कई लाख के होते हैं। सिपाहियों को कूच के लिए हवा-गाड़ी चाहिए। जो खाना यहां रईसों को मयस्सर नहीं होता वह सिपाहियों को खिलाया जाता है। साल में छ: महीने सब बड़े-बड़े हाकिम पहाड़ों की सैर करते हैं। देखते तो हो छोटे-छोटे हाकिम भी बादशाहों की तरह ठाट से रहते हैं, अकेली जान पर दस-पंद्रह नौकर रखते हैं, एक पूरा बंगला रहने को चाहिए। जितना बड़ा हमारा गांव है उससे ज्यादा जमीन एक बंगले के हाते में होती है। सुनते हैं, दस रुपये-बीस रुपये बोतल की शराब पीते हैं। हमको-तुमको भरपेट रोटियां

नहीं नसीब होतीं, वहां रात-दिन रंग चढ़ा रहता है। हम-तुम रेलगाड़ी में धक्के खाते हैं। एक-एक डब्बे में जहां दस की जगह है वहां बीस, पच्चीस, तीस, चालीस ठूंस दिए जाते हैं। हाकिमों के वास्ते सभी सजी-सजाई गाड़ियां रहती हैं, आराम से गद्दी पर लेटे हुए चले जाते हैं। रेलगाड़ी को जितना हम किसानों से मिलता है उसका एक हिस्सा भी उन लोगों से न मिलता होगा। मगर तिस पर भी हमारी कहीं पूछ नहीं। जमाने की खूबी है !

हलधर : सुना है, मेमें अपने बच्चों को दूध नहीं पिलातीं।

फत्तू : सो ठीक है, दूध पिलाने से औरत का शरीर ढीला हो जाता है, वह फुरती नहीं रहती। दाइयां रख लेते हैं। वही बच्चों को पालती-पोसती हैं। मां खाली देखभाल करती रहती हैं। लूट है लूट !

सलोनी : दरखास दो; मेरा मन कहता है, छूट हो जाएगी।

फत्तू : कह तो दिया, दो-चार आने की छूट हुई भी तो बरसों लग जाएंगे। पहले पटवारी कागद बनाएगा, उसको पूजो; तब कानूगो जांच करेगा, उसको पूजो; तब तहसीलदार नजर सानी करेगा, उसको पूजो; तब डिप्टी के सामने कागद पेस होगा, उसको पूजो; वहां से तब बड़े साहब के इजलास में जाएगा, वहां अहलमद और अरदली और नाजिर सभी को पूजना पड़ेगा। बड़े साहब कमसनर को रपोट देंगे, वहां भी कुछ-न-कुछ पूजा करनी पड़ेगी। इस तरह मंजूरी होते-होते एक जुग बीत जाएगा। इन सब झंझटों से तो यही अच्छा है कि—

रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं बनत न लगिहै बेर।।

हलधर : मुझे तो साठ रुपये लगान देने हैं। बैल-बधिया बिक जाएंगे तब भी पूरा न पड़ेगा।

किसान : बचेंगे किसके ! अभी साल-भर खाने को चाहिए। देखो, गेहूं के दाने कैसे बिखरे पड़े हैं जैसे किसी ने मसल दिए हों।

हलधर : क्या करना होगा ?

राजेश्वरी : होगा क्या, जैसी करनी वैसी भरनी होगी। तुम तो खेत में बाल लगते ही बावले हो गए। लगान तो था ही, ऊपर से महाजन का बोझ भी सिर पर लाद लिया।

फत्तू : तुम मैके चली जाना। हम दोनों जाकर कहीं मजूरी करेंगे। अच्छा काम मिल गया तो साल-भर में डोंगा पार है।

राजेश्वरी : हां, और क्या, गहने तो मैंने पहने हैं, गाय का दूध मैंने खाया है, बरसी मेरे ससुर की हुई है, अब जो भरौती के दिन आए तो मैं मैके भाग जाऊं। यह मेरा किया न होगा। तुम लोग जहां जाना, वहीं मुझे भी लेते चलना। और कुछ न होगा तो पकी-पकाई रोटियां तो मिल जाएंगी।

सलोनी : बेटी, तूने यह बात मेरे मन की कही। कुलवंती नारी के यही लच्छन हैं। मुझे भी अपने साथ लेती चलना।

गाती है।

चलो पटने की देखो बहार, सहर गुलजार रे।

फत्तू : हां, दाई, खूब गा, गाने का यही अवसर है। सुख में तो सभी गाते हैं।

सलोनी : और क्या बेटा, अब तो जो होना था, हो गया। रोने से लौट थोड़े ही आएगा।

गाती है।

उसी पटने में तमोलिया बसत है।
बीड़ों की अजब बहार रे।
पटना शहर गुलजार रे।।

फत्तू : काकी का गाना तानसेन सुनता तो कानों पर हाथ रखता। हां, दाई !

सलोनी : (गाती है)
उसी पटने में बजजवा बसत है।
कैसी सुंदर लगी है बजार रे।
पटना सहर गुलजार रे।।

फत्तू : बस एक कड़ी और गा दे काकी ! तेरे हाथ जोड़ता हूं। जी बहल गया।

सलोनी : जिसे देखो गाने को ही कहता है, कोई यह नहीं पूछता कि बुढ़िया कुछ खाती-पीती भी है या आसिरवादों से ही जीती है।

राजेश्वरी : चलो, मेरे घर काकी, क्या खाओगी ?

सलोनी : हलधर, तू इस हीरे को डिबिया में बंद कर ले, ऐसा न हो किसी की नजर लग जाए। हां बेटी, क्या खिलाएगी ?

राजेश्वरी : जो तुम्हारी इच्छा हो।

सलोनी : भरपेट ?

राजेश्वरी : हां, और क्या ?

सलोनी : बेटी, तुम्हारे खिलाने से अब मेरा पेट न भरेगा। मेरा पेट भरता था जब रुपये का पसेरी-भर घी मिलता था। अब तो पेट ही नहीं भरता। चार पसेरी अनाज पीसकर जांत पर से उठाती थी। चार पसेरी की रोटियां पकाकर चौके से निकलती थी। अब बहुएं आती हैं तो चूल्हे के सामने जाते उनको ताप चढ़ आती है, चक्की पर बैठते ही सिर में पीड़ा होने लगती है। खाने को तो मिलता नहीं, बल-बूता कहां से आए। न जाने उपज ही नहीं होती कि कोई ढो ले जाता है। बीस मन का बीघा उतरता था। बीस रुपये भी हाथ में आ जाते थे, तो पछाई बैलों की जोड़ी द्वार पर बंध जाती थी। अब देखने को रुपये तो बहुत मिलते हैं पर ओले की तरह देखते-देखते गल जाते हैं। अब तो भिखारी को भीख देना भी लोगों को अखरता है।

फत्तू : सच कहना काकी, तुम काका को मुट्ठी में दबा लेती थी कि नहीं ?

सलोनी : चल, उनका जोड़ दस-बीस गांव में न था। तुझे तो होस आता होगा, कैसा डील-डौल था। चुटकी से सुपारी फोड़ देते थे।

गाती है।

चलो-चलो सखी अब जाना,
पिया भेज दिया परवाना। (टेक)
एक दूत जबर चल आया, सब लस्कर संग सजाया री।
किया बीच नगर के थाना,
गढ़ कोट-किले गिरवाए, सब द्वार बंद करवाए री।
अब किस विधि होय रहाना।
जब दूत महल में आवे, तुझे तुरत पकड़ ले जावे री।
तेरा चले न एक बहाना।।
पिया भेज दिया परवाना।।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—चेतनदास की कुटी, गंगातट।

समय—संध्या।

सबल : महाराज, मनोवृत्तियों के दमन करने का सबसे सरल उपाय क्या है ?

चेतनदास : उपाय बहुत हैं, किंतु मैं मनोवृत्तियों के दमन करने का उपदेश नहीं करता। उनको दमन करने से आत्मा संकुचित हो जाती है। आत्मा को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा ही ज्ञान प्राप्त होता है। यदि इन्द्रियों का दमन कर दिया जाए तो मनुष्य की चेतना-शक्ति लुप्त हो जाएगी। योगियों ने इच्छाओं को रोकने के लिए कितने यत्न लिखे हैं। हमारे योगग्रंथ उन उपदेशों से परिपूर्ण हैं। मैं इन्द्रियों का दमन करना अस्वाभाविक, हानिकर और आपत्तिजनक समझता हूं।

सबल : **(मन में)** आदमी तो विचारशील जान पड़ता है। मैं इसे रंगा हुआ समझता था। **(प्रकट)** यूरोप के तत्त्वज्ञानियों ने कहीं-कहीं इस विचार का पुष्टीकरण किया है, पर अब तक मैं उन विचारों को भ्रांतिकारक समझता था। आज आपके श्रीमुख से उनका समर्थन सुनकर मेरे कितने ही निश्चित सिद्धांतों को आघात पहुंच रहा है।

चेतनदास : इंद्रियों द्वारा ही हमको जगत् का ज्ञान प्राप्त होता है। वृत्तियों का दमन कर देने से ज्ञान का एकमात्र द्वार ही बंद हो जाता है। अनुभवहीन आत्मा कदापि उच्च पद नहीं प्राप्त कर सकती। अनुभव का द्वार बंद करना विकास का मार्ग बंद करना है, प्रकृति के सब नियमों के कार्य में बाधा डालना है। आत्मा

मोक्षपद प्राप्त कर सकती है। जिसने अपने ज्ञान द्वारा इंद्रियों को मुक्त रखा हो। त्याग का महत्व आह्वान में नहीं है। जिसने मधुर संगीत सुना ही न हो उसे संगीत की रुचि न हो तो कोई आश्चर्य नहीं। आश्चर्य तो तब है जब वह संगीतकला का भली-भांति आस्वादन करने, उसमें लिप्त होने के बाद वृत्तियों को उधर से हटा ले। वृत्तियों का दमन करना वैसा ही है जैसे बालकों को खड़े होने या दौड़ने से रोकना। ऐसे बालक को चोट चाहे न लगे पर वह अवश्य ही अपंग हो जाएगा।

सबल : **(मन में)** कितने स्वाधीन और मौलिक विचार हैं। **(प्रकट)** तब तो आपके विचार में हमें अपनी इच्छाओं को अबाध्य कर देना चाहिए।

चेतनदास : मैं तो यहां तक कहता हूं कि आत्मा के विकास में पापों का भी मूल्य है। उज्ज्वल प्रकाश सात रंगों के सम्मिश्रण से बनता है। उसमें लाल रंग का महत्व उतना ही है जितना नीले या पीले रंग का। उत्तम भोजन वही है जिसमें षट्रसों का सम्मिश्रण हो। इच्छाओं को दमन करो, मनोवृत्तियों को रोको, यह मिथ्या तत्त्ववादियों के ढकोसले हैं। यह सब अबोध बालकों को डराने के 'जू-जू' हैं। नदी के तट पर न जाओ, नहीं तो डूब जाओगे, यह मूर्ख माता-पिता की शिक्षा है। विचारशील प्राणी अपने बालको को नदी के तट पर केवल ले ही नहीं जाते वरन् उसे नदी में प्रविष्ट कराते हैं, उसे तैरना सिखाते हैं।

सबल : **(मन में)** कितनी मधुर वाणी है। वास्तव में प्रेम चाहे कलुषित ही क्यों न हो, चरित्र-निर्माण में अवश्य अपना स्थान रखता है। **(प्रकट)** तो पाप कोई घृणित वस्तु नहीं ?

चेतनदास : कदापि नहीं। संसार में कोई वस्तु घृणित नहीं है, कोई वस्तु त्याज्य नहीं है। मनुष्य अहंकार के वश होकर अपने को दूसरों से श्रेष्ठ समझने लगता है। वास्तव में धर्म और अधर्म, सुविचार और कुविचार, पाप और पुण्य, यह सब मानव जीवन की मध्यवर्ती अवस्थाएं मात्र हैं।

सबल : **(मन में)** कितना उदार हृदय है ! **(प्रकट)** महाराज, आपके उपदेश से मेरे संतप्त हृदय को बड़ी शांति प्राप्त हुई।

प्रस्थान।

चेतनदास : **(आप-ही-आप)** इस जिज्ञासा का आशय खूब समझता हूं। तुम्हारी अशांति का रहस्य खूब जानता हूं। तुम फिसल रहे थे, मैंने एक धक्का और दे दिया। अब तुम नहीं संभल सकते।

दूसरा दृश्य

समय—संध्या।

स्थान—सबलसिंह की बैठक।

सबल : **(आप-ही-आप)** मैं चेतनदास को धूर्त समझता था, पर यह तो ज्ञानी महात्मा निकले। कितना तेज और शौर्य है ! ज्ञानी उनके दर्शनों को लालायित है। क्या हर्ज है ! ऐसे आत्म-ज्ञानी पुरुषों के दर्शन से कुछ उपदेश ही मिलेगा।

कंचनसिंह का प्रवेश।

कंचन : **(तार दिखाकर)** दोनों जगह हार हुई। पूना में घोड़ा कट गया। लखनऊ में जाकी घोड़े से गिर पड़ा।

सबल : यह तो तुमने बुरी खबर सुनाई। कोई पांच हजार का नुकसान हो गया।

कंचन : गल्ले का बाजार चढ़ गया। अगर अपना गेहूं दस दिन और न बेचता तो दो हजार साफ निकल आते।

सबल : पर आगम कौन जानता था।

कंचन : असामियों से एक कौड़ी वसूल होने की आशा नहीं। सुना है कई असामी घर छोड़कर भागने की तैयारी कर रहे हैं। बैल-बधिया बेचकर जाएंगे। कब तक लौटेंगे, कौन जानता है। मरें, जिएं, न जाने क्या हो ! यत्न न किया गया तो ये सब रुपये भी मारे जाएंगे। पांच हजार के माथे जाएगी। मेरी राय है कि उन पर डिगरी कराके जायदादें नीलाम करा ली जाएं। असामी सब-के-सब मातबर हैं; लेकिन ओलों ने तबाह कर दिया।

सबल : उनके नाम याद हैं ?

कंचन : सबके नाम तो नहीं, लेकिन दस-पांच नाम छांट लिए हैं। जगरांव का लल्लू, तुलसी, भूफोर, मधुबन का सीता, नब्बी, हलधर, चिरौंजी....

सबल : **(चौंककर)** हलधर के जिम्मे कितने रुपये हैं ?

कंचन : सूद मिलाकर कोई दो सौ पचास होंगे।

सबल : **(मन में)** बड़ी विकट समस्या है ! मेरे ही हाथों उसे यह कष्ट पहुंचे ! इसके पहले मैं इन हाथों को ही काट डालूंगा। उसकी एक दया-दृष्टि पर ऐसे-ऐसे कई ढाई सौ न्यौछावर हैं। वह मेरी है, उसे ईश्वर ने मेरे लिए बनाया है, नहीं तो मेरे मन में उसकी लगन क्यों होती। समाज के अनर्गल नियमों ने उसके और मेरे बीच यह लोहे की दीवार खड़ी कर दी है। मैं इस दीवार को खोद डालूंगा। इस कांटे को निकालकर फूल को गले में डाल लूंगा। सांप को हटाकर मणि को अपने हृदय में रख लूंगा। **(प्रकट)** और असामियों की जायदाद नीलाम करा सकते हो, हलधर की जायदाद नीलाम कराने के बदले मैं उसे कुछ दिनों हिरासत की हवा खिलाना चाहता हूं। वह बदमाश आदमी है, गांव वालों को भड़काता है। कुछ दिन जेल में रहेगा तो उसका मिजाज ठंडा हो जाएगा।

कंचन : हलधर देखने में तो बड़ा सीधा और भोला आदमी मालूम होता है।

सबल : बना हुआ है। तुम अभी उसके हथकंडों को नहीं जानते। मुनीम से कह देना, वह सब कार्रवाई कर देगा। तुम्हें अदालत में जाने की जरूरत नहीं।

कंचनसिंह का प्रस्थान।

सबल : **(आप-ही-आप)** ज्ञानियों ने सत्य ही कहा है कि काम के वश में पड़कर मनुष्य की विद्या, विवेक सब नष्ट हो जाते हैं। यदि वह नीच प्रकृति है तो मनमाना अत्याचार करके अपनी तृष्णा को पूरी करता है; यदि विचारशील है तो कपट-नीति से अपना मनोरथ सिद्ध करता है। इसे प्रेम नहीं कहते, यह है काम-लिप्सा। प्रेम पवित्र, उज्ज्वल, स्वार्थ-रहित, सेवामय, वासना-रहित वस्तु है। प्रेम वास्तव में ज्ञान है। प्रेम से संसार सृष्टि हुई, प्रेम से ही उसका पालन होता है। यह ईश्वरीय प्रेम है। मानव-प्रेम वह है जो जीव-मात्र को एक समझे, जो आत्मा की व्यापकता को चरितार्थ करे, जो प्रत्येक अणु में परमात्मा का स्वरूप देखे, जिसे अनुभूत हो कि प्राणी-मात्र एक ही प्रकाश की ज्योति है। प्रेम उसे कहते हैं। प्रेम के शेष जितने रूप हैं, सब

स्वार्थमय, पापमय हैं। ऐसे कोढ़ी को देखकर जिसके शरीर में कीड़े पड़ गए हों अगर हम विह्वल हो जाएं और उसे तुरंत गले लगा लें तो वह प्रेम है। सुंदर, मनोहर स्वरूप को देखकर सभी का चित्त आकर्षित होता है, किसी का कम, किसी का ज्यादा। जो साधनहीन हैं, क्रियाहीन हैं, या पौरुषहीन हैं वे कलेजे पर हाथ रखकर रह जाते हैं और दो-एक दिन में भूल जाते हैं। जो सम्पन्न हैं, चतुर हैं, साहसी हैं, उद्योगशील हैं, वह पीछे पड़ जाते हैं और अभीष्ट लाभ करके ही दम लेते हैं। यही कारण है कि प्रेम-वृत्ति अपने सामर्थ्य के बाहर बहुत कम जाती है। ज़ार की लड़की कितनी ही सर्वगुणपूर्ण हो पर मेरी वृत्ति उधर जाने का नाम न लेगी। वह जानती है कि वहां मेरी दाल न गलेगी। राजेश्वरी के विषय में मुझे संशय न था। वहां भय, प्रलोभन, नृशंसता, किसी युक्ति का प्रयोग किया जा सकता था। अंत में, यदि ये सब युक्तियां विफल होतीं तो....

अचलसिंह का प्रवेश।

अचल दादाजी, देखिए नौकर बड़ी गुस्ताखी करता है। अभी मैं फुटबाल देखकर आया हूं, कहता हूं, जूता उतार दे, लेकिन वह लालटेन साफ कर रहा है, सुनता ही नहीं। आप मुझे कोई अलग एक नौकर दे दीजिए, जो मेरे काम के सिवा और किसी का काम न करे।

सबल **(मुस्कराकर)** मैं भी एक गिलास पानी मागूं तो न दे ?

अचल आप हंसकर टाल देते हैं, मुझे तकलीफ होती है। मैं जाता हूं, इसे खूब पीटता हूं।

सबल बेटा, वह काम भी तो तुम्हारा ही है। कमरे में रोशनी न होती तो उसके सिर होते कि अब तक लालटेन क्यों नहीं जलाई। क्या हर्ज है, आज अपने ही हाथ से जूते उतार लो। तुमने देखा होगा, जरूरत पड़ने पर लेडियां तक अपने बक्स उठा लेती हैं। जब बम्बे मेल आती है तो ज़रा स्टेशन पर देखो।

अचल आज अपने जूते उतार लूं, कल को जूतों में रोगन भी आप ही लगा लूं, वह भी तो मेरा ही काम है, फिर खुद ही कमरे की सफाई भी करने लगूं; अपने हाथों टब भी भरने लगूं, धोती भी छांटने लगूं।

सबल : नहीं, यह सब करने को मैं नहीं कहता, लेकिन अगर किसी दिन नौकर न मौजूद हो तो जूता उतार लेने में कोई हानि नहीं है।

अचल : जी हां, मुझे यह मालूम है; मैं तो यहां तक मानता हूं कि एक मनुष्य को अपने दूसरे भाई से सेवा-टहल कराने का कोई अधिकार ही नहीं है। यहां तक कि साबरमती आश्रम में लोग अपने हाथों अपना चौका लगाते हैं, अपने बर्तन मांजते हैं और अपने कपड़े तक धो लेते हैं। मुझे इसमें कोई उज्र या इंकार नहीं है, मगर तब आप ही कहने लगेंगे—बदनामी होती है, शर्म की बात है, और अम्मांजी की तो नाक ही कटने लगेगी। मैं जानता हूं नौकरों के अधीन होना अच्छी आदत नहीं है। अभी कल ही हम लोग कण्व स्थान गए थे। हमारे मास्टर थे और पंद्रह लड़के। ग्यारह बजे दिन को धूप में चले। छतरी किसी के पास नहीं रहने दी गई। हां, लोटा-डोर साथ था। कोई एक बजे वहां पहुंचे। कुछ देर पेड़ के नीचे दम लिया। तब तालाब में स्नान किया। भोजन बनाने की ठहरी। घर से कोई भोजन करके नहीं गया था। फिर क्या था, कोई गांव से जिंस लाने दौड़ा, कोई उपले बटोरने लगा, दो-तीन लड़के पेड़ों पर चढ़कर लकड़ी तोड़ लाए, कुम्हार के घर से हांडियां और घड़े आए। पत्तों के पत्तल हमने खुद बनाए। आलू का भर्ता और बाटियां बनाई गईं। खाते-पकाते चार बज गए। घर लौटने की ठहरी। छः बजते-बजते यहां आ पहुंचे। मैंने खुद पानी खींचा, खुद उपले बटोरे। एक प्रकार का आनंद और उत्साह मालूम हो रहा था। यह ट्रिप **(क्षमा कीजिएगा अंग्रेजी शब्द निकल गया।)** चक्कर इसीलिए तो लगाया गया था जिसमें हम जरूरत पड़ने पर सब काम अपने हाथों से कर सकें, नौकरों के मोहताज न रहें।

सबल : इस चक्कर का हाल सुनकर मुझे बड़ी खुशी हुई। अब ऐसे गस्त की ठहरे तो मुझसे भी कहना, मैं भी चलूंगा। तुम्हारे अध्यापक महाशय को मेरे चलने में कोई आपत्ति तो न होगी ?

अचल : **(हंसकर)** वहां आप क्या कीजिएगा, पानी खींचिएगा ?

सबल : क्यों, कोई ऐसा मुश्किल काम नहीं है।

अचल : इन नौकरों में दो-चार अलग कर दिए जाएं तो अच्छा हो। इन्हें देखकर खामखाह कुछ-न-कुछ काम लेने का जी चाहता है। कोई आदमी सामने न हो तो आल्मारी से खुद किताब निकाल

लाता हूं, लेकिन कोई रहता है तो खुद नहीं उठता, उसी को उठाता हूं। आदमी कम हो जाएंगे तो यह आदत छूट जाएगी।

सबल : हां, तुम्हारा यह प्रस्ताव बहुत अच्छा है। इस पर विचार करूंगा। देखो, नौकर खाली हो गया, जाओ जूते खुलवा लो।

अचल : जी नहीं, अब मैं कभी नौकर से जूता उतरवाऊंगा ही नहीं, और न पहनूंगा। खुद ही पहन लूंगा, उतार लूंगा। आपने इशारा कर दिया वह क़ाफी है।

चला जाता है।

सबल : **(मन में)** ईश्वर तुम्हें चिरायु करें, तुम होनहार देख पड़ते हो। लेकिन कौन जानता है, आगे चलकर क्या रंग पकड़ोगे। मैं आज के तीन महीने पहले अपनी सच्चरित्रता पर घमंड करता था। वह घमंड एक क्षण में चूर-चूर हो गया। खैर होगा....अगर और अब देनदारों पर दावा न हो, केवल हलधर ही पर किया जाए तो घोर अन्याय होगा। मैं चाहता हूं दावे सभी पर किए जाएं, लेकिन जायदाद किसी की नीलाम न कराई जाए। असामियों को जब मालूम हो जाएगा कि हमने घर छोड़ा और जायदाद गई तो वह कभी न जाएंगे। उनके भागने का एक कारण यह भी होगा कि लगान कहां से देंगे। मैं लगान मुआफ कर दूं तो कैसा हो। मेरा ऐसा ज्यादा नुकसान न होगा। इलाके में सब जगह तो ओले गिरे नहीं हैं। सिर्फ दो-तीन गांवों में गिरे हैं, पांच हजार रुपये का मुआमला है। मुमकिन है इस मुआफी की खबर गवर्नमेंट को भी हो जाए और मुआफी का हुक्म दे दे, तो मुझे मुफ्त में यश मिल जाएगा और अगर सरकार न भी मुआफ करे तो इतने आदमियों का भला हो जाना ही कौन छोटी बात है ! रहा हलधर, उसे कुछ दिनों के लिए अलग कर देने से मेरी मुश्किल आसान हो जाएगी। यह काम ऐसे गुप्त रीति से होना चाहिए कि किसी को कानोंकान खबर न हो। लोग यही समझें कि कहीं परदेश निकल गया होगा। तब मैं एक बार फिर राजेश्वरी से मिलूं और तकदीर का फैसला कर लूं। तब उसे मेरे यहां आकर रहने में कोई आपत्ति न होगी। गांव में निरावलंब रहने से तो उसका चित्त स्वयं घबरा जाएगा। मुझे तो विश्वास है कि वह यहां सहर्ष चली आएगी। यही मेरा अभीष्ट है। मैं

केवल उसके समीप रहना, उसकी मृदु मुस्कान, उसकी मनोहर वाणी....

ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : स्वामीजी से आपकी भेंट हुई ?

सबल : हां।

ज्ञानी : मैं उनके दर्शन करने जाऊं ?

सबल : नहीं।

ज्ञानी : पाखंडी हैं न ? यह तो मैं पहले ही समझ गई थी।

सबल : नहीं, पाखंडी नहीं हैं, विद्वान् हैं, लेकिन मुझे किसी कारण से उनमें श्रद्धा नहीं हुई। पवित्रात्मा का यही लक्षण है कि वह दूसरों के हृदय में श्रद्धा उत्पन्न कर दे। अभी थोड़ी देर पहले मैं उनका भक्त था। पर इतनी देर में उनके उपदेशों पर विचार करने से ज्ञात हुआ कि उनसे तुम्हें ज्ञानोपदेश नहीं मिल सकता और न वह आशीर्वाद ही मिल सकता है, जिससे तुम्हारी मनोकामना पूरी हो।

तीसरा दृश्य

स्थान—मधुबन गांव।

समय—बैशाख, प्रातःकाल।

फत्तू : पांचों आदमियों पर डिगरी हो गई। अब ठाकुर साहब जब चाहें उनके बैल-बधिये नीलाम करा लें।

एक किसान : ऐसे निर्दयी तो नहीं हैं। इसका मतलब कुछ और ही है।

फत्तू : इसका मतलब मैं समझता हूं। दिखाना चाहते हैं कि हम जब चाहें असामियों को बिगाड़ सकते हैं। असामियों को घमंड न हो। फिर गांव में हम जो चाहें करें, कोई मुंह न खोले।

सबलसिंह के चपरासी का प्रवेश।

चपरासी : सरकार ने हुक्म दिया है कि असामी लोग जरा भी चिंता न करें। हम उनकी हर तरह मदद करने को तैयार हैं। जिन लोगों ने अभी तक लगान नहीं दिया है उनकी माफी हो गई। अब सरकार किसी से लगान न लेंगे। अगले साल के लगान के साथ

यह बकाया न वसूल की जायेगी। यह छूट सरकार की ओर से नहीं हुई है। ठाकुर साहब ने तुम लोगों की परवरिश के खयाल से यह रिआयत की है। लेकिन जो असामी परदेश चला जाएगा उसके साथ यह रिआयत न होगी। छोटे ठाकुर साहब ने देनदारों पर डिगरी कराई है। मगर उनका हुक्म भी यही है कि डिगरी जारी न की जाएगी। हां, जो लोग भागेंगे उनकी जायदाद नीलाम करा ली जाएगी। तुम लोग दोनों ठाकुरों को आशीर्वाद दो।

एक किसान : भगवान दोनों भाइयों की जुगुल जोड़ी सलामत रखें।

दूसरा : नारायन उनका कल्यान करें। हमको जिला लिया, नहीं तो इस विपत्ति में कुछ न सूझता था।

तीसरा : धन्य है उनकी उदारता को। राजा हो तो ऐसा दीनपालक हो। परमात्मा उनकी बढ़ती करे।

चौथा : ऐसा दानी देश में और कौन है। नाम के लिए सरकार को लाखों रुपये चंदा दे आते हैं, हमको कौन पूछता है। बल्कि वह चंदा भी हमीं से डंडे मार-मारकर वसूल कर लिया जाता है।

पहला : चलो, कल सब जने डेवढ़ी की जय मना आएं।

दूसरा : हां, कल भोरे चलो।

तीसरा : चलो देवी के चौरे पर चलकर जय-जयकार मनाएं।

चौथा : कहां है हलधर, कहो ढोल-मजीरा लेता चले।

फत्तू हलधर के घर जाकर खाली हाथ लौट आता है।

पहला किसान : क्या हुआ ? खाली हाथ क्यों आए ?

फत्तू : हलधर तो आज दो दिन से घर ही नहीं आया।

दूसरा किसान : उसकी घरवाली से पूछा, कहीं नातेदारी में तो नहीं गया।

फत्तू : वह तो कहती है कि कल सबेरे खांचा लेकर आम तोड़ने गए थे। तब से लौटकर नहीं आए।

सब-के-सब हलधर के द्वार पर आकर जमा हो जाते हैं। सलोनी और फत्तू घर में जाते हैं।

सलोनी : बेटा, तूने उसे कुछ कहा-सुना तो नहीं। उसे बात बहुत लगती है, लड़कपन से जानती हूं। गुड़ के लिए रोए, लेकिन मां झमककर गुड़ का पिंडा सामने फेंक दे तो कभी न उठाए। जब वह गोद में प्यार से बैठाकर गुड़ तोड़-तोड़ खिलाए तभी चुप हो।

फत्तू : यह बेचारी गऊ है, कुछ नहीं कहती-सुनती।

सलोनी : जरूर कोई-न-कोई बात हुई होगी, नहीं तो घर क्यों न आता ? इसने गहनों के लिए ताना दिया होगा, चाहे महीन साड़ी मांगी हो। भले घर की बेटी है न, इसे महीन साड़ी अच्छी लगती है।

राजेश्वरी : काकी, क्या मैं इतनी निकम्मी हूं कि देश में जिस बात की मनाही है वही करूंगी।

फत्तू बाहर आता है।

मंगरू : मेरे जान में तो उसे थाने वाले पकड़ ले गए।

फत्तू : ऐसा कुमारगी तो नहीं है कि थाने वालों की आंख पर चढ़ जाए।

हरदास : थाने वालों की भली कहते हो। राह चलते लोगों को पकड़ा करते हैं। आम लिए देखा होगा; कहा होगा, चल थाने पहुंचा आ।

फत्तू : ऐसा दबैल तो नहीं है, लेकिन थाने ही पर जाता तो अब तक लौट आना चाहिए था।

मंगरू : किसी के रुपये-पैसे तो नहीं आते थे।

फत्तू : और किसी के नहीं, ठाकुर कंचनसिंह के दो सौ रुपये आते हैं।

मंगरू : कहीं उन्होंने गिरफ्तार करा लिया हो।

फत्तू : सम्मन तक तो आया नहीं, नालिस कब हुई, डिगरी कब हुई। औरों पर नालिस हुई तो सम्मन आया, पेशी हुई, तजबीज सुनाई गई।

हरदास : बड़े आदमियों के हाथ में सब कुछ है, जो चाहें करा दें। राज उन्हीं का है, नहीं तो भला कोई बात है कि सौ-पचास रुपये के लिए आदमी गिरफ्तार कर लिया जाए, बाल-बच्चों से अलग कर दिया जाए, उसका सब खेती-बारी का काम रोक दिया जाए।

मंगरू : आदमी चोरी या और कोई कुन्याव करता है तब उसे कैद की सजा मिलती है। यहां महाजन बेकसूर हमें थोड़े-से रुपयों के लिए जेहल भेज सकता है। यह कोई न्याव थोड़े ही है।

हरदास : सरकार न जाने ऐसे कानून क्यों बनाती है। महाजन के रुपये आते हैं, जयदाद से ले, गिरफ्तार क्यों करे।

मंगरू : कहीं डमरा टापू वाले न बहका ले गए हों।

फत्तू : ऐसा भोला नहीं है कि उनकी बातों में आ जाए।

मंगरू : कोई जान-बूझकर उनकी बातों में थोड़े ही आता है। सब ऐसी-ऐसी पट्टी पढ़ाते हैं कि अच्छे-अच्छे धोखे में आ जाते हैं।

कहते हैं, इतना तलब मिलेगा, रहने को बंगला मिलेगा, खाने को वह मिलेगा जो यहां रईसों को भी नसीब नहीं, पहनने को रेशमी कपड़े मिलेंगे, और काम कुछ नहीं, बस खेत में जाकर ठंढे-ठंढे देख-भाल आए।

फत्तू : हां, यह तो सच है। ऐसी-ऐसी बातें सुनकर वह आदमी क्यों न धोखे में आ जाए जिसे कभी पेट-भर भोजन न मिलता हो। घास-भूसे से पेट भर लेना कोई खाना है। किसान पहर रात से पहर रात तक छाती फाड़ता है तब भी रोटी-कपड़े को नहीं होता, उस पर कहीं महाजन का डर, कहीं जगींदार की धौंस, कहीं पुलिस की डांट-डपट, कहीं अमलों की नजर-भेंट, कहीं हाकिमों की रसद-बेगार। सुना है जो लोग टापू में भरती हो जाते हैं उनकी बड़ी दुर्गत होती है। झोंपड़ी रहने को मिलती है और रात-दिन काम करना पड़ता है। जरा भी देर हुई तो अफसर कोड़ों से मारता है। पांच साल तक आने का हुकुम नहीं है, उस पर तरह-तरह की सखती होती रहती है। औरतों की बड़ी बेइज्जती होती है, किसी की आबरू बचने नहीं पाती। अफसर सब गोरे हैं, वह औरतों को पकड़ ले जाते हैं। अल्लाह न करे कि कोई उन दलालों के फंदे में फंसे ! पांच-छः साल में कुछ रुपये जरूर हो जाते हैं, पर उस लतखोरी से तो अपने देश की रूखी ही अच्छी। मुझे तो बिस्सास ही नहीं आता कि हलधर उनके फांसे में आ जाए।

हरदास : साधु लोग भी आदमियों को बहका ले जाते हैं।

फत्तू : हां, सुना तो है, मगर हलधर साधुओं की संगत में नहीं बैठा। गांजे-चरस की भी चाट नहीं कि इसी लालच से जा बैठता हो।

मंगरू : साधु आदमियों को बहकाकर क्या करते हैं ?

फत्तू : भीख मंगवाते हैं और क्या करते हैं। अपना टहल करवाते हैं, बर्तन मंजवाते हैं, गांजा भरवाते हैं। भोले आदमी समझते हैं, बाबाजी सिद्ध हैं, प्रसन्न हो जाएंगे तो एक चुटकी राख में मेरा भला हो जाएगा, मुकुत बन जाएगी वह घाते में। कुछ कामचोर निखट्टू ऐसे भी हैं जो केवल मीठे पदार्थों के लालच में साधुओं के साथ पड़े रहते हैं। कुछ दिनों में यही टहलुवे संत बन बैठते हैं और अपने टहल के लिए किसी दूसरे को मूंड़ते हैं। लेकिन हलधर न तो पेटू ही है, न कामचोर ही है।

हरदास : कुछ तुम्हारा मन कहता है वह किधर गया होगा ? तुम्हारा उसके साथ आठों पहर का उठना-बैठना है।

फत्तू : मेरी समझ में तो वह परदेश चला गया। दो सौ रुपये कंचनसिंह के आते थे। ब्याज समेत ढाई सौ रुपये होंगे। लगान की धौंस अलग। अभी दुधमुंहा बालक है, संसार का रंग-ढंग नहीं देखा, थोड़े में ही फूल उठता है और थोड़े में ही हिम्मत हार बैठता है। सोचा होगा, कहीं परदेश चलूं और मेहनत-मजूरी करके सौ-दो सौ ले आऊं। दो-चार दिन में चिट्ठी-पत्तर आएगी।

मंगरू : और तो कोई चिंता नहीं, मर्द है, जहां रहेगा, वहीं कमा खाएगा, चिंता तो उसकी घरवाली की है। अकेले कैसे रहेगी ?

हरदास : मैके भेज दिया जाए।

मंगरू : पूछो, जाएगी ?

फत्तू : पूछना क्या है, कभी न जाएगी। हलधर होता तो जाती। उसके पीछे कभी नहीं जा सकती।

राजेश्वरी : **(द्वार पर खड़ी होकर)** हां काका, ठीक कहते हो। अभी मैके चली जाऊं तो घर और गांव वाले यही न कहेंगे कि उनके पीछे गांव में दस-पांच दिन भी कोई देख-भाल करने वाला नहीं रहा तभी तो चली आई। तुम लोग मेरी कुछ चिंता न करो। सलोनी काकी को घर में सुला लिया करूंगी। और डर ही क्या है ? तुम लोग तो हो ही।

चौथा दृश्य

स्थान—हलधर का घर, राजेश्वरी और सलोनी आंगन में लेटी हुई हैं।

समय—आधी रात।

राजेश्वरी : **(मन में)** आज उन्हें गए दस दिन हो गए। मंगल-मंगल आठ, बुध नौ, वृहस्पत दस। कुछ खबर नहीं मिली, न कोई चिट्ठी न पत्तर। मेरा मन बारम्बार यही कहता है कि यह सब सबलसिंह की करतूत है। ऐसे दानी-धर्मात्मा पुरुष कम होंगे, लेकिन मुझ नसीबों जली के कारन उनका दान-धर्म मब मिट्टी में मिला जाता है। न जाने किस मनहूस घड़ी में मेरा जनम हुआ ! मुझमें ऐसा कौन-सा गुन है ? न मैं ऐसी सुदरी हूं, न इतने बनाव-सिंगार से रहती हूं, माना इस गांव में मुझसे सुंदर और कोई स्त्री

नहीं है। लेकिन शहर में तो एक-से-एक पड़ी हुई हैं। यह सब मेरे अभाग का फल है। मैं अभागिनी हूं। हिरन कस्तूरी के लिए मारा जाता है। मैना अपनी बोली के लिए पकड़ी जाती है। फूल अपनी सुगंध के लिए तोड़ा जाता है। मैं भी अपने रूप-रंग के हाथों मारी जा रही हूं।

सलोनी : क्या नींद नहीं आती बेटी ?

राजेश्वरी : नहीं काकी, मन बड़ी चिंता में पड़ा हुआ है। भला क्यों काकी, अब कोई मेरे सिर पर तो रहा नहीं, अगर कोई पुरुष मेरा धर्म बिगाड़ना चाहे तो क्या करूं ?

सलोनी : बेटी, गांव के लोग उसे पीसकर पी जाएंगे।

राजेश्वरी : गांव वालों पर बात खुल गई तब तो मेरे माथे पर कलंक लग ही जाएगा।

सलोनी : उसे दंड देना होगा। उससे कपट-प्रेम करके उसे विष पिला देना होगा। विष भी ऐसा कि फिर वह आंखें न खोले। भगवान को, चंद्रमा को, इन्द्र को जिस अपराध का दंड मिला था क्या, हम उसका बदला न लेंगी। यही हमारा धरम है। मुंह से मीठी-मीठी बातें करो पर मन में कटार छिपाए रखो।

राजेश्वरी : (मन में) हां, अब यही मेरा धरम है। अब छल और कपट से ही मेरी रक्षा होगी। वह धर्मात्मा सही, दानी सही, विद्वान सही, यह भी जानती हूं कि उन्हें मुझसे प्रेम है, सच्चा प्रेम है। वह मुझे पाकर मुग्ध हो जाएंगे, मेरे इशारों पर नाचेंगे, मुझ पर अपने प्राण न्यौछावर करेंगे। क्या मैं इस प्रेम के बदले कपट कर सकूंगी ? जो मुझ पर जान देगा, मैं उसके साथ कैसे दगा करूंगी ? यह बात मरदों में ही है कि जब वह किसी दूसरी स्त्री पर मोहित हो जाते हैं तो पहली स्त्री के प्राण लेने से भी नहीं हिचकते। भगवान्, यह मुझसे कैसे होगा ? (प्रकट) क्यों काकी, तुम अपनी जवानी में तो बड़ी सुंदर रही होगी ?

सलोनी : यह तो नहीं जानती बेटी, पर इतना जानती हूं कि तुम्हारे काका की आंखों में मेरे सिवा और कोई स्त्री जंचती ही न थी। जब तक चार-पांच लड़कों की मां न हो गई, पनघट पर न जाने दिया।

राजेश्वरी : बुरा न मानना काकी, यों ही पूछती हूं, उन दिनों कोई दूसरा आदमी तुम पर मोहित हो जाता और काका को जेहल भिजवा

देता तो तुम क्या करतीं ?

सलोनी : करती क्या, एक कटारी अंचल के नीचे छिपा लेती। जब वह मेरे ऊपर प्रेम के फूलों की वर्षा करने लगता, मेरे सुख-विलास के लिए संसार के अच्छे-अच्छे पदार्थ जमा कर देता, मेरे एक कटाक्ष पर, एक मुस्कान पर, एक भाव पर फूला न समाता, तो मैं उससे प्रेम की बातें करने लगती। जब उस पर नशा छा जाता, वह मतवाला हो जाता तो कटार निकालकर उसकी छाती में भोंक देती।

राजेश्वरी : तुम्हें उस पर तनिक भी दया न आती ?

सलोनी : बेटी, दया दीनों पर की जाती है कि अत्याचारियों पर? धर्म प्रेम के ऊपर है, उसी भांति जैसे सूरज चंद्रमा के ऊपर है। चंद्रमा की ज्योति देखने में अच्छी लगती है, लेकिन सूरज की ज्योति से संसार का पालन होता है।

राजेश्वरी : (मन में) भगवान्, मुझसे यह कपट-व्यवहार कैसे निभेगा ! अगर कोई दुष्ट, दुराचारी आदमी होता तो मेरा काम सहज था। उसकी दुष्टता मेरे क्रोध को भड़का देती है। भय तो इस पुरुष की सज्जनता से है। इससे बड़ा भय उसके निष्कपट प्रेम से है। कहीं प्रेम की तरंगों में बह तो न जाऊंगी, कहीं विलास में तो मतवाली न हो जाऊंगी। कहीं ऐसा तो न होगा कि महलों को देखकर मन में इस झोंपड़े का निरादर होने लगे, तकियों पर सोकर यह टूटी खाट गड़ने लगे, अच्छे-अच्छे भोजन के सामने इस रूखे-सूखे भोजन से मन फिर जाए; लौंडियों के हाथों पान की तरह फेरे जाने से यह मेहनत-मजूरी अखरने लगे। सोचने लगूं ऐसा सुख पाकर क्यों उस पर लात मारूं ? चार दिन की जिंदगानी है उसे छल-कपट, मरने-मारने में क्यों गंवाऊं? भगवान की जो इच्छा थी वह हुआ और हो रहा है। (प्रकट) काकी, कटार भोंकते हुए तुम्हें डर न लगता ?

सलोनी : डर किस बात का ? क्या मैं पछी से भी गई-बीती हूं। चिड़िया को सोने के पिंजरे में रखो, मेवे और मिठाई खिलाओ, लेकिन वह पिंजरे का द्वार खुला पाकर तुरंत उड़ जाती है। अब बेटी, सोओ, आधी रात से ऊपर हो गई। मैं तुम्हें गीत सुनाती हूं।

गाती है।

मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।

राजेश्वरी : (मन में) इन्हें गाने की पड़ी है। कंगाल होकर जैसे आदमी को चोर का भय नहीं रहता, न आगम की कोई चिंता, उसी भांति जब कोई आगे-पीछे नहीं रहता तो आदमी निश्चिंत हो जाता है। (प्रकट) काकी, मुझे भी अपनी भांति प्रसन्न-चित्त रहना सिखा दो।

सलोनी : ऐ, नौज बेटी ! चिंता धन और जन से होती है। जिसे चिंता न हो वह भी कोई आदमी है। वह अभागा है, उसका मुंह देखना पाप है। चिंता बड़े भागों से होती है। तुम समझती होगी, बुढ़िया हरदम प्रसन्न रहती है तभी तो गाया करती है। सच्ची बात यह है कि मैं गाती नहीं, रोती हूं। आदमी को बड़ा आनंद मिलता है तो रोने लगता है। उसी भांति जब दुख अथाह हो जाता है, तो गाने लगता है। इसे हंसी मत समझो, यह पागलपन है। मैं पगली हूं। पचास आदमियों का परिवार आंखों के सामने से उठ गया। देखें भगवान इस मिट्टी की कौन गत करते हैं।

गाती है।

मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।
ए जी पावन की, घर लावन की।
छोड़ काज अरु लाज जगत की।
निश दिन ध्यान लगावन की।। मुझे०।।
सुरत उजाली खुल गई ताली।
गगन महल में जावन की।। मुझे०।।
झिलमिल कारी जो निहारी।
जैसे बिजली सावन की।
मुझे लगन लगी प्रभु पावन की।।

बेटी, तुम हलधर का सपना तो नहीं देखती हो ?

राजेश्वरी : बहुत बुरे-बुरे सपने देखती हूं। इसी डर के मारे तो मैं और नहीं सोती। आंख झपकी और सपने दिखाई देने लगे।

सलोनी : कल से तुलसी माता को दिया चढ़ा दिया करो। एतवार-मंगल को पीपल में पानी दे दिया करो। महावीर सामी को लड्डू की मनौती कर दो। कौन जाने देवताओं के प्रताप से लौट आए। अच्छा, अब महावीर जी का नाम लेकर सो जाव। रात बहुत हो

गई है, दो घड़ी में भोर हो जाएगा।

सलोनी करवट बदलकर सोती है और खर्राटे भरने लगती है।

राजेश्वरी : (आप-ही-आप) बुढ़िया सो रही है, अब मैं चलने की तैयारी करूं। छत्री लोग रन पर जाते थे तो खूब सजकर जाते थे। मैं भी कपड़े-लत्ते से लैस हो जाऊं। वह पांचों हथियार लगाते थे। मेरे हथियार मेरे गहने हैं। वही पहन लेती हूं। वह केसर का तिलक लगाते थे, मैं सिंदूर का टीका लगा लेती हूं। वह मलिच्छों का संहार करने जाते थे, मुझे देवता का संहार करना है। भगवती तुम मेरी सहाय हो....लेकिन छत्री लोग तो हंसते हुए घर से विदा होते थे। मेरी आंखों में आंसू भरे आते हैं। आज यह घर छूटता है ! इसे सातवें दिन लीपती थी, त्योहारों पर पोतनी मिट्टी से पोतती थी। कितनी उमंग से आंगन में फुलवारी लगाती थी। अब कौन इनकी इतनी सेवा करेगा। दो ही चार दिनों में यहां भूतों का डेरा हो जाएगा। हो जाए ! जब घर का प्राणी ही नहीं रहा तो घर लेकर क्या करूं ? आह, पैर बाहर नहीं निकलते, जैसे दीवारें खींच रही हों। इनसे गले मिल लूं। गाय-भैंस कितने साध से ली थीं। अब इनसे भी नाता टूटता है। दोनों गाभिन हैं। इनके बच्चों को भी न खेलाने पाई। बेचारी हुड़क-हुड़ककर मर जाएंगी। कौन इन्हें मुंह अंधेरे भूसा-खली देगा, कौन इन्हें तलाब में नहलाएगा। दोनों मुझे देखते ही खड़ी हो गईं। मेरी ओर मुंह बढ़ा रही है, पूछ रही हैं कि आज कहां की तैयारी है ? हाय ! कैसे प्रेम से मेरे हाथों को चाट रही हैं ! इनकी आंखों में कितना प्यार है ! आओ, आज चलते-चलते तुम्हें अपने हाथों से दाना खिला दूं ! हा भगवान् ! दाना नहीं खातीं, मेरी ओर मुंह करके ताकती हैं। समझ रही हैं कि यह इस तरह बहला कर हमें छोड़े जाती है। इनके पास से कैसे जाऊं ? रस्सी तुड़ा रही हैं, हुंकार मार रही हैं। वह देखो, बैल भी उठ बैठे। वह गए, इन बेचारों की सेवा न हो सकी। वह इन्हें घंटों सुहलाया करते थे। लोग कहते हैं तुम्हें आने वाली बातें मालूम हो जाती हैं। कुछ-तुम ही बताओ, वह कहां हैं, कैसे हैं, कब आएंगे ? क्या अब कभी उनकी सूरत देखनी न नसीब होगी ? ऐसा जान पड़ता है,

इनकी आंखों में आंसू भरे हैं। जाओ, अब तुम सभी को भगवान के भरोसे छोड़ती हूं। गांव वालों को दया आएगी तो तुम्हारी सुधि लेंगे, नहीं तो यहीं भूखे रहोगे। फत्तू मियां तुम्हारी सेवा करेंगे। उनके रहते तुम्हें कोई कष्ट न होगा। वह दो आंखें भी न करेंगे कि अपने बैलों को दाना और खली दें, तुम्हारे सामने सूखा भूसा डाल दें। लो, अब विदा होती हूं। भोर हो रहा है, तारे मद्धिम पड़ने लगे। चलो मन, इस रोने-बिसूरने से काम न चलेगा ! अब तो मैं हूं और प्रेम-कौशल का रनछेत्र है। भगवती का और उनसे भी अधिक अपनी दृढ़ता का भरोसा है।

पांचवां दृश्य

स्थान—सबलसिंह का दीवानखाना, खस की टट्टियां लगी हुईं, पंखा चल रहा है। सबल शीतलपाटी पर लेटे हुए डेमोक्रेसी नामक ग्रंथ पढ़ रहे हैं, द्वार पर एक दरबान बैठा झपकियां ले रहा है।

समय—दोपहर, मध्याह्न की प्रचंड धूप।

सबल : हम अभी जनसत्तात्मक राज्य के योग्य नहीं हैं, कदापि नहीं हैं। ऐसे राज्य के लिए सर्वसाधारण में शिक्षा की प्रचुर मात्रा होनी चाहिए। हम अभी उस आदर्श से कोसों दूर हैं। इसके लिए महान स्वार्थ-त्याग की आवश्यकता है। जब तक प्रजा-मात्र स्वार्थ को राष्ट्र पर बलिदान करना नहीं सीखती, इसका स्वप्न देखना मन की मिठाई खाना है। अमरीका, फ्रांस, दक्षिणी अमरीका आदि देशों ने बड़े समारोह से इसकी व्यवस्था की, पर उनमें से किसी को भी सफलता नहीं हुई। वहां अब भी धन और सम्पत्ति वालों के ही हाथों में अधिकार है। प्रजा अपने प्रतिनिधि कितनी ही सावधानी से क्यों न चुने, पर अंत में सत्ता गिने-गिनाए आदमियों के ही हाथों में चली जाती है। सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था ही ऐसी दूषित है कि जनता का अधिकांश मुट्ठी भर आदमियों के वंशवर्ती हो गया है। जनता इतनी निर्बल, इतनी अशक्त है कि इन शक्तिशाली पुरुषों के सामने सिर नहीं उठा सकती। यह व्यवस्था अपवादमय, विनष्टकारी और अत्याचारपूर्ण है। आदर्श व्यवस्था यह है कि सबके अधिकार बराबर हों, कोई जमींदार बनकर, कोई महाजन

बनकर जनता पर रोब न जमा सके। यह ऊंच-नीच का घृणित भेद उठ जाए। इस सबल-निबल संग्राम में जनता की दशा बिगड़ती चली जाती है। इसका सबसे भयंकर परिणाम यह है कि जनता आत्मसम्मान-विहीन होती जाती है, उसमें प्रलोभनों का प्रतिकार करने, अन्याय का सिर कुचलने की सामर्थ्य नहीं रही। छोटे-छोटे स्वार्थ के लिए बहुधा भयवश कैसे-कैसे अनर्थ हो रहे हैं। ....(मन में) कितनी यथार्थ बात लिखी है। आज ऐसा कोई असामी नहीं है जिसके घर में मैं अपने दुष्टाचरण का तीर न चला सकूं। मैं कानून के बल से, भय के बल से, प्रलोभन के बल से अपना अभीष्ट पूरा कर सकता हूं। अपनी शक्ति का ज्ञान हमारे दुस्साहस को, कुभावों को और भी उत्तेजित कर देता है। खैर ! हलधर को जेल गए हुए आज दसवां दिन है, मैं गांव की तरफ नहीं गया। न जाने राजेश्वरी पर क्या गुजर रही है। कौन मुंह लेकर जाऊं ? अगर कहीं गांव वालों को यह चाल मालूम हो गई होगी तो मैं वहां मुंह भी न दिखा सकूंगा। राजेश्वरी को अपनी दशा चाहे कितनी कष्टप्रद जान पड़ती हो, पर उसे हलधर से प्रेम है। हलधर का द्रोही बनकर मैं उसके प्रेम-रस को नहीं पा सकता। क्यों न कल चला जाऊं, इस उधेड़-बुन में कब तक पड़ा रहूंगा। अगर गांव वालों पर यह रहस्य खुल गया होगा तो मैं विस्मय दिखाकर कह सकता हूं कि मुझे खबर नहीं है, आज ही पता लगाता हूं। सब तरह उनकी दिलजोई करनी होगी और हलधर को मुक्त कराना पड़ेगा। सारी बाजी इसी दांव पर निर्भर है। मेरी भी क्या हालत है, पढ़ता हूं डेमोक्रेसी और....अपने को धोखा देना व्यर्थ है। यह प्रेम नहीं है, केवल काम-लिप्सा है। प्रेम दुर्लभ वस्तु है, यह उस अधिकार का जो मुझे असामियों पर है, दुरुपयोग-मात्र है।

दरबान आता है।

सबल : क्या है ? मैंने कह दिया है इस वक्त मुझे दिक मत किया करो। क्या मुखतार आए हैं ? उन्हें और कोई वक्त ही नहीं मिलता ?

दरबान : जी नहीं, मुखतार नहीं आए हैं। एक औरत है।

सबल : औरत है ? कोई भिखारिन है क्या ? घर में से कुछ लाकर दे दो।

तुम्हें जरा भी तमीज नहीं है, जरा-सी बात के लिए मुझे दिक किया।

दरबान : हुजूर, भिखारिन नहीं है। अभी फाटक पर एक्के पर से उतरी है। खूब गहने पहने हुई है। कहती है, मुझे राजा साहब से कुछ कहना है।

सबल : **(चौंककर)** कोई देहातिन होगी। कहां है ?

दरबान : वहीं मौलसरी के नीचे बैठी है।

सबल : समझ गया, ब्राह्मणी है, अपने पति के लिए दवा मांगने आई है। **(मन में)** वही होगी। दिल कैसा धड़कने लगा। दोपहर का समय है। नौकर-चाकर सब सो रहे होंगे। दरबान को बरफ लाने के लिए बाजार भेज दूं। उसे बगीचे वाले बंगले में ठहराऊं। **(प्रकट)** उसे भेज दो और तुम जाकर बाजार से बरफ लेते आओ।

दरबान चला जाता है। राजेश्वरी आती हैं। सबलसिंह तुरंत उठकर उसे बगीचे वाले बंगले में ले जाते हैं।

राजेश्वरी : आप तो टट्टी लगाए आराम कर रहे हैं और मैं जलती हुई धूप में मारी-मारी फिर रही हूं। गांव की ओर जाना ही छोड़ दिया। सारा शहर भटक चुकी तो मकान का पता मिला।

सबल : क्या कहूं, मेरी हिमाकत से तुम्हें इतनी तकलीफ हुई, बहुत लज्जित हूं। कई दिन से आने का इरादा करता था पर किसी-न-किसी कारण से रुक जाना पड़ता था। बरफ आती होगी, एक गिलास शर्बत पी लो तो यह गरमी दूर हो जाए।

राजेश्वरी : आपकी कृपा है, मैंने बरफ कभी नहीं पी है। आप जानते हैं, मैं यहां क्या करने आई हूं ?

सबल : दर्शन देने के लिए।

राजेश्वरी : जी नहीं, मैं ऐसी निःस्वार्थ नहीं हूं। आई हूं आपके घर में रहने; आपका प्रेम खींच लाया है। जिस रस्सी में बंधी हुई थी वह टूट गई। उनका आज दस-ग्यारह दिन से कुछ पता नहीं है। मालूम होता है कहीं देस-विदेस भाग गए। फिर मैं किसकी होकर रहती। सब छोड़-छाड़कर आपकी सरन आई हूं, और सदा के लिए। उस ऊजड़ गांव से जी भर गया।

सबल : तुम्हारा घर है, आनंद से रहो। धन्य भाग कि मुझे आज यह

अवसर मिला। मैं इतना भाग्यवान हूं, मुझे इसका विश्वास ही न था। मेरी तो यह हालत हो रही है—

हमारे घर में वह आएं, खुदा की कुदरत है।
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।।

ऐसा बौखला गया हूं कि कुछ समझ में ही नहीं आता, तुम्हारी कैसे खिदमत करूं।

राजेश्वरी मुझे इसी बंगले में रहना होगा ?

सबल ऐसा होता तो क्या पूछना था, पर यहां बखेड़ा है, बदनामी होगी। मैं आज ही शहर में एक अच्छा मकान ठीक कर लूंगा। सब इंतजाम वहीं हो जाएगा।

राजेश्वरी **(प्रेम कटाक्ष से देखकर)** प्रेम करते हो और बदनामी से डरते हो। यह कच्चा प्रेम है।

सबल **(झेंपकर)** अभी नया रंगरूट हूं न ?

राजेश्वरी **(सजल नेत्रों से)** मैंने अपना सर्वस आपको दे दिया। अब मेरी लाज आपके हाथ है।

सबल **(उसके दोनों हाथ पकड़कर तस्कीन देते हुए)** राजेश्वरी, मैं तुम्हारी इस कृपा को कभी न भूलूंगा। मुझे भी आज से अपना सेवक, अपना चाकर, जो चाहे समझो।

राजेश्वरी **(मुस्कराकर)** आदमी अपने सेवक की सरन नहीं जाता, अपने स्वामी की सरन आता है। मालूम नहीं आप मेरे मन के भावों को जानते हैं या नहीं, पर ईश्वर ने आपको इतनी विद्या और बुद्धि दी है, आपसे कैसे छिपा रह सकता है। मैं आपके प्रेम, केवल आपके प्रेम के वश होकर आई हूं। पहली बार जब आपकी निगाह मुझ पर पड़ी तो उसने मुझ पर मंत्र-सा फूंक दिया। मुझे उसमें प्रेम की झलक दिखाई दी। तभी से मैं आपकी हो गई। मुझे भोगविलास की इच्छा नहीं, मैं केवल आपको चाहती हूं। आप मुझे झोंपड़ी में रखिए, मुझे गजी-गाढ़ा पहनाइए, मुझे उनमें भी सरग का आनंद मिलेगा। बस आपकी प्रेम-दिरिष्ट मुझ पर बनी रहे।

सबल **(गर्व के साथ)** मैं जिंदगी-भर तुम्हारा रहूंगा और केवल तुम्हारा। मैंने उच्च कुल में जन्म पाया। घर में किसी चीज की कमी नहीं थी। मेरा पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से हुआ, जैसा रईसों के लड़कों का होता है। घर में बीसियों युवती महरियां, महराजिनें

थीं। उधर नौकर-चाकर भी मेरी कुवृत्तियों को भड़काते रहते थे। मेरे चरित्र-पतन के सभी सामान जमा थे। रईसों के अधिकांश युवक इसी तरह भ्रष्ट हो जाते हैं। पर ईश्वर की मुझ पर कुछ ऐसी दया थी कि लकड़पन ही से मेरी प्रवृत्ति विद्याभ्यास की ओर थी और उसने युवावस्था में भी साथ न छोड़ा। मैं समझने लगा था, प्रेम कोई वस्तु ही नहीं, केवल कवियों की कल्पना है। मैंने एक-से-एक यौवनवती सुंदरियां देखी हैं, पर कभी मेरा चित्त विचलित नहीं हुआ। तुम्हें देखकर पहली बार मेरी हृदयवीणा के तारों में चोट लगी। मैं इसे ईश्वर की इच्छा के सिवाय और क्या कहूं। तुमने पहली ही निगाह में मुझे प्रेम का प्याला पिला दिया, तब से आज तक उसी नशे में मस्त था। बहुत उपाय किए, कितनी ही खटाइयां खाईं पर यह नशा न उतरा। मैं अपने मन के इस रहस्य को अब तक नहीं समझ सका। राजेश्वरी, सच कहता हूं, मैं तुम्हारी ओर से निराश था। समझता था, अब यह जिंदगी रोते ही कटेगी, पर भाग्य को धन्य है कि आज घर बैठे देवी के दर्शन हो गए और जिस वरदान की आशा थी, वह भी मिल गया।

राजेश्वरी : मैं एक बात कहना चाहती हूं, पर संकोच के मारे नहीं कह सकती।

सबल : कहो-कहो मुझसे क्या संकोच ! मैं कोई दूसरा थोड़े ही हूं।

राजेश्वरी : न कहूंगी, लाज आती है।

सबल : तुमने मुझे चिंता में डाल दिया, बिना सुने मुझे चैन न आएगा।

राजेश्वरी : कोई ऐसी बात नहीं है, सुनकर क्या कीजिएगा !

सबल : **(राजेश्वरी के दोनों हाथ पकड़कर)** बिना कहे न जाने दूंगा, कहना पड़ेगा।

राजेश्वरी : **(असमंजस में पड़कर)** मैं सोचती हूं, कहीं आप यह समझें कि जब यह अपने पति की होकर न रही तो मेरी होकर क्या रहेगी। ऐसी चंचल औरत का क्या ठिकाना....

सबल : बस करो राजेश्वरी, अब और कुछ मत कहो। तुमने मुझे इतना नीच समझ लिया। अगर मैं तुम्हें अपना हृदय खोलकर दिखा सकता तो तुम्हें मालूम होता कि मैं तुम्हें क्या समझता हूं। वह घर, उस घर के प्राणी, वह समाज, तुम्हारे योग्य न थे। गुलाब की शोभा बाग में है, घूर पर नहीं। तुम्हारा वहां रहना उतना

अस्वाभाविक था जितना सुअर के माथे पर सेंदुर का टीका होता है या झोंपड़ी में झाड़। वह जलवायु तुम्हारे सर्वथा प्रतिकूल थी। हंस मरुभूमि में नहीं रहता। इसी तरह अगर मैं सोचूं, कहीं तुम यह न समझो कि जब यह अपनी विवाहिता स्त्री का न हुआ तो मेरा क्या होगा, तो ?

राजेश्वरी : (गंभीरता से) मुझमें और आप में बड़ा अंतर है।

सबल : यह बातें फिर होंगी, इस वक्त आराम करो, थक गई होगी। पंखा खोले देता हूं। सामने वाली कोठरी में पानी-वानी सब रखा हुआ है। मैं अभी आता हूं।

छठा दृश्य

सबलसिंह का भवन। गुलाबी और ज्ञानी फर्श पर बैठी हुई हैं। बाबा चेतनदास गालीचे पर मसनद लगाए लेटे हुए हैं। रात के आठ बजे हैं।

गुलाबी : आज महात्माजी ने बहुत दिनों के बाद दर्शन दिए।

ज्ञानी : मैंने समझा था कहीं तीर्थ करने चले गए होंगे।

चेतनदास : माताजी मेरे को अब तीर्थयात्रा से क्या प्रयोजन ? ईश्वर तो मन में है, उसे पर्वतों के शिखर और नदियों के तट पर क्यों खोजूं ? वह घट-घटव्यापी है, वही तुममें है, वही मुझमें है, उसी की अखिल ज्योति है। यह विभिन्नता केवल बहिर्जगत में है, अंतर्जगत में कोई भेद नहीं है। मैं अपनी कुटी में बैठा हुआ ध्यानावस्था में अपने भक्तों से साक्षात् करता रहा हूं। यह मेरा नित्य का नियम है।

गुलाबी : (ज्ञानी से) महात्माजी अंतरजामी हैं। महाराज, मेरा लड़का मेरे कहने में नहीं है। बहू ने उस पर न जाने कौन-सा मंत्र डाल दिया है कि मेरी बात ही नहीं पूछता। जो कुछ कमाता है वह लाकर बहू के हाथ में देता है, वह चाहे कान पकड़कर उठाए या बैठाए, बोलता ही नहीं। कुछ ऐसा उतजोग कीजिए कि वह मेरे कहने में हो जाए, बहू की ओर से उसका चित्त फिर जाए। बस यही मेरी लालसा है।

चेतनदास : (मुस्कराकर) बेटे को बहू के लिए ही तो पाला पोसा था। अब वह बहू का हो रहा तो तेरे को क्यों ईर्ष्या होती है ?

ज्ञानी : महाराज, वह स्त्री के पीछे इस बेचारी से लड़ने पर तैयार हो

जाता है।

चेतनदास : वह कोई बात नहीं है। मैं उसे मोम की भांति जिधर चाहूं फेर सकता हूं, केवल इसको मुझ पर श्रद्धा रखनी चाहिए। श्रद्धा, श्रद्धा, श्रद्धा; यही अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति का मूलमंत्र है। श्रद्धा से ब्रह्म मिल जाता है। पर श्रद्धा उत्पन्न कैसे हो ? केवल बातों ही से श्रद्धा उत्पन्न नहीं हो सकती। वह कुछ देखना चाहती है। बोलो, क्या दिखाऊं ? तुम दोनों मन में कोई बात ले लो। मैं अपने योगबल से अभी बतला दूंगा। ज्ञानी देवी, पहले तुम मन में कोई बात लो।

ज्ञानी : ले लिया, महाराज !

चेतनदास : **(ध्यान करके)** बड़ी दूर चली गईं। 'मोतियों का हार' है न ?

ज्ञानी : हां महाराज, यही बात थी।

चेतनदास : गुलाबी, अब तुम कोई बात लो।

गुलाबी : ले ली, महाराज !

चेतनदास : **(ध्यान करके, मुस्कराकर)** बहू से इतना द्वेष—'वह मर जाए?'

गुलाबी : हां, महाराज, यही बात थी। आप सचमुच अंतरजामी हैं।

चेतनदास : कुछ और देखना चाहती हो ? बोलो, क्या वस्तु यहां मंगवाऊं ? मेवा, मिठाई, हीरे, मोती इन सब वस्तुओं के ढेर लगा सकता हूं। अमरूद के दिन नहीं हैं, जितना अमरूद चाहो मंगवा दूं। भेजो प्रभूजी, भेजो, तुरत भेजो—

मोतियों का ढेर लगता है।

गुलाबी : आप सिद्ध हैं।

ज्ञानी : आपकी चमत्कार-शक्ति को धन्य है !

चेतनदास : और क्या देखना चाहती हो ? कहो, यहां से बैठे-बैठे अंतरध्यान हो जाऊं और फिर यहीं बैठा हुआ मिलूं। कहो, वहां उस वृक्ष के नीचे तुम्हें नेपथ्य में गाना सुनाऊं। हां, यही अच्छा है। देवगण तुम्हें गाना सुनाएंगे, पर तुम्हें उनके दर्शन न होंगे। उस वृक्ष के नीचे चली जाओ।

दोनों जाकर पेड़ के नीचे खड़ी हो जाती हैं। गाने की ध्वनि आने लगती है।

बाहिर ढूंढ़न जा मत सजनी,
पिया घर बीच बिराज रहे री।।
गगन महल में सेज बिछी है
अनहद बाजे बाज रहे री।।
अमृत बरसे, बिजली चमके
घुमर-घुमर घन गाज रहे री।।

ज्ञानी : ऐसे महात्माओं के दर्शन दुर्लभ होते हैं।

गुलाबी : पूर्वजन्म में बहुत अच्छे कर्म किए थे। यह उसी का फल है।

ज्ञानी : देवताओं को भी बस में कर लिया है।

गुलाबी : जोगबल की बड़ी महिमा है। मगर देवता बहुत अच्छा नहीं गाते। गला दबाकर गाते हैं क्या ?

ज्ञानी : पगला गई है क्या ! महात्माजी अपनी सिद्धि दिखा रहे हैं कि तुम्हारे लिए देवताओं की संगीत-मंडली खड़ी की है।

गुलाबी : ऐसे महात्मा को राजा साहब धूर्त कहते हैं।

ज्ञानी : बहुत विद्या पढ़ने से आदमी नास्तिक हो जाता है। मेरे मन में तो इनके प्रति भक्ति और श्रद्धा की एक तरंग-सी उठ रही है। कितना देवतुल्य स्वरूप है।

गुलाबी : कुछ भेंट-भांट तो लेंगे नहीं ?

ज्ञानी : अरे राम-राम ! महात्माओं को रुपये-पैसे का क्या मोह? देखती तो हो कि मोतियों के ढेर सामने लगे हुए हैं, किस चीज की कमी है ?

दोनों कमरे में आती हैं। गाना बंद होता है।

ज्ञानी : अरे ! महात्माजी कहां चले गए ? यहां से उठते तो नहीं देखा।

गुलाबी : उनकी माया कौन जाने ! अंतरध्यान हो गए होंगे।

ज्ञानी : कितनी अलौकिक लीला है !

गुलाबी : अब मरते दम तक इनका दामन न छोडूंगी। इन्हीं के साथ रहूंगी और सेवा-टहल करती रहूंगी।

ज्ञानी : मुझे तो पूरा विश्वास है कि मेरा मनोरथ इन्हीं से पूरा होगा।

सहसा चेतनदास मसनद लगाए बैठे दिखाई देते हैं।

गुलाबी : **(चरणों पर गिरकर)** धन्य हो महाराज, आपकी लीला अपरम्पार है।

ज्ञानी : **(चरणों पर गिरकर)** भगवान्, मेरा उद्धार करो।

चेतनदास : कुछ और देखना चाहती है ?

ज्ञानी : *महाराज, बहुत देख चुकी। मुझे विश्वास हो गया कि आप मेरा मनोरथ पूरा कर देंगे।*

चेतनदास : जो कुछ मैं कहूं वह करना होगा।

ज्ञानी : सिर के बल करूंगी।

चेतनदास : कोई शंका की तो परिणाम बुरा होगा।

ज्ञानी : **(कांपती हुई)** अब मुझे कोई शंका नहीं हो सकती। जब आपकी शरण आ गई तो कैसी शंका ?

चेतनदास : **(मुस्कराकर)** अगर आज्ञा दूं, कुएं में कूद पड़ !

ज्ञानी : तुरंत कूद पड़ूंगी। मुझे विश्वास है कि उससे भी मेरा कल्याण होगा।

चेतनदास : अगर कहूं, अपने सब आभूषण उतारकर मुझे दे दे तो मन में यह तो न कहेगी, इसीलिए यह जाल फैलाया था, धूर्त है।

ज्ञानी : **(चरणों में गिरकर)** महाराज, आप प्राण भी मांगें तो आपकी भेंट करूंगी।

चेतनदास : अच्छा अब जाता हूं। परीक्षा के लिए तैयार रहना।

सातवां दृश्य

समय—प्रातःकाल, ज्येष्ठ।

स्थान—गंगा का तट। राजेश्वरी एक सजे हुए कमरे में मसनद लगाए बैठी है। दो-तीन लौंडियां इधर-उधर दौड़कर काम कर रही हैं। सबलसिंह का प्रवेश।

सबल : अगर मुझे उषा का चित्र खींचना हो तो तुम्हीं को नमूना बनाऊं। तुम्हारे मुख पर मंद समीरण से लहराते हुए केश ऐसी शोभा दे रहे हैं मानो....

राजेश्वरी : दो नागिनें लहराती चली जाती हों, किसी प्रेमी को डसने के लिए।

सबल : तुमने हंसी में उड़ा दिया, मैंने बहुत ही अच्छी उपमा सोची थी।

राजेश्वरी : खैर, यह बताइए तीन दिन तक दर्शन क्यों नहीं दिया।

सबल : **(असमंजस में पड़कर)** मैंने समझा शायद मेरे रोज आने से किसी को संदेह हो जाए।

राजेश्वरी : मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं है। आपको यहां नित्य आना होगा।

आपको क्या मालूम है कि यहां किस तरह तड़प-तड़पकर दिन काटती हूं।

सबल : राजेश्वरी, मैं अपनी दशा कैसे दर्शाऊं। बस, यही समझ लो जैसे पानी बिना मछली के तड़पती हो। न सैर करने को जी चाहता है, न घर से निकलने का, न किसी से मिलने-जुलने को यहां तक कि सिनेमा देखने को भी जी नहीं चाहता। जब यहां आने लगता हूं तो ऐसी प्रबल उत्कंठा होती है कि उड़कर आ पहुंचूं। जब यहां से चलता हूं तो ऐसा जान पड़ता है कि मुकदमा हार आया हूं। राजेश्वरी, पहले मेरी केवल यही इच्छा थी कि तुम्हें आंखों से देखता रहूं, तुम्हारी मधुर वाणी सुनता रहूं। तुम्हें अपनी देवी बनाकर पूजना चाहता था, पर जैसे ज्वर में जल से तृप्ति नहीं होती, जैसे नई सभ्यता में विलास की वस्तुओं से तृप्ति नहीं होती, वैसे ही प्रेम का भी हाल है; वह सर्वस्व देना और सर्वस्व लेना चाहता है। इतना यत्न करने पर भी घर के लोग मुझे चिंतित नेत्रों से देखने लगे हैं। उन्हें मेरे स्वभाव में कोई ऐसी बात नजर आती है जो पहले नहीं आती थी। न जाने इसका क्या अंत होगा !

राजेश्वरी : इसका जो अंत होगा वह मैं जानती हूं और उसे जानते हुए मैंने इस मार्ग पर पांव रखा है। पर उन चिंताओं को छोड़िए। जब ओखली में सिर दिया है तो मूसलों का क्या डर ! मैं यही चाहती हूं कि आप दिन में किसी समय अवश्य आ जाया करें। आपको देखकर मेरे चित्त की ज्वाला शांत हो जाती है, जैसे जलते हुए घाव पर मरहम लग जाए। अकेले मुझे डर भी लगता है कि कहीं वह हलजोत किसान मेरी टोह लगाता हुआ आ न पहुंचे। यह भय सदैव मेरे हृदय पर छाया रहता है। उसे क्रोध आता है तो वह उन्मत्त हो जाता है। उसे जरा भी खबर मिल गई तो मेरी जान की खैरियत नहीं है।

सबल : उसकी जरा भी चिंता मत करो। मैंने उसे हिरासत में रखवा दिया है। वहां छह महीने तक रखूंगा। अभी तो एक महीने से कुछ ही ऊपर हुआ है। छह महीने के बाद देखा जाएगा। रुपये कहां हैं कि देकर छूटेगा !

राजेश्वरी : क्या जाने उसके गाय-बैल कहां गए ? भूखों मर गए होंगे।

सबल : नहीं, मैंने पता लगाया था। वह बुड्ढा मुसलमान फत्तू उसके

सब जानवरों को अपने घर ले गया है और उनकी अच्छी तरह सेवा करता है।

राजेश्वरी : यह सुनकर चिंता मिट गई। मैं डरती थी कहीं सब जानवर मर गए हों तो हमें हत्या लगे।

सबल : **(घड़ी देखकर)** यहां आता हूं तो समय के पर-से लग जाते हैं। मेरा बस चलता तो एक-एक मिनट के एक-एक घंटे बना देता।

राजेश्वरी : और मेरा बस चलता तो एक-एक घंटे के एक-एक मिनट बना देती। जब प्यास-भर पानी न मिले तो पानी में मुंह ही क्यों लगाए। जब कपड़े पर रंग के छींटे ही डालने हैं तो उसका उजला रहना ही अच्छा। अब मन को समेटना सीखूंगी।

सबल : प्रिय....

राजेश्वरी : **(बात काटकर)** इस पवित्र शब्द को अपवित्र न कीजिए।

सबल : **(सजल नयन होकर)** मेरी इतनी याचना तुम्हें स्वीकार करनी पड़ेगी। प्रिये, मुझे अनुभव हो रहा है कि यहां रहकर हम आनंदमय प्रेम का स्वर्ग-सुख न भोग सकेंगे। क्यों न हम किसी सुरम्य स्थान पर चलें जहां विघ्न और बाधाओं, चिंताओं और शंकाओं से मुक्त होकर जीवन व्यतीत हो। मैं कह सकता हूं कि मुझे जलवायु परिवर्तन के लिए किसी स्वास्थ्यकर स्थान की जरूरत है; जैसे गढ़वाल, आबू पर्वत या रांची।

राजेश्वरी : लेकिन ज्ञानी देवी को क्या कीजिएगा? क्या वह साथ न चलेंगी?

सबल : बस यही एक रुकावट है। ऐसा कौन-सा यत्न करूं कि वह मेरे साथ चलने पर आग्रह न करे। इसके साथ ही कोई संदेह भी न हो।

राजेश्वरी : ज्ञानी सती हैं, वह किसी तरह यहां न रहेंगी। यूं आप दस-पांच दिन, या एक-दो महीने के लिए कहीं जाएं तो वह साथ न जाएंगी, लेकिन जब उन्हें मालूम होगा कि आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं है तब वह किसी तरह न रुकेंगी। और यह बात भी है कि ऐसी सती स्त्री को मैं दु:खी नहीं करना चाहती। मैं तो केवल आपका प्रेम चाहती हूं। उतना ही जितना ज्ञानी से बचे। मैं उनका अधिकार नहीं छीनना चाहती। मैं उनके पैरों की धूल के बराबर भी नहीं हूं। मैं उनके घर में चोर की भांति घुसी हूं।

उनसे मेरी क्या बराबरी। आप उन्हें दुःखी किए बिना मुझ पर जितनी कृपा कर सकते हैं उतनी कीजिए।

सबल : **(मन में)** कैसे पवित्र विचार हैं ! ऐसा नारी-रत्न पाकर मैं उसके सुख से वंचित हूं। मैं कमल तोड़ने के लिए क्यों पानी में घुसा जब जानता था कि वहां दलदल है। मदिरा पीकर चाहता हूं कि उसका नशा न हो।

राजेश्वरी : **(मन में)** भगवन्, देखूं अपने व्रत का पालन कर सकती हूं या नहीं। कितने पवित्र भाव हैं; कितना अगाध प्रेम !

सबल : **(उठकर)** प्रिये, कल इसी वक्त फिर आऊंगा। प्रेमालिंगन के लिए चित्त उत्कंठित हो रहा है।

राजेश्वरी : यहां प्रेम की शांति नहीं, प्रेम की दाह है। जाइए। देखूं, अब यह पहाड़-सा दिन कैसे कटता है। नींद भी जाने कहां भाग गई !

सबल : **(छज्जे के जीने से लौटकर)** प्रिये, गजब हो गया, वह देखो, कंचनसिंह जा रहे हैं। उन्होंने मुझे यहां से उतरते देख लिया। अब क्या करूं ?

राजेश्वरी : देख लिया तो क्या हरज हुआ ? समझे होंगे आप किसी मित्र से मिलने आए होंगे। जरा मैं भी उन्हें देख लूं।

सबल : जिस बात का मुझे डर था वही हुआ। अवश्य ही उन्हें कुछ टोह लग गई है। नहीं तो इधर उनके आने का कोई काम न था। यह तो उनके पूजा-पाठ का समय है। इस वक्त कभी बाहर नहीं निकलते। हां, गंगास्नान करने जाते हैं, मगर घड़ी रात रहे। इधर से कहां जाएंगे। घरवालों को संदेह हो गया।

राजेश्वरी : आपसे स्वरूप बहुत मिलता हुआ है। सुनहरी ऐनक खूब खिलती है।

सबल : अगर वह सिर झुकाए अपनी राह चले जाते तो मुझे शंका न होती; पर वह इधर-उधर, नीचे-ऊपर इस भांति ताकते जाते थे जैसे शोहदे कोठों की ओर झांकते हैं। यह उनका स्वभाव नहीं है। बड़े ही धर्मज्ञ, सच्चरित्र, ईश्वरभक्त पुरुष हैं। सांसारिकता से उन्हें घृणा है। इसीलिए अब तक विवाह नहीं किया।

राजेश्वरी : अगर यह हाल है तो यहां पूछताछ करने जरूर आएंगे।

सबल : मालूम होता है इस घर का पता पहले लगा लिया है। इस समय पूछताछ करने ही आए थे। मुझे देखा तो लौट गए। अब मेरी लज्जा, मेरा लोक-सम्मान, मेरा जीवन तुम्हारे आधीन है। तुम्हीं

मेरी रक्षा कर सकती हो।

राजेश्वरी : क्यों न कोई दूसरा मकान ठीक कर लीजिए।

सबल : इससे कुछ न होगा। बस यही उपाय है कि जब वह यहां आएं तो उन्हें चकमा दिया जाए। कहला भेजो, मैं सबलसिंह को नहीं जानती। वह यहां कभी नहीं आते। दूसरा उपाय यह है कि उन्हें कुछ दिनों के लिए यहां से टाल दूं। कह देता हूं कि जाकर लायलपुर से गेहूं खरीद लाओ। तब तक हम लोग यहां से कहीं और चल देंगे।

राजेश्वरी : यही तरकीब अच्छी है।

सबल : अच्छी तो है, पर हुआ बड़ा अनर्थ। अब पर्दा ढका रहना कठिन है।

राजेश्वरी : **(मन में)** ईश्वर, यही मेरी प्रतिज्ञा के पूरे होने का अवसर है। मुझे बल प्रदान करो। **(प्रकट)** यह सब मुसीबतें मेरी लाई हुई हैं। मैं क्या जानती थी कि प्रेम-मार्ग में इतने कांटे हैं।

सबल : मेरी बातों का ध्यान रखना। मेरे होश ठिकाने नहीं हैं। चलूं, देखूं, मुआमला अभी कंचनसिंह ही तक है या ज्ञानी को भी खबर हो गई।

राजेश्वरी : आज संध्या समय आइएगा। मेरा जी उधर ही लगा रहेगा।

सबल : अवश्य आऊंगा। अब तो मन लागि रह्यो, होनी हो सो होई। मुझे अपनी कीर्ति बहुत प्यारी है। अब तक मैंने मान-प्रतिष्ठा ही को जीवन का आधार समझ रखा था, पर अब अवसर आया तो मैं इसे प्रेम की वेदी पर उसी तरह चढ़ा दूंगा जैसे उपासक पुष्पों को चढ़ा देता है, नहीं जैसे कोई ज्ञानी पार्थिव वस्तुओं को लात मार देता है।

जाता है।

आठवां दृश्य

समय—संध्या, जेठ का महीना।

स्थान—मधुबन। कई आदमी फत्तू के द्वार पर खड़े हैं।

मंगरू : फत्तू, तुमने बहुत चक्कर लगाया, सारा संसार छान डाला।

सलोनी : बेटा, तुम न होते तो हलधर का पता लगना मुसकिल था।

हरदास : पता लगना तो मुसकिल नहीं था, हां जरा देर में लगता।

मंगरू : कहां-कहां गए थे ?

फत्तू : पहले तो कानपुर गया। वहां के सब पुतलीघरों को देखा। कहीं पता न लगा। तब लोगों ने कहा बंबई चले जाव। वहां चला गया। मुदा उतने बड़े शहर में कहां-कहां ढूंढ़ता। चार-पांच दिन पुतलीघरों में देखने गया, पर हियाब छूट गया। शहर काहे को है पूरा मुलुक है। जान पड़ता है संसार भर के आदमी वहीं आकर जमा हो गए हैं। तभी तो यहां गांव में आदमी नहीं मिलते। सच मानो, कुछ नहीं तो एक हजार मील तो होंगे। रात-दिन उनकी चिमनियों से धुआं निकला करता है। ऐसा जान पड़ता है, राक्षसों की फौज मुंह से आग निकालती आकाश से लड़ने जा रही है। आखिर निराश होकर वहां से चला आया। गाड़ी में एक बाबूजी से बातचीत होने लगी। मैंने सब राम-कहानी उन्हें सुनाई। बड़े दयावान आदमी थे। कहा, किसी अखबार में छपा दो कि जो उनका पता बता देगा उसे पचास रुपये इनाम दिया जाएगा। मेरे मन में भी बात जम गई। बाबूजी ही से मसौदा बनवा लिया और यहां गाड़ी से उतरते ही सीधे अखबार के दफ्तर में गया। छपाई का दाम देकर चला आया। पांचवें दिन वह चपरासी यहां आया जो मुझसे खड़ा बातें कर रहा था। उसने रत्ती-रत्ती सब पता बता दिया। हलधर न कलकत्ता गया है न बंबई, यहीं हिरासत में है। वही कहावत हुई, गोद में लड़का सहर में ढिंढोरा।

मंगरू : हिरासत में क्यों है ?

फत्तू : महाजन की मेहरबानी और क्या ? माघ-पूस में कंचनसिंह के यहां से कुछ रुपये लाया था। बस नादिहंदी के मामले में गिरफ्तार करा दिया।

हरदास : उनके रुपये तो यहां और कई आदमियों पर आते हैं, किसी को गिरफ्तार नहीं कराया। हलधर पर ही क्यों इतनी टेढ़ी निगाह की?

फत्तू : पहले सबको गिरफ्तार कराना चाहते थे, पर बाद को सबलसिंह ने मना कर दिया। दावा दायर करने की सलाह थी। पर बड़े ठाकुर तो दयावान जीव हैं, दावा भी मुल्तवी कर दिया, इधर लगान भी मुआफ कर दी। मुझसे जब चपरासी ने यह हाल कहा तो जैसे बदन में आग लग गई। सीधे कंचनसिंह के पास

गया और मुंह में जो कुछ आया कह सुनाया। सोच लिया था, दो-चार का सिर तोड़ के रख दूंगा, जो होगा देखा जाएगा। मगर बेचारे ने जबान तक नहीं खोली। जब मैंने कहा, आप बड़े धर्मात्मा की पूंछ बनते हैं, सौ-दो सौ रुपयों के लिए गरीबों को जेहल में डालते हैं, उस आदमी का तो यह हाल हुआ, उसकी घरवाली का कहीं पता नहीं, मालूम नहीं कहीं डूब मरी या क्या हुआ, यह सब पाप किसके सिर पड़ेगा, खुदाताला को क्या मुंह दिखाओगे तो बेचारे रोने लगे। लेकिन जब रुपयों की बात आई तो उस रकम में एक पैसा भी छोड़ने की हामी नहीं भरी।

सलोनी : इतनी दौड़धूप तो कोई अपने बेटे के लिए भी न करता। भगवान इसका फल तुम्हें देंगे।

हरदास : महाजन के कितने रुपये आते हैं ?

फत्तू : कोई ढाई सौ होंगे। थोड़ी-थोड़ी मदद कर दो तो आज ही हलधर को छुड़ा लूं। मैं बहुत जेरबारी में पड़ गया हूं। नहीं तो तुम लोगों से न मांगता।

मंगरू : भैया, यहां रुपये कहां, जो कुछ लेई-पूंजी थी वह बेटी के गौने में खर्च हो गई। उस पर पत्थर ने और भी चौपट कर दिया।

सलोनी : बने के साथी सब होते हैं, बिगड़े का साथी कोई नहीं होता।

मंगरू : जो चाहे समझो, पर मेरे पास कुछ नहीं है।

हरदास : अगर दस-बीस दे भी दें तो कौन जल्दी मिले जाते हैं। बरसों में मिलें तो मिलें। उसमें सबसे पहले अपनी जमा लेंगे, तब कहीं औरों को मिलेगा।

मंगरू : भला इस दौड़-धूप में तुम्हारे कितने रुपये लगे होंगे ?

फत्तू : क्या ज़ाने, मेरे पास कोई हिसाब-किताब थोड़े ही है !

मंगरू : तब भी अंदाज से ?

फत्तू : कोई एक सौ बीस रुपये लगे होंगे।

मंगरू : **(हरदास को कनखियों से देखकर)** बेचारा हलधर तो बिना मौत मर गया। सौ रुपये इन्होंने चढ़ा दिए, ढाई सौ रुपये महाजन के होते हैं, गरीब कहां तक भरेगा ?

फत्तू : मुसीबत में जो मदद की जाती है वह अल्लाह की राह में की जाती है। उसे कर्ज नहीं समझा जाता।

हरदास : तुम अपने सौ रुपये तो सीधे कर लोगे ?

सलोनी : **(मुंह चिढ़ाकर)** हां, दलाली के कुछ पैसे तुझे भी मिल जाएंगे।

मुंह धो रखना। हां बेटा, उसे छुड़ाने के लिए ढाई सौ रुपये की क्या फिकर करोगे ? कोई महाजन खड़ा किया है ?

फत्तू : नहीं, काकी, महाजनों के जाल में न पड़ूंगा। कुछ तुम्हारी बहू के गहने-पाते हैं वह गिरो रख दूंगा। रुपये भी उसके पास कुछ-न-कुछ निकल ही आएंगे। बाकी रुपये अपने दोनों नाटे बेचकर खड़े कर लूंगा।

सलोनी : महीने ही भर में तो तुम्हें फिर बैल चाहने होंगे।

फत्तू : देखा जाएगा। हलधर के बैलों से काम चलाऊंगा।

बेटा : बेटा, तुम तो हलधर के पीछे तबाह हो गए।

फत्तू : काकी, इन्हीं दिनों के लिए तो छाती फाड़-फाड़ कमाते हैं। और लोग थाने-अदालतों में रुपये बर्बाद करते हैं। मैंने तो एक पैसा भी बर्बाद नहीं किया। हलधर कोई गैर तो नहीं है, अपना ही लड़का है। अपना लड़का इस मुसीबत में होता तो उसको छुड़ाना पड़ता न ! समझ लूंगा कि अपनी बेटी के निकाह में लग गए।

सलोनी : **(हरदास की ओर देखकर)** देखा, मर्द ऐसे होते हैं। ऐसे सपूतों के जन्म से माता का जीवन सुफल होता है। तुम दोनों हलधर के पट्टीदार हो, एक ही परदादा के परपोते हो, पर तुम्हारा लोहू सफेद हो गया है। तुम तो मन में खुश होगे कि अच्छा हुआ वह गया, अब उसके खेतों पर हम कब्जा कर लेंगे।

हरदास : काकी, मुंह न खुलवाओ। हमें कौन हलधर से वाह-वाही लूटनी है, न एक के दो वसूल करने हैं। हम क्यों इस झमेले में पड़ें। यहां न ऊधो का लेना, न माधो का देना, अपने काम-से-काम है। फिर हलधर ने कौन यहां किसी की मदद कर दी ? प्यासों मर भी जाते तो पानी को न पूछता। हां, दूसरों के लिए चाहे घर लुटा देते हों।

मंगरू : हलधर की बात ही क्या है, अभी कल का लड़का है। उसके बाप ने भी कभी किसी की मदद की ? चार दिन की आई बहू है, वह भी हमें दुसमन समझती है।

सलोनी : **(फत्तू से)** बेटा, सांझ हुई, दीयाबत्ती करने जाती हूं। तुम थोड़ी देर में मेरे पास आना, कुछ सलाह करूंगी।

फत्तू : अच्छा एक गीत तो सुनाती जाओ। महीनों हो गए तुम्हारा गाना नहीं सुना।

सलोनी : इन दोनों को अब कभी अपना गाना न सुनाऊंगी।

हरदास : लो, हम कानों में उंगली रखे लेते हैं।

सलोनी : हां, कान खोलना मत।

गाती है।

ढूंढ़ फिरी सारा संसार, नहीं मिला कोई अपना।
भाई भाई बैरी है गए, बाप हुआ जमदूत।
दया-धरम का उठ गया डेरा, सज्जनता है सपना।
नहीं मिला कोई अपना।।

जाती है।

नौवां दृश्य

स्थान—मधुवन, हलधर का मकान, गांव के लोग जमा हैं।
समय—ज्येष्ठ की संध्या।

हलधर : **(बाल बढ़े हुए, दुर्बल, मलिन मुख)** फत्तू काका, तुमने मुझे नाहक छुड़ाया, वहीं क्यों न घुलने दिया। अगर मुझे मालूम होता कि घर की यह दशा है तो उधर से ही देश-विदेश की राह लेता, यहां अपना काला मुंह दिखाने न आता। मैं इस औरत को पतिव्रता समझता था। देवी समझकर उसकी पूजा करता था। पर यह नहीं जानता था कि वह मेरे पीठ फेरते ही यों पुरखों के माथे पर कलंक लगाएगी। हाय !

सलोनी : बेटा, वह सचमुच देवी थी। ऐसी पतिबरता नारी मैंने नहीं देखी। तुम उस पर संदेह करके उस पर बड़ा अन्याय कर रहे हो। मैं रोज रात को उसके पास सोती थी। उसकी आंखें रात-की-रात खुली रहती थीं। करवटें बदला करती। मेरे बहुत कहने-सुनने पर भी कभी-कभी भोजन बनाती थी, पर दो-चार कौर भी न खाया जाता। मुंह जूठा करके उठ आती। रात-दिन तुम्हारी ही चर्चा, तुम्हारी ही बातें किया करती थी। शोक और दुःख में जीवन से निराश होकर उसने चाहे प्राण दे दिए हों पर वह कुल को कलंक नहीं लगा सकती। बरम्हा भी आकर उस पर यह दोख लगाएं तो मुझे उन पर बिसवास न आएगा।

फत्तू : *काकी, तुम तो उसके साथ सोती ही बैठती थीं, तुम जितना जानती हो उतना मैं कहां से जानूंगा, लेकिन इससे गांव में सत्तर* बरस की उमिर गुजर गई, सैकड़ों बहुएं आईं पर किसी में वह बात नहीं पाई जो इसमें है। न ताकना, न झांकना, सिर झुकाए अपनी राह जाना, अपनी राह आना। सचमुच ही देवी थी।

हलधर काका, किसी तरह मन को समझाने तो दो। जब अंगूठी पानी में गिर गई तो यह सोचकर क्यों न मन को धीरज दूं कि उसका नग कच्चा था। हाय, अब घर में पांव नहीं रखा जाता; ऐसा जान पड़ता है कि घर की जान निकल गई।

सलोनी जाते-जाते घर को लीप गई है। देखो अनाज मटकों में रखकर इनका मुंह मिट्टी से बंद कर दिया है। यह घी की हांड़ी है। लबालब भरी हुई बेचारी ने संच कर रखा था। क्या कुल्टाएं गिरस्ती की ओर इतना ध्यान देती हैं ? एक तिनका भी तो इधर-उधर पड़ा नहीं दिखाई देता।

हलधर (रोकर) काकी, मेरे लिए अब संसार सूना हो गया। वह गंगा की गोद में चली गई। अब फिर उसकी मोहिनी मूरत देखने को न मिलेगी। भगवान बड़ा निर्दयी है। इतनी जल्दी छीन लेना था तो दिया ही क्यों था।

फत्तू बेटा, अब तो जो कुछ होना था वह हो चुका, अब सबर करो और अल्लाताला से दुआ करो कि उस देवी को निजात दे। रोने-धोने से क्या होगा ! वह तुम्हारे लिए थी ही नहीं। उसे भगवान ने रानी बनने के लिए बनाया था। कोई ऐसी ही बात हो गई थी कि वह कुछ दिनों के लिए इस दुनिया में आई थी। वह मियाद पूरी करके चली गई। यही समझकर सबर करो।

हलधर काका, नहीं सबर होता। कलेजे में पीड़ा हो रही है। ऐसा जान पड़ता है, कोई उसे जबरदस्ती मुझसे छीन ले गया हो, हां, सचमुच वह मुझसे छीन ली गयी है, और यह अत्याचार किया है सबलसिंह और उनके भाई ने। न मैं हिरासत में जाता, न घर यों तबाह होता। उसका वध करने वाले, उसकी जान लेने वाले यही दोनों भाई हैं ? नहीं, इन दोनों भाइयों को क्यों बदनाम करूं, सारी विपत्ति इस कानून की लाई हुई है, जो गरीबों को धनी लोगों की मुट्ठी में कर देता है। फिर कानून को क्यों कहूं।

जसा ससार वसा व्यवहार।

फत्तू : बस, यही बात है, जैसा संसार वैसा व्यवहार। धनी लोगों के हाथ में अख्तियार है। गरीबों को सताने के लिए जैसा कानून चाहते हैं, बनाते हैं। बैठो, नाई बुलवाए देता हूं, बाल बनवा लो।

हलधर : नहीं काका, अब इस घर में न बैठूंगा। किसके लिए घर-बार के झमेले में पड़ूं। अपना पेट है, उसकी क्या चिंता ! इस अन्यायी संसार में रहने का जी नहीं चाहता। ढाई सौ रुपयों के पीछे मेरा सत्यानास हो गया। ऐसा परबस होकर जिया ही तो क्या ! चलता हूं, कहीं साधु-वैरागी हो जाऊंगा, मांगता-खाता फिरूंगा।

हरदास : तुम तो साधु-बैरागी हो जाओगे, यह रुपये कौन भरेगा ?

फत्तू : रुपये-पैसे की कौन बात है, तुमको इससे क्या मतलब? यह तो आपस का व्यवहार है, हमारी अटक पर तुम काम आए, तुम्हारी अटक पर हम काम आएंगे। कोई लेन-देन थोड़ा ही किया है !

सलोनी : इसकी बिच्छू की भांति डंक मारने की आदत है।

हलधर : नहीं, इसमें बुरा मानने की कोई बात नहीं है। फत्तू काका, मैं तुम्हारी नेकी को कभी नहीं भूल सकता। तुमने जो कुछ किया वह अपना बाप भी न करता। जब तक मेरे दम-में-दम है तुम्हारा और तुम्हारे खानदान का गुलाम बना रहूंगा। मेरा घर-द्वार, खेती-बारी, बैल-बधिये, जो कुछ है सब तुम्हारा है, और मैं तुम्हारा गुलाम हूं। बस, अब मुझे बिदा करो, जीता रहूंगा तो फिर मिलूंगा, नहीं तो कौन किसका होता है। काकी, जाता हूं, सब भाइयों को राम-राम !

फत्तू : **(रास्ता रोककर गद्‌गद कंठ से)** बेटा, इतना दिल छोटा न करो। कौन जाने, अल्लाताला बड़ा कारसाज है, कहीं बहू का पता लग ही जाये। इतने अधीर होने की कोई बात नहीं है।

हरदास : चार दिन में तो दूसरी सगाई हो जाएगी।

हलधर : भैया, दूसरी सगाई अब उस जनम में होगी। इस जनम में तो अब ठोकर खाना ही लिखा है। अगर भगवान को यह न मंजूर होता तो क्या मेरा बना-बनाया घर उजड़ जाता ?

फत्तू : मेरा तो दिल बार-बार कहता है कि दो-चार दिन में राजेश्वरी

का पता जरूर लग जाएगा। कुछ खाना बनाओ, खाओ, सबेरे चलेंगे, फिर इधर-उधर टोह लगाएंगे।

हरदास : पहले जाके तालाब में अच्छी तरह असनान कर लो। चलूं, जानवर हार से आ गए होंगे। (**सब चले जाते हैं।**)

हलधर : यह घर फाड़े खाता है, इसमें तो बैठा भी नहीं जाता। इस वक्त काम करके आता था तो उसकी मोहनी मूरत देखकर चित्त कैसा खिल जाता था। कंचन, तूने मेरा सुख हर लिया, तूने मेरे घर में आग लगा दी। ओहो, वह कौन उजली साड़ी पहने उस घर में खड़ी है। वही है, छिपी हुई थी। खड़ी है, आती नहीं। (**उस घर के द्वार पर जाकर**) राम ! राम ! कितना भरम हुआ, सन की गांठ रखी हुई है। अब उसके दर्शन फिर नसीब न होंगे। जीवन में अब कुछ नहीं रहा। हा, पापी, निर्दयी ! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया, मुट्ठी भर रुपयों के पीछे ! इस अन्याय का मजा तुझे चखाऊंगा। तू भी क्या समझेगा कि गरीबों का गला काटना कैसा होता है....

लाठी लेकर घर से निकल जाता है।

दसवां दृश्य

स्थान—गुलाबी का घर।

समय—प्रातःकाल।

गुलाबी : जो काम करन बैठती है उसी की हो रहती है। मैंने घर में झाड़ू लगाई, पूजा के बासन धोए, तोते को चारा खिलाया, गाय खोली, उसका गोबर उठाया, और यह महारानी अभी पांच सेर गेहूं लिये जांत पर औंघ रही हैं। किसी काम में इसका जी नहीं लगता। न जाने किस घमंड में भूली रहती है। बाप के पास ऐसा कौन-सा दहेज था कि किसी धनिक के घर जाती। कुछ नहीं, यह सब तुम्हारे सिर चढ़ाने का फल है। औरत को जहां मुंह लगाया कि उसका सिर फिरा। फिर उसके पांव जमीन पर नहीं पड़ते। इस जात को तो कभी मुंह लगाए ही नहीं। चाहे कोई बात भी न हो; पर उसका मान मरदन नित्य करता रहे।

भृगु क्या करूं अम्मां, सब कुछ करके तो हार गया। कोई बात सुनती ही नहीं। ज्योंही गरम पड़ता हूं, रोने लगती है। बस दया आ जाती है।

गुलाबी मैं रोती हूं तब तो तेरा कलेजा पत्थर का हो जाता है, उसे रोते देखकर क्यों दया आ जाती है।

भृगु अम्मां, तुम घर की मालकिन हो, तुम रोती हो तो हमारा दुःख देखकर रोती हो। तुम्हें कौन कुछ कह सकता है ?

गुलाबी तू ही अपने मन से समझ, मेरी उमिर अब नौकरी करने की है। यह सब तेरे ही कारण न करना पड़ता है ? तीन महीने हो गए, तूने घर के खरच के लिए एक पैसा भी न दिया। मैं न जाने किस-किस उपाय से काम चलाती हूं। तू कमाता है तो क्या करता है ? जवान बेटे के होते मुझे छाती फाड़नी पड़े, तो दिनों को रोऊं कि न रोऊं। उस पर घर में कोई बात पूछने वाला नहीं। पूछो महरानी से महीने-भर हो गए, कभी सिर में तेल डाला, कभी पैर दबाए। सीधे मुंह बात तो करतीं नहीं, भला सेवा क्या करेंगी। रोऊं न तो क्या करूं ? मौत भी नहीं आ जाती कि इस जंजाल से छूट जाती। जाने कागद कहां खो गया।

भृगु : अम्मां ऐसी बातें न करो। तुम्हारे बिना यह गिरस्ती कौन चलाएगा? तुम्हीं ने पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है। जब तक जीती हो इसी तरह पाले जाओ। फिर तो यह चक्की गले पड़ेगी ही।

गुलाबी : अब मेरा किया नहीं होता।

भृगु : तो मुझे परदेस जाने दो। यहां मेरा किया कुछ न होगा।

गुलाबी : आखिर मुनीबी में तुझे कुछ मिलता है कि नहीं। वह सब कहां उड़ा देता है ?

भृगु : कसम ले लो जो इधर तीन महीने में कौड़ी से भेंट हुई हो। जब से ओले पड़े हैं, ठाकुर साहब ने लेन-देन सब बंद कर दिया है।

गुलाबी : तेरी मारफत बाजार से सौदा-सुलफ आता है कि नहीं। घर में जिस चीज का काम पड़ता है वह मैं तुझी से मंगवाने को कहती हूं। पांच-छः सौ का सौदा तो भीतर ही का आता होगा। तू उसमें कुछ काटपेच नहीं करता ?

भृगु : मुझे तो अम्मां, यह सब कुछ नहीं आता।

गुलाबी : चल, झूठे कहीं के। मेरे सौदे में तो तू अपनी चाल चल ही जाता है, वहां न चलेगा। दस्तूरी पाता है, भाव में कसता है। तौल में कसता है। उस पर मुझसे उड़ने चला है। सुनती हूं दलाली भी करते हो। यह सब कहां उड़ जाता है ?

भृगु : अम्मां, किसी ने तुमसे झूठमूठ कह दिया होगा। तुम्हारा सरल स्वभाव है, जिसने जो कुछ कह दिया वही मान जाती हो। तुम्हारे चरण छूकर कहता हूं जो कभी दलाली की हो। सौदे-सुलुफ में दो-चार रुपये कभी मिल जाते हैं तो भंग-बूटी, पान-पत्ते का खर्च चलता है।

गुलाबी : जाकर चुड़ैल से कह दे पानी-वानी रखे, नहाऊं नहीं तो ठाकुर के यहां कैसे जाऊंगी ? सारे दिन चक्की के नाम को रोया करेगी क्या ?

भृगु : अम्मां, तुम्हीं जाकर कहो। मेरा कहना न मानेगी।

गुलाबी : हां, तू क्यों कहेगा ! तुझे तो उसने भेड़ बना लिया है। उंगलियों पर नचाया करती है। न जाने कौन-सा जादू डाल दिया है कि तेरी मति ही हर गई। जा, ओढ़नी ओढ़ के बैठ।

बहू के पास जाती है।

क्यों रे, सारे दिन चक्की के नाम को रोएगी या और भी कोई काम है ?

चम्पा : क्या चार हाथ-पैर कर लूं ? क्या यहां सोयी हूं !

गुलाबी : चुप रह, डायन कहीं की, बोलने को मरी जाती है। सेर-भर गेहूं लिए बैठी है। कौन लड़के-बाले रो रहे हैं कि उनके तेल-उबटन में लगी रहती है। घड़ी रात रहे क्यों नहीं उठती? बांझिन, तेरा मुंह देखना पाप है।

चम्पा : इसमें भी किसी का बस है ? भगवान नहीं देते तो क्या अपने हाथों से गढ़ लूं ?

गुलाबी : फिर मुंह नहीं बंद करती चुड़ैल। जीभ कतरनी की तरह चला करती है। लजाती नहीं। तेरे साथ की आई बहुरियां दो-दो लड़कों की मां हो गई हैं और तू अभी बांठ बनी है। न जाने कब तेरा पैरा इस घर से उठेगा। जा, नहाने को पानी रख दे, नहीं तो भले परांठे चखाऊंगी। एक दिन काम न करूं तो मुंह में

मक्खी आने-जाने लगे। सहज में ही यह चरबौतियां नहीं उड़तीं।

बहू : जैसी रोटियां तुम खिलाती हो ऐसी जहां छाती फाड़ूंगी वहीं मिल जाएंगी। यहां गद्दी-मसनद नहीं लगी है।

गुलाबी : **(दांत पीसकर)** जी चाहता है सट से तालू से जबान खींच लें। कुछ नहीं, मेरी यह सब सांसत भगुवा करा रहा है, नहीं तो तेरी मजाल थी कि मुझसे यों जबान चलाती । कलमुंहे को और घर न मिलता था जो अपने सिर की बला यहां पटक गया। अब जो पाऊं तो मुंह झौंस दूं।

चम्पा : अम्मांजी, मुझे जो चाहो कह लो, तुम्हारा दिया खाती हूं, मारो या काटो, दादा को क्यों कोसती हो ? भाग बखानो कि बेटे के सिर पर मौर चढ़ गया, नहीं तो कोई बात भी न पूछता। ऐसा हुन नहीं बरसता था कि देख के लट्टू हो जाता।

गुलाबी : भगवान को डरती हूं, नहीं तो कच्चा ही खा जाती। न जाने कब इस अभागिन बांझ से संग छूटेगा।

चली जाती है। भृगु आता है।

चम्पा : तुम मुझे मेरे घर क्यों नहीं पहुंचा देते, नहीं एक दिन कुछ खाकर सो रहूंगी तो पछताओगे। टुकुर-टुकुर देखा करते हो, पर मुंह नहीं खुलता कि अम्मां, वह भी तो आदमी है, पांच सेर गहूं पीसना क्या दाल-भात का कौर है ?

भृगु : तुम उसकी बातों का बुरा क्यों मानती हो। मुंह ही से न कहती है कि और कुछ। समझ लो कुतिया भूंक रही है। दुधार गाय की लात भी सही जाती है। आज नौकरी करना छोड़ दें तो सारी गृहस्थी का बोझ मेरे ही सिर पड़ेगा कि और किसी के सिर ? धीरज धरे कुछ दिन पड़ी रहो, चार थान गहने हो जाएंगे, चार पैसे गांठ में हो जाएंगे। इतनी मोटी बात भी नहीं समझती हो, झूठ-मूठ उलझ जाती हो।

चम्पा : मुझसे तो ताने सुनकर चुप नहीं रहा जाता। शरीर में ज्वाला-सी उठने लगती है।

भृगु : उठने दिया करो, उससे किसी के जलने का डर नहीं है। बस उसकी बातों का जवाब न दिया करो। इस कान सुना और उस कान उड़ा दिया।

चप्पा : सोनार कंठा कब देगा ?

भृगु : दो-तीन दिन में देने को कहा है। ऐसे सुंदर दाने बनाए हैं कि देखकर खुश हो जाओगी। यह देखो....

चम्पा : क्या है ?

भृगु : न दिखाऊंगा, न।

चम्पा : मुट्ठी खोलो। यह गिन्नी कहां पाई ? मैं न दूंगी।

भृगु : पाने की न पूछो, एक असामी रुपये लौटाने आया था। खाते में दो रुपये सैकड़े का दर लिखा है, मैंने ढाई रुपये सैकड़े की दर से वसूल किया।

बाहर चला जाता है।

चम्पा : **(मन में)** बुढ़िया सीधी होती तो चैन-ही-चैन था।

तीसरा अंक

प्रथम दृश्य

स्थान—कंचनसिंह का कमरा।

समय—दोपहर, खस की टट्टी लगी हुई है, कंचनसिंह सीतलपाटी बिछाकर लेटे हुए हैं, पंखा चल रहा है।

कंचन : **(आप-ही-आप)** भाई साहब में तो यह आदत कभी नहीं थी। इसमें अब लेश-मात्र भी संदेह नहीं है कि वह कोई अत्यंत रूपवती स्त्री है। मैंने उसे छज्जे पर से झांकते देखा था, भाई साहब आड़ में छिप गए थे। अगर कुछ रहस्य की बात न होती तो वह कदापि न छिपते, बल्कि मुझसे पूछते, कहां जा रहे हो। मेरा माथा उसी वक्त ठनका था जब मैंने उन्हें नित्यप्रति बिना किसी कोचवान के अपने हाथों टमटम हांकते सैर करने जाते देखा। उनकी इस भांति घूमने की आदत न थी। आजकल न कभी क्लब जाते हैं न और किसी से मिलते-जुलते हैं। पत्रों से भी रुचि नहीं जान पड़ती। सप्ताह में एक-न-एक लेख अवश्य लिख लेते थे, पर इधर महीनों से एक पंक्ति भी कहीं नहीं लिखी। यह बुरा हुआ। जिस प्रकार बंधा हुआ पानी खुलता है तो बड़े वेग से बहने लगता है अथवा रुकी वायु चलती है तो बहुत प्रचण्ड हो जाता है, उसी प्रकार संयमी पुरुष जब विचलित होता है, यह अविचार की चरम सीमा तक चला जाता है। न किसी की सुनता है, न किसी के रोके रुकता है, न परिणाम सोचता है। उसके विवेक और बुद्धि पर पर्दा-सा पड़ जाता है। कदाचित् भाई साहब को मालूम हो गया है कि मैंने उन्हें वहां देख लिया। इसीलिए वह मुझसे माल खरीदने के लिए पंजाब जाने को कहते हैं। मुझे कुछ दिनों के लिए हटा देना चाहते हैं। यही बात है, नहीं तो वह माल-वाल की इतनी चिंता कभी न

किया करते थे। मुझे तो अब कुशल नहीं दीखती। भाभी को कहीं खबर मिल गई तो वह प्राण ही दे देंगी। बड़े आश्चर्य की बात है कि ऐसे विद्वान, गंभीर पुरुष भी इस मायाजाल में फंस जाते हैं। अगर मैंने अपनी आंखों न देखा होता तो भाई साहब के संबंध में कभी इस दुष्कल्पना का विश्वास न आता।

ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : बाबूजी, आज सोए नहीं ?

कंचन : नहीं, कुछ हिसाब-किताब देख रहा था। भाई साहब ने लगान न मुआफ कर दिया होता तो अबकी मैं ठाकुरद्वारे में जरूर हाथ लगा देता। असामियों से कुछ रुपये वसूल होते, लेकिन उन पर दावा ही न करने दिया।

ज्ञानी : वह तो मुझसे कहते थे दो-चार महीनों के लिए पहाड़ों की सैर करने जाऊंगा। डॉक्टर ने कहा है, यहां रहोगे तो तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ जाएगा। आजकल कुछ दुर्बल भी तो हो गये हैं। बाबूजी एक बात पूछूं, बताओगे। तुम्हें भी इनके स्वभाव में कुछ अंतर दिखायी देता है ? मुझे तो बहुत अंतर मालूम होता है। वह कभी इतने नम्र और सरल नहीं थे। अब वह एक-एक बात सावधान होकर कहते हैं कि कहीं मुझे बुरा न लगे। उनके सामने जाती हूं तो मुझे देखते ही मानो नींद से चौंक पड़ते हैं और इस भांति हंसकर स्वागत करते हैं जैसे कोई मेहमान आया हो। मेरा मुंह जोहा करते हैं कि कोई बात कहे और उसे पूरी कर दूं। जैसे घर के लोग बीमार का मन रखने का यत्न करते हैं या जैसे किसी शोक-पीड़ित मनुष्य के साथ लोगों का व्यवहार सदय हो जाता है, उसी प्रकार आजकल पके हुए फोड़े की तरह मुझे ठेस से बचाया जाता है। इसका रहस्य कुछ मेरी समझ में नहीं आता। खेद तो मुझे यह है कि इन सारी बातों में दिखावट और बनावट की बू आती है। सच्चा क्रोध उतना हृदयभेदी नहीं होता जितना कृत्रिम प्रेम।

कंचन : **(मन में)** वही बात है। किसी बच्चे से हम अशर्फी ले लेते हैं कि खो न दे तो उसे मिठाइयों से फुसला देते हैं। भाई साहब ने भाभी से अपना प्रेम-रत्न छीन लिया है और बनावटी स्नेह और प्रणय से इनको तस्कीन देना चाहते हैं। इस प्रेम-मूर्ति का अब

परमात्मा ही मालिक है। **(प्रकट)** मैंने तो इधर ध्यान नहीं दिया। स्त्रियां सूक्ष्मदर्शी होती हैं....

खिदमतगार आता है। ज्ञानी चली जाती है।

कंचन : क्या काम है ?

खिदमतगार : यह सरकारी लिफाफा आया है। चपरासी बाहर खड़ा है।

कंचन : **(रसीद की बही पर हस्ताक्षर करके)** यह सिपाही को दो। **(खिदमतगार चला जाता है।)** अच्छा, गांव वालों ने मिलकर हलधर को छुड़ा लिया। अच्छा ही हुआ। मुझे उससे कोई दुश्मनी तो थी नहीं। मेरे रुपये वसूल हो गए। यह कार्रवाई न की जाती तो कभी रुपये न वसूल होते। इसी से लोग कहते हैं कि नीचों को जब तक खूब न दबाओ उनकी गांठ नहीं खुलती। औरों पर भी इसी तरह दावा कर दिया गया होता तो बात-की-बात में सब रुपये निकल आते। और कुछ न होता तो ठाकुरद्वारे में हाथ तो लगा ही देता। भाई साहब को समझाना तो मेरा काम नहीं, उनके सामने रोब, शर्म और संकोच से मेरी जबान ही न खुलेगी। उसी के पास चलूं, उसके रंग-ढंग देखूं, कौन है, क्या चाहती है, क्यों यह जाल फैलाया है ? अगर धन के लोभ से यह माया रची है तो जो कुछ उसकी इच्छा हो देकर यहां से हटा दूं। भाई साहब को और समस्त परिवार को सर्वनाश से बचा लूं। **(फिर खिदमतगार आता है।)** क्या बार-बार आते हो ? क्या काम है? मेरे पास पेशगी देने के लिए रुपये नहीं हैं।

खिदमतगार : हुजूर, रुपये नहीं मांगता। बड़े सरकार ने आपको याद किया है।

कंचन : **(मन में)** मेरा तो दिल धक-धक कर रहा है, न जाने क्यों बुलाते हैं ! कहीं पूछ न बैठें, तुम मेरे पीछे क्यों पड़े हुए हो।

उठकर ठाकुर सबलसिंह के कमरे में जाते हैं।

सबल : तुमको एक विशेष कारण से तकलीफ दी है। इधर कुछ दिनों से मेरी तबीयत अच्छी नहीं रहती, रात को नींद कम आती है और भोजन से भी अरुचि हो गई है।

कंचन : आपका भोजन आधा भी नहीं रहा।

सबल : हां, वह भी जबरदस्ती खाता हूं। इसलिए मेरा विचार हो रहा है

कि तीन-चार महीनों के लिए मंसूरी चला जाऊं।

कंचन : जलवायु के बदलने से कुछ लाभ तो अवश्य होगा।

सबल : तुम्हें रुपयों का प्रबंध करने में ज्यादा असुविधा तो न होगी ?

कंचन : ऊपर तो केवल पांच हजार रुपये होंगे। चार हजार दो सौ पचास रुपये मूलचंद ने दिये हैं, पांच सौ रुपये श्रीराम ने, और ढाई सौ रुपये हलधर ने।

सबल : **(चौंककर)** क्या हलधर ने भी रुपये दे दिए ?

कंचन : हां, गांव वालों ने मदद की होगी।

सबल : तब तो वह छूटकर अपने घर पहुंच गया होगा ?

कंचन : जी हां।

सबल : **(कुछ देर तक सोचकर)** मेरे सफर की तैयारी में कै दिन लगेंगे?

कंचन : क्या जाना बहुत जरूरी है ? क्यों न यहीं कुछ दिनों के लिए देहात चले जाइए। लिखने-पढ़ने का काम भी बंद कर दीजिए।

सबल : डॉक्टरों की सलाह पहाड़ों पर जाने की है। मैं कल किसी वक्त यहां से मंसूरी चला जाना चाहता हूं।

कंचन : जैसी इच्छा।

सबल : मेरे साथ किसी नौकर-चाकर के जाने की जरूरत नहीं है। तुम्हारी भाभी चलने के लिए आग्रह करेंगी। उन्हें समझा देना कि तुम्हारे चलने से खर्च बहुत बढ़ जाएगा। नौकर, महरी, मिसराइन, सभी को जाना पड़ेगा और इस वक्त इतनी गुंजाइश नहीं।

कंचन : अकेले तो आपको बहुत तकलीफ होगी।

सबल : **(खीझकर)** क्या संसार में अकेले कोई यात्रा नहीं करता ? अमरीका के करोड़पति तक एक हैंडबैग लेकर भारत की यात्रा पर चल खड़े होते हैं, मेरी कौन गिनती है। मैं उन रईसों में नहीं हूं जिनके घर में चाहे भोजन का ठिकाना न हो, जायदाद बिकी जाती हो, पर जूता नौकर ही पहनाएगा, शौच के लिए लोटा लेकर नौकर ही जाएगा। यह रियासत नहीं हिमाकत है।

कंचनसिंह चले जाते हैं।

सबल : **(मन में)** वही हुआ जिसकी आशंका थी। आज ही राजेश्वरी से चलने को कहूं और कल प्रातःकाल यहां से चल दूं। हलधर

कहीं आ पड़ा और उसे संदेह हो गया तो बड़ी मुश्किल होगी। ज्ञानी आसानी से न मानेगी । उसे देखकर दया आती है। किंतु आज हृदय को कड़ा करके उसे भी रोकना पड़ेगा।

अंचल का प्रवेश।

अचल : दादाजी, आप पहाड़ों पर जा रहे हैं, मैं भी साथ चलूंगा।

सबल : बेटा, मैं अकेले जा रहा हूं, तुम्हें तकलीफ होगी।

अचल : इसीलिए तो मैं और चलना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि खूब तकलीफ हो, सब काम अपने हाथों करना पड़े, मोटा खाना मिले और कभी मिले, कभी न मिले। तकलीफ उठाने से आदमी की हिम्मत मजबूत हो जाती है, वह निर्भय हो जाता है। जरा-जरा-सी बातों से घबराता नहीं, मुझे जरूर ले चलिए।

सबल : मैं वहां एक जगह थोड़े ही रहूंगा। कभी यहां, कभी वहां।

अचल : यह तो और भी अच्छा है। तरह-तरह की चीजें, नये-नये दृश्य देखने में आएंगे। और मुल्कों में तो लड़कों को सरकार की तरफ से सैर करने का मौका दिया जाता है। किताबों में भी लिखा है कि बिना देशाटन किए अनुभव नहीं होता, और भूगोल जानने का तो इसके सिवा कोई अन्य उपाय नहीं है । नक्शों और माडलों के देखने से क्या होता है ! मैं इस मौके को न जाने दूंगा।

सबल : बेटा, तुम कभी-कभी व्यर्थ में जिद करने लगते हो। मैंने कह दिया कि मैं इस वक्त अकेले ही जाना चाहता हूं, यहां तक कि किसी नौकर को भी साथ नहीं ले जाता। अगले वर्ष मैं तुम्हें इतनी सैरें करा दूंगा कि तुम ऊब जाओगे। (**अचल उदास होकर चला जाता है।**) अब सफर की तैयारी करूं। मुख्तसर ही सामान ले जाना मुनासिब होगा। रुपये हों तो जंगल में भी मंगल हो सकता है। आज शाम को राजेश्वरी से भी चलने की तैयारी करने को कह दूंगा, प्रातःकाल हम दोनों यहां से चले जाएं। प्रेम-पाश में फंसकर देखूं, नीति का. आत्मा का, धर्म का कितना बलिदान करना पड़ता है, और किस-किस वन की पत्तियां तोड़नी पड़ती हैं ।

दूसरा दृश्य

स्थान—राजेश्वरी का सजा हुआ कमरा।

समय—दोपहर।

लौंडी : बाईजी, कोई नीचे पुकार रहा है।

राजेश्वरी : **(नींद से चौंककर)** क्या कहा, आग लगी है ?

लौंडी : नौज, कोई आदमी नीचे पुकार रहा है।

राजेश्वरी : पूछा नहीं कौन है, क्या कहता है, किस मतलब से आया है ? संदेशा लेकर दौड़ चली, कैसे मजे का सपना देख रही थी।

लौंडी : ठाकुर साहब ने तो कह दिया है कि कोई कितना ही पुकारे, कोई हो, किवाड़ न खोलना, न कुछ जवाब देना। इसीलिए मैंने कुछ पूछताछ नहीं की।

राजेश्वरी : मैं कहती हूं जाकर पूछो, कौन है ?

महरी जाती है और एक क्षण में लौट आती है।

लौंडी : अरे बाईजी, बड़ा गजब हो गया। यह तो ठाकुर साहब के छोटे भाई बाबू कंचनसिंह हैं। अब क्या होगा ?

राजेश्वरी : होगा क्या, जाकर बुला ला।

लौंडी : ठाकुर साहब सुनेंगे तो मेरे सिर का बाल भी न छोड़ेंगे।

राजेश्वरी : तो ठाकुर साहब को सुनाने कौन जाएगा ! अब यह तो नहीं हो सकता कि उनके भाई द्वार पर आएं और मैं उनकी बात तक न पूछूं। वह अपने मन में क्या कहेंगे ! जाकर बुला ला और दीवानखाने में बिठला। मैं आती हूं।

लौंडी : किसी ने पूछा तो मैं कह दूंगी, अपने बाल न नुचवाऊंगी।

राजेश्वरी : तेरा सिर देखने से तो यही मालूम होता है कि एक नहीं कई बार बाल नुच चुके हैं। मेरी खातिर से एक बार और नुचवा लेना। यह लो, इससे बालों के बढ़ाने की दवा ले लेना।

लौंडी चली जाती है।

राजेश्वरी : **(मन में)** इनके आने का क्या प्रयोजन है ? कहीं उन्होंने जाकर इन्हें कुछ कहा-सुना तो नहीं ? आप ही मालूम हो जाएगा। अब मेरा दांव आया है। ईश्वर मेरे सहायक हैं। मैं किसी भांति आप ही इनसे मिलना चाहती थी। वह स्वयं आ गए। **(आईने में सूरत**

देखकर) इस वक्त किसी बनाव चुनाव की जरूरत नहीं। यह अलसाई मतवाली आंखें सोलहों सिंगार के बराबर हैं। क्या जानें किस स्वभाव का आदमी है। अभी तक विवाह नहीं किया है, पूजा-पाठ, पोथी-पत्रे में रात-दिन लिप्त रहता है। इस पर मंत्र चलना कठिन है। कठिन हो सकता है, पर असाध्य नहीं है। मैं तो कहती हूं, कठिन भी नहीं है। आदमी कुछ खोकर तब सीखता है। जिसने खोया ही नहीं वह क्या सीखेगा। मैं सचमुच बड़ी अभागिन हूं। भगवान् ने यह रूप दिया था तो ऐसे पुरुष का संग क्यों दिया जो बिल्कुल दूसरों की मुट्ठी में था ! यह उसी का फल है कि जिन सज्जनों को मुझे पूजा करनी चाहिए थी, आज मैं उनके खून की प्यासी हो रही हूं। क्यों न खून की प्यासी होऊं ? देवता ही क्यों न हो, जब अपना सर्वनाश कर दे तो उसकी पूजा क्यों करूं ! यह दयावान हैं, धर्मात्मा हैं, गरीबों का हित करते हैं पर मेरा जीवन तो उन्होंने नष्ट कर दिया। दीन-दुनिया कहीं का न रखा। मेरे पीछे एक बेचारे भोले-भाले, सीधे-सादे आदमी के प्राणों के घातक हो गए। कितने सुख से जीवन कटता था। अपने घर में रानी बनी हुई थी। मोटा खाती थी, मोटा पहनती थी, पर गांव-भर में मरजाद तो थी। नहीं तो यहां इस तरह मुंह में कालिख लगाए चोरों की तरह पड़ी हूं जैसे कोई कैदी कालकोठरी में बंद हो। आ गए कंचनसिंह, चलूं। **(दीवानखाने में आकर)** देवरजी को प्रणाम करती हूं।

कंचन : **(चकित होकर मन में)** मैं न जानता था कि यह ऐसी सुंदरी रमणी है। रम्भा के चित्र से कितनी मिलती-जुलती है ! तभी तो भाई साहब लोट-पोट हो गए। वाणी कितनी मधुर है। **(प्रकट)** मैं बिना आज्ञा ही चला आया, इसके लिए क्षमा मांगता हूं। सुना है भाई साहब का कड़ा हुक्म है कि यहां कोई न आने पाए।

राजेश्वरी : आपका घर है, आपके लिए क्या रोक-टोक ! मेरे लिए तो जैसे आपके भाई साहब, वैसे आप। मेरे धन्य भाग कि आप-जैसे भक्त पुरुष के दर्शन हुए ।

कंचन : **(असमंजस में पड़कर मन में)** मैंने काम जितना सहज समझा था उससे कहीं कठिन निकला। सौंदर्य कदाचित् बुद्धि-शक्तियों को हर लेता है। जितनी बातें सोचकर चला था वह सब भूल गईं, जैसे कोई नया पट्ठा अखाड़े में उतरते ही अपने सारे दांव-

पेंच भूल जाए। कैसै बात छेड़ूं ? **(प्रकट)** आपको यह तो मालूम ही होगा कि भाई साहब आपके साथ कहीं बाहर जाना चाहते हैं ?

राजेश्वरी : **(मुस्कराकर)** जी हां, यह निश्चय हो चुका है।

कंचन : अब किसी तरह नहीं रुक सकता ?

राजेश्वरी : हम दोनों में से कोई एक बीमार हो जाए तो रुक सके।

कंचन : ईश्वर न करें, ईश्वर न करें, पर मेरा आशय यह था कि आप भाई साहब को रोकें तो अच्छा हो। वह एक बार घर से जाकर फिर मुश्किल से लौटेंगे। भाभी जी को जब से यह बात मालूम हुई है वह बार-बार भाई साहब के साथ चलने पर जिद कर रही हैं। अगर भैया छिपकर चले गए तो भाभी के प्राणों ही पर बन जाएगी।

राजेश्वरी : इसका तो मुझे भी भय है, क्योंकि मैंने सुना है, ज्ञानी देवी उनके बिना एक छन भी नहीं रह सकतीं। पर मैं भी तो आपके भैया ही के हुक्म की चेरी हूं, जो कुछ वह कहेंगे उसे मानना पड़ेगा। मैं अपना देश, कुल, घर-बार छोड़कर केवल उनके प्रेम के सहारे यहां आई हूं। मेरा यहां कौन है ? उस प्रेम का सुख उठाने से मैं अपने को कैसे रोकूं ? यह तो ऐसा ही होगा कि कोई भोजन बनाकर भूखों तड़पा करे, घर छाकर धूप में जलता रहे। मैं ज्ञानीदेवी से डाह नहीं करती, इतनी ओछी नहीं हूं कि उनसे बराबरी करूं । लेकिन मैंने जो यह लोक-लाज, कुल-मरजाद तजा है वह किसलिए !

कंचन : इसका मेरे पास क्या जवाब है ?

राजेश्वरी : जवाब क्यों नहीं है, पर आप देना नहीं चाहते।

कंचन : दोनों एक ही बात है, भय केवल आपके नाराज होने का है।

राजेश्वरी : इससे आप निश्चिंत रहिए। जो प्रेम की आंच सह सकता है, उसके लिए और सभी बातें सहज हो जाती हैं।

कंचन : मैं इसके सिवा और कुछ न कहूंगा कि आप यहां से न जाएं।

राजेश्वरी : **(कंचन की ओर तिरछी चितवनों से ताकते हुए)** यह आपकी इच्छा है ?

कंचन : हां, यह मेरी प्रार्थना है। **(मन में)** दिल नहीं मानता, कहीं मुंह से कोई बात निकल न पड़े।

राजेश्वरी : चाहे वह रूठ ही जाएं ?

कंचन : नहीं-नहीं, अपने कौशल से उन्हें राजी कर लो।

राजेश्वरी : (**मुस्कराकर**) मुझमें यह गुण नहीं है।

कंचन : रमणियों में यह गुण बिल्ली के नखों की भांति छिपा रहता है। जब चाहें उसे काम में ला सकती हैं।

राजेश्वरी : उनसे आपके आने की चरचा तो करनी ही होगी।

कंचन : नहीं, हरगिज नहीं। मैं तुम्हें ईश्वर की कसम दिलाता हूं। भूलकर भी उनसे यह जिक्र न करना, नहीं तो मैं जहर खा लूंगा, फिर तुम्हें मुंह न दिखाऊंगा।

राजेश्वरी : (**हंसकर**) ऐसी धमकियों का तो प्रेम-बर्ताव में कुछ अर्थ नहीं होता, लेकिन मैं आपको उन आदमियों में नहीं समझती। मैं आपसे कहना नहीं चाहती थी, पर बात पड़ने पर कहना ही पड़ा कि मैं आपके सरल स्वभाव और आपकी निष्कपट बातों पर मोहित हो गई हूं। आपके लिए मैं सब कष्ट सहने को तैयार हूं। पर आपसे यही बिनती है कि मुझ पर कृपादृष्टि बनाए रखिएगा और कभी-कभी दर्शन देते रहिएगा।

राजेश्वरी गाती है।

क्या सो रहा मुसाफिर बीती है रैन सारी।
अब जाग के चलन की कर ले सभी तैयारी।
तुझको है दूर जाना, नहीं पास कुछ खजाना,
आगे नहीं ठिकाना होवे बड़ी खुआरी। (टेक)
पूंजी सभी गमाई, कुछ ना करी कमाई,
क्या लेके घर को जाई करजा किया है भारी।।
क्या सो रहा....।

कंचन चला जाता है।

तीसरा दृश्य

स्थान—सबलसिंह का घर। सबलसिंह बगीचे में हौज के किनारे मसहरी के अंदर लेटे हुए हैं।
समय—ग्यारह बजे रात।

सबल : (**आप-ही-आप**) आज मुझे उसके बर्ताव में कुछ रुखाई-सी

मालूम होती थी। मेरा बहम नहीं है, मैंने बहुत विचार से देखा। मैं घंटे भर तक बैठा चलने के लिए जोर देता रहा, पर उसने एक बार 'नहीं' करके फिर 'हां' न की। मेरी तरफ एक बार भी उन प्रेम की चितवनों से नहीं देखा जो मुझे मस्त कर देती हैं। कुछ गुम-सुम-सी बैठी रही। कितना कहा कि तुम्हारे न चलने से घोर अनर्थ होगा। यात्रा की सब तैयारियां कर चुका हूं, लोग मन में क्या कहेंगे कि पहाड़ों की सैर का इतना ताव था, और इतनी जल्द ठण्डा हो गया; लेकिन मेरी सारी अनुनय-विनय एक तरफ और उसकी 'नहीं' एक तरफ। इसका कारण क्या है? किसी ने बहका तो नहीं दिया। हां, एक बात याद आई। उसके इस कथन का क्या आशय हो सकता है कि हम चाहे जहां जाएं, टोहियों और गोयंदों से बच न सकेंगे। क्या यहां टोहिये आ गए ? इसमें कंचन की कुछ कारस्तानी मालूम होती है। टोहियेपन की आदत उन्हीं में है। उनका उस दिन उचक्कों की भांति इधर-उधर, ऊपर-नीचे ताकते जाना निरर्थक नहीं था। इन्होंने कल मुझे रोकने की कितनी चेष्टा की थी। ज्ञानी की निगाह भी कुछ बदली हुई देखता हूं। यह सारी आग कंचन की लगाई हुई है । तो क्या कंचन वहां गया था ? राजेश्वरी के सम्मुख जाने की इसे क्योंकर हिम्मत हुई। किसी महफिल में तो आज तक गया नहीं। बचपन ही से औरतों को देखकर झेंपता है। वहां कैसे गया ? जाने क्योंकर पाया। मैंने तो राजेश्वरी से सख्त ताकीद कर दी थी कि कोई भी यहां न आने पाए। उसने मेरी ताकीद की कुछ परवाह न की। दोनों नौकरारियां भी मिल गईं। यहां तक कि राजेश्वरी ने इनके जाने की कुछ चर्चा ही नहीं की। मुझसे बात छिपाई, पेट में रखा। ईश्वर, मुझे यह किन पापों का दण्ड मिल रहा है ? अगर कंचन मेरे रास्ते में पड़ते हैं तो पड़ें, परिणाम बुरा होगा। अत्यंत भीषण। मैं जितना ही नर्म हूं उतना ही कठोर भी हो सकता हूं। मैं आज से ताक में हूं। अगर निश्चय हो गया कि इसमें कंचन का कुछ हाथ है तो मैं उसके खून का प्यासा हो जाऊंगा। मैंने कभी उसे कड़ी निगाह से नहीं देखा। पर उसकी इतनी जुर्रत ! अभी यह खून बिल्कुल ठंडा नहीं हुआ है, उस जोश का कुछ हिस्सा बाकी है, जो कटे हुए सिरों और तड़पती हुई लाशों का दृश्य देखकर मतवाला हो

जाता था। इन बाहों में अभी दम है, यह अब भी तलवार और भाले का वार कर सकती हैं। मैं अबोध बालक नहीं हूं कि मुझे बुरे रास्ते से बचाया जाए, मेरी रक्षा की जाए। मैं अपना मुखतार हूं जो चाहूं करूं। किसी को चाहे वह मेरा भाई ही क्यों न हो, मेरी भलाई और हित-कामना का ढोंग रचने की जरूरत नहीं। अगर बात यहीं तक है तो गनीमत है, लेकिन इसके आगे बढ़ गई है तो फिर इस कुल की खैरियत नहीं। इसका सर्वनाश हो जाएगा और मेरे ही हाथों। कंचन को एक बार सचेत कर देना चाहिए।

ज्ञानी आती है।

ज्ञानी : क्या अभी तक सोए नहीं ? बारह तो बज गए होंगे।

सबल : नींद को बुला रहा हूं, पर उसका स्वभाव तुम्हारे जैसा है। आप-ही आप आती है, पर बुलाने से मान करने लगती है। तुम्हें नींद क्यों नहीं आई ?

ज्ञानी : चिंता का नींद से बिगाड़ है।

सबल : किस बात की चिंता है ?

ज्ञानी : एक बात है कि कहूं। चारों तरफ चिंताएं ही चिंताएं हैं। इस वक्त तुम्हारी यात्रा की चिंता है। तबीयत अच्छी नहीं, अकेले जाने को कहते हो। परदेश वाली बात है, न जाने कैसी पड़े कैसी न पड़े। इससे तो यही अच्छा था कि यहीं इलाज करवाते।

सबल : **(मन-ही-मन)** क्यों न इसे खुश कर दूं जब जरा-सी बात फेर देने से काम निकल सकता है। **(प्रकट)** इस जरा-सी बात के लिए इतनी चिंता करने की क्या जरूरत ?

ज्ञानी : तुम्हारे लिए जरा-सी हो, पर मुझे तो असूझ मालूम होता है।

सबल : अच्छा तो लो, न जाऊंगा।

ज्ञानी : मेरी कसम ?

सबल : सत्य कहता हूं। जब इससे तुम्हें इतना कष्ट हो रहा है तो न जाऊंगा।

ज्ञानी : मैं इस अनुग्रह को कभी न भूलूंगी। आपने मुझे उबार लिया, नहीं तो न जाने मेरी क्या दशा होती। अब मुझे कुछ दंड भी दीजिए। मैंने आपकी आज्ञा का उल्लंघन किया है और उसका कठिन दंड चाहती हूं।

सबल : मुझे तुमसे इसकी शंका ही नहीं हो सकती।

ज्ञानी : पर यह अपराध इतना बड़ा है कि आप उसे क्षमा नहीं कर सकते।

सबल : **(कौतूहल से)** क्या बात है, सुनूं ?

ज्ञानी : मैं कल आपके मना करने पर भी स्वामी चेतनदास के दर्शनों को चली गई थी।

सबल : अकेले ?

ज्ञानी : गुलाबी साथ थी।

सबल : **(मन में)** क्या करे बेचारी किसी तरह मन तो बहलाये। मैंने एक तरह इससे मिलना ही छोड़ दिया। बैठे-बैठे जी ऊब गया होगा। मेरी आज्ञा ऐसी कौन महत्त्व की वस्तु है। जब नौकर-चाकर जब चाहते हैं उसे भंग कर देते हैं और मैं उनका कुछ नहीं कर सकता, तो इस पर क्यों गर्म पड़ूं। मैं खुली आंखों धर्म और नीति को भंग कर रहा हूं, ईश्वरीय आज्ञा से मुंह मोड़ रहा हूं तो मुझे कोई अधिकार नहीं कि इसके साथ जरा-सी बात के लिए सख्ती करूं। **(प्रकट)** यह कोई अपराध नहीं, और न मेरी आज्ञा इतनी अटल है कि भंग ही न की जाय। अगर तुम इसे अपराध समझती हो तो मैं इसे सहर्ष क्षमा करता हूं।

ज्ञानी : स्वामी, आपके बर्ताव में आजकल क्यों इतना अंतर हो गया है? आपने क्यों मुझे बंधनों से मुक्त कर दिया है, मुझ पर पहले की भांति शासन क्यों नहीं करते ? नाराज क्यों नहीं होते, कटु शब्द क्यों नहीं कहते, पहले की भांति रूठते क्यों नहीं, डांटते क्यों नहीं ? आपकी यह सहिष्णुता देखकर मेरे अबोध मन में भांति-भांति की शंका उठने लगती है कि यह प्रेम-बंधन का ढीलापन न हो।

सबल : नहीं प्रिये, यह बात नहीं है। देश-देशांतर के पत्र-पत्रिकाओं को देखता हूं तो वहां की स्त्रियों की स्वाधीनता के सामने यहां का कठोर शासन कुछ अच्छा नहीं लगता। अब स्त्रियां कौन्सिलों में जा सकती हैं, वकालत कर सकती हैं, यहां तक कि भारत में भी स्त्रियों को अन्याय के बंधन से मुक्त किया जा रहा है, तो क्या मैं ही सबसे गया-बीता हूं कि वही पुरानी लकीर पीटे जाऊं।

ज्ञानी : मुझे तो उस राजनैतिक स्वाधीनता के सामने प्रेम-बंधन कहीं

सुखकर जान पड़ता है। मैं वह स्वाधीनता नहीं चाहती।

सबल : **(मन में)** भगवन्, इस अपार प्रेम का मैंने कितना घोर अपमान किया है ? इस सरल हृदया के साथ मैंने कितनी अनीति की है? आंखों में आंसू क्यों भरे आते हैं ? मुझ जैसा कुटिल मनुष्य इस देवी के योग्य नहीं था। **(प्रकट)** प्रिये, तुम मेरी ओर से लेश-मात्र भी शंका न करो। मैं सदैव तुम्हारा हूं और रहूंगा। इस समय गाना सुनने का जी चाहता है । वही अपना प्यारा गीत गाकर मुझे सुना दो।

ज्ञानी सरोद लाकर सबलसिंह को दे देती है। गाने लगती है।

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई।
माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई,
संतन संग बैठि-बैठि लोक लाज खोई। अब तो....।।

चौथा दृश्य

स्थान—गंगा तट। बरगद के घने वृक्ष के नीचे तीन-चार आदमी लाठियां और तलवारें लिए बैठे हैं।
समय—दस बजे रात।

एक डाकू : दस बजे और अभी तक लौटी नहीं।

दूसरा : तुम उतावले क्यों हो जाते हो। जितनी ही देर में लौटेगी उतना ही सन्नाटा होगा, अभी इक्के-दुक्के रास्ता चल रहा है।

तीसरा : इसके बदन पर कोई पांच हजार के गहने तो होंगे ?

चौथा : सबलसिंह कोई छोटा आदमी नहीं है। उसकी घरवाली बन-ठनकर निकलेगी तो दस हजार से कम का माल नहीं।

पहला : यह शिकार आज हाथ आ जाए तो कुछ दिनों चैन से बैठना नसीब हो। रोज-रोज रात-रात भर घात में बैठे रहना अच्छा नहीं लगता। यह सब कुछ करके भी शरीर को आराम न मिला तो बात ही क्या रही।

दूसरा : भाग्य में आराम वदा होता तो यह कुकरम न करने पड़ते। कहीं सेठों की तरह गद्दी-मसनद लगाए बैठे होते । हमें चाहे कोई खजाना ही मिल जाए पर आराम नहीं मिल सकता।

तीसरा : कुकरम क्या हमीं करते हैं, यही कुकरम तो संसार कर रहा है। सेठजी रोजगार के नाम से डाका मारते हैं, अमले घूस के नाम से डाका मारते हैं, वकील मेहनताना के नाम से डाका मारता है। पर उन डकैतों के महल खड़े हैं, हवागाड़ियों पर सैर करते फिरते हैं, पेचवान लगाए मखमली गद्दियों पर पड़े रहते हैं। सब उनका आदर करते हैं, सरकार उन्हें बड़ी-बड़ी पदवियां देती है। हमीं लोगों पर विधाता की निगाह क्यों इतनी कड़ी रहती है?

चौथा डाकू : काम करने का ढंग है। वह लोग पढ़े-लिखे हैं इसलिए हमसे चतुर हैं। कुकरम भी करते हैं और मौज भी उड़ाते हैं। वही पत्थर मंदिर में पुजता है और वही नालियों में लगाया जाता है।

पहला : चुप, कोई आ रहा है।

हलधर का प्रवेश। **(गाता है)**

'सात सखी पनघट पर आईं कर सोलह सिंगार,
अपना दुःख रोने लगीं, जो कुछ बदा लिलार।
पहली सखी बोली, सुनो चार बहनो मेरा पिया सराबी है,
कफन की कौड़ी पास न रखता, दिल का बड़ा नवाबी है।
जो कुछ पाता सभी उड़ाता, घर की अजब खराबी है।
लोटा-थाली गिरवी रख दी, फिरता लिये रिकाबी है।
बात-बात पर आंख बदलता, इतना बड़ा मिजाजी है।
एक हाथ में दोना कुल्हड़, दूजे बोतल गुलाबी है।

पहला डाकू : कौन है ? खड़ा रह।

हलधर : तुम तो ऐसा डपट रहे हो जैसे मैं कोई चोर हूं। कहो क्या कहते हो ?

दूसरा डाकू : **(साथियों से)** जवान तो बड़ा गठीला और जीवट का है। **(हलधर से)** किधर चले ? घर कहां है ?

हलधर : यह सब आल्हा पूछकर क्या करोगे ? अपना मतलब कहो।

तीसरा डाकू : हम पुलिस के आदमी हैं, बिना तलाशी लिए किसी को जाने नहीं देते।

हलधर : **(चौकन्ना होकर)** यहां क्या धरा है जो तलाशी को धमकाते हो। धन के नाते यही लाठी है और इसे मैं बिना दस-पांच सिर फोड़े दे नहीं सकता।

चौथा डाकू : तुम समझ गए हम लोग कौन हैं, या नहीं ?

हलधर ऐसा क्या निरा बुद्धू ही समझ लिया है ?

चौथा डाकू : तो गांठ में जो कुछ हो दे दो, नाहक रार क्यों मचाते हो ?

हलधर : तुम भी निरे गंवार हो। चील के घोंसले में मांस ढूंढ़ते हो।

पहला डाकू : यारो, संभलकर, पालकी आ रही है।

चौथा डाकू : बस टूट पड़ो जिसमें कहार भाग खड़े हों।

ज्ञानी की पालकी आती है। चारों डाकू तलवारें लिए कहारों पर जा पड़ते हैं। कहार पालकी पटककर भाग खड़े होते हैं। गुलाबी बरगद की आड़ों में छिप जाती है।

एक डाकू : ठकुराइन, जान की खैर चाहती हो तो सब गहने चुपके से उतार के रख दो। अगर गुल मचाया या चिल्लाई तो हमें जबरदस्ती तुम्हारा मुंह बंद करना पड़ेगा; और हम तुम्हारे ऊपर हाथ नहीं उठाना चाहते।

दूसरा डाकू : सोचती क्या हो, यहां ठाकुर सबलसिंह नहीं बैठे हैं जो बंदूक लिए आते हों। चटपट उतारो।

तीसरा : **(पालकी का परदा उठाकर)** यह यों न मानेगी, ठकुराइन है न, हाथ पकड़कर बांध दो, उतार लो सब गहने।

हलधर लपककर उस डाकू पर लाठी चलाता है और वह हाय मारकर बेहोश हो जाता है। तीनों बाकी डाकू उस पर टूट पड़ते हैं। लाठियां चलने लगती हैं।

हलधर : वह मारा, एक और गिरा।

पहला डाकू : भाई, तुम जीते हम हारे, शिकार क्यों भगाए देते हो ? माल में आधा तुम्हारा ।

हलधर : तुम हत्यारे हो, अबला स्त्रियों पर हाथ उठाते हो, मैं अब तुम्हें जीता न छोड़ूंगा।

डाकू : यार, दस हजार से कम का माल नहीं है। ऐसा अवसर फिर न मिलेगा। थानेदार को सौ-दो सौ रुपये देकर टरका देंगे। बाकी सारा अपना है।

हलधर : **(लाठी तानकर)** जाते हो या हड्डी तोड़ के रख दूं ?

दोनों डाकू भाग जाते हैं। हलधर कहारों को बुलाता है जो एक मंदिर में छिपे बैठे हैं। पालकी उठती है।

ज्ञानी : भैया, आज तुमने मेरे साथ जो उपकार किया है इसका फल तुम्हें ईश्वर देंगे, लेकिन मेरी इतनी विनती है कि मेरे घर तक चलो। तुम देवता हो, तुम्हारी पूजा करूंगी।

हलधर : रानी जी, यह तुम्हारी भूल है। मैं न देवता हूं न दैत्य। मैं भी घातक हूं। पर मैं अबला औरतों का घातक नहीं, हत्यारों ही का घातक हूं। जो धन के बल से गरीबों को लूटते हैं, उनकी इज्जत बिगाड़ते हैं, उनके घर को भूतों का डेरा बना देते हैं। जाओ, अब से गरीबों पर दया रखना। नालिस, कुड़की, जेहल, यह सब मत होने देना।

नदी की ओर चला जाता है। गाता है।

दूजी सखी बोली सुनो सखियो, मेरा पिया जुआरी है।
रात-रात भर फड़ पर रहता, बिगड़ी दसा हमारी है।
घर और बार दांव पर हारा, अब चोरी की बारी है।
गहने-कपड़े को क्या रोऊं, पेट की रोटी भारी है।
कौड़ी ओढ़ना कौड़ी बिछौना, कौड़ी सौत हमारी है।

ज्ञानी : **(गुलाबी से)** आज भगवान ने बचा लिया नहीं तो गहने भी जाते और जान की भी कुशल न थी।

गुलाबी : यह जरूर कोई देवता है, नहीं तो दूसरों के पीछे कौन अपनी जान जोखिम में डालता ?

पांचवां दृश्य

स्थान—मधुबन।

समय—नौ बजे रात, बादल घिरा हुआ है, एक वृक्ष के नीचे बाबा चेतनदास मृगछाले पर बैठे हुए हैं। फत्तू, मंगरू, हरदास आदि धूनी से जरा हट कर बैठे हैं

चेतनदास : संसार कपटमय है। किसी प्राणी का विश्वास नहीं। जो बड़े ज्ञानी, बड़े त्यागी, धर्मात्मा प्राणी हैं—उनकी चित्तवृत्ति को ध्यान से देखो तो स्वार्थ से भरा पाओगे। तुम्हारा जमींदार धर्मात्मा समझा जाता है, सभी उसके यश कीर्ति की प्रशंसा करते हैं। पर मैं कहता हूं कि ऐसा अत्याचारी, कपटी, धूर्त, भ्रष्टाचरण मनुष्य संसार में न होगा।

मंगरू : बाबा, आप महात्मा हैं, आपकी जबान कौन पकड़े, पर हमारे ठाकुर सचमुच देवता हैं। उनके राज में हमको जितना सुख है उतना कभी नहीं था।

हरदास : जेठी की लगान माफ कर दी थी। अब असामियों को भूसे-चारे के लिए बिना ब्याज के रुपये दे रहे हैं।

फत्तू : उनमें और चाहे कोई बुराई हो पर असामियों पर हमेशा परवरस की निगाह रखते हैं।

चेतनदास : यही तो उसकी चतुराई है कि अपना स्वार्थ भी सिद्ध कर लेता है और अपकीर्ति भी नहीं होने देता। रुपये से, मीठे वचन से, नम्रता से लोगों को वशीभूत कर लेता है।

मंगरू : महाराज, आप उनका स्वभाव नहीं जानते जभी ऐसा कहते हैं। हम तो उन्हें सदा से देखते आते हैं। कभी ऐसी नीयत नहीं देखी कि किसी से एक पैसा बेसी ले लें। कभी किसी तरह की बेगार नहीं ली, और निगाह का तो ऐसा साफ आदमी कहीं देखा ही नहीं।

हरदास : कभी किसी पर निगाह नहीं डाली।

चेतनदास : भली प्रकार सोचो, अभी हाल ही में कोई स्त्री यहां से निकल गई है ?

फत्तू : **(उत्सुक होकर)** हां महाराज, अभी थोड़े ही दिन हुए।

चेतनदास : उसके पति का भी पता नहीं है?

फत्तू : हां महाराज, वह भी गायब है।

चेतनदास : स्त्री परम सुंदरी है ?

फत्तू : हां महाराज, रानी मालूम होती है।

चेतनदास : उसे सबलसिंह ने घर डाल लिया है।

फत्तू : घर डाल लिया है ?

मंगरू : झूठ है।

हरदास : विश्वास नहीं आता।

फत्तू : और हलधर कहां है ?

चेतनदास : इधर-उधर मारा-मारा फिरता है। डकैती करने लगा है। मैंने उसे बहुत खोजा पर भेंट नहीं हुई।

सलोनी गाती हुई आती है।

मुझे जोगिनी बना के कहां गए रे जोगिया।

फत्तू : सलोनी काकी, इधर आओ ! राजेश्वरी तो सबलसिंह के घर बैठ गई।

सलोनी : चल झूठे, बेचारी को बदनाम करता है।

मंगरू : ठाकुर साहब में यह लत है ही नहीं।

सलोनी : मर्दों की मैं नहीं चलाती, न इनके सुभाव का कुछ पता मिलता है, पर कोई भरी गंगा में राजेश्वरी को कलंक लगाए तो भी मुझे विश्वास न आएगा। वह ऐसी औरत नहीं।

फत्तू : विश्वास तो मुझे भी नहीं आता, पर यह बाबा जी कह रहे हैं।

सलोनी : आपने आंखों देखा है ?

चेतनदास : नित्य ही देखता हूं। हां, कोई दूसरा देखना चाहे तो कठिनाई होगी। उसके लिए किराए पर एक मकान लिया गया है, तीन लौंडिया सेवा टहल के लिए हैं, ठाकुर प्रातःकाल जाता है और घड़ीभर में वहां से लौट आता है। संध्या समय फिर जाता है और नौ-दस बजे तक रहता है। मैं इसका प्रमाण देता हूं। मैंने सबलसिंह को समझाया, पर वह इस समय किसी की नहीं सुनता। मैं अपनी आंखों यह अत्याचार नहीं देख सकता। मैं संन्यासी हूं। मेरा धर्म है कि ऐसे अत्याचारियों का, ऐसे पाखंडियों का संहार करूं। मैं पृथ्वी को ऐसे रंगे हुए सियारों से मुक्त कर देना चाहता हूं। उसके पास धन का बल है तो हुआ करे। मेरे पास न्याय और धर्म का बल है। इसी बल से मैं उसको परास्त करूंगा। मुझे आशा थी कि तुम लोगों से इस पापी को दंड देने में मुझे यथेष्ट सहायता मिलेगी। मैं समझता था कि देहातों में आत्माभिमान का अभी अंत नहीं हुआ है, वहां के प्राणी इतने पतित नहीं हुए हैं कि अपने ऊपर इतना घोर, पैशाचिक अनर्थ देखकर भी उन्हें उत्तेजना न हो, उनका रक्त न खौलने लगे। पर अब ज्ञात हो रहा है कि सबल ने तुम लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया है। उसके दयाभाव ने तुम्हारे आत्मसम्मान को कुचल डाला है। दया का आघात अत्याचार के आघात से कम प्राणघातक नहीं होता। अत्याचार के आघात से क्रोध उत्पन्न होता है, जी चाहता है मर जायें या मार डालें। पर दया की चोट सिर को नीचा कर देती है, इससे मनुष्य की आत्मा और भी निर्बल हो जाती है, उसके अभिमान का अंत हो जाता है। वह नीच, कुटिल, खुशामदी हो जाता है। मैं तुमसे फिर पूछता हूं, तुममें

कुछ लज्जा का भाव है या नहीं?

एक किसान : महाराज, अगर आपका ही कहना ठीक हो तो हम क्या कर सकते हैं ? ऐसे दयावान पुरुष की बुराई हमसे न होगी। औरत आप ही खराब हो तो कोई क्या करे ?

मंगरू : बस, तुमने मेरे मन की बात कही।

हरदास : वह सदा से हमारी परवरिस करते आए हैं। हम आज उनसे बागी कैसे हो जाएं ?

दूसरा किसान : बागी हो भी जाएं तो रहें कहां ? हम तो उनकी मुट्ठी में हैं। जब चाहें हमें पीस डालें। पुस्तैनी अदावत हो जाएगी।

मंगरू : अपनी लाज तो ढांकते नहीं बनती, दूसरों की लाज कोई क्या ढांकेगा ?

हरदास : स्वामीजी, आप सन्नासी हैं, आप सब कुछ कर सकते हैं। हम गृहस्थ लोग जमींदारों से बिगाड़ करने लगें तो कहीं ठिकाना न लगे।

मंगरू : हां और क्या, आप तो अपने तपोबल से ही जो चाहें कर सकते हैं। अगर आप सराप भी दे दें तो कुकर्मी खड़े-खड़े भस्म हो जाएं।

सलोनी : जा, चुल्लू-भर पानी में डूब मर कायर कहीं का। हलधर तेरे सगे चाचा का बेटा है। जब तू उसका नहीं तो और किसका होगा ? मुंह में कालिख नहीं लगा लेता, ऊपर से बातें बनाता है। तुझे तो चूड़ियां पहनकर घर में बैठना चाहिए था। मर्द वह होते हैं जो अपनी आन पर जान दे देते हैं। तू हिजड़ा है। अब जो मुंह खोला तो लूका लगा दूंगी।

मंगरू : सुनते हो फत्तू काका, इनकी बातें। जमींदार से बैर बढ़ाना इनकी समझ में दिल्लगी है। हम पुलिस वालों से चाहे न डरें, अमलों से चाहे न डरें, महाजन से चाहे बिगाड़ कर लें, पटवारी से चाहे कहा-सुनी हो जाए, पर जमींदार से मुंह लगना अपने लिए गढ़ा खोदना है। महाजन एक नहीं हजारों हैं, अमले आते-जाते रहते हैं, बहुत करेंगे सता लेंगे, लेकिन जमींदार से तो हमारा जनम-मरन का व्योहार है। उसके हाथ में तो हमारी रोटियां हैं। उससे ऐंठकर कहां जाएंगे ? न काकी, तुम चाहे गालियां दो, चाहे ताने मारो, पर सबलसिंह से हम लड़ाई नहीं ठान सकते।

चेतनदास : **(मन में)** मनोनीत आशा न पूरी हुई। हलधर के कुटुम्बियों में

ऐसा कोई न निकला जो आवेग में आकर अपमान का बदला लेने को तैयार हो जाता। सब-के-सब कायर निकले। कोई वीर आत्मा निकल आती जो मेरे रास्ते से इस बाधा को हटा देती, फिर ज्ञानी अपनी हो जाती। यह दोनों उस काम के तो नहीं हैं, पर हिम्मती मालूम होते हैं। बुढ़िया दीन बनी हुई है, पर है पोढ़ी, नहीं तो इतने घमंड से बातें न करती। मियां गांठ का पूरा तो नहीं, पर दिल का दिलेर जान पड़ता है। उत्तेजना में पड़कर अपना सर्वस्व खो सकता है। अगर दोनों से कुछ धन मिल जाए तो सब-इंस्पेक्टर को मिलाकर, कुछ मायाजाल से, कुछ लोभ से काबू में कर लूं। कोई मुकदमा खड़ा हो जाये। कुछ न होगा भांडा तो फूट जाएगा। ज्ञानी उन्हें अबकी भांति देवता तो न समझती रहेगी। **(प्रकट)** इस पापी को दंड देने का मैंने प्रण कर लिया है। ऐसे कायर व्यक्ति भी होते हैं, यह मुझे ज्ञात न था। हरीच्छा ! अब कोई दूसरी ही युक्ति काम में लानी चाहिए।

सलोनी : महाराज, मैं दीन-दुखिया हूं, कुछ कहना छोटा मुंह बड़ी बात है, पर मैं आपकी मदद के लिए हर तरह हाजिर हूं। मेरी जान भी काम आए तो दे सकती हूं।

फत्तू : स्वामीजी, मुंझसे भी जो हो सकेगा करने को तैयार हूं। हाथों में तो अब मकदूर नहीं रहा, पर और सब तरह हाजिर हूं।

चेतनदास : मुझे इस पापी का संहार करने के लिए किसी की मदद की आवश्यकता न होती। मैं अपने योग और तप के बल से एक क्षण में उसे रसातल को भेज सकता हूं, पर शास्त्रों में ऐसे कामों के लिए योगबल का व्यवहार करना वर्जित है। इसी से विवश हूं। तुम धन से मेरी कुछ सहायता कर सकते हो ?

सलोनी : **(फत्तू की ओर सशंक दृष्टि से ताकते हुए)** महाराज, थोड़े-से रुपये धाम करने को रख छोड़े थे। वह आपके भेंट कर दूंगी। यह भी तो पुण्य ही का काम है।

फत्तू : काकी, तेरे पास कुछ रुपये ऊपर हों तो मुझे उधार दे दे।

सलोनी : चल, बातें बनाता है। मेरे पास रुपये कहां से आएंगे ? कौन घर के आदमी कमाई कर रहे हैं। चालीस साल बीत गए बाहर से एक पैसा भी घर में नहीं आया।

फत्तू : अच्छा, नहीं देती है मत दे। अपने तीनों सीसम के पेड़ बेच दूंगा।

चेतनदास : अच्छा, तो मैं जाता हूं विश्राम करने। कल दिन-भर में तुम लोग प्रबंध करके जो कुछ हो सके इस कार्य के निमित्त दे देना। कल संध्या को मैं अपने आश्रम पर चला जाऊंगा।

प्रस्थान।

छठा दृश्य

स्थान—शहर वाला किराये का मकान।

समय—आधी रात। कंचनसिंह और राजेश्वरी बातें कर रहे हैं।

राजेश्वरी : देवरजी, मैंने प्रेम के लिए अपना सर्वस्व लगा दिया। पर जिस प्रेम की आशा थी वह नहीं मयस्सर हुआ। मैंने अपना सर्वस्व दिया है तो उसके लिए सर्वस्व चाहती भी हूं। मैंने समझा था, एक के बदले आधी पर संतोष कर लूंगी। पर अब देखती हूं तो जान पड़ता है कि मुझसे भूल हो गयी। दूसरी बड़ी भूल यह हुई कि मैंने ज्ञानी देवी की ओर ध्यान नहीं दिया था। उन्हें कितना दु:ख, कितना शोक, कितनी जलन होगी; इसका मैंने जरा भी विचार नहीं किया था। आपसे एक बात पूछूं, नाराज तो न होंगे?

कंचन : तुम्हारी बात से मैं नाराज हूंगा !

राजेश्वरी : आपने अब तक विवाह क्यों नहीं किया ?

कंचन : इसके कई कारण हैं। मैंने धर्मग्रंथों में पढ़ा था कि गृहस्थ जीवन मनुष्य की मोक्ष-प्राप्ति में बाधक होता है। मैंने अपना तन, मन, धन सब धर्म पर अर्पण कर दिया था। दान और व्रत को ही मैंने जीवन का उद्देश्य समझ लिया था। उसका मुख्य कारण यह था कि मुझे प्रेम का कुछ अनुभव न था। मैंने उसका सरस स्वाद न पाया था। उसे केवल माया की एक कूटलीला समझा करता था, पर अब ज्ञात हो रहा है कि प्रेम में कितना पवित्र आनंद और कितना स्वर्गीय सुख भरा हुआ है। इस सुख के सामने अब मुझे धर्म, मोक्ष और व्रत कुछ भी नहीं जंचते। उसका सुख भी चिंतामय है, इसका दु:ख भी रसमय।

राजेश्वरी : **(वक्र नेत्रों से ताककर)** यह सुख कहां प्राप्त हुआ ?

कंचन : यह न बताऊंगा।

राजेश्वरी : **(मुस्कराकर)** बताइए चाहे न बताइए, मैं समझ गई। जिस वस्तु

को पाकर आप इतने मुग्ध हो गए हैं वह असल में प्रेम नहीं है। प्रेम की केवल झलक है। जिस दिन आपको प्रेम-रत्न मिलेगा उस दिन आपको इस आनंद का सच्चा अनुभव होगा।

कंचन : मैं यह रत्न पाने योग्य नहीं हूं। वह आनंद मेरे भाग्य में ही नहीं है।

राजेश्वरी : है और मिलेगा। भाग्य से इतने निराश न हूजिए। आप जिस दिन, जिस घड़ी, जिस पल इच्छा करेंगे वह रत्न आपको मिल जाएगा। वह आपकी इच्छा की बाट जोह रहा है।

कंचन : **(आंखों में आंसू भरकर)** राजेश्वरी, मैं घोर धर्म-संकट में हूं। न जाने मेरा क्या अंत होगा। मुझे इस प्रेम पर अपने प्राण बलिदान करने पड़ेंगे।

राजेश्वरी : **(मन में)** भगवान, मैं कैसी अभागिनी हूं। ऐसे निश्छल सरल पुरुष की हत्या मेरे हाथों हो रही है। पर करूं क्या, अपने अपमान का बदला तो लेना ही होगा। **(प्रकट)** प्राणेश्वर, आप इतने निराश क्यों होते हैं। मैं आपकी हूं और आपकी रहूंगी। संसार की आंखों में मैं चाहे जो कुछ हूं, दूसरों के साथ मेरा बाहरी व्यवहार चाहे जैसा हो, पर मेरा हृदय आपका है। मेरे प्राण आप पर न्योछावर हैं। **(आंचल से कंचन के आंसू पोंछकर)** अब प्रसन्न हो जाइए। यह प्रेमरत्न आपकी भेंट है।

कंचन : राजेश्वरी, उस प्रेम को भोगना मेरे भाग्य में नहीं है। मुझ जैसा भाग्यहीन पुरुष और कौन होगा जो ऐसे दुर्लभ रत्न की ओर हाथ नहीं बढ़ा सकता। मेरी दशा उस पुरुष की-सी है जो क्षुधा से व्याकुल होकर उन पदार्थों की ओर लपके जो किसी देवता की अर्चना के लिए रखे हुए हों। मैं वही अमानुषी कर्म कर रहा हूं। मैं पहले यह जानता कि प्रेम-रत्न कहां मिलेगा तो तुम अप्सरा भी होतीं तो आकाश से उतार लाता। दूसरों की आंख पड़ने के पहले तुम मेरी हो जातीं, फिर कोई तुम्हारी ओर आंख उठाकर भी न देख सकता। पर तुम मुझे उस वक्त मिलीं जब तुम्हारी ओर प्रेम की दृष्टि से देखना भी मेरे लिए अधर्म हो गया। राजेश्वरी, मैं महापापी, अधर्मी जीव हूं। मुझे यहां इस एकांत में बैठने का, तुमसे ऐसी बातें करने का अधिकार नहीं है। पर प्रेमाघात ने मुझे संज्ञाहीन कर दिया है। मेरा विवेक लुप्त हो गया है। मेरे इतने दिन का ब्रह्मचर्य और धर्मनिष्ठा का अपहरण हो

गया है। इसका परिणाम कितना भयंकर होगा, ईश्वर ही जाने। अब यहां मेरा बैठना उचित नहीं है। मुझे जाने दो। **(उठ खड़ा होता है।)**

राजेश्वरी : **(हाथ पकड़कर)** न जाने पाइएगा। जब इस धर्म का पचड़ा छेड़ा है तो उसका निपटारा किए जाइए। मैं तो समझती थी जैसे जगन्नाथ पुरी में पहुंचकर छुआछूत का विचार नहीं रहता, उसी भांति प्रेम की दीक्षा पाने के बाद धर्म-अधर्म का विचार नहीं रहता। प्रेम आदमी को पागल कर देता है। पागल आदमी के काम और बात का, विचार और व्यवहार का कोई ठिकाना नहीं।

कंचन : इस विचार से चित्त को संतोष नहीं होता। मुझे अब जाने दो। अब और परीक्षा में मत डालो।

राजेश्वरी : अच्छा बतलाते जाइए कब आइएगा?

कंचन : कुछ नहीं जानता क्या होगा। **(रोते हुए)** मेरे अपराध क्षमा करना।

जीने से उतरता है। द्वार पर सबलसिंह आते दिखाई देते हैं। कंचन एक अंधेरे बरामदे में छिप जाता है।

सबल : **(ऊपर जाकर)** अरे ! अभी तक तुम सोयी नहीं ?

राजेश्वरी : जिन आंखों में प्रेम बसता है वहां नींद कहां?

सबल : यह उन्निद्रा प्रेम में नहीं होती। कपट-प्रेम में होती है।

राजेश्वरी : **(सशंक होकर)** मुझे तो इसका कभी अनुभव नहीं हुआ। आपने इस समय आकर बड़ी कृपा की।

सबल : **(क्रोध से)** अभी यहां कौन बैठा हुआ था ?

राजेश्वरी : आपकी याद।

सबल : मुझे भ्रम था कि याद संदेह नहीं हुआ करती है। आज यह नयी बात मालूम हुई । मैं तुमसे विनय करता हूं, बतला दो, अभी कौन यहां से उठकर गया है ?

राजेश्वरी : आपने देखा है तो क्यों पूछते हैं ?

सबल : शायद मुझे भ्रम हुआ हो।

राजेश्वरी : ठाकुर कंचनसिंह थे।

सबल : तो मेरा गुमान ठीक निकला। वह क्या करने आया था ?

राजेश्वरी : **(मन में)** मालूम होता है मेरा मनोरथ उससे जल्द पूरा होगा जितनी मुझे आशा थी। **(प्रकट)** यह प्रश्न आप व्यर्थ करते हैं।

इतनी रात गए जब कोई पुरुष किसी अन्य स्त्री के पास जाता है तो उसका एक ही आशय हो सकता है।

सबल : उसे तुमने आने क्यों दिया ?

राजेश्वरी : उन्होंने आकर द्वार खटखटाया, कहारिन जाकर खोल आई। मैंने तो उन्हें यहां आने पर देखा।

सबल : कहारिन उससे मिली हुई है ?

राजेश्वरी : यह उससे पूछिए।

सबल : जब तुमने उसे बैठे देखा तो दुत्कार क्यों न दिया ?

राजेश्वरी : प्राणेश्वर, आप मुझसे ऐसे सवाल पूछकर दिल न जलाएं। यह कहां की रीति है कि जब कोई आदमी अपने पास आए तो उसको दुत्कार दिया जाए, वह भी जब आपका भाई हो। मैं इतनी निष्ठुर नहीं हो सकती। उनसे मिलने में तो भय जब होता कि जब मेरा अपना चित्त चंचल होता, मुझे अपने ऊपर विश्वास न होता। प्रेम के गहरे रंग में सराबोर होकर अब मुझ पर किसी दूसरे रंग के चढ़ने की सम्भावना नहीं है। हां, आप बाबू कंचनसिंह को किसी बहाने से समझा दीजिये कि अब से यहां न आएं। वह ऐसी प्रेम और अनुराग की बातें करने लगते हैं कि उसके ध्यान से ही लज्जा आने लगती है। विवश होकर बैठती हूं, सुनती हूं।

सबल : **(उन्मत्त होकर)** पाखंडी कहीं का, धर्मात्मा बनता है, विरक्त बनता है, और कर्म ऐसे नीच ! तू मेरा भाई सही, पर तेरा वध करने में कोई पाप नहीं है। हां, इस राक्षस की हत्या मेरे ही हाथों होगी। ओह ! कितनी नीच प्रकृति है, मेरा सगा भाई और यह व्यवहार ! असह्य है, अक्षम्य है। ऐसे पापी के लिए नरक ही सबसे उत्तम स्थान है। आज ही इसी रात को तेरी जीवन-लीला समाप्त हो जाएगी। तेरा दीपक बुझ जाएगा। हां; धूर्त, क्या कामलोलुपता के लिए यही एक ठिकाना था ! तुझे मेरे ही घर में आग लगानी थी। मैं तुझे पुत्रवत् प्यार करता था। तुझे.... **(क्रोध से होंठ चबाकर)** तेरी लाश को इन्हीं आंखों से तड़पते हुए देखूंगा।

नीचे चला जाता है।

राजेश्वरी : **(आप-ही-आप)** ऐसा जान पड़ता है, भगवान् स्वयं यह सारी

लीला कर रहे हैं, उन्हीं की प्रेरणा से सब कुछ होता हुआ मालूम होता है। कैसा विचित्र रहस्य है। मैं बैलों को मारा जाना नहीं देख सकती थी, चिउंटियों को पैरों-तले पड़ते देखकर मैं पांव हटा लिया करती थी; पर अभाग्य मुझसे यह हत्याकांड करा रहा है। मेरे ही निर्दय हाथों के इशारे से यह कठपुतलियां नाच रही हैं !

करुण स्वरों में गाती है।

ऊधो, कर्मन की गति न्यारी।

गाते-गाते प्रस्थान।

सातवां दृश्य

स्थान—दीवानखाना।
समय—तीन बजे रात। घटा छायी हुई है। सबलसिंह तलवार हाथ में लिये द्वार पर खड़े हैं।

सबल : **(मन में)** अब सो गया होगा! मगर नहीं, आज उसकी आंखों में नींद कहां ! पड़ा-पड़ा प्रेमाग्नि में जल रहा होगा, करवटें बदल रहा होगा। उस पर यह हाथ न उठ सकेंगे। मुझमें इतनी निर्दयता नहीं है। मैं जानता हूं वह मुझ पर प्रतिघात न करेगा। मेरी तलवार को सहर्ष अपनी गर्दन पर ले लेगा। हां ! यही तो उसका प्रतिघात होगा। ईश्वर करे, वह मेरी ललकार पर सामने खड़ा हो जाए। तब यह तलवार वज्र की भांति उसकी गर्दन पर गिरेगी। अरक्षित, निश्शस्त्र पुरुष पर मुझसे आघात न होगा। जब वह करुण दीन नेत्रों से मेरी ओर ताकेगा—तो मेरी हिम्मत छूट जाएगी।

धीरे-धीरे कंचनसिंह के कमरे की ओर बढ़ता है।

हा ! मानव-जीवन कितना रहस्यमय है। हम दोनों ने एक ही मां के उदर से जन्म लिया, एक ही स्तन का दूध पिया, सदा एक साथ खेले, पर आज मैं उसकी हत्या करने को तैयार हूं। कैसी विडम्बना है ! ईश्वर करे उसे नींद आ गई हो। सोते को मारना धर्म-विरुद्ध हो, पर कठिन नहीं है। दीनता दया को जागृत कर

देती है....(**चौंककर**) अरे! यह कौन तलवार लिये बढ़ा चला आता है। कहीं छिपकर देखूं, इसकी क्या नीयत है। लम्बा आदमी है, शरीर कैसा गठा हुआ है। किवाड़ के दरारों से निकलते हुए प्रकाश में आ जाये तो देखूं कौन है ? वह आ गया। यह तो हलधर मालूम होता है, बिल्कुल वही है, लेकिन हलधर के दाढ़ी नहीं थी। सम्भव है दाढ़ी निकल आयी हो, पर है हलधर, हां वही है, इसमें कोई संदेह नहीं है। राजेश्वरी की टोह किसी तरह मिल गयी। अपमान का बदला लेना चाहता है। कितना भयंकर स्वरूप हो गया है। आंखें चमक रही हैं। अवश्य हममें से किसी का खून करना चाहता है। मेरी ही जान का गाहक होगा। कमरे में झांक रहा है। चाहूं तो अभी पिस्तौल से इसका काम तमाम कर दूं। पर नहीं। खूब सूझी। क्यों न इससे वह काम लूं जो मैं नहीं कर सकता। इस वक्त कौशल से काम लेना ही उचित है। (**तलवार छिपाकर**) कौन है, हलधर ?

हलधर तलवार खींचकर चौकन्ना हो जाता है।

सबल हलधर, क्या चाहते हो ?

हलधर (**सबल के सामने आकर**) संभल जाइएगा, मैं चोट करता हूं।

सबल क्यों मेरे खून के प्यासे हो रहे हो ?

हलधर अपने दिल से पूछिए।

सबल तुम्हारा अपराधी मैं नहीं हूं, कोई दूसरा ही है।

हलधर क्षत्री होकर आप प्राणों के भय से झूठ बोलते नहीं लजाते ?

सबल मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं।

हलधर सरासर झूठ है। मेरा सर्वनाश आपके हाथों हुआ है। आपने मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी। मेरे घर में आग लगा दी और अब आप झूठ बोलकर अपने प्राण बचाना चाहते हैं। मुझे सब खबरें मिल चुकी हैं। बाबा चेतनदास ने सारा कच्चा चिट्ठा मुझसे कह सुनाया है। अब बिना आपका खून पिए इस तलवार की प्यास न बुझेगी।

सबल : हलधर, मैं क्षत्रिय हूं और प्राणों को नहीं डरता। तुम मेरे साथ कमरे तक आओ। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूं कि मैं कोई छल-कपट न करूंगा। वहां मैं तुमसे सब वृत्तांत सच-सच कह दूंगा। तब तुम्हारे मन में जो आए, वह करना।

हलधर चौकन्नी दृष्टि से ताकता हुआ सबल के साथ उसके दीवानखाने में जाता है।

सबल : तख्त पर बैठ जाओ और सुनो। यह सारी आग कंचनसिंह की लगाई हुई है। उसने कुटनी द्वारा राजेश्वरी को घर से निकलवा लिया है। उसके गोइंदों ने राजेश्वरी का उससे बखान किया होगा। वह उस पर मोहित हो गया और तुम्हें जेल पहुंचाकर अपनी इच्छा पूरी की। जबसे मुझे यह समाचार मिला है, मैं उसका शत्रु हो गया हूं। तुम जानते हो, मुझे अत्याचार से कितनी घृणा है। अत्याचारी पुरुष चाहे वह मेरा पुत्र ही क्यों न हो, मेरी दृष्टि में हिंसक जंतु के समान है और उसका वध करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं। इसीलिए मैं यह तलवार लेकर कंचनसिंह का वध करने जा रहा था। इतने में तुम दिखायी पड़े। मुझे अब मालूम हुआ कि जिसे मैं बड़ा धर्मात्मा, ईश्वरभक्त, सदाचारी, त्यागी समझता था वह वास्तव में एक परले दर्जे का व्याभिचारी, विषयी मनुष्य है। इसीलिए उसने अब तक विवाह नहीं किया। उसने कर्मचारियों को घूस देकर तुम्हें चुपके-चुपके गिरफ्तार करा लिया और अब राजेश्वरी के साथ विहार करता है। अभी आधी रात को वहां से लौटकर आया है। मैंने तुमसे सारा वृत्तांत कह सुनाया, अब तुम्हारी जो इच्छा हो करो।

हलधर लपककर कंचनसिंह के कमरे की ओर चलता है।

सबल : ठहरो-ठहरो, यों नहीं। सम्भव है तुम्हारी आहट पाकर जाग उठे। नौकर-सिपाही उसका चिल्लाना सुनकर जाग पड़ें। प्रात:काल वह गंगा नहाने जाता है। उस वक्त अंधेरा रहता है। वहीं तुम उसे गंगा की भेंट कर सकते हो। घात लगाए रहो। अवसर आते ही एक हाथ में काम तमाम कर दो और लाश को वहीं बहा दो। तुम्हारा मनोरथ पूरा होने का इससे सुगम उपाय नहीं है।

हलधर : **(कुछ सोचकर)** मुझे धोखा तो नहीं देना चाहते ? इस बहाने से मुझे टाल दो और फिर सचेत हो जाओ और मुझे पकड़वा देने का इंतजाम करो।

सबल : मैंने ईश्वर की कसम खायी है, अगर अब भी तुम्हें विश्वास न आए तो जो चाहे करो।

हलधर : *अच्छी बात है, जैसा आप कहते हैं वैसा ही होगा। अगर इस* समय धोखा देकर बच भी गए तो फिर क्या कभी दाव ही न आएगा ? मेरे हाथों से बचकर अब नहीं जा सकते। मैं चाहूं तो एक क्षण में तुम्हारे कुल का नाश कर दूं, पर मैं हत्यारा नहीं हूं। मुझे धन की लालसा नहीं है। मैं तो केवल अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूं। आपको भी सचेत किए देता हूं। मैं अभी और टोह लगाऊंगा। अगर पता चला कि आपने मेरा घर उजाड़ा है तो मैं आपको भी जीता न छोड़ूंगा। मेरा तो जो होना था हो चुका, पर मैं अपने उजाड़ने वालों को कुकर्म का सुख न भोगने दूंगा।

चला जाता है।

सबल : **(मन में)** मैं कितना नीच हो गया हूं। झूठ, दगा फरेब किसी पाप से भी मुझे हिचक नहीं होती। पर जो कुछ भी हो, हलधर बड़े मौके से आ गया अब बिना लाठी टूटे ही सांप मरा जाता है।

प्रस्थान।

आठवां दृश्य

स्थान—नदी का किनारा।

समय—चार बजे भोर, कंचन पूजा की सामग्री लिए आता है और एक तख्त पर बैठ जाता है, फिटन घाट के ऊपर ही रुक जाती है।

कंचन : **(मन में)** यह जीवन का अंत है ! यह बड़े-बड़े इरादों और मनसूबों का परिणाम है। इसीलिए जन्म लिया था। यही मोक्षपद है। यह निर्वाण है। माया-बंधनों से मुक्त रहकर आत्मा को उच्चतम पद पर ले जाना चाहता था। यह वही महान पद है। यही मेरी सुकीर्तिरूपी धर्मशाला है, यही मेरा आदर्श कृष्ण मंदिर है ! इतने दिनों के नियम और संयम, सत्संग और भक्ति, दान और व्रत ने अंत में मुझे वहां पहुंचाया जहां कदाचित् भ्रष्टाचार और कुविचार, पाप और कुकर्म ने भी न पहुंचाया होता। मैंने जीवन यात्रा का कठिनतम मार्ग लिया, पर हिंसक

जीव-जंतुओं से बचने का, अथाह नदियों को पार करने का, दुर्गम घाटियों से उतरने का कोई साधन अपने साथ न लिया। मैं स्त्रियों से अलग-अलग रहता था, इन्हें जीवन का कांटा समझता था, इनके बनाव-शृंगार को देखकर मुझे घृणा होती थी। पर आज वह स्त्री जो मेरे भाई की प्रेमिका है, जो मेरी माता के तुल्य है....प्रेम में इतनी शक्ति है, मैं यह न जानता था ! हाय, यह आग अब बुझती नहीं दिखायी देती। यह ज्वाला मुझे भस्म करके ही शांत होगी। यही उत्तम है। अब इस जीवन का अंत होना ही अच्छा है। इस आत्मपतन के बाद अब जीना धिक्कार है। जीने से यह ताप और ज्वाला दिन-दिन प्रचंड होगी। घुल-घुलकर, कुढ़-कुढ़कर मरने से, घर में बैर का बीज बोने से, जो अपने पूज्य हैं उनसे वैमनस्य करने से यह कहीं अच्छा है कि इन विपत्तियों के मूल ही का नाश कर दूं। मैंने सब तरह परीक्षा करके देख लिया। राजेश्वरी को किसी तरह नहीं भूल सकता, किसी तरह ध्यान से नहीं उतार सकता।

चेतनदास का प्रवेश।

कंचन स्वामी जी को दंडवत् करता हूं।

चेतनदास बाबा, सदा सुखी रहो। इधर कई दिनों से तुमको नहीं देखा। मुख मलिन है, अस्वस्थ तो नहीं थे ?

कंचन नहीं महाराज, आपके आशीर्वाद से कुशल से हूं। पर कुछ ऐसे झंझटों में पड़ा रहा कि आपके दर्शन न कर सका । बड़ा सौभाग्य था कि आज प्रातःकाल आपके दर्शन हो गए। आप तीर्थयात्रा पर कब जाने का विचार कर रहे हैं ?

चेतनदास बाबा, अब तक तो चला गया होता, पर भगतों से पिंड नहीं छूटता। विशेषतः मुझे तुम्हारे कल्याण के लिए तुमसे कुछ कहना था और बिना कहे मैं न जा सकता था। यहां इसी उद्देश्य से आया हूं। तुम्हारे ऊपर एक घोर संकट आने वाला है । तुम्हारा भाई सबलसिंह तुम्हें वध कराने की चेष्टा कर रहा है। घातक शीघ्र ही तुम्हारे ऊपर आघात करेगा। सचेत हो जाओ।

कंचन महाराज, मुझे अपने भाई से ऐसी आशंका नहीं है।

चेतनदास यह तुम्हारा भ्रम है। प्रेम-ईर्ष्या में मनुष्य अस्थिरचित्त, उन्मत्त हो जाता है।

कंचन : यदि ऐसा ही हो तो मैं क्या कर सकता हूं ? मेरी आत्मा तो स्वयं अपने पाप के बोझ से दबी हुई है।

चेतनदास : यह क्षत्रियों की बातें नहीं हैं। भूमि, धन और नारी के लिए संग्राम करना क्षत्रियों का धर्म है। उन वस्तुओं पर उसी का वास्तविक अधिकार है जो अपने बाहुबल से उन्हें छीन सके। इस संग्राम में दया और धर्म, विवेक और विचार, मान और प्रतिष्ठा, सभी कायरता के पर्याय हैं। यही उपदेश कृष्ण भगवान ने अर्जुन को दिया था, और वही उपदेश मैं तुम्हें दे रहा हूं। तुम मेरे भक्त हो इसलिए यह चेतावनी देना मेरा कर्तव्य था। योद्धाओं की भांति क्षेत्र में निकलो और अपने शत्रु के मस्तक को पैरों से कुचल डालो, उसका गेंद बनाकर खेलो अथवा अपनी तलवार की नोक पर उछालो। यही वीरों का धर्म है। जो प्राणी क्षत्रिय वंश में जन्म लेकर संग्राम से मुह मोड़ता है, वह केवल कापुरुष ही नहीं, पापी है, विधर्मी है, दुरात्मा है। कर्मक्षेत्र में कोई किसी का पुत्र नहीं, भाई नहीं, मित्र नहीं, सब एक दूसरे के शत्रु हैं। यह समस्त संसार कुछ नहीं, केवल एक वृहत्, विराट् शत्रुता है। दर्शनकारों और धर्माचार्यों ने संसार को प्रेममय कहा है। उनके कथनानुसार ईश्वर स्वयं प्रेम है। यह भ्रांति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है जिसने संसार को वेष्ठित कर रखा है। भूल जाओ कि तुम किसी के भाई हो। जो तुम्हारे ऊपर आघात करे उसका प्रतिघात करो, जो तुम्हारी ओर वक्र नेत्रों से ताके उसकी आंखें निकाल लो। राजेश्वरी तुम्हारी है, प्रेम के नाते उस पर तुम्हारा ही अधिकार है। अगर तुम अपने कर्तव्य-पथ से हटकर उसे उस पुरुष के हाथों में छोड़ दोगे जिससे उसे पहले चाहे प्रेम रहा हो, पर अब वह उससे घृणा करती है, तो तुम न्याय, नीति और धर्म के घातक सिद्ध होगे और जन्म-जन्मान्तरों तक इसका दंड भोगते रहोगे।

चेतनदास का प्रस्थान।

कंचन : (मन में) मन, अब क्या कहते हो ? क्षत्रिय धर्म का पालन करके भाई से लड़ोगे, उसके प्राणों पर आघात करोगे या क्षत्रिय धर्म को भंग करके आत्महत्या करोगे ? जी तो मरने को नहीं चाहता। अभी तक भक्ति और धर्म के जंजाल में पड़ा रहा,

जीवन का कुछ सुख नहीं देखा। अब जब उसकी आशा हुई तो यह कठिन समस्या सामने आ खड़ी हुई। हो क्षत्रियधर्म के विरुद्ध, पर भाई से मैं किसी भांति विग्रह नहीं कर सकता। उन्होंने सदैव मुझसे पुत्रवत् प्रेम किया है। याद नहीं आता कि कोई अमृदु शब्द उनके मुंह से सुना हो । वह योग्य हैं, विद्वान् हैं, कुशल हैं। मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। अवसर न मिलने की बात नहीं है। भैया का शत्रु मैं हो ही नहीं सकता। क्षत्रियों के ऐसे धर्म सिद्धांत न होते तो जरा-जरा-सी बात पर खून की नदियां क्योंकर बहतीं और भारत क्यों हाथ से जाता ? नहीं, कदापि नहीं, मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। साधुगण झूठ नहीं बोलते, पर यह महात्माजी उन पर भी मिथ्या दोषारोपण कर गए। मुझे विश्वास नहीं आता कि वह मुझ पर इतने निर्दय हो जायेंगे। उनके दया और शील का पारावार नहीं। वह मेरी प्राण-हत्या का संकेत नहीं दे सकते। एक नहीं, हजार राजेश्वरियां हों, पर भैया मेरे शत्रु नहीं हो सकते। यह सब मिथ्या है। मेरे हाथ उन पर नहीं उठ सकते। हाय, अभी एक क्षण में यह घटना सारे नगर में फैल जाएगी । लोग समझेंगे, पांव फिसल गया होगा। राजेश्वरी क्या समझेगी ? उसे मुझसे प्रेम है, अवश्य शोक करेगी, रोयेगी और अब से कहीं ज्यादा प्रेम करने लगेगी। और भैया ? हाय, यही तो मुसीबत है। अब मैं उन्हें मुंह नहीं दिखा सकता। मैं उनका अपराधी हूं। मैंने धर्म-हत्या की है। अगर वह मुझे जीता चुनवा दें तो भी मुझे आह भरने का अधिकार नहीं है। मेरे लिए अब यही एक मार्ग रह गया है। मेरे बलिदान से ही अब शांति होगी । पर भैया पर मेरे हाथ न उठेंगे। पानी गहरा है। भगवान्, मैंने पाप किये हैं, तुम्हें मुंह दिखाने योग्य नहीं हूं। अपनी अपार दया की छांह में मुझे भी शरण देना। राजेश्वरी, अब तुझे कैसे देखूंगा?

पीलपाये पर खड़ा होकर अथाह जल में कूद पड़ता है। हलधर का तलवार और पिस्तौल लिये आना।

हलधर : बड़े मौके से आया। मैंने समझा था देर हो गयी। पाखंडी कुकर्मी कहीं का। रोज गंगा नहाने आता है, पूजा करता है, तिलक लगाता है, और कर्म इतने नीच। ऐसे मौके से मिले हो

कि एक ही बार में काम तमाम कर दूंगा। और परायी स्त्रियों पर निगाह डालो ! **(पीलपाये की आड़ में छिपकर सुनता है)** पापी भगवान् से दया की याचना कर रहा है। यह नहीं जानता है कि एक क्षण में नर्क के द्वार पर खड़ा होगा। 'राजेश्वरी, अब तुम्हें कैसे देखूंगा ?' अभी प्रेत हुए जाते हो फिर उसे जी भरकर देखना। **(पिस्तौल का निशाना लगाता है।)** अरे ! यह तो आप-ही-आप पानी में कूद पड़ा, क्या प्राण देना चाहता है ? **(पिस्तौल किनारे की ओर फेंककर पानी में कूद पड़ता है और कंचनसिंह को गोद में लिए एक क्षण में बाहर आता है। मन में)** अभी पानी पेट में बहुत कम गया है। इसे कैसे होश में लाऊं ? है तो यह अपना बैरी, पर जब आप ही मरने पर उतारू है तो मैं इस पर क्या हाथ उठाऊं। मुझे तो इस पर दया आती है।

कंचनसिंह को लेटाकर उसकी पीठ में घुटने लगाकर उसकी बांहों को हिलाता है। चेतनदास का प्रवेश।

चेतनदास : **(आश्चर्य से)** यह क्या दुर्घटना हो गयी ? क्या तूने इनको पानी में डूबा दिया ?

हलधर : नहीं महाराज, यह तो आप नदी में कूद पड़े । मैं तो बाहर निकाल लाया हूं ?

चेतनदास : लेकिन तू इन्हें वध करने का इरादा करके आया था। मूर्ख, मैंने तुझे पहले ही जता दिया था कि तेरा शत्रु सबलसिंह है, कंचनसिंह नहीं; पर तूने मेरी बात का विश्वास न किया। उस धूर्त सबल के बहकाने में आ गया। अब फिर कहता हूं कि तेरा शत्रु वही है, उसी ने तेरा सर्वनाश किया है, वही राजेश्वरी के साथ विलास करता है।

हलधर : मैंने इन्हें राजेश्वरी का नाम लेते अपने कानों से सुना है।

चेतनदास : हो सकता है कि राजेश्वरी जैसी सुंदरी को देखकर इसका चित्त भी चंचल हो गया हो। सबलसिंह ने संदेह-वश इसके प्राण हरण की चेष्टा की हो। बस यही बात है।

हलधर : स्वामी जी क्षमा कीजिएगा, मैं सबलसिंह की बात में आ गया। अब मुझे मालूम हो गया कि वही मेरा बैरी है। ईश्वर ने चाहा तो वह भी बहुत दिन तक अपने पाप का सुख न भोगने पायेंगे।

चेतनदास : **(मन में)** अब कहां जाता है ? आज पुलिस वाले भी घर की

तलाशी लेंगे। अगर उनसे बच गया तो यह तो तलवार निकाले बैठा ही है। ईश्वर की इच्छा हुई तो अब शीघ्र ही मनोरथ पूरे होंगे। ज्ञानी मेरी होगी और मैं इस विपुल सम्पत्ति का स्वामी हो जाऊंगा। कोई व्यवसाय, कोई विद्या, मुझे इतनी जल्द इतना सम्पत्तिशाली न बना सकती थी।

प्रस्थान।

कंचन : **(होश में आकर)** नहीं, तुम्हारा शत्रु मैं हूं। जो कुछ किया है, मैंने किया है । भैया निर्दोष हैं, तुम्हारा अपराधी मैं हूं। मेरे जीवन का अंत हो, यही मेरे पापों का दंड है। मैं तो स्वयं अपने को इस पाप-जाल से मुक्त करना चाहता था। तुमने क्यों मुझे बचा लिया ? **(आश्चर्य से)** अरे, यह तो तुम हो, हलधर ?

हलधर : **(मन में)** कैसा बेछल-कपट का आदमी है। **(प्रकट)** आप आराम से लेटे रहें, अभी उठिए न।

कंचन : नहीं, अब नहीं लेटा जाता । **(मन में)** समझ में आ गया, राजेश्वरी इसी की स्त्री है। इसीलिए भैया ने वह सारी माया रची थी। **(प्रकट)** मुझे उठाकर बैठा दो। वचन दो कि भैया का कोई अहित न करोगे।

हलधर : ठाकुर, मैं यह वचन नहीं दे सकता।

कंचन : किसी निर्दोष की जान लोगे ? तुम्हारा घातक मैं हूं। मैंने तुम्हें चुपके से जेल भिजवाया और राजेश्वरी को कुटनियों द्वारा यहां बुलाया।

तीन डाकू लाठियां लिये आते हैं।

एक : क्यों गुरू, पड़ा हाथ भरपूर ?

दूसरा : यह तो खासा टैयां सा बैठा हुआ है। लाओ मैं एक हाथ दिखाऊं।

हलधर : खबरदार, हाथ न उठाना।

दूसरा : क्या कुछ हत्थे चढ़ गया क्या ?

हलधर : हां, असर्फियों की थैली है। मुंह धो रखना ।

तीसरा : यह बहुत कड़ा ब्याज लेता है। सब रुपये इसकी तोंद में से निकाल लो।

हलधर : जबान संभालकर बात करो।

पहला : अच्छा, इसे ले चलो, दो-चार दिन बर्तन मंजवायेंगे। आराम

करते-करते मोटा हो गया है।

दूसरा : तुमने इसे क्यों छोड़ दिया ?

हलधर : इसने वचन दिया कि अब सूद न लूंगा।

पहला : क्यों बच्चा, गुरू को सीधा समझकर झांसा दे दिया।

हलधर : बक-बक मत करो। इन्हें नाव पर बैठाकर डेरे पर लेते चलो। यह बेचारे सूद-ब्याज जो कुछ लेते हैं अपने भाई के हुकुम से लेते हैं। आज उसी की खबर लेने का विचार है।

सब कंचन को सहारा देकर नाव पर बैठा देते हैं और गाते हुए नाव चलाते हैं।

नारायण का नाम सदा मन के अंदर लाना चहिए !
मानुष तन है दुर्लभ जग में इसका फल पाना चहिए !
दुर्जन संग नरक का मारग उससे दूर जाना चहिए !
सत संगत में सदा बैठ के हरि के गुण गाना चहिए !
धरम कमाई करके अपने हाथों की खाना चहिए !
परनारी को अपनी माता के समान जाना चहिए !
झूठ-कपट की बात सदा कहने में शरमाना चहिए !
कथा पुरान संत संगत में मन को बहलाना चहिए !
नारायण का नाम सदा मन के अंदर लाना चहिए !

नौवां दृश्य

स्थान—गुलाबी का मकान।

समय—संध्या, चिराग जल चुके हैं, गुलाबी संदूक से रुपये निकाल रही है।

गुलाबी : भाग जाग जाएंगे। स्वामीजी के प्रताप से यह सब रुपये दूने हो जाएंगे। पूरे तीन सौ रुपये हैं। लौटूंगी तो हाथ में छः सौ रुपये की थैली होगी। इतने रुपये तो बरसों में भी न बटोर पाती। साधु-महात्माओं में बड़ी शक्ति होती है। स्वामीजी ने यह यंत्र दिया है। भृगु के गले में बांध दूं। फिर देखूं, यह चुड़ैल उसे कैसे अपने बस में किये रहती है। उन्होंने तो कहा है कि वह उसकी बात भी न पूछेगा। यही तो मैं चाहती हूं। उसका मान-मर्दन हो जाये, घमंड टूट जाये। **(भृगु को बुलाती है।)** क्यों बेटा,

आजकल तुम्हारी तबीयत कैसी रहती है ? दुबले होते जाते हो?

भृगु : क्या करूं ? सारे दिन बही खोले बैठे-बैठे थक जाता हूं। ठाकुर कंचनसिंह एक बीड़ा पान को भी नहीं पूछते। न कहीं घूमने जाता हूं, न कोई उत्तम वस्तु भोजन को मिलती है। जो लोग लिखने-पढ़ने का काम करते हैं उन्हें दूध, मक्खन, मेवा-मिसरी इच्छानुकूल मिलनी चाहिए। रोटी, दाल, चावल तो मजदूरों का भोजन है। सांझ-सबेरे वायु-सेवन करना चाहिए। कभी-कभी थियेटर देखकर मन बहलाना चाहिए। पर यहां इनमें से कोई भी सुख नहीं। यही होगा कि सूखते-सूखते एक दिन जान से चला जाऊंगा।

गुलाबी : ऐ नौज बेटा, कैसी बात मुंह से निकालते हो ? मेरे जान में तो कुछ फेर-फार है। इस चुड़ैल ने तुम्हें कुछ कर-करा दिया है। यह पक्की टोनिहारी है। पूरब की न है। वहां की सब लड़कियां टोनिहारी होती हैं।

भृगु : कौन जाने यही बात हो। कंचनसिंह के कमरे में अकेले बैठता हूं तो ऐसा डर लगता है जैसे कोई बैठा हो। रात को आने लगता हूं तो फाटक पर मौलसरी के पेड़ के नीचे किसी को खड़ा देखता हूं। कलेजा थर-थर कांपने लगता है। किसी तरह चित्त को ढाढ़स देता हुआ चला आता हूं। लोग कहते हैं, पहले वहां किसी की कबर थी।

गुलाबी : मैं स्वामीजी के पास से यह जंतर लायी हूं। इसे गले में बांध लो। शंका मिट जाएगी। और कल से अपने लिए पाव-भर दूध भी लाया करो। मैंने खूबा अहीर से कहा है। उसके लड़के को पढ़ा दिया करो, वह तुम्हें दूध दे देगा।

भृगु : जंतर लाओ मैं बांध लूं, पर खूबा के लड़के को मैं न पढ़ा सकूंगा। लिखने-पढ़ने का काम करते-करते सारे दिन यों ही थक जाता हूं। मैं जब तक कंचनसिंह के यहां रहूंगा, मेरी तबीयत अच्छी न होगी। मुझे कोई दुकान खुलवा दो।

गुलाबी : बेटा, दुकान के लिए तो पूंजी चाहिए। इस घड़ी तो यह तावीज बांध लो। फिर मैं और कोई जतन करूंगी। देखो, देवीजी ने खाना बना लिया ? आज मालकिन ने रात को वहीं रहने को कहा है।

भृगु जाता है और चम्पा से पूछकर आता है गुलाबी चौके में जाती है।

गुलाबी : पींढ़ा तक नहीं रखा, लोटे का पानी तक नहीं रखा । अब मैं पानी लेकर आऊं और अपने हाथ से आसन डालूं तब खाना खाऊं । क्यों इतने घमंड के मारे मरी जाती हो, महारानी ? थोड़ा इतराओ, इतना आकाश पर दिया न जलाओ।

चम्पा थाली लाकर गुलाबी के सामने रख देती है। वह एक कौर उठाती है और क्रोध से थाली चम्पा के सिर पर पटक देती है।

भृगु : क्या है, अम्मां ?

गुलाबी : है क्या, यह डायन मुझे विष देने पर तुली हुई है। यह खाना है कि जहर है ? मार नमक भर दिया। भगवान् न जाने कब इसकी मिट्टी इस घर से उठाएंगे। मर गए इसके बाप-चचा। अब कोई झांकता तक नहीं। जब तक ब्याह न हुआ था, द्वार की मिट्टी खोदे डालते थे। इतने दिन इस अभागिनी को रसोई बनाते हो गए, कभी ऐसा न हुआ कि मैंने पेट भर भोजन किया हो। यह मेरे पीछे पड़ी हुई है.....

भृगु : अम्मां, देखो सिर लोहूलुहान हो गया । जरा नमक ज्यादा ही हो गया तो क्या इसकी जान ले लोगी। जलती हुई दाल डाल दी। सारे बदन में छाले पड़ गए। ऐसा भी कोई क्रोध करता है।

गुलाबी : **(मुंह चिढ़ाकर)** हां-हां, देख, मरहम-पट्टी कर। दौड़ डॉक्टर को बुला ला, नहीं कहीं मर न जाए। अभी लौंडा है, त्रिया-चरित्र देखा कर । मैंने उधर पीठ फेरी, इधर ठहाके की हंसी उड़ने लगेगी। तेरे सिर चढ़ाने से तो इसका मिजाज इतना बढ़ गया है। यह तो नहीं पूछता कि दाल में क्यों इतना नमक झोंक दिया, उल्टे और घाव पर मरहम रखने चला है। **(झमककर चली जाती है।)**

चम्पा : मुझे मेरे घर पहुंचा दो।

भृगु : सारा सिर लोहूलुहान हो गया । इसके पास रुपये हैं, उसी का इसे घमंड है। किसी तरह रुपये निकल जाते तो यह गाय हो जाती।

चम्पा : तब तक तो यह मेरा कचूमर ही निकाल लेंगी।

भृगु : सबर का फल मीठा होता है।

चम्पा : इस घर में अब मेरा निबाह न होगा। इस बुढ़िया को देखकर आंखों में खून उतर आता है।

भृगु : अबकी एक गहरी रकम हाथ लगने वाली है। एक ठाकुर ने कानों की बाली हमारे यहां गिरों रखी थी। वादे के दिन टल गये। ठाकुर का कहीं पता नहीं। पूरब गया था। न जाने मर गया या क्या ! मैंने सोचा है तुम्हारे पास जो गिन्नी रखी है उसमें चार-पांच रुपये और मिलाकर बाली छुड़ा लूं। ठाकुर लौटेगा तो देखा जाएगा। पचास रुपये से कम का माल नहीं है।

चम्पा : सच !

भृगु : हां अभी तौले आता हूं। पूरे दो तोले है।

चम्पा : तो कब ला दोगे ?

भृगु : कल लो। वह तो अपने हाथ का खेल है। आज दाल में नमक क्यों ज्यादा हुआ ?

चम्पा : सुबह कहने लगीं, खाने में नमक ही नहीं है। मैंने इस बेला नमक पीसकर उनकी थाली में ऊपर से डाल दिया कि खाओ खूब जी भर के। वह एक-न-एक खुचड़ निकालती हैं तो मैं तो उन्हें जलाया करती हूं।

भृगु अच्छा, अब मुझे भी भूख लगी है, चलो।

चम्पा (आप-ही-आप) सिर में जरा-सी चोट लगी तो क्या, कानों की बालियां तो मिल गयीं ? इन दामों तो चाहे कोई मेरे सिर पर दिन-भर थालियां पटका करे।

प्रस्थान।

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान—मधुबन। थानेदार, इंस्पेक्टर और कई सिपाहियों का प्रवेश।

इंस्पेक्टर : एक हजार की रकम एक चीज होती है।

थानेदार : बेशक !

इंस्पेक्टर : और करना कुछ नहीं। दो-चार शहादतें बनाकर खाना तलाशी कर लेनी है।

थानेदार : गांव वाले तो सबलसिंह ही के खिलाफ होंगे।

इंस्पेक्टर : आजकल बड़े-से-बड़े आदमी को जब चाहें फांस लें। कोई कितना ही मुअज़्ज़िज हो, अफसरों के यहां उसकी कितनी ही रसाई हो, इतना कह दीजिए कि हुजूर, यह तो सुराज का हामी है, बस सारे हुक्काम उसके जानी दुश्मन हो जाते हैं। फिर वह गरीब अपनी कितनी ही सफाई दिया करे, अपनी वफादारी के कितने ही सबूत पेश करता फिरे, कोई उसकी नहीं सुनता। सबलसिंह की इज्जत हुक्काम की नजरों में कम नहीं थी। उनके साथ दावतें खाते थे, घुड़दौड़ में शरीक होते थे, हर एक जलसे में शरीक किए जाते थे, पर मेरे एक फिकरे ने हजरत का सारा रंग फीका कर दिया। साहब ने फौरन हुक्म दिया कि जाकर उसकी तलाशी लो और कोई सबूत दस्तयाब हो तो गिरफ्तारी का वारंट ले जाओ !

थानेदार : आपने क्या फिकरा जमाया था ?

इंस्पेक्टर : अजी कुछ नहीं, महज इतना कहा था कि आजकल यहां सुराज की बड़ी धूम है। ठाकुर सबलसिंह पंचायतें कायम कर रहे हैं। इतना सुनना था कि साहब का चेहरा सुर्ख हो गया। बोले—दगाबाज आदमी है। मिलकर वार करना चाहता है, फौरन उसके खिलाफ सबूत पैदा करो। इसके कब्ल मैंने कहा था, हुजूर, यह बड़ा

जिनाकार आदमी है, अपने एक असामी की औरत को निकाल लाया है। इस पर सिर्फ मुस्कराए, तीवरों पर जरा भी मैल नहीं आयी। तब मैंने यह चाल चली। यह लो, गांव के मुखिया आ गए, जरा रोब जमा दूं।

मंगरू, हरदास, फत्तू आदि का प्रवेश। सलोनी भी पीछे-पीछे आती है और अलग खड़ी हो जाती है।

इंस्पेक्टर : आइए शेख जी, कहिए खैरियत तो है ?

फत्तू : **(मन में)** सबलसिंह के नेक और दयावान होने में कोई संदेह नहीं। कभी हमारे ऊपर सख्ती नहीं की। हमेशा रिआयत ही करते रहे, पर आंख का लगना बुरा होता है। पुलिस वाले न जाने उन्हें किस-किस तरह सताएंगे। कहीं जेहल न भिजवा दें। ज्ञानेश्वरी को वह जबरदस्ती थोड़े ही ले गए। वह तो अपने मन से गई। मैंने चेतनदास बाबा को नाहक इस बुरे काम में मदद दी। किसी तरह सबलसिंह को बचाना चाहिए। **(प्रकट)** सब अल्लाह का करम है।

इंस्पेक्टर : तुम्हारे जमींदार साहब तो खूब रंग लाये। कहां तो वह पारसाई और कहां यह हरकत।

फत्तू : हुजूर, हमको तो कुछ मालूम नहीं।

इंस्पेक्टर : तुम्हारे बचाने से अब वह नहीं बच सकते। अब तो आ गए शेर के पंजे में। अपना बयान दीजिए। यहां गांव में पंचायत किसने कायम की ?

फत्तू : हुजूर, गांव के लोगों ने मिलकर कायम की, जिसमें छोटी-छोटी बातों के पीछे अदालत की ठोकरें न खानी पड़ें।

इंस्पेक्टर : सबलसिंह ने यह कहा कि अदालतों में जाना गुनाह है ?

फत्तू : हुजूर, उन्होंने ऐसी बात तो नहीं कही, हां पंचायत के फायदे बताये थे।

इंस्पेक्टर : उन्होंने तुम लोगों को बेगार बंद करने की ताकीद नहीं की ? सच बोलना, खुदा तुम्हारे सामने है।

फत्तू : **(बगलें झांकते हुए)** हुजूर, उन्होंने यह तो नहीं कहा। हां, यह जरूर कहा कि जो चीज दो उसका मुनासिब दाम लो।

इंस्पेक्टर : वह एक ही बात हुई। अच्छा, उस गांव में शराब की दुकान थी। वह किसने बंद करायी ?

फत्तू : हुजूर, ठीकेदार ने आप ही बंद कर दी। उसकी बिक्री न होती थी।

इंस्पेक्टर : सबलसिंह ने सबसे यह नहीं कहा कि जो उस दुकान पर जाये उसे पंचायत में सजा मिलनी चाहिए।

फत्तू : **(मन में)** इसको जरा-जरा-सी बातों की खबर है। **(प्रकट)** हुजूर, मुझे याद नहीं।

इंस्पेक्टर : शेखजी, तुम कन्नी काट रहे हो, इसका नतीजा अच्छा नहीं है। दारोगा जी ने तुम्हारा जो बयान लिखा है उस पर चुपके से दस्तखत कर दो, वरना जमींदार तो न बचेंगे, तुम अलबत्ता गेहूं के साथ घुन की तरह पिस जाओगे।

फत्तू : हुजूर का अखतियार है, जो चाहें करें, पर मैं तो वही कहूंगा जो जानता हूं।

इंस्पेक्टर : तुम्हारा क्या नाम है ?

मंगरू : **(सामने आकर)** मंगरू।

इंस्पेक्टर : जो पूछा जाये उसका साफ-साफ जवाब देना । इधर-उधर किया तो तुम जानोगे। पुलिस का मारा पानी नहीं मांगता। यहां गांव में पंचायत किसने कायम की ?

मंगरू : **(मन में)** मैं तो जो यह चाहेंगे वही कहूंगा। पीछे देखी जाएगी। गालियां देने लगें या पिटवाने ही लगें तो इनका क्या बना लूंगा? सबलसिंह तो मुझे बचा न देंगे। **(प्रकट)** ठाकुर सबलसिंह ने।

इंस्पेक्टर : उन्होंने तुम लोगों से कहा था न कि सरकारी अदालत में जाना पाप है। जो सरकारी अदालत में जाये उसका हुक्का-पानी बंद कर दो।

मंगरू : **(मन में)** यह तो नहीं कहा था, खाली अदालतों के खर्च से बचने के लिए पंचायत खोलने की ताकीद की थी। पर ऐसा कह दूं तो अभी यह जामे से बाहर हो जाएगा। **(प्रकट)** हां हुजूर, कहा था। बात सच्ची कहूंगा। जमींदार आकबत में थोड़े ही साथ देंगे।

इंस्पेक्टर : सबलसिंह ने यह नहीं कहा था कि किसी हाकिम को बेगार मत दो ?

मंगरू : **(मन में)** उन्होंने तो इतना ही कहा था कि मुनासिब दाम लेकर दो। **(प्रकट)** हां हुजूर, कहा था। बरमला कहा था। सच्ची बात कहने में क्या डर ?

इंस्पेक्टर : शराब और गांजे की दुकान तोड़वाने की तहरीर उनकी तरफ से हुई थी न ?

मंगरू : बराबर हुई थी। जो शराब गांजा पिए उसका हुक्का-पानी बंद कर दिया जाता था।

इंस्पेक्टर : अच्छा, अपने बयान पर अंगूठे का निशान दो। तुम्हारा क्या नाम है जी ? इधर आओ।

हरदास : **(सामने आकर)** हरदास।

इंस्पेक्टर : सच्चा बयान देना जैसा मंगरू ने दिया है, वरना तुम जानोगे।

हरदास : **(मन में)** सबलसिंह तो अब बचते नहीं, मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं ? यह जो कुछ कहलाना चाहते हैं मैं उससे चार बात ज्यादा ही कहूंगा। यह हाकिम हैं, खुश होकर मुखिया बना दें तो साल में सौ-दो सौ रुपये अनायास ही हाथ लगते रहें। **(प्रकट)** हुजूर, जो कुछ जानता हूं वह रत्ती-रत्ती कह दूंगा।

इंस्पेक्टर : तुम समझदार आदमी मालूम होते हो। अपना नफा-नुकसान समझते हो। यहां पंचायत के बारे में क्या जानते हो ?

हरदास : हुजूर, ठाकुर सबलसिंह ने खुलवायी थी। रोज यही कहा करें कि कोई आदमी सरकारी अदालत में न जाये। सरकार के इसटाम क्यों खरीदो। अपने झगड़े आप चुका लो। फिर न तुम्हें पुलिस का डर रहेगा न सरकार का। एक तरह से तुम अदालतों को छोड़ देने से ही सुराज पा जाओगे। यह भी हुक्म दिया था कि जो आदमी अदालत जाये उसका हुक्का-पानी बंद कर देना चाहिए।

इंस्पेक्टर : बयान ऐसा होना चाहिए। अच्छा, सबलसिंह ने बेगार के बारे में तुमसे क्या कहा था ?

हरदास : हुजूर, वह तो खुल्लमखुल्ला कहते थे कि किसी को बेगार मत दो, चाहे बादशाह ही क्यों न हो। अगर कोई जबरदस्ती करे तो अपना और उसका खून एक कर दो।

इंस्पेक्टर : ठीक है। शराब गांजे की दुकान कैसे बंद हुई ?

हरदास : हुजूर, बंद न होती तो क्या करती, कोई वहां खड़ा नहीं होने पाता था। ठाकुर साहब ने हुक्म दे दिया था कि जिसे वहां खड़े, बैठे, या खरीदते पाओ उसके मुंह में कालिख लगाकर सिर पर सौ जूते लगाओ।

इंस्पेक्टर : बहुत अच्छा। अंगूठे का निशान कर दो। हम तुमसे बहुत खुश हुए।

सलोनी गाती है—

"सैयां भये कोतवाल, अब डर काहे का"

इंस्पेक्टर : यह पगली क्या गा रही है ? अरी पगली इधर आ।

सलोनी : (सामने आकर) सैयां भये कोतवाल, अब डर काहे का ?

इंस्पेक्टर : दारोगा जी, इसका बयान भी लिख लीजिए।

सलोनी : हां, लिख लो। ठाकुर सबलसिंह मेरी बहू को घर से भगा ले गए और पोते को जेहल भिजवा दिया।

इंस्पेक्टर : यह फलूल बातें मैं नहीं पूछता। बता यहां उन्होंने पंचायत खोली है न ?

सलोनी : यह फजूल बातें मैं क्या जानूं ? मुझे पंचायत से क्या लेना-देना है। जहां चार आदमी रहते हैं वहां पंचायत रहती ही है। सनातन से चली आती है, कोई नयी बात है ? इन बातों से पुलिस से क्या मतलब ? तुम्हें तो देखना चाहिए, सरकार के राज में भले आदमियों की आबरू रहती है कि लुटती है। सो तो नहीं, पंचायत और बेगार का रोना ले बैठे। बेगार बंद करने को सभी कहते हैं। गांव के लोगों को आप ही अखरता है। सबलसिंह ने कह दिया तो क्या अंधेर हो गया। शराब, ताड़ी, गांजा, भांग पीने को सभी मना करते हैं। पुरान, भागवत, साधु-संत सभी इसको निखिद्ध कहते हैं। सबलसिंह ने कहा तो क्या नयी बात कही ? जो तुम्हारा काम है वह करो, ऊटपटांग बातों में क्यों पड़ते हो ?

इंस्पेक्टर : बुढ़िया शैतान की खाला मालूम होती है।

थानेदार : तो इन गवाहों को अब जाने दूं ?

इंस्पेक्टर : जी नहीं, अभी रिहर्सल तो बाकी है। देखो जी, तुमने मेरे रूबरू जो बयान दिया है वही तुम्हें बड़े साहब के इजलास पर देना होगा। ऐसा न हो, कोई कुछ कहे, कोई कुछ, मुकदमा भी बिगड़ जाये और तुम लोग भी गलतबयानी के इल्जाम में धर लिये जाओ। दारोगाजी शुरू कीजिए। तुम लोग सब साथ-साथ वही बातें कहो जो दारोगाजी की जबान से निकलें।

दारोगा : ठाकुर सबलसिंह कहते थे कि सरकारी अदालतों की जड़ खोद डालो, भूलकर भी वहां न जाओ। सरकार का राज

अदालतों पर कायम है । अदालत को तर्क कर देने से राज की बुनियाद हिल जाएगी।

सब-के-सब यही बात दुहराते हैं।

दारोगा : अपने मुआमले पंचायतों में तै कर लो।

सब-के-सब : अपने मुआमले पंचायतों में तै कर लो।

दारोगा : उन्होंने हुक्म दिया था कि किसी अफसर को बेगार मत दो।

सब-के-सब : उन्होंने हुक्म दिया था कि किसी अफसर को बेगार मत दो।

दारोगा : बेगार न मिलेगी तो कोई दौरा करने न आएगा। तुम लोग जो चाहना, करना। यह सुराज की दूसरी सीढ़ी है।

सब-के-सब : बेगार न मिलेगी तो कोई दौरा करने न आएगा। यह सुराज की दूसरी सीढ़ी है।

दारोगा : यह और कहो, तुम लोग जो जी चाहे करना।

इंस्पेक्टर . यही जुमला तो जान है।

सब-के-सब : तुम लोग जो जी चाहे करना।

दारोगा : उन्होंने हुक्म दिया था कि जो नशे की चीजें खरीदे उसका हुक्का-पानी बंद कर दो।

सब-के-सब : उन्होंने हुक्म दिया था कि जो नशे की चीजें खरीदे उसका हुक्का-पानी बंद कर दो।

दारोगा : अगर इतने पर भी न माने तो उसके घर में आग लगा दो।

सब-के-सब : अगर इतने पर भी न माने तो उसके घर में आग लगा दो।

दारोगा : उसके मुंह में कालिख लगाकर सौ जूते लगाओ।

सब-के-सब : उसके मुंह में कालिख लगाकर सौ जूते लगाओ।

दारोगा : जो आदमी विलायती कपड़े खरीदे उसे गधे पर सवार कराके गांव-भर में घुमाओ।

सब-के-सब : जो आदमी विलायती कपड़े खरीदे उसे गधे पर सवार कराके गांव-भर में घुमाओ।

दारोगा : जो पंचायत का हुक्म न माने उसे उल्टे लटकाकर पचास बेंत लगाओ।

सब-के-सब : जो पंचायत का हुक्म न माने उसे उल्टे लटकाकर पचास बेंत लगाओ।

दारोगा : **(इंस्पेक्टर से)** इतना तो काफी होगा।

इंस्पेक्टर : इतना उन्हें जहन्नुम भेजने के लिए काफी है। तुम लोग देखो,

खबरदार, इसमें एक हर्फ का भी उलट-फेर न हो। अच्छा अब चलना चाहिए। **(कॉनिसटिब्लों से)** देखो, बकरे हों तो दो पकड़ लो।

सिपाही : बहुत अच्छा हुजूर, दो नहीं चार।

दारोगा : एक पांच सेर घी भी लेते चलो।

सिपाही : अभी लीजिए, सरकार !

दारोगा और इंस्पेक्टर का प्रस्थान। सलोनी गाती है।

सैयां भये कोतवाल अब डर काहे का।
अब तो मैं पहनूं अतलस का लहंगा
और चबाऊं पान।
द्वारे बैठ नजारा मारूं।।
सैयां भये कोतवाल अब डर काहे का।।

फत्तू : काकी, गाती ही रहेगी ?

सलोनी : जा तुझसे नहीं बोलती। तू भी डर गया।

फत्तू : काकी, इन सभी से कौन लड़ता ? इजलास पर जाकर जो सच्ची बात है, वह कह दूंगा।

मंगरू : पुलिस के सामने जमींदार कोई चीज नहीं।

हरदास : पुलिस के सामने सरकार कोई चीज नहीं।

सलोनी : सच्चाई के सामने जमींदार-सरकार कोई चीज नहीं।

मंगरू : सच बोलने में निबाह नहीं है।

हरदास : सच्चे की गर्दन सभी जगह मारी जाती है।

सलोनी : अपना धर्म तो नहीं बिगड़ता। तुम कायर हो। तुम्हारा मुंह देखना पाप है। मेरे सामने से हट जाओ।

प्रस्थान।

दूसरा दृश्य

स्थान—सबलसिंह का कमरा।

समय—दस बजे दिन।

सबल : **(घड़ी की तरफ देखकर)** दस बज गए। हलधर ने अपना काम पूरा कर लिया। वह नौ बजे तक गंगा से लौट आते थे। कभी

इतनी देर न होती थी। अब राजेश्वरी फिर मेरी हुई। चाहे ओढ़ूं, बिछाऊं या गले का हार बनाऊं। प्रेम के हाथों यह दिन देखने की नौबत आएगी, इसकी मुझे जरा भी शंका न थी। भाई की हत्या की कल्पना मात्र से ही रोयें खड़े हो जाते हैं। इस कुल का सर्वनाश होने वाला है। कुछ ऐसे ही लक्षण दिखाई देते हैं। कितना उदार, कितना सच्चा ! मुझसे कितना प्रेम, कितनी श्रद्धा थी। पर हो ही क्या सकता था ? एक म्यान में दो तलवारें कैसे रह सकती थीं ? संसार में प्रेम ही वह वस्तु है, जिसके हिस्से नहीं हो सकते। यह अनौचित्य की पराकाष्ठा थी कि मेरा छोटा भाई, जिसे मैंने सदैव अपना पुत्र समझा, मेरे साथ यह पैशाचिक व्यवहार करे। कोई देवता भी यह अमर्यादा नहीं कर सकता था। यह घोर अपमान ! इसका परिणाम और क्या होता ? यही आपत्ति-धर्म था। इसके लिए पछताना व्यर्थ है **(एक क्षण के बाद)** जी नहीं मानता, वही बातें याद आती हैं। मैंने कंचन की हत्या क्यों कराई ? मुझे स्वयं अपने प्राण देने चाहिए थे। मैं तो दुनिया का सुख भोग चुका था। स्त्री-पुत्र सबका सुख पा चुका था। उसे तो अभी दुनिया की हवा तक न लगी थी। उपासना और आराधना ही उसका एकमात्र जीवनाधार थी। मैंने बड़ा अत्याचार किया।

अचलसिंह का प्रवेश।

अचल : बाबूजी, अब तक चाचाजी गंगास्नान करके नहीं आये ?

सबल : हां, देर तो हुई। अब तक तो आ जाते थे।

अचल : किसी को भेजिए, जाकर देख आए।

सबल : किसी से मिलने चले गए होंगे।

अचल : मुझे तो जाने क्यों डर लग रहा है। आजकल गंगाजी बढ़ रही हैं।

सबलसिंह कुछ जवाब नहीं देते।

अचल : वह तैरने दूर निकल जाते थे।

सबल चुप रहते हैं।

अंचल : आज जब वह नहाने जाते थे तो न जाने क्यों मुझे देखकर

उनकी आंखें भर गयी थीं। मुझे प्यार करके कहा था, 'ईश्वर तुम्हें चिरंजीवी करे।' इस तरह तो कभी आशीष नहीं देते थे।

सबल रो पड़ते हैं और वहां से उठकर बाहर बरामदे में चले जाते हैं। अचल कंचनसिंह के कमरे की ओर जाता है।

सबल : **(मन में)** अब पछताने से क्या फायदा ? जो कुछ होना था, हो चुका । मालूम हो गया कि काम के आवेग में बुद्धि, विद्या, विवेक सब साथ छोड़ देते हैं। यही भावी थी, यही होनहार था, यही विधाता की इच्छा थी। राजेश्वरी, तुझे ईश्वर ने क्यों इतनी रूप-गुणशीला बनाया ? पहले-पहले जब मैंने तुझसे बात की थी, तूने मेरा तिरस्कार क्यों न किया, मुझे कटु शब्द क्यों न सुनाये ? मुझे कुत्ते की भांति दुत्कार क्यों न दिया ? मैं अपने को बड़ा सत्यवादी समझा करता था। पर पहले ही झोंके में उखड़ गया, जड़ से उखड़ गया। मुलम्मे को मैं असली रंग समझ रहा था। पहली ही आंच में मुलम्मा उड़ गया। अपनी जान बचाने के लिए मैंने कितनी घोर धूर्तता से काम लिया। मेरी लज्जा, मेरा आत्माभिमान, सबकी क्षति हो गयी ! ईश्वर करे, हलधर अपना वार न कर सका हो और मैं कंचन को जीता-जागता आते देखूं। मैं राजेश्वरी से सदैव के लिए नाता तोड़ लूंगा। उसका मुंह तक न देखूंगा। दिल पर जो कुछ बीतेगी झेल लूंगा।

अधीर होकर बरामदे में निकल आते हैं और रास्ते की ओर टकटकी लगाकर देखते हैं। **(ज्ञानी का प्रवेश)**

ज्ञानी : अभी बाबूजी नहीं आये। ग्यारह बज गए। भोजन ठंडा हो रहा है। कुछ कह नहीं गए, कब तक आयेंगे ?

सबल : **(कमरे में आकर)** मुझसे तो कुछ नहीं कहा।

ज्ञानी : तो आप चलकर भोजन कर लीजिए।

सबल : उन्हें भी आ जाने दो। तब तक तुम लोग भोजन करो।

ज्ञानी : हरज ही क्या है, आप चलकर खा लें। उनका भोजन अलग रखवा दूंगी। दोपहर तो हुआ।

सबल : **(मन में)** आज तक कभी ऐसा नहीं हुआ कि मैंने घर पर अकेले

भोजन किया हो। ऐसे भोजन करने पर धिक्कार है। भाई का वध करके मैं भोजन करने जाऊं और स्वादिष्ट पदार्थों का आनंद उठाऊं। ऐसे भोजन करने पर लानत है। **(प्रकट)** अकेले मुझसे भोजन न किया जायेगा।

ज्ञानी : तो किसी को गंगाजी भेज दो। पता लगाये कि क्या बात है। कहां चले गए ? मुझे तो याद नहीं आता कि उन्होंने कभी इतनी देर लगायी हो। जरा जाकर उनके कमरे में देखूं, मामूली कपड़े पहनकर गए हैं या अचकन-पजामा भी पहना है।

जाती है और एक क्षण में लौट आती है।

ज्ञानी : कपड़े तो साधारण ही पहनकर गए हैं, पर कमरा न जाने क्यों भांय-भांय कर रहा है, वहां खड़े होते एक भय-सा लगता था। ऐसी शंका होती है कि वह अपनी मसनद पर बैठे हुए हैं, पर दिखाई नहीं देते। न जाने क्यों मेरे तो रोयें खड़े हो गए और रोना आ गया। किसी को भेजकर पता लगवाइए।

सबल दोनों हाथों से मुंह छिपाकर रोने लगता है।

ज्ञानी : हाय, यह आप क्या करते हैं ! इस तरह जी छोटा न कीजिये। वह अबोध बालक थोड़े ही हैं। आते ही होंगे ।

सबल : **(रोते हुए)** आह, ज्ञानी ! अब वह घर न आयेंगे। अब हम उनका मुंह फिर न देखेंगे।

ज्ञानी : किसी ने कोई बुरी खबर कही है क्या ? **(सिसकियां लेती है।)**

सबल : **(मन में)** अब मन में बात नहीं रह सकती। किसी तरह नहीं। वह आप ही बाहर निकली पड़ती है। ज्ञानी से मुझे इतना प्रेम कभी न हुआ था। मेरा मन उसकी ओर खिंचा जाता है। **(प्रकट)** जो कुछ किया है मैंने ही किया है। मैं ही विष की गांठ हूं। मैंने ईर्ष्या के वश होकर यह अनर्थ किया है। ज्ञानी, मैं पापी हूं, राक्षस हूं, मेरे हाथ अपने भाई के खून से रंगे हुए हैं, मेरे सिर पर भाई का खून सवार है। मेरी आत्मा की जगह अब केवल कालिमा की रेखा है ! हृदय के स्थान पर केवल पैशाचिक निर्दयता। मैंने तुम्हारे साथ दगा की है। तुम और सारा संसार मुझे एक विचारशील, उदार, पुण्यात्मा पुरुष समझते थे, पर मैं महान् पानी, नराधम, धूर्त हूं। मैंने अपने असली स्वरूप

को सदैव तुमसे छिपाया । देवता के रूप में मैं राक्षस था। मैं तुम्हारा पति बनने योग्य न था। मैंने एक पति-परायणा स्त्री को कपट चालों से निकाला, उसे लाकर शहर में रखा। कंचनसिंह को भी मैंने वहां दो-तीन बार बैठे देखा। बस, उसी क्षण से मैं ईर्ष्या की आग में जलने लगा और अंत में मैंने एक हत्यारे के हाथों....(रोकर) भैया को कैसे पाऊं ? ज्ञानी, इन तिरस्कार के नेत्रों से न देखो। मैं ईश्वर से कहता हूं, तुम कल मेरा मुंह न देखोगी। मैं अपनी आत्मा को कलुषित करने के लिए अब और नहीं जीना चाहता। मैं अपने पापों का प्रायश्चित एक ही दिन में समाप्त कर दूंगा। मैंने तुम्हारे साथ दगा की, क्षमा करना।

ज्ञानी : **(मन में)** भगवन् ! पुरुष इतने ईर्ष्यालु, इतने विश्वासघाती, इतने क्रूर, वज्र-हृदय होते हैं ! अगर मैंने स्वामी चेतनदास की बात पर विश्वास किया होता तो यह नौबत न आने पाती। पर मैंने तो उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं दिया। यह उसी अश्रद्धा का दण्ड है। **(प्रकट)** मैं आपको इससे ज्यादा विचारशील समझती थी। किसी दूसरे के मुंह से ये बातें सुनकर मैं कभी विश्वास न करती।

सबल : ज्ञानी, मुझे सच्चे दिल से क्षमा करो। मैं स्वयं इतना दुःखी हूं कि उस पर एक जौ का बोझ भी मेरी कमर तोड़ देगा। मेरी बुद्धि इस समय भ्रष्ट हो गई है। न जाने क्या कर बैठूं। मैं आपे में नहीं हूं। तरह-तरह के आवेग मन में उठते हैं। मुझमें उनको दबाने की सामर्थ्य नहीं है। कंचन के नाम से एक धर्मशाला और ठाकुरद्वारा अवश्य बनवाना। मैं तुमसे यह अनुरोध करता हूं, यह मेरी अंतिम प्रार्थना है। विधाता की यह वीभत्स लीला, यह पैशाचिक तांडव जल्द समाप्त होने वाला है। कंचन की यही जीवन-लालसा थी। इन्हीं लालसाओं पर उसने जीवन के सब आनंदों, सभी पार्थिव सुखों को अर्पण कर दिया था। अपनी लालसाओं को पूरा होते देखकर उसकी आत्मा प्रसन्न होगी और इस कुटिल निर्दय आघात को क्षमा कर देगी।

अचलसिंह का प्रवेश।

ज्ञानी : **(आंखें पोंछकर)** बेटा, क्या अभी तुमने भी भोजन नहीं किया?

अचल : अभी चाचाजी तो आए ही नहीं। आज उनके कमरे में जाते हुए

न जाने क्यों भय लगता है। ऐसा मालूम होता है कि वह कहीं छिपे बैठे हैं और दिखाई नहीं देते। उनकी छाया कमरे में छिपी हुई जान पड़ती है।

सबल : **(मन में)** इसे देखकर चित्त कातर हो रहा है। इसे फलते-फूलते देखना मेरे जीवन की सबसे बड़ी लालसा थी। कैसा चतुर, सुशील, हंसमुख लड़का है। चेहरे से प्रतिभा टपक पड़ती है। मन में क्या-क्या इरादे थे। इसे जर्मनी भेजना चाहता था। संसार-यात्रा कराके इसकी शिक्षा को समाप्त करना चाहता था। इसकी शक्तियों का पूरा विकास करना चाहता था, पर सारी आशाएं धूल में मिल गईं। **(अचल को गोद में लेकर)** बेटा, तुम जाकर भोजन कर लो, मैं तुम्हारे चाचाजी को देखने जाता हूं।

अचल : आप लोग आ जाएंगे तो साथ ही मैं भी खाऊंगा। अभी भूख नहीं है।

सबल . और जो मैं शाम तक न आऊं ?

अचल : आधी रात तक आपकी राह देखकर तब खा लूंगा, मगर आप ऐसा प्रश्न क्यों करते हैं ?

सबल : कुछ नहीं, यों ही। अच्छा बताओ, मैं आज मर जाऊं तो तुम क्या करोगे ?

ज्ञानी : कैसे असगुन मुंह से निकालते हो !

अचल : **(सबलसिंह की गर्दन में हाथ डालकर)** आप तो अभी जवान हैं, स्वस्थ हैं, ऐसी बातें क्यों सोचते हैं ?

सबल : कुछ नहीं, तुम्हारी परीक्षा करना चाहता हूं।

अचल : **(सबल की गोद में सिर रखकर)** नहीं, कोई और ही कारण है। **(रोकर)** बाबूजी, मुझसे छिपाइए न, बताइए। आप क्यों इतने उदास हैं, अम्मां क्यों रो रही हैं ? मुझे भय लग रहा है। जिधर देखता हूं उधर ही बेरौनकी-सी मालूम होती है, जैसे पिंजरे में से चिड़िया उड़ गई हो।

कई सिपाही और चौकीदार बंदूकें और लाठियां लिए हाते में घुस आते हैं, और थानेदार तथा इंस्पेक्टर और सुपरिंटेंडेंट घोड़ों से उतरकर बरामदे में खड़े हो जाते हैं। ज्ञानी भीतर चली जाती है। और सबल बाहर निकल आते हैं।

इंस्पेक्टर : ठाकुर साहब, आपकी खानातलाशी होगी। यह वारंट है।

सबल : शौक से लीजिए।

सुपरिंटेंडेंट : हम तुम्हारा रियासत छीन लेगा। हम तुमको रियासत दिया है, तब तुम इतना बड़ा आदमी बना है और मोटर में बैठा घूमता है। तुम हमारा बनाया हुआ है। हम तुमको अपने काम के लिए रियासत दिया है और तुम सरकार से दुश्मनी करता है। तुम दोस्त बनकर तलवार मारना चाहता है। दगाबाज है। हमारे साथ पोलो खेलता है, क्लब में बैठता है, दावत खाता है और हमीं से दुश्मनी रखता है। यह रियासत तुमको किसने दिया ?

सबल : **(सरोष होकर)** मुगल बादशाहों ने। हमारे खानदान में पच्चीस पुश्तों से यह रियासत चली आती है।

सुपरिंटेंडेंट : झूठ बोलता है। मुगल लोग जिसको चाहता था जागीर देता था, जिससे नाराज हो जाता था उससे जागीर छीन लेता था। जागीरदार मौरूसी नहीं होता था। तुम्हारा बुजुर्ग लोग मुगल बादशाहों से ऐसा बदखाही करता जैसा तुम हमारे साथ कर रहा है, तो जागीर छिन गया होता। हम तुमको असामियों से लगान वसूल करने के लिए कमीसन देता है और तुम हमारा जड़ खोदना चाहता है। गांव में पंचायत बनाता है, लोगों को ताड़ी-शराब पीने से रोकता है, हमारा रसद-बेगार बंद करता है। हमारा गुलाम होकर हमको आंखें दिखाता है। जिस बर्तन में पानी पीता है उसी में छेद करता है। सरकार चाहे तो एक घड़ी में तुमको मिट्टी में मिला दे सकता है। **(दोनों हाथ से चुटकी बजाता है।)**

सबल : आप जो काम करने आए हैं वह काम कीजिए और अपनी राह लीजिए। मैं आपसे सिविक्स और पॉलिटिक्स के लेक्चर नहीं सुनना चाहता।

सुपरिंटेंडेंट : हम न रहें तो तुम एक दिन भी अपनी रियासत पर काबू नहीं पा सकता।

सबल : मैं आपसे डिसकशन **(बहस)** नहीं करना चाहता। पर यह समझ रखिए कि अगर मान लिया जाय, सरकार ने ही हमको बनाया तो उसने अपनी रक्षा और स्वार्थ-सिद्धि के ही लिए यह पालिसी कायम की। जमींदारों की बदौलत सरकार का राज कायम है। जब-जब सरकार पर कोई संकट पड़ा है, जमींदारों ने ही उसकी मदद की है। अगर आपका खयाल है कि

जमींदारों को मिटाकर आप राज्य कर सकते हैं तो भूल है। आपकी हस्ती जमींदारों पर निर्भर है।

सुपरिंटेंडेंट : हमने अभी किसानों के हमले से तुमको बचाया, नहीं तो तुम्हारा निशान भी न रहता।

सबल : मैं आपसे बहस नहीं करना चाहता।

सुपरिंटेंडेंट : हम तुमसे चाहता है कि जब रैयत के दिल में बदखाही पैदा हो तो तुम हमारा मदद करे। सरकार से पहले वही लोग बदखाही करेगा जिसके पास जायदाद नहीं है, जिसका सरकार से कोई कनेक्शन **(संबंध)** नहीं है। हम ऐसे आदमियों का तोड़ करने के लिए ऐसे लोगों को मजबूत करना चाहता है जो जायदाद वाला है और जिसका हस्ती सरकार पर है। हम तुमसे रैयत को दबाने का काम लेना चाहता है।

सबल : और लोग आपको इस काम में मदद दे सकते हैं, मैं नहीं दे सकता। मैं रैयत का मित्र बनकर रहना चाहता हूं, शत्रु बनकर नहीं। अगर रैयत को गुलामी में जकड़े और अंधकार में डाले रखने के लिए जमींदारों की सृष्टि की गई है तो मैं इस अत्याचार का पुरस्कार न लूंगा चाहे वह रियासत ही क्यों न हो। मैं अपने देश-बंधुओं के मानसिक और आत्मिक विकास का इच्छुक हूं। दूसरों को मूर्ख और अशक्त रखकर अपना ऐश्वर्य नहीं चाहता।

सुपरिंटेंडेंट तुम सरकार से बगावत करता है।

सबल अगर इसे बगावत कहा जाता है तो मैं बागी ही हूं।

सुपरिंटेंडेंट हां, यही बगावत है। देहातों में पंचायत खोलना बगावत है, लोगों को शराब पीने से रोकना बगावत है, लोगों को अदालतों में जाने से रोकना बगावत है। सरकारी आदमियों का रसद बेगार बंद करना बगावत है।

सबल : तो फिर मैं बागी हूं।

अचल : मैं भी बागी हूं ।

सुपरिंटेंडेंट : गुस्ताख लड़का।

इंस्पेक्टर : हुजूर, कमरे में चलें, वहां मैंने बहुत-से कागजात जमा कर रखे हैं।

सुपरिंटेंडेंट : चलो।

इंस्पेक्टर : देखिए, यह पंचायतों की फिहरिस्त है और पंचों के नाम हैं।

सुपरिंटेंडेंट : बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह पंचायतों पर एक मजमून है।

सुपरिंटेंडेंट : बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह कौम के लीडरों की तस्वीरों का अल्बम है।

सुपरिंटेंडेंट : बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह चंद किताबें हैं, मैजिनी के मजामीन, वीर हारडी का हिन्दुस्तान का सफरनामा, भक्त प्रह्लाद का वृतान्त, टॉल्स्टाय की कहानियां।

सुपरिंटेंडेंट : सब बड़े काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह मिसमेरिजिम की किताब है।

सुपरिंटेंडेंट : ओह, यह बड़े काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह दवाइयों का बक्स है।

सुपरिंटेंडेंट : देहातियों को बस में करने के लिए ! यह भी बहुत काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह मैजिक लालटेन है।

सुपरिंटेंडेंट : बहुत ही काम का चीज है।

इंस्पेक्टर : यह लेन-देन का बही है।

सुपरिंटेंडेंट : मोस्ट इम्पार्टेंट ! बड़े काम का चीज। इतना सबूत काफी है। अब चलना चाहिए।

एक कानिस्टिबल: हुजूर, बगीचे में एक अखाड़ा भी है।

सुपरिंटेंडेंट : बहुत बड़ा सबूत है।

दूसरा कानिस्टिबल: हुजूर, अखाड़े के आगे एक गऊशाला भी है। कई गायें-भैंसें बंधी हुई हैं।

सुपरिंटेंडेंट : दूध पीता है जिसमें बगावत करने के लिए ताकत हो जाए। बहुत बड़ा सबूत है। वेल सबलसिंह, हम तुमको गिरफ्तार करता है।

सबल : आपको अधिकार है।

चेतनदास का प्रवेश।

इंस्पेक्टर : आइए स्वामीजी, तशरीफ लाइए।

चेतनदास : मैं जमानत देता हूं।

इंस्पेक्टर : आप ! यह क्योंकर !

सबल : मैं जमानत नहीं देना चाहता। मुझे गिरफ्तार कीजिए।

चेतनदास : नहीं, मैं जमानत दे रहा हूं।

सबल : स्वामीजी, आप दया के स्वरूप हैं, पर मुझे क्षमा कीजिएगा, मैं

जमानत नहीं देना चाहता।

चेतनदास : ईश्वर की इच्छा है कि मैं तुम्हारी जमानत करूं।

सुपरिंटेंडेंट : वेल इंस्पेक्टर, आपकी क्या राय है ? जमानत लेनी चाहिए या नहीं ?

इंस्पेक्टर : हुजूर, स्वामीजी बड़े मोतबर, सरकार के बड़े खैरख्वाह हैं। इनकी जमानत मंजूर कर लेने में कोई हर्ज नहीं है।

सुपरिंटेंडेंट : हम पांच हजार से कम न लेगा।

चेतनदास : मैं स्वीकार करता हूं।

सबल : स्वामीजी, मेरे सिद्धांत भंग हो रहे हैं।

चेतनदास : ईश्वर की यही इच्छा है।

पुलिस के कर्मचारियों का प्रस्थान। ज्ञानी अंदर से निकलकर चेतनदास के पैरों पर गिर पड़ती है।

चेतनदास : माई, तेरा कल्याण हो।

ज्ञानी : आपने आज मेरा उद्धार कर दिया।

चेतनदास : सब कुछ ईश्वर करता है।

प्रस्थान।

तीसरा दृश्य

स्थान—स्वामी चेतनदास की कुटी।

समय—संध्या।

चेतनदास : (मन में) यह चाल मुझे खूब सूझी। पुलिस वाले अधिक-से-अधिक कोई अभियोग चलाते। सबलसिंह ऐसे कांटों से डरने वाला मनुष्य नहीं है। पहले मैंने समझा था उस चाल से यहां उसका खूब अपमान होगा। पर वह अनुमान ठीक न निकला। दो घंटे पहले शहर में सबल की जितनी प्रतिष्ठा थी, अब उससे सतगुनी है। अधिकारियों की दृष्टि में चाहे वह गिर गया हो, पर नगरवासियों की दृष्टि में अब वह देव-तुल्य है। यह काम हलधर ही पूरा करेगा। मुझे उसके पीछे का रास्ता साफ करना चाहिए।

ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : महाराज, आप उस समय इतनी जल्दी चले आए कि मुझे आपसे कुछ कहने का अवसर ही न मिला। आप यदि सहाय न होते तो आज मैं कहीं की न रहती। पुलिस वाले किसी दूसरे व्यक्ति की जमानत न लेते। आपके योगबल ने उन्हें परास्त कर दिया।

चेतनदास : माई, सब ईश्वर की महिमा है। मैं तो केवल उसका तुच्छ सेवक हूं।

ज्ञानी : आपके सम्मुख इस समय मैं बहुत निर्लज्ज बनकर आई हूं। मैं अपराधिनी हूं, मेरा अपराध क्षमा कीजिए। आपने मेरे पतिदेव के विषय में जो बातें कहीं थीं वह एक-एक अक्षर सच निकलीं। मैंने आप पर अविश्वास किया। मुझसे यह घोर अपराध हुआ। मैं अपने पति को देव-तुल्य समझती थी। मुझे अनुमान हुआ कि आपको किसी ने भ्रम में डाल दिया है। मैं नहीं जानती थी कि आप अंतर्यामी हैं। मेरा अपराध क्षमा कीजिए।

चेतनदास : तुझे मालूम नहीं है, आज तेरे पति ने कैसा पैशाचिक काम कर डाला है। मुझे इसके पहले कहने का अवसर नहीं प्राप्त हुआ।

ज्ञानी : नहीं महाराज, मुझे मालूम है। उन्होंने स्वयं मुझसे सारा वृत्तांत कह सुनाया। भगवान् यदि मैंने पहले ही आपकी चेतावनी पर ध्यान दिया होता तो आज इस हत्याकांड की नौबत न आती। यह सब मेरी अश्रद्धा का दुष्परिणाम है। मैंने आप-जैसे महात्मा पुरुष का अविश्वास किया, उसी का यह दंड है। अब मेरा उद्धार आपके सिवा और कौन कर सकता है। आपकी दासी हूं, आपकी चेरी हूं। मेरे अवगुणों को न देखिए। अपनी विशाल दया से मेरा बेड़ा पार लगाइए।

चेतनदास : अब मेरे वश की बात नहीं। मैंने तेरे कल्याण के लिए, तेरी मनोकामनाओं को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े अनुष्ठान किए थे। मुझे निश्चय था कि तेरा मनोरथ सिद्ध होगा। पर इस पापाभिनय ने मेरे समस्त अनुष्ठानों को विफल कर दिया। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि यह कुकर्म तेरे कुल का सर्वनाश कर देगा।

ज्ञानी : भगवान्, मुझे भी यही शंका हो रही है। मुझे भय है कि मेरे पतिदेव स्वयं पश्चात्ताप के आवेग में अपना प्राणांत न कर दें। उन्हें इस समय अपनी दुष्कृति पर अत्यंत ग्लानि हो रही है। आज वह बैठे-बैठे देर तक रोते रहे। इस दु:ख और निराशा की दशा में उन्होंने प्राणों का अंत कर दिया तो कुल का सर्वनाश हो जाएगा। इस सर्वनाश से मेरी रक्षा आपके सिवा और कौन कर सकता है ? आप जैसा दयालु स्वामी पाकर अब किसकी शरण जाऊं ? ऐसा कोई यत्न कीजिए कि उनका चित्त शांत हो जाए। मैं अपने देवर का जितना आदर और प्रेम करती थी वह मेरा हृदय ही जानता है। मेरे पति भी अपने भाई को पुत्र के समान समझते थे। वैमनस्य का लेश भी न था। पर अब तो जो कुछ होना था, हो चुका। उसका शोक जीवन-पर्यंत रहेगा। अब कुल की रक्षा कीजिए। मेरी आपसे यही याचना है।

चेतनदास : पाप का दण्ड ईश्वरीय नियम है। उसे कौन भंग कर सकता है?

ज्ञानी : योगीजन चाहें तो ईश्वरीय नियमों को भी झुका सकते हैं।

चेतनदास : इसका तुझे विश्वास है ?

ज्ञानी : हां, महाराज ! मुझे पूरा विश्वास है।

चेतनदास : श्रद्धा है ?

ज्ञानी : हां, महाराज, पूरी श्रद्धा है।

चेतनदास : भक्त को अपने गुरु के सामने अपना तन-मन-धन सभी समर्पण करना पड़ता है। वही अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष के प्राप्त करने का एकमात्र साधन है। भक्त गुरु की बातों पर, उपदेशा पर, व्यवहारों पर कोई शंका नहीं करता। वह अपने गुरु को ईश्वर-तुल्य समझता है। जैसे कोई रोगी अपने को वैद्य के हाथों में छोड़ देता है, उसी भांति भक्त भी अपने शरीर को, अपनी बुद्धि को और आत्मा को गुरु के हाथों में छोड़ देता है। तू अपना कल्याण चाहती है तो तुझे भक्तों के धर्म का पालन करना पड़ेगा।

ज्ञानी : महाराज, मैं अपना तन-मन-धन सब आपके चरणों पर समर्पित करती हूं।

चेतनदास : शिष्य का अपने गुरु के साथ आत्मिक संबंध होता है। उसके और सभी संबंध पार्थिव होते हैं। आत्मिक संबंध के सामने पार्थिव संबंधों का कुछ भी मूल्य नहीं होता। मोक्ष के सामने

सांसारिक सुखों का कुछ भी मूल्य नहीं है। मोक्षपद-प्राप्ति ही मानव-जीवन का उद्देश्य है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्राणी को ममत्व का त्याग करना चाहिए। पिता-माता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री, शत्रु-मित्र यह सभी संबंध पार्थिव हैं। यह सब मोक्षमार्ग की बाधाएं हैं। इनसे निवृत्त होकर ही मोक्ष-पद प्राप्त हो सकता है। केवल गुरु की कृपा-दृष्टि ही उस महान्-पद पर पहुंचा सकती है। तू अभी तक भ्रांति में पड़ी हुई है। तू अपने पति और पुत्र, धन और संपत्ति को ही जीवन-सर्वस्व समझ रही है। यही भ्रांति तेरे दु:ख और शोक का मूल कारण है। जिस दिन तुझे इस भ्रांति से निवृत्ति होगी उसी दिन तुझे मोक्ष-मार्ग दिखाई देने लगेगा। तब इन सासांरिक सुखों से तेरा मन आप-ही-आप हट जाएगा। तुझे इनकी असारता प्रकट होने लगेगी। मेरा पहला उपदेश यह है कि गुरु ही तेरा सर्वस्व है। मैं ही तेरा सब कुछ हूं।

ज्ञानी : महाराज, आपकी अमृतवाणी से मेरे चित्त को बड़ी शांति मिल रही है।

चेतनदास : मैं तेरा सर्वस्व हूं। मैं तेरी संपत्ति हूं, तेरी प्रतिष्ठा हूं, तेरा पति हूं, तेरा पुत्र हूं, तेरी माता हूं, तेरा पिता हूं, तेरा स्वामी हूं, तेरा सेवक हूं, तेरा दान हूं, तेरा व्रत हूं। हां, मैं तेरा स्वामी हूं और तेरा ईश्वर हूं। तू राधिका है, मैं तेरा कन्हैया हूं; तू सती है, मैं तेरा शिव हूं, तू पत्नी है, मैं तेरा पति हूं; तू प्रकृति है, मैं तेरा पुरुष हूं; तू जीव है, मैं आत्मा हूं; तू स्वर है, मैं उसका लालित्य हूं; तू पुष्प है, मैं उसकी सुगंध हूं।

ज्ञानी : भगवन्, मैं आपके चरणों की रज हूं। आपकी सुधा-वर्षा से मेरी आत्मा तृप्त हो गई।

चेतनदास : तेरा पति तेरा शत्रु है, जो तुझे अपने कुकृत्यों का भागी बनाकर तेरी आत्मा का सर्वनाश कर रहा है।

ज्ञानी : (मन में) वास्तव में उनके पीछे मेरी आत्मा कलुषित हो रही है। उनके लिए मैं अपनी मुक्ति क्यों बिगाड़ूं। अब उन्होंने अधर्म-पथ पर पग रखा है, मैं उनकी सहगामिनी क्यों बनूं ? (प्रकट) स्वामीजी, अब मैं आपकी शरण आई हूं, मुझे उबारिए।

चेतनदास : प्रिये, हम और तुम एक हैं, कोई चिंता मत करो। ईश्वर ने तुम्हें मंझधार में डूबने से बचा लिया। वह देखो सामने ताक पर

बोतल है। उसमें महाप्रसाद रखा हुआ है। उसे उतारकर अपने कोमल हाथों से मुझे पिलाओ और प्रसाद-स्वरूप स्वयं पान करो। तुम्हारा अंतःकरण आलोकमय हो जाएगा। सांसारिकता की कालिमा एक क्षण में कट जाएगी और भक्ति का उज्ज्वल प्रकाश प्रस्फुटित हो जाएगा। यह वह सोमरस है जो ऋषिगण पान करके योगबल प्राप्त किया करते थे।

ज्ञानी बोतल उतारकर चेतनदास के कमंडल में उंड़ेलती है, चेतनदास पी जाते हैं।

चेतनदास : यह प्रसाद तुम भी पान करो।

ज्ञानी : भगवन्, मुझे क्षमा कीजिए।

चेतनदास : प्रिये, यह तुम्हारी पहली परीक्षा है।

ज्ञानी : **(कमंडल मुंह से लगाकर पीती है। तुरंत उसे अपने शरीर में एक विशेष स्फूर्ति का अनुभव होता है।)** स्वामिन्, यह तो कोई अलौकिक वस्तु है।

चेतनदास : प्रिये, यह ऋषियों का पेय पदार्थ है। इसे पीकर वह चिरकाल तक तरुण बने रहते थे। उनकी शक्तियां कभी क्षीण न होती थीं। थोड़ा-सा और दो। आज बहुत दिनों के बाद यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ है।

ज्ञानी बोतल उठाकर कमंडल में उंड़ेलती है। चेतनदास पी जाते हैं। ज्ञानी स्वयं थोड़ा-सा निकालकर पीती है।

चेतनदास : **(ज्ञानी के हाथों को पकड़कर)** प्रिये, तुम्हारे हाथ कितने कोमल हैं, ऐसा जान पड़ता है मानो फूल की पंखड़ियां हैं। **(ज्ञानी झिझककर हाथ खींच लेती है)** प्रिये, झिझको नहीं, यह वासनाजनित प्रेम नहीं है। यह शुद्ध, पवित्र प्रेम है। यह तुम्हारी दूसरी परीक्षा है।

ज्ञानी : मेरे हृदय में बड़े वेग से धड़कन हो रही है।

चेतनदास : यह धड़कन नहीं है, विमल प्रेम की तरंगें हैं जो वक्ष के किनारों से टकरा रही हैं। तुम्हारा शरीर फूल की भांति कोमल है। उस वेग को सहन नहीं कर सकता। इन हाथों के स्पर्श से मुझे वह आनंद मिल रहा है जिसमें चंद्र का निर्मल प्रकाश, पुष्पों की मनोहर सुगंध, समीर के शीतल मंद झोंके और

जल-प्रवाह का मधुर गान सभी समाविष्ट हो गए हैं।

ज्ञानी : मुझे चक्कर-सा आ रहा है। जान पड़ता है लहरों में बही जाती हूं।

चेतनदास : थोड़ा-सा सोमरस और निकालो। संजीवनी है।

ज्ञानी बोतल से कमंडल में उंड़ेलती है, चेतनदास पी जाता है, ज्ञानी भी दो-तीन घूंट पीती है।

चेतनदास : आज जीवन सफल हो गया। ऐसे सुख के एक क्षण पर समग्र जीवन भेंट कर सकता हूं **(ज्ञानी के गले में बांहें डालकर आलिंगन करना चाहता है, ज्ञानी झिझककर पीछे हट जाती है।)** प्रिये, यह भक्ति मार्ग की तीसरी परीक्षा है !

ज्ञानी अलग खड़ी होकर रोती है।

चेतनदास : प्रिये....

ज्ञानी : **(उच्च स्वर से)** कोचवान, गाड़ी लाओ।

चेतनदास : इतनी अधीर क्यों हो रही हो ? क्या मोक्षपद के निकट पहुंचकर फिर उसी मायावी संसार में लिप्त होना चाहती हो ? यह तुम्हारे लिए कल्याणकारी न होगा।

ज्ञानी : मुझे मोक्षपद प्राप्त हो या न हो, यह ज्ञान अवश्य प्राप्त हो गया कि तुम धूर्त, कुटिल, भ्रष्ट, दुष्ट, पापी हो। तुम्हारे इस भेष का अपमान नहीं करना चाहती, पर यह समझ रखो कि तुम सरला स्त्रियों को इस भांति दगा देकर अपनी आत्मा को नर्क की ओर ले जा रहे हो। तुमने मेरे शरीर को अपने कलुषित हाथों से स्पर्श करके सदा के लिए विकृत कर दिया। तुम्हारे मनोविकारों के संपर्क से मेरी आत्मा सदा के लिए दूषित हो गई। तुमने मेरे व्रत की हत्या कर डाली। अब मैं अपने ही को अपना मुंह नहीं दिखा सकती। सतीत्व-जैसी अमूल्य वस्तु खोकर मुझे ज्ञात हुआ कि मानव-चरित्र का कितना पतन हो सकता है। अगर तुम्हारे हृदय में मनुष्यत्व का कुछ भी अंश शेष है तो मैं उसी को संबोधित करके विनय करती हूं कि अपनी आत्मा पर दया करो और इस दुष्टाचरण को त्याग कर सद्वृत्तियों का आवाहन करो।

कुटी से बाहर निकलकर गाड़ी में बैठ जाती है।

कोचवान : किधर से चलूं ?

ज्ञानी : सीधे घर चलो।

चौथा दृश्य

स्थान—राजेश्वरी का मकान।

समय—दस बजे रात।

राजेश्वरी : **(मन में)** मेरे ही लिए जीवन का निर्वाह करना क्यों इतना कठिन हो रहा है ? संसार में इतने आदमी पड़े हुए हैं। सब अपने-अपने धंधों में लगे हुए हैं। मैं ही क्यों इस चक्कर में डाली गई हूं ? मेरा क्या दोष है ? मैंने कभी अच्छा खाने, पहनने या आराम से रहने की इच्छा की, जिसके बदले में मुझे यह दंड मिला है? जबरदस्ती इस कारागार में बंद की गई हूं। यह सब विलास की चीजें जबरदस्ती मेरे गले मढ़ी गई हैं। एक धनी पुरुष मुझे अपने इशारों पर नचा रहा है। मेरा दोष इतना ही है कि मैं रूपवती हूं और निर्बल हूं। इसी अपराध की यह सजा मुझे मिल रही है। जिसे ईश्वर धन दे, उसे इतना सामर्थ्य भी दे कि धन की रक्षा कर सके। निर्बल प्राणियों को रत्न देना उन पर अन्याय करना है। हा ! कंचनसिंह पर आज न जाने क्या बीती ! सबलसिंह ने अवश्य ही उनको मार डाला होगा। मैंने उन पर कभी क्रोध चढ़ते नहीं देखा था। क्रोध में तो मानो उन पर भूत सवार हो जाता है। मर्दों को उत्तेजित करना सरल है। उनकी नाड़ियों में रक्त की जगह रोष और ईर्ष्या का प्रवाह होता है। ईर्ष्या की ही मिट्टी से उनकी सृष्टि हुई है। यह सब विधाता की विषम लीला है। **(गाती है।)**

दयानिधि तेरी गति लखि न परी।

सबलसिंह का प्रवेश।

राजेश्वरी : आइए, आपकी ही बाट जोह रही थी। उधर ही मन लगा हुआ था। आपकी बातें याद करके शंका और भय से चित्त बहुत व्याकुल हो रहा था। पूछते डरती हूं....

सबल : **(मलिन स्वर से)** जिस बात की तुम्हें शंका थी वह हो गई।

राजेश्वरी : अपने ही हाथों ?

सबल : नहीं। मैंने क्रोध के आवेग में चाहे मुंह से जो बक डाला हो पर अपने भाई पर मेरे हाथ नहीं उठ सके। पर इससे मैं अपने पाप का समर्थन नहीं करना चाहता। मैंने स्वयं हत्या की और उसका सारा भार मुझ पर है। पुरुष कड़े-से-कड़े आघात सह सकता है, बड़ी-से-बड़ी मुसीबतें झेल सकता है, पर यह चोट नहीं सह सकता, यही उसका मर्मस्थान है। एक ताले में दो कुंजियां साथ-साथ चली जाएं, एक म्यान में दो तलवारें साथ-साथ रहें, एक कुल्हाड़ी में दो बेंट साथ लगें, पर एक स्त्री के दो चाहने वाले नहीं रह सकते, असंभव है।

राजेश्वरी : एक पुरुष को चाहने वाली तो कई स्त्रियां होती हैं।

सबल : यह उनके अपंग होने के कारण हैं। एक ही भाव दोनों के मन में उठते हैं। पुरुष शक्तिशाली है, वह अपने क्रोध को व्यक्त कर सकता है; स्त्री मन में ऐंठकर रह जाती है।

राजेश्वरी : क्या आप समझते थे कि मैं कंचनसिंह को मुंह लगा रही हूं। उन्हें केवल यहां बैठे देखकर आपको इतना उबलना न चाहिए था।

सबल : तुम्हारे मुंह से यह तिरस्कार कुछ शोभा नहीं देता। तुमने अगर सिरे से ही उसे यहां न घुसने दिया होता तो आज यह नौबत न आती। तुम अपने को इस इल्जाम से मुक्त नहीं कर सकतीं।

राजेश्वरी : एक तो आपने मुझ पर संदेह करके मेरा अपमान किया, अब आप इस हत्या का भार भी मुझ पर रखना चाहते हैं। मैंने आपके साथ ऐसा कोई व्यवहार नहीं किया था कि आप इतना अविश्वास करते।

सबल : राजेश्वरी, इन बातों से दिल न जलाओ। मैं दुःखी हूं, मुझे तस्कीन दो; मैं घायल हूं, मेरे घाव पर मरहम रखो। मैंने वह रत्न हाथ से खो दिया जिसका जोड़ अब संसार में मुझे न मिलेगा। कंचन आदर्श भाई था। मेरा इशारा उसके लिए हुक्म था। मैंने जरा-सा इशारा कर दिया होता तो वह भूलकर भी इधर पग न रखता। पर मैं अंधा हो रहा था, उन्मत्त हो रहा था। मेरे हृदय की जो दशा हो रही है वह तुम देख सकतीं तो कदाचित् तुम्हें मुझ पर दया आती। ईश्वर के लिए मेरे घावों पर नमक न छिड़को। अब तुम्हीं मेरे जीवन का आधार हो। तुम्हारे लिए मैंने इतना

बड़ा बलिदान किया। अब तुम मुझे पहले से कहीं अधिक प्रिय हो। मैंने पहले सोचा था, केवल तुम्हारे दर्शनों से, तुम्हारी तिरछी चितवनों से मैं तृप्त हो जाऊंगा। मैं केवल तुम्हारा सहवास चाहता था। पर अब मुझे अनुभव हो रहा है कि मैं गुड़ खाना और गुलगुलों से परहेज करना चाहता था; मैं भरे प्याले को उछालकर भी चाहता था कि उसका पानी न छलके। नदी में जाकर भी चाहता था कि दामन न भीगे। पर अब मैं तुमको पूर्णरूप से चाहता हूं। मैं तुम्हारा सर्वस्व चाहता हूं। मेरी विकल आत्मा के लिए संतोष का केवल यही एक आधार है। अपने कोमल हाथों को मेरी दहकती हुई छाती पर रखकर शीतल कर दो।

राजेश्वरी : मुझे अब आपके समीप बैठते हुए भय होता है। आपके मुख पर नम्रता और प्रेम की जगह अब क्रूरता और कपट की झलक है।

सबल . तुम अपने प्रेम से मेरे हृदय को शांत कर दो। इसीलिए इस समय तुम्हारे पास आया हूं। मुझे शांति दो। मैं निर्जन पार्क और नीरव नदी से निराश लौटा आता हूं। वहां शांति नहीं मिली। तुम्हें यह मुंह नहीं दिखाना चाहता था। हत्यारा बनकर तुम्हारे सम्मुख आते लज्जा आती थी। किसी को मुंह नहीं दिखाना चाहता। केवल तुम्हारे प्रेम की आशा मुझे तुम्हारी शरण लाई। मुझे आशा थी, तुम्हें मुझ पर दया आएगी, पर देखता हूं तो मेरा दुर्भाग्य वहां भी मेरा पीछा नहीं छोड़ता। राजेश्वरी, प्रिये, एक बार मेरी तरफ प्रेम की चितवनों से देखो। मैं दुःखी हूं। मुझसे ज्यादा दुःखी कोई प्राणी संसार में न होगा। एक बार मुझे प्रेम से गले लगा लो, एक बार अपनी कोमल बाहें मेरी गर्दन में डाल दो, एक बार मेरे सिर को अपनी जांघों पर रख लो। प्रिये, मेरी यह अंतिम लालसा है। मुझे दुनिया से नामुराद मत जाने दो। मुझे चंद घंटों का मेहमान समझो।

राजेश्वरी : **(सजल नयन होकर)** ऐसी बातें करके दिल न दुखाइए।

सबल : अगर इन बातों से तुम्हारा दिल दुखता है तो न करूंगा। पर राजेश्वरी, मुझे तुमसे इस निर्दयता की आशा न थी। सौंदर्य और दया में विरोध है; इसका मुझे अनुमान न था। मगर इसमें तुम्हारा दोष नहीं है। यह अवस्था ही ऐसी है। हत्यारे पर कौन दया करेगा ? जिस प्राणी ने सगे भाई को ईर्ष्या और दंभ के वश

होकर वध करा दिया, वह इसी योग्य है कि चारों ओर उसे धिक्कार मिले। उसे कहीं मुंह दिखाने का ठिकाना न रहे। उसके पुत्र और स्त्री भी उसकी ओर से आंखें फेर लें, उसके मुंह में कालिमा पोत दी जाए और उसे हाथी के पैरों से कुचलवा दिया जाए। उसके पाप का यही दंड है। राजेश्वरी, मनुष्य कितना दीन, कितना परवश प्राणी है। अभी एक सप्ताह पहले मेरा जीवन कितना सुखमय था। अपनी नौका में बैठा हुआ धीमी-धीमी लहरों पर बहता, समीर की शीतल, मंद तरंगों का आनंद उठाता चला जाता था। क्या जानता था कि एक ही क्षण में वे मंद तरंगें इतनी भयंकर हो जाएंगी, शीतल झोंके इतने प्रबल हो जाएंगे कि नाव को उलट देंगे। सुख और दु:ख, हर्ष और शोक में उससे कहीं कम अंतर है जितना हम समझते हैं। आंखों को एक जरा-सा इशारा, मुंह का एक जरा-सा शब्द हर्ष का शोक और सुख को दु:ख बना सकता है। लेकिन हम यह सब जानते हुए भी सुख पर लौ लगाए रहते हैं। यहां तक कि फांसी पर चढ़ने से एक क्षण पहले तक हमें सुख की लालसा घेरे रहती है। ठीक वही दशा मेरी है। जानता हूं कि चंद घंटों का और मेहमान हूं, निश्चय है कि फिर ये आंखें सूर्य और आकाश को न देखेंगी; पर तुम्हारे प्रेम की लालसा हृदय से नहीं निकलती।

राजेश्वरी **(मन में)** इस समय यह वास्तव में बहुत दु:खी हैं। इन्हें जितना दंड मिलना चाहिए था उससे ज्यादा मिल गया। भाई के शोक में इन्होंने आत्मघात करने की ठानी है। मेरा जीवन तो नष्ट हो ही गया, अब इन्हें मौत के मुंह में झोंकने की चेष्टा क्यों करूं ? इनकी दशा देखकर दया आती है। मेरे मन के घातक भाव लुप्त हो रहे हैं। **(प्रकट)** आप इतने निराश क्यों हो रहे हैं ? संसार में ऐसी बातें आए दिन होती रहती, हैं। अब दिल को संभालिए। ईश्वर ने आपको पुत्र दिया है, सती स्त्री दी है। क्या आप उन्हें मंझधार में छोड़ देंगे ? मेरे अवलंब भी आप ही हैं। मुझे द्वार-द्वार की ठोकर खाने के लिए छोड़ दीजिएगा ? इस शोक को दिल से निकाल डालिए।

सबल **(खुश होकर)** तुम भूल जाओगी कि मैं पापी-हत्यारा हूं ?

राजेश्वरी : आप बार-बार इसकी चर्चा क्यों करते हैं !

सबल तुम भूल जाओगी कि इसने अपने भाई को मरवाया है ?

राजेश्वरी **(भयभीत होकर)** प्रेम दोषों पर ध्यान नहीं देता। वह गुणों ही पर मुग्ध होता है। आज मैं अंधी हो जाऊं तो क्या आप मुझे त्याग देंगे ?

सबल प्रिये, ईश्वर न करे, पर मैं तुमसे सच्चे दिल से कहता हूं कि काल की कोई गति, विधाता की कोई पिशाच-लीला, तापों का कोई प्रकोप मेरे हृदय से तुम्हारे प्रेम को नहीं निकाल सकता, हां, नहीं निकाल सकता।

गाता है।

दफ्न करने ले चले थे जब मेरे घर से मुझे
काश, तुम भी झांक लेते रौज़-ए दर से मुझे।
सांस पूरी हो चुकी, दुनिया से रुखसत हो चुका
तुम अब आए हो उठाने मेरे बिस्तर से मुझे।
क्यों उठाता है मुझे मेरी तमन्ना को निकाल
तेरे दर तक खींच लाई थी वही घर से मुझे।
हिज्र की शब कुछ यही मूनिस था मेरा, ऐ कजा
रुक जरा रो लेने दे मिल-मिलके बिस्तर से मुझे।

राजेश्वरी मेरे दिल में आपका वही प्रेम है।

सबल तुम मेरी हो जाओगी ?

राजेश्वरी और अब किसकी हूं ?

सबल तुम पूर्ण रूप से मेरी हो जाओगी ?

राजेश्वरी आपके सिवा अब मेरा कौन है ?

सबल तो प्रिये, मैं अभी मौत को कुछ दिनों के लिए द्वार से टाल दूंगा। अभी न मरूंगा। पर हम सब यहां नहीं रह सकते। हमें कहीं बाहर चलना पड़ेगा, जहां अपना परिचित प्राणी न हो। चलो, आबू चलें, जी चाहे कश्मीर चलो, दो-चार महीने रहेंगे. फिर जैसी अवस्था होगी वैसा करेंगे। पर इस नगर में मैं नहीं रह सकता। यहां की एक-एक पत्ती मेरी दुश्मन है।

राजेश्वरी घर के लोगों को किस पर छोड़िएगा ?

सबल ईश्वर पर ! अब मालूम हो गया कि जो कुछ करता है, ईश्वर करता है। मनुष्य के किए कुछ नहीं हो सकता।

राजेश्वरी यह समस्या कठिन है। मैं आपके साथ बाहर नहीं जा सकती।

सबल : प्रेम तो स्थान के बंधनों में नहीं रहता।

राजेश्वरी : इसका यह कारण नहीं है। अभी आपका चित्त अस्थिर है, न जाने क्या रंग पकड़े। वहां परदेश में कौन अपना हितैषी होगा, कौन विपत्ति में अपना सहायक होगा ? मैं गंवारिन, परदेश करना क्या जानूं ? ऐसा ही है तो आप कुछ दिनों के लिए बाहर चले जाएं।

सबल : प्रिये, यहां से जाकर फिर आना नहीं चाहता, किसी से बताना भी नहीं चाहता कि मैं कहां जा रहा हूं। मैं तुम्हारे सिवा और सारे संसार के लिए मर जाना चाहता हूं।

गाता है।

किसी को देके दिल कोई नवा संजे फुगां क्यों हो,
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर मुंह में जबां क्यों हो।
वफा कैसी, कहां का इश्क, जब सिर फोड़ना ठहरा,
तो फिर ऐ संग दिल तेरा ही संगे आस्तां क्यों हो।
कफस में मुझसे रूदादे चमन कहते न डर हमदम,
गिरी है जिस पै कल बिजली वह मेरा आशियां क्यों हो।
यह फितना आदमी की खानावीरानी को क्या कम है,
हुए तुम दोस्त जिसके उसका दुश्मन आसमां-क्यों हो।
कहा तुमने कि क्यों हो गैर के मिलने में रुसवाई,
बजा कहते हो, सच कहते हो, फिर कहियो कि हां क्यों हो।

राजेश्वरी : (मन में) यहां हूं तो कभी-न-कभी नसीब जागेंगे ही। मालूम नहीं वह (**हलधर**) आजकल कहां हैं, कैसे हैं, क्या करते हैं, मुझे अपने मन में क्या समझ रहे हैं। कुछ भी हो, जब मैं जाकर सारी रामकहानी सुनाऊंगी तो उन्हें मेरे निरपराध होने का विश्वास हो जाएगा। इनके साथ जाना अपना सर्वनाश कर लेना है। मैं इनकी रक्षा करना चाहती हूं, पर अपना सत खोकर नहीं; इनको बचाना चाहती हूं, पर अपने को डुबाकर नहीं। अगर मैं इस काम में सफल न हो सकूं तो मेरा दोष नहीं है। (**प्रकट**) मैं आपके घर को उजाड़ने का अपराध अपने सिर नहीं लेना चाहती।

सबल : प्रिये, मेरा घर मेरे रहने से ही उजड़ेगा, मेरे अंतर्धान होने से वह बच जाएगा। इसमें मुझे जरा भी संदेह नहीं है।

राजेश्वरी : फिर अब मैं आपसे डरती हूं, आप शक्की आदमी हैं। न जाने किस वक्त आपको मुझ पर शक हो जाए। जब आपने जरा-से शक पर....

सबल : **(शोकातुर होकर)** राजेश्वरी, उसकी चर्चा न करो। उसका प्रायश्चित कुछ हो सकता है तो वह यही है कि अब शक और भ्रम को अपने पास फटकने भी न दूं। इस बलिदान से मैंने समस्त शंकाओं को जीत लिया है। अब फिर भ्रम में पड़ूं, तो मैं मनुष्य नहीं पशु हूंगा।

राजेश्वरी : आप मेरे सतीत्व की रक्षा करेंगे ? आपने मुझे वचन दिया था कि मैं केवल तुम्हारा सहवास चाहता हूं।

सबल : प्रिये, प्रेम को बिना पाए संतोष नहीं होता। जब तक मैं गृहस्थी के बंधनों में जकड़ा था, जब तक भाई, पुत्र, बहिन का मेरे प्रेम के एक अंश पर अधिकार था तब मैं तुम्हें न पूरा प्रेम दे सकता था और न तुमसे सर्वस्व मांगने का साहस कर सकता था। पर अब मैं संसार में अकेला हूं, मेरा सर्वस्व तुम्हारे अर्पण है। प्रेम अपना पूरा मूल्य चाहता है, आधे पर संतुष्ट नहीं हो सकता।

राजेश्वरी : मैं अपने सत को नहीं खो सकती।

सबल : प्रिये, प्रेम के आगे सत, व्रत, नियम, धर्म सब उन तिनकों के समान हैं जो हवा से उड़ जाते हैं। प्रेम पवन नहीं, आंधी है। उसके सामने मान-मर्यादा, शर्म-हया की कोई हस्ती नहीं।

राजेश्वरी : यह प्रेम परमात्मा की देन है। उसे आप धन और रोब से नहीं पा सकते।

सबल : राजेश्वरी, इन बातों से मेरा हृदय चूर-चूर हुआ जाता है। मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहता हूं कि मुझे तुमसे जितना अटल प्रेम है उसे मैं शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। मेरा सत्यानाश हो जाए अगर धन और संपत्ति का ध्यान भी मुझे आया हो। मैं यह मानता हूं कि मैंने तुम्हें पाने के लिए बेजा दबाव से काम लिया, पर इसका कारण यही था कि मेरे पास और कोई साधन न था। मैं विरह की आग में जल रहा था, मेरा हृदय फुंका जाता था, ऐसी अवस्था में यदि मैं धर्म-अधर्म का विचार न करके किसी व्यक्ति के भरे हुए पानी के डोल की ओर लपका तो तुम्हें उसको क्षम्य समझना चाहिए।

राजेश्वरी : वह डोल किसी भक्त ने अपने इष्टदेव को चढ़ाने के लिए एक हाथ से भरा था। जिसे आप प्रेम कहते हैं वह काम-लिप्सा थी। आपने अपनी लालसा को शांत करने के लिए एक बसे-बसाये घर को उजाड़ दिया, उसके प्राणियों को तितर-बितर कर दिया। यह सब अनर्थ आपने अधिकार के बल पर किया। पर याद रखिए, ईश्वर भी आपको इस पाप का दंड भोगने से नहीं बचा सकता। आपने मुझसे उस बात की आशा रखी जो कुलटाएं ही कर सकती हैं। मेरी यह इज्जत आपने की। आंख की पुतली निकल जाए तो उसमें सुरमा क्या शोभा देगा ? पौधे की जड़ काटकर फिर आप दूध और शहद से सींचें तो क्या फायदा ? स्त्री का सत हर कर आप उसे विलास और भोग में डुबा ही दें तो क्या होता है ! मैं अगर यह घोर अपमान चुपचाप सह लेती तो मेरी आत्मा का पतन हो जाता। मैं यहां उस अपमान का बदला लेने आई हूं। आप चौंकें नहीं, मैं मन में यही संकल्प करके आई थी।

ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : देवी, तुझे धन्य है। तेरे पैरों पर शीश नवाती हूं।

सबल : ज्ञानी ! तुम यहां ?

ज्ञानी : क्षमा कीजिए। मैं किसी और विचार से नहीं आई। आपको घर पर न देखकर मेरा चित्त व्याकुल हो गया।

सबल : यहां का पता कैसे मालूम हुआ ?

ज्ञानी : कोचवान की खुशामद करने से।

सबल : राजेश्वरी, तुमने मेरी आंखें खोल दीं ! मैं भ्रम में पड़ा हुआ था। तुम्हारा संकल्प पूरा होगा। तुम सती हो। तुम्हारी प्रतिज्ञा पूरी होगी। मैं पापी हूं, मुझे क्षमा करना....

नीचे की ओर जाता है।

ज्ञानी : मैं भी चलती हूं। राजेश्वरी, तुम्हारे दर्शन पाकर कृतार्थ हो गई। **(धीरे से)** बहिन, किसी तरह इनकी जान बचाओ। तुम्हीं इनकी रक्षा कर सकती हो।

राजेश्वरी के पैरों पर गिर पड़ती है।

राजेश्वरी : रानी जी, ईश्वर ने चाहा तो सब कुशल होगा।

ज्ञानी : तुम्हारे आशीर्वाद का भरोसा है।

प्रस्थान।

पाचवा दृश्य

स्थान—गंगा के करार पर एक बड़ा पुरानन मकान।

समय—बारह बजे रात, हलधर और उसके साथी डाकू बैठे हुए हैं।

हलधर : अब समय आ गया, मुझे चलना चाहिए।

एक डाकू रंगी : हम लोग भी तैयार हो जाएं न ? शिकारी आदमी है, कहीं पिस्तौल चला बैठे तो ?

हलधर : देखी जाएगी। मैं जाऊंगा अकेले।

कंचन का प्रवेश।

हलधर : अरे, आप अभी तक सोए नहीं ?

कंचन : तुम लोग भैया को मारने पर तैयार हो, मुझे नींद कैसे आए ?

हलधर : मुझे आपकी बातें सुनकर अचरज होता है। आप ऐसे पापी आदमी की रक्षा करना चाहते हैं जो अपने भाई की जान लेने पर तुल जाए।

कंचन : तुम नहीं जानते, वह मेरे भाई नहीं, मेरे पिता के तुल्य हैं। उन्होंने भी सदैव मुझे अपना पुत्र समझा है। उन्होंने मेरे प्रति जो कुछ किया, उचित किया। उसके सिवा मेरे विश्वासघात का और कोई दंड न था। उन्होंने वही किया जो मैं आप करने जाता था। अपराध सब मेरा है। तुमने मुझ पर दया की है। इतनी दया और करो। इसके बदले में तुम जो कुछ कहो करने को तैयार हूं। मैं अपनी सारी कमाई जो बीस हजार से कम नहीं है, तुम्हें भेंट कर दूंगा। मैंने यह रुपये एक धर्मशाला और देवालय बनवाने के लिए संचित कर रखे थे। पर भैया के प्राणों का मूल्य धर्मशाला और देवालय से कहीं अधिक है।

हलधर : ठाकुर साहब; ऐसा कभी न होगा। मैंने धन के लोभ से यह भेष नहीं लिया है। मैं अपने अपमान का बदला लेना चाहता हूं। मेरा मर्याद इतना सस्ता नहीं है।

कंचन : मेरे यहां जितनी दस्तावेजें हैं वह सब तुम्हें दे दूंगा।

हलधर : आप व्यर्थ ही मुझे लोभ दिखा रहे हैं। मेरी इज्जत बिगड़ गई। मेरे कुल में दाग लग गया। बाप-दादों के मुंह में कालिख पुत गई। इज्जत का बदला जान है, धन नहीं। जब तक सबलसिंह की लाश को अपनी आंखों से तड़पते न देखूंगा, मेरे हृदय की ज्वाला शांत न होगी।

कंचन : तो फिर सबेरे तक मुझे भी जीता न पाओगे।

प्रस्थान।

हलधर : भाई पर जान देते हैं।

रंगी : तुम भी तो हक-नाहक की जिद्द कर रहे हो। बीस हजार नकद मिल रहा है। दस्तावेज भी इतने की ही होगी। इतना धन तो ऐसा ही भाग जागे तो हाथ लग सकता है। आधा तुम ले लो। आधा हम लोगों को दे दो। बीस हजार में तो ऐसी-ऐसी बीस औरतें मिल जाएंगी।

हलधर : कैसी बेगैरतों की-सी बात करते हो ! स्त्री चाहे सुंदर हो, चाहे कुरूप, कुल-मरजाद की देवी है। मरजाद रुपयों पर नहीं बिकती।

रंगी : ऐसा ही है तो उसी को क्यों नहीं मार डालते। न रहे बांस न बजे बंसुरी।

हलधर : उसे क्यों मारूं ? स्त्री पर हाथ उठाने में क्या जवांमरदी है ?

रंगी : तो क्या उसे फिर रखोगे ?

हलधर : मुझे क्या तुमने ऐसा बेगैरत समझ लिया है। घर में रखने की बात ही क्या, अब उसका मुंह भी नहीं देख सकता। वह कुलटा है, हरजाई है। मैंने पता लगा लिया है। वह अपने-आप घर से निकल खड़ी हुई है। मैंने कब का उसे दिल से निकाल दिया। अब उसकी याद भी नहीं करता। उसकी याद आते ही शरीर में ज्वाला उठने लगती है। अगर उसे मारकर कलेजा ठंडा हो सकता तो इतने दिनों चिंता और क्रोध की आग में जलता ही क्यों ?

रंगी : मैं तो रुपयों का इतना बड़ा ढेर कभी हाथ से न जाने देता। मान-मर्यादा सब ढकोसला है। दुनिया में ऐसी बातें आए दिन होती रहती हैं। लोग औरत को घर से निकाल देते हैं। बस।

हलधर : क्या कायरों की-सी बातें करते हो। रामचन्द्र ने सीताजी के लिए लंका का राज विध्वंस कर दिया। द्रोपदी की मानहानि करने के लिए पांडवों ने कौरवों को निर्बंस कर दिया। जिस आदमी के दिल में इतना अपमान होने पर भी क्रोध न आए, मरने-मारने पर तैयार न हो जाए, उसका खून न खौलने लगे, वह मर्द नहीं हिजड़ा है। हमारी इतनी दुर्गत क्यों हो रही है ? जिसे देखो वही हमें चार गालियां सुनाता है, ठोकर मारता है। क्या अहलकार, क्या जमींदार सभी कुत्तों से नीच समझते हैं। इसका कारण यही है कि हम बेहया हो गए हैं। अपनी चमड़ी को प्यार करने लगे हैं। हममें भी गैरत होती, अपने मान-अपमान का विचार होता तो मजाल थी कि कोई हमें तिरछी आंखों से देख सकता। दूसरे देशों में सुनते हैं गालियों पर लोग मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं। वहां कोई किसी को गाली नहीं दे सकता। किसी देवता का अपमान कर दो तो जान न बचे। यहां तक कि कोई किसी को ला-सखुन नहीं कह सकता, नहीं तो, खून की नदी बहने लगे। यहां क्या है, लात खाते हैं, जूते खाते हैं, घिनौनी गालियां सुनते हैं, धर्म का नाश अपनी आंखों से देखते हैं, पर कानों पर जूं नहीं रेंगती, खून जरा भी गर्म नहीं होता। चमड़ी के पीछे सब तरह की दुर्गत सहते हैं। जान इतनी प्यारी हो गई है। मैं ऐसे जीने से मौत को हजार दर्जे अच्छा समझता हूं। बस यही समझ लो कि जो आदमी प्रान को जितना ही प्यारा समझता है वह उतना ही नीच है। जो औरत हमारे घर में रहती थी, हमसे हंसती थी, हमसे बोलती थी, हमारे खाट पर सोती थी वह अब भी....**(क्रोध से उन्मत्त होकर)** तुम लोग मेरे लौटने तक यहीं रहो। कंचनसिंह को देखते रहना।

चला जाता है।

छठा दृश्य

स्थान—सबलसिंह का कमरा।

समय—एक बजे रात।

सबल : **(ज्ञानी से)** अब जाकर सो रहो। रात कम है।

ज्ञानी : आप लेटें, मैं चली जाऊंगी। अभी नींद नहीं आती।

सबल : तुम अपने दिल में मुझे बहुत नीच समझ रही होगी ?

ज्ञानी : मैं आपको अपना इष्टदेव समझती हूं।

सबल : क्या इतना पतित हो जाने पर भी ?

ज्ञानी : मैली वस्तुओं के मिलने से गंगा का माहात्म्य कम नहीं होता।

सबल : मैं इस योग्य भी नहीं हूं कि तुम्हें स्पर्श कर सकूं। पर मेरे हृदय में इस समय तुमसे गले मिलने की प्रबल उत्कंठा है। याद ही नहीं आता कि कभी मेरा मन इतना अधीर हुआ हो। जी चाहता है तुम्हें प्रिये कहूं, आलिंगन करूं पर हिम्मत नहीं पड़ती। अपनी ही आंखों में इतना गिर गया हूं। **(ज्ञानी रोती हुई जाने लगती है, सबल रास्ते में खड़ा हो जाता है।)** प्रिये, इतनी निर्दयता न करो। मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हुआ जाता है। **(रास्ते से हटकर)** जाओ ! मुझे तुम्हें रोकने का कोई अधिकार नहीं है। मैं पतित हूं, पापी हूं, दुष्टाचारी हूं। न जाने क्यों पिछले दिनों की याद आ गई, जब मेरे और तुम्हारे बीच में यह विच्छेद न था, जब हम-तुम प्रेम-सरोवर के तट पर विहार करते थे, उसकी तरंगों के साथ झूमते थे। वह कैसे आनंद के दिन थे ? अब वह दिन फिर न आएंगे। जाओ, न रोकूंगा, पर मुझे बिल्कुल नजरों से न गिरा दिया हो तो प्रेम की चितवन से मेरी तरफ देख लो। मेरा संतप्त हृदय उस प्रेम की फुहार से तृप्त हो जाएगा। इतना भी नहीं कर सकतीं ? न सही। मैं तो तुमसे कुछ कहने के योग्य ही नहीं हूं। तुम्हारे सम्मुख खड़े होते, तुम्हें यह काला मुंह दिखाते, मुझे लज्जा आनी चाहिए थी। पर मेरी आत्मा का पतन हो गया है। हां, तुम्हें मेरी एक बात अवश्य माननी पड़ेगी, उसे मैं जबरदस्ती मनवाऊंगा, जब तक न मानोगी जाने न दूंगा। मुझे एक बार अपने चरणों पर सिर झुकाने दो।

ज्ञानी रोती हुई अंदर के द्वार की तरफ बढ़ती है।

सबल : क्या मैं अब इस योग्य भी नहीं रहा ? हां, मैं अब घृणित प्राणी हूं, जिसकी आत्मा का अपहरण हो चुका है। पूजी जाने वाली प्रतिमा टूटकर पत्थर का टुकड़ा हो जाती है, उसे किसी

खंडहर में फेंक दिया जाता है। मैं वही टूटी हुई प्रतिमा हूं और इसी योग्य हूं कि ठुकरा दिया जाऊं। तुमसे कुछ कहने का, तुम्हारी दया-याचना करने के योग्य मेरा मुंह ही नहीं रहा। जाओ। हम तुम बहुत दिनों तक साथ रहे। अगर मेरे किसी व्यवहार से, किसी शब्द से, किसी आक्षेप से तुम्हें दुःख हुआ हो तो क्षमा करना। मुझ-सा अभागा संसार में न होगा जो तुम जैसी देवी पाकर उसकी कद्र न कर सका।

ज्ञानी हाथ जोड़कर सजल नेत्रों से ताकती है, कंठ से शब्द नहीं निकलता। सबल तुरंत मेज पर से पिस्तौल उठाकर बाहर निकल जाता है।

ज्ञानी : **(मन में)** हताश होकर चले गए। मैं तस्कीन दे सकती, उन्हें प्रेम के बंधन से रोक सकती तो शायद न जाते। मैं किस मुंह से कहूं कि यह अभागिनी पतिता तुम्हारे चरणों का स्पर्श करने योग्य नहीं है। वह समझते हैं, मैं उनका तिरस्कार कर रही हूं, उनसे घृणा कर रही हूं। उनके इरादे में अगर कुछ कमजोरी थी तो वह मैंने पूरी कर दी। इस यज्ञ की पूर्णाहुति मुझे करनी पड़ी। हा विधाता, तेरी लीला अपरम्पार है। जिस पुरुष पर इस समय मुझे अपना प्राण अर्पण करना चाहिए था आज मैं उसकी घातिका हो रही हूं। हा अर्थलोलुपता ! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया। मैंने संतान-लालसा के पीछे कुल को कलंक लगा दिया, कुल को धूल में मिला दिया। पूर्वजन्म में न जाने मैंने कौन-सा पाप किया था। चेतनदास, तुमने मेरी सोने की लका दहन कर दी। मैंने तुम्हें देवता समझकर तुम्हारी आराधना की थी। तुम राक्षस निकले। जिस रूखार को मैंने बाग समझा था वह बीहड़ निकला। मैंने कमल का फूल तोड़ने के लिए पैर बढ़ाए थे, दलदल में फंस गई, जहां से अब निकलना दुस्तर है। पतिदेव ने चलते समय मेज पर से कुछ उठाया था। न जाने कौन-सी चीज थी। काली घटा छाई हुई है। हाथ को हाथ नहीं सूझता। वहां कहां गए ? भगवन्, कहां जाऊं ? किससे पूछूं, क्या करूं ? कैसे उनकी प्राण-रक्षा करूं ? हो न हो राजेश्वरी के पास गए हों ! वहीं इस लीला का अंत होगा। उसके प्रेम में विह्वल हो रहे हैं। अभी उनकी आशा वह लगी

हुई है। मृग-तृष्णा है। वह नीच जाति की स्त्री है, पर सती है। अकेली इस अंधेरी रात में वहां कैसे पहुंचूंगी। कुछ भी हो, यहां नहीं रहा जाता। बग्घी पर गई थी। रास्ता कुछ-कुछ याद है। ईश्वर के भरोसे पर चलती हूं। या तो वहां पहुंच ही जाऊंगी या इसी टोह में प्राण दे दूंगी। एक बार मुझे उनके दर्शन हो जाते तो जीवन सफल हो जाता। मैं उनके चरणों पर प्राण त्याग देती। यही अंतिम लालसा है। दयानिधि, मेरी अभिलाषा पूरी करो। हा, जननी धरती, तुम क्यों मुझे अपनी गोद में नहीं ले लेतीं ! दीपक का ज्वाला-शिखर क्यों मेरे शरीर को भस्म नहीं कर डालता ! यह भयंकर अंधकार क्यों किसी जल-जंतु की भांति मुझे अपने उदर में शरण नहीं देता !

प्रस्थान।

सातवां दृश्य

स्थान—सबलसिंह का मकान।

समय—ढाई बजे रात। सबलसिंह अपने बाग में हौज के किनारे बैठे हुए हैं।

सबल : **(मन में)** इस जिंदगी पर धिक्कार है। चारों तरफ अंधेरा है, कहीं प्रकाश की झलक तक नहीं। सारे मनसूबे, सारे इरादे खाक में मिल गए। अपने जीवन को आदर्श बनाना चाहता था, अपने कुल को मर्यादा के शिखर पर पहुंचाना चाहता था, देश और राष्ट्र की सेवा करना चाहता था, समग्र देश में अपनी कीर्ति फैलाना चाहता था। देश को उन्नति के परम स्थान पर देखना चाहता था। उन बड़े-बड़े इरादों का कैसा करुणाजनक अंत हो रहा है। फले-फूले वृक्ष की जड़ में कितनी बेदर्दी से आरा चलाया जा रहा है। कामलोलुप होकर मैंने अपनी जिंदगी तबाह कर दी। मेरी दशा उस मांझी की-सी है जो नाव को बोझने के बाद शराब पी ले और नशे में नाव को भंवर में डाल दे। भाई की हत्या करके भी अभीष्ट न पूरा हुआ। जिसके लिए इस पाप-कुंड में कूदा, वह भी अब मुझसे घृणा करती है। कितनी घोर निर्दयता है। हाय ! मैं क्या जानता था कि राजेश्वरी

मन में मेरे अनिष्ट का दृढ़ संकल्प करके यहां आई है। मैं क्या जानता था कि वह मेरे साथ त्रियाचरित्र खेल रही है। एक अमूल्य अनुभव प्राप्त हुआ। स्त्री अपने सतीत्व की रक्षा करने के लिए, अपने अपमान का बदला लेने के लिए, कितना भयंकर रूप धारण कर सकती है। गऊ कितनी सीधी होती है, पर किसी को अपने बछड़े के पास आते देखकर कितनी सतर्क हो जाती है। सती स्त्रियां भी अपने व्रत पर आघात होते देखकर जान पर खेल जाती हैं। कैसी प्रेम में सनी हुई बातें करती थी। जान पड़ता था, प्रेम के हाथों बिक गई हो। ऐसी सुंदरी, ऐसी सरला, मृदु-प्रकृति, ऐसी विनयशीला, ऐसी कोमल-हृदया रमणियां भी छल-कौशल में इतनी निपुण हो सकती हैं ! उसकी निठुरता मैं सह सकता था। किंतु ज्ञानी की घृणा नहीं सही जाती, उसकी उपेक्षा-सूचक दृष्टि के सम्मुख खड़ा नहीं हो सकता। जिस स्त्री का अब तक आराध्य देव था, जिसकी मुझ पर अखंड भक्ति थी, जिसका सर्वस्व मुझ पर अर्पण था, वही स्त्री अब मुझे इतना नीच और पतित समझ रही है। ऐसे जीने पर धिक्कार है ! एक बार प्यारे अचल को भी देख लूं। बेटा, तुम्हारे प्रति मेरे दिल में बड़े-बड़े अरमान थे। मैं तुम्हारा चरित्र आर्दश बनाना चाहता था, पर कोई अरमान न निकला। अब न जाने तुम्हारे ऊपर क्या पड़ेगी। ईश्वर तुम्हारी रक्षा करें ! लोग कहते हैं प्राण बड़ी प्रिय वस्तु है। उसे देते हुए बड़ा कष्ट होता है। मुझे तो जरा भी शंका, जरा भी भय नहीं है। मुझे तो प्राण देना खेल-सा मालूम हो रहा है। वास्तव में जीवन ही खेल है, विधाता का क्रीड़ा-क्षेत्र ! **(पिस्तौल निकालकर)** हां, दोनों गोलियां हैं, काम हो जाएगा। मेरे मरने की सूचना जब राजेश्वरी को मिलेगी तो एक क्षण के लिए उसे शोक तो होगा ही, चाहे फिर हर्ष हो। आंखों में आंसू भर आएंगे। अभी मुझे पापी, अत्याचारी, विषयी समझ रही है, सब ऐब-ही-ऐब दिखाई दे रहे हैं। मरने पर कुछ तो गुणों की याद आएगी। मेरी कोई बात तो उसके कलेजे में चुटकियां लेगी। इतना तो जरूर ही कहेगी कि उसे मुझसे सच्चा प्रेम था। शहर में मेरी सार्वजनिक सेवाओं की प्रशंसा होगी। लेकिन कहीं यह रहस्य खुल गया तो मेरी सारी कीर्ति पर पानी फिर जाएगा। यह

ऐब सारे गुणों को छिपा लेगा, जैसे सफेद चादर पर काला धब्बा, या सर्वांग सुंदर चित्र पर एक छींटा। बेचारी ज्ञानी तो यह समाचार पाते ही मूर्च्छित होकर गिर पड़ेगी, फिर शायद कभी न सचेत हो। यह उसके लिए वज्राघात होगा। चाहे वह मुझसे कितनी ही घृणा करे, मुझे कितना ही दुरात्मा समझे, पर उसे मुझसे प्रेम है, अटल प्रेम है, वह मेरा अकल्याण नहीं देख सकती। जब से मैंने उसे अपना वृत्तांत सुनाया है, वह कितनी चिंतित, कितनी सशंक हो गई है। प्रेम के सिवा और कोई शक्ति न थी जो उसे राजेश्वरी के घर खींच ले जाती।

हलधर चारदीवारी कूदकर बाग में आता है और धीरे-धीरे इधर-उधर ताकता हुआ सबल के कमरे की तरफ जाता है।

हलधर : **(मन में)** यहां किसी की आवाज आ रही है। **(भाला संभालकर)** यहां कौन बैठा हुआ है। अरे ! यह तो सबलसिंह ही है। साफ उसी की आवाज है। इस वक्त यहां बैठा क्या कर रहा है ? अच्छा है यहीं काम तमाम कर दूंगा। कमरे में न जाना पड़ेगा। इसी हौज में फेंक दूंगा। सुनूं क्या कह रहा है।

सबल : बस अब बहुत सोच चुका। मन इस तरह बहाना ढूंढ रहा है। ईश्वर, तुम दया के सागर हो, क्षमा की मूर्ति हो। मुझे क्षमा करना। अपनी दीनवत्सलता से मुझे वंचित न करना। कहां निशाना लगाऊं ? सिर में लगाने से तुरत अचेत हो जाऊंगा। कुछ न मालूम होगा, प्राण कैसे निकलते हैं। सुनता हूं प्राण निकलने में कष्ट नहीं होता। बस छाती पर निशाना मारूं।

पिस्तौल का मुंह छाती की तरफ फेरता है। सहसा हलधर भाला फेंककर झपटता है और सबलसिंह के हाथ से पिस्तौल छीन लेता है।

सबल : **(अचंभे में)** कौन ?

हलधर : मैं हूं हलधर।

सबल : तुम्हारा काम तो मैं ही किए देता था। तुम हत्या से बच जाते। उठा लो पिस्तौल।

हलधर : आपके ऊपर मुझे दया आती है।

सबल : मैं पापी हूं, कपटी हूं। मेरे ही हाथों तुम्हारा घर सत्यानाश हुआ। मैंने तुम्हारा अपमान किया, तुम्हारी इज्जत लूटी, अपने सगे भाई का वध कराया। मैं दया के योग्य नहीं हूं।

हलधर : कंचनसिंह को मैंने नहीं मारा।

सबल : **(उछलकर)** सच कहते हो ?

हलधर : वह आप ही गंगा में कूदने जा रहे थे। मुझे उन पर भी दया आ गई। मैंने समझा था, आप मेरा सर्वनाश करके भोग-विलास में मस्त हैं। तब मैं आपके खून का प्यासा हो गया था। पर अब देखता हूं तो आप अपने किए पर लज्जित हैं, पछता रहे हैं, इतने दु:खी हैं कि प्राण तक देने को तैयार हैं। ऐसा आदमी दया के योग्य है। उस पर क्या हाथ उठाऊं !

सबल : **(हलधर के पैरों पर गिरकर)** तुमने कंचन की जान बचा ली, इसके लिए मैं मरते दम तक तुम्हारा यश मानूंगा। मैं न जानता था कि तुम्हारा हृदय इतना कोमल और उदार है। तुम पुण्यात्मा हो, देवता हो। मुझे ले चलो। कंचन को देख लूं। हलधर, मेरे पास अगर कुबेर का धन होता तो तुम्हारी भेंट कर देता। तुमने मेरे कुल को सर्वनाश से बचा लिया।

हलधर : मैं सबेरे उन्हें साथ लाऊंगा।

सबल : नहीं, मैं इसी वक्त तुम्हारे साथ चलूंगा। अब सब्र नहीं है।

हलधर : चलिए।

दोनों फाटक खोलकर चले जाते हैं।

पांचवां अंक

पहला दृश्य

स्थान— डाकुओं का मकान।

समय—ढाई बजे रात। हलधर डाकुओं के मकान के सामने बैठा हुआ है।

हलधर : **(मन में)** दोनों भाई कैसे टूटकर गले मिले हैं। मैं न जानता था कि बड़े आदमियों में भाई-भाई में भी इतना प्रेम होता है। दोनों के आंसू ही न थमते थे। बड़ी कुशल हुई कि मैं मौके से पहुंच गया, नहीं तो वंश का अंत हो जाता। मुझे तो दोनों भाइयों से ऐसा प्रेम हो गया है मानो मेरे अपने भाई हैं। मगर आज तो मैंने उन्हें बचा लिया। कौन कह सकता है वह फिर एक-दूसरे के दुश्मन न हो जायेंगे। रोग की जड़ तो मन में जमी हुई है। उसको काटे बिना रोगी की जान कैसे बचेगी। राजेश्वरी के रहते हुए इनके मन की मैल न मिटेगी। दो-चार दिन में इनमें फिर अनबन हो जाएगी। इस अभागिनी ने मेरे कुल में दाग लगायी। अब इस कुल का सत्यानाश कर रही है। उसे मौत भी नहीं आ जाती। जब तक जियेगी मुझे कलंकित करती रहेगी। बिरादरी में कहीं मुंह दिखाने लायक नहीं रहा। सब लोग मुझे बिरादरी से निकाल देंगे। हुक्का-पानी बंद कर देंगे। हेठी और बदनामी होगी वह घाते में । यह तो यहां महल में रानी बनी बैठी अपने कुकर्म का आनंद उठाया करे और मैं इसके कारण बदनामी उठाऊं। अब तक उसको मारने का जी न चाहता था। औरतों पर हाथ उठाना नीचता का काम समझता था। पर अब वह नीचता करनी पड़ेगी। उसके किए बिना सब खेल बिगड़ जाएगा।

चेतनदास का प्रवेश।

चेतनदास : यहां कौन बैठा है ?

हलधर : मैं हूं हलधर।

चेतनदास : खूब मिले। बताओ सबलसिंह का क्या हाल हुआ ? वध कर डाला ?

हलधर : नहीं, उन्हें मरने से बचा लिया।

चेतनदास : **(खुश होकर)** बहुत अच्छा किया। मुझे यह सुनकर बड़ी खुशी हुई। सबलसिंह कहां हैं ?

हलधर : मेरे घर।

चेतनदास : ज्ञानी जानती है कि वह जिंदा है ?

हलधर : नहीं, उसे अब तक इसकी खबर नहीं मिली।

चेतनदास : तो उसे जल्द खबर दो नहीं तो उससे भेंट न होगी। वह घर में नहीं है। न जाने कहां गयी ? उसे यह खबर मिल जाएगी तो कदाचित् उसकी जान बच जाए। मैं उसकी टोह में जा रहा हूं। इस अंधेरी रात में कहां खोजूं ? **(प्रस्थान।)**

हलधर : **(मन में)** यह डायन न जाने कितनी जानें लेकर संतुष्ट होगी। ज्ञानीदेवी है। उसने सबलसिंह को कमरे में न देखा होगा। समझी होगी वह गंगा में डूब मरे। कौन जाने इसी इरादे से वह भी घर से निकल खड़ी हुई हो। चलकर अपने आदमियों को उसका पता लगाने के लिए दौड़ा दूं। उसकी जान मुफ्त में चली जाएगी। क्या दिल्लगी है कि रानी तो मारी-मारी फिरे और कुलटा महल में सुख की नींद सोवे।

अचल दूसरी ओर से हवाई बंदूक लिये आता है।

हलधर : कौन ?

अचल : अचलसिंह—कुंअर सबलसिंह का पुत्र।

हलधर : अच्छा, तुम खूब आ गये। पर अंधेरी रात में तुम्हें डर नहीं लगा?

अचल : डर किस बात का ? मुझे डर नहीं लगता। बाबूजी ने मुझे बताया है कि डरना पाप है !

हलधर : जाते कहां हो ?

अचल : कहीं नहीं।

हलधर : तो इतनी रात गए घर से क्यों निकले ?

अचल : तुम कौन हो ?

हलधर : मेरा नाम हलधर है।

अचल : अच्छा, तुम्हीं ने माताजी की जान बचायी थी ?

हलधर : जान तो भगवान् ने बचायी, मैंने तो केवल डाकुओं को भगा दिया था। तुम इतनी रात गए अकेले कहां जा रहे हो ?

अचल : किसी से कहोगे तो नहीं ?

हलधर : नहीं, किसी से न कहूंगा।

अचल : तुम बहादुर आदमी हो। मुझे तुम्हारे ऊपर विश्वास है। तुमसे कहने में शर्म नहीं है। यहां कोई वेश्या है। उसने चाचा जी को और बाबूजी को विष देकर मार डाला है। अम्मांजी ने शोक से प्राण त्याग दिए। वह स्त्री थीं, क्या कर सकती थीं । अब मैं उसी वेश्या के घर जा रहा हूं। इसी वक्त बंदूक से उसका सिर उड़ा दूंगा। (**बंदूक तानकर दिखाता है।**)

हलधर : तुमसे किसने कहा ?

अचल : मिसराइन ने। चाचाजी कल से घर पर नहीं हैं। बाबूजी भी दस बजे रात से नहीं हैं। न घर में अम्मां का पता है। मिसराइन सब हाल जानती हैं।

हलधर : तुमने वेश्या का घर देखा है ?

अचल : नहीं, घर तो नहीं देखा है।

हलधर : तो उसे मारोगे कैसे ?

अचल : किसी से पूछ लूंगा ।

हलधर : तुम्हारे चाचाजी और बाबूजी तो मेरे घर में हैं।

अचल : झूठ कहते हो। दिखा दोगे ?

हलधर : कुछ इनाम दो तो दिखा दूं।

अचल : चलो, क्या दिखाओगे ! वह लोग अब स्वर्ग में होंगे। हां, राजेश्वरी का घर दिखा दो तो जो कहो वह दूं।

हलधर : अच्छा मेरे साथ आओ, मगर बंदूक ले लूंगा।

दोनों घर में जाते हैं, सबल और कंचन चकित होकर अचल को देखते हैं, अचल दौड़कर बाप की गरदन से चिमट जाता है।

हलधर : (**मन में**) अब यहां नहीं रह सकता। फिर तीनों रोने लगे ?

बाहर चलूं। कैसा होनहार बालक है। **(बाहर आकर मन में)** यह बच्चा तक उसे वेश्या कहता है। वेश्या है ही। सारी दुनिया यही कहती होगी। अब तो और भी गुल खिलेगा। अगर दोनों भाइयों ने उसे त्याग दिया तो पेट के लिए उसे अपनी लाज बेचनी पड़ेगी। ऐसी हयादार नहीं है कि जहर खाकर मर जाए। जिसे मैं देवी समझता था वह ऐसी कुल-कलंकिनी निकली ! तूने मेरे साथ ऐसा छल किया ! अब दुनिया को कौन मुंह दिखाऊं। सब की एक ही दवा है । न बांस रहे न बांसुरी बजे। तेरे जीने से सबकी हानि है। किसी का लाभ नहीं। तेरे मरने से सबका लाभ है, किसी की हानि नहीं। उससे कुछ पूछना व्यर्थ है । रोएगी, गिड़गिड़ाएगी, पैरों पड़ेगी। जिसने लाज बेच दी वह अपनी जान बचाने के लिए सभी तरह की चालें चल सकती है। कहेगी, मुझे सबलसिंह जबरदस्ती निकाल लाए, मैं तो आती न थी। न जाने क्या-क्या बहाने करेगी ! उससे सवाल-जवाब करने की जरूरत नहीं। चलते ही काम तमाम कर दूंगा....

हथियार संभालकर चल खड़ा होता है।

दूसरा दृश्य

स्थान—शहर की एक गली।

समय—तीन बजे रात। इंस्पेक्टर और थानेदार की चेतनदास से मुठभेड़।

इंस्पेक्टर : महाराज, खूब मिले। मैं तो आपके ही दौलतखाने की तरफ जा रहा था। लाइए दूध के धुले हुए पूरे एक हजार, कमी की गुंजाइश नहीं, बेशी की हद नहीं।

थानेदार आपने जमानत न कर ली होती तो उधर भी हजार-पांच सौ पर हाथ साफ करता।

चेतनदास इस वक्त मैं दूसरी फिक्र में हूं। फिर कभी आना।

इंस्पेक्टर जनाब, हम आपके गुलाम नहीं हैं जो बार-बार सलाम करने को हाजिर हों। आपने आज का वादा किया था। वादा पूरा

कीजिए। कौल व काल की जरूरत नहीं।

चेतनदास : कह दिया, मैं इस समय दूसरी चिंता में हूं। फिर इस संबंध में बातें होंगी।

इंस्पेक्टर : आपका क्या एतबार, इसी वक्त की गाड़ी से हरिद्वार की राह लें। पुलिस के मुआमले नकद होते हैं।

एक सिपाही : लाओ नगद-नारायन निकालो। पुलिस से ई फेरफार न चल पइहैं। तुमरे ऐसे साधुन का इहां रोज चराइत हैं।

इंस्पेक्टर : आप हैं किस गुमान में ! यह चालें अपने भोले-भाले चेले-चापड़ों के लिए रहने दीजिए, जिन्हें आप नजात देते हैं। हमारी नजात के लिए आपके रुपये काफी हैं। उससे हम फरिश्तों को भी राह पर लगा लेंगे। दारोगाजी, वह शेर आपको याद है ?

दारोगा : जी हां, ऐ ज़र तू खुदा नई, बलेकिन बखुदा हाशा रब्बी व फाज़िल हो जाती।

इंस्पेक्टर : मतलब यह है कि रुपया खुदा नहीं है लेकिन खुदा के दो सबसे बड़े औसाफ उसमें मौजूद हैं। परवरिश करना और इंसान की जरूरतों को रफा करना।

चेतनदास : कल किसी वक्त आइएगा।

इंस्पेक्टर : **(रास्ते में खड़े होकर)** कल आने वाले पर लानत है। एक भले आदमी की इज्जत खाक में मिलवाकर अब आप यों झांसा देना चाहते हैं। कहीं साहब बहादुर ताड़ जाते तो नौकरी के लाले पड़ जाते।

चेतनदास : रास्ते से हटो। **(आगे बढ़ना चाहता है।)**

इंस्पेक्टर : **(हाथ पकड़कर)** इधर आइए, इस सीनाजोरी से काम न चलेगा !

चेतनदास हाथ झटककर छुड़ा लेता है और इंस्पेक्टर को जोरे से धक्का मार कर गिरा देता है।

दारोगा : गिरफ्तार कर लो। रहजन है।

चेतनदास : अगर कोई मेरे निकट आया तो गर्दन उड़ा दूंगा।

दारोगा पिस्तौल उठाता है, लेकिन पिस्तौल नहीं चलती, चेतनदास उसके हाथ से पिस्तौल छीनकर उसकी छाती

पर निशाना लगाता है।

दारोगा : स्वामीजी, खुदा के वास्ते रहम कीजिए। ताजीस्त आपका गुलाम रहूंगा।

चेतनदास : मुझे तुझ-जैसे दुष्टों की गुलामी की जरूरत नहीं। **(दोनों सिपाही भाग जाते हैं। थानेदार चेतनदास के पैरों पर गिर पड़ता है।)** बोल, कितने रुपये लेगा ?

थानेदार : महाराज, मेरी जां बख्श दीजिए। जिंदा रहूंगा तो आपके एकबाल से बहुत रुपये मिलेंगे !

चेतनदास : अभी गरीबों को सताने की इच्छा बनी हुई है। तुझे मार क्यों न डालूं। कम-से-कम एक अत्याचारी का भार तो पृथ्वी पर कम हो जाये।

थानेदार : नहीं महाराज, खुदा के लिए रहम कीजिए। बाल-बच्चे दाने बगैर मर जाएंगे। अब कभी किसी को न सताऊंगा। अगर एक कौड़ी भी रिश्वत लूं तो मेरे अस्ल में फर्क समझिएगा। कभी हराम के माल के करीब न जाऊंगा।

चेतनदास : अच्छा, तुम इस इंस्पेक्टर के सिर पर पचास जूते गिनकर लगाओ तो छोड़ दूं।

थानेदार : महाराज, वह मेरे अफसर हैं। मैं उनकी शान में ऐसी बे-अदबी क्यों कर सकता हूं। रिपोर्ट कर दें तो बर्खास्त हो जाऊं।

चेतनदास : तो फिर आंखें बंद कर लो और खुदा को याद करो, घोड़ा गिरता है।

थानेदार : हुजूर जरा ठहर जायें, हुक्म की तामील करता हूं। कितने जूते लगाऊं ?

चेतनदास : पचास से कम न ज्यादा।

थानेदार : इतने जूते पड़ेंगे तो चांद खुल जाएगी। नाल लगी हुई है।

चेतनदास : कोई परवाह नहीं। उतार लो जूते।

थानेदार जूते पैर से निकालकर इंस्पेक्टर के सिर पर लगाता है, इंस्पेक्टर चौंककर उठ बैठता है, दूसरा जूता फिर पड़ता है।

इंस्पेक्टर : शैतान कहीं का, मलऊन।

थानेदार : मैं क्या करूं ? बैठ जाइए, पचास लगा लूं। इतनी इनायत कीजिए ! जान तो बचे।

इंस्पेक्टर उठकर थानेदार से हाथापाई करने लगता है, दोनों एक दूसरे को गालियां देते हैं, दांत काटते हैं।

चेतनदास : जो जीतेगा उसे इनाम दूंगा। मेरी कुटी पर आना । खूब लड़ो, देखें कौन बाजी ले जाता है। **(प्रस्थान।)**

इंस्पेक्टर : तुम्हारी इतनी मजाल ! बर्खास्त न करा दिया तो कहना।

थानेदार : क्या करता, सीने पर पिस्तौल का निशाना लगाए तो खड़ा था।

इंस्पेक्टर : यहां कोई सिपाही तो नहीं है ?

थानेदार : वह दोनों तो पहले ही भाग गए।

इंस्पेक्टर : अच्छा, खैरियत चाहो तो चुपके से बैठ जाओ और मुझे गिन कर सौ जूते लगाने दो, वरना कहे देता हूं कि सुबह को तुम थाने में न रहोगे। पगड़ी उतार लो।

थानेदार : मैंने तो आपकी पगड़ी नहीं उतारी थी।

इंस्पेक्टर : उस बदमाश साधु को यह सूझी ही नहीं।

थानेदार : आप तो दूसरे ही हाथ पर उठ खड़े हुए थे !

इंस्पेक्टर : खबरदार, जो यह कलमा फिर मुंह से निकला। दो के दस तो तुम्हें जरूर लगाऊंगा। बाकी फी पापोश एक रुपये के हिसाब से माफ कर सकता हूं।

दोनों सिपाही आ जाते हैं, दारोगा सिर पर साफा रख लेता है, इंस्पेक्टर क्रोधपूर्ण नेत्रों से उसे देखता है और सब गश्त पर निकल जाते हैं।

तीसरा दृश्य

स्थान—राजेश्वरी का कमरा।

समय—तीन बजे रात। फानूस जल रही है, राजेश्वरी पानदान खोले फर्श पर बैठी है।

राजेश्वरी : **(मन में)** मेरे मन की सारी अभिलाषाएं पूरी हो गयीं। जो प्रण करके घर से निकली थी वह पूरा हो गया। जीवन सफल हो गया। अब जीवन में कौन-सा सुख रखा है। विधाता की लीला विचित्र है। संसार के और प्राणियों का जीवन धर्म से सफल

होता है। अहिंसा ही सबकी मोक्षदाता है। मेरा जीवन अधर्म से सफल हुआ, हिंसा से ही मेरा मोक्ष हो रहा है। अब कौन मुंह लेकर मधुबन जाऊं, मैं कितनी ही पतिव्रता बनूं, किसे विश्वास आएगा ? मैंने यहां कैसे अपना धर्म निबाहा, इसे कौन मानेगा ? हाय ! किसकी होकर रहूंगी ? हलधर का क्या ठिकाना ? न जानें कितनी जानें ली होंगी, कितनों का घर लूटा होगा, कितनों के खून से हाथ रंगे होंगे, क्या-क्या कुकर्म किये होंगे। वह अगर मुझे पतिता और कुलटा समझते हैं तो मैं भी उन्हें नीच और अधम समझती हूं। वह मेरी सूरत न देखना चाहते हों तो मैं उनकी परछाईं भी अपने ऊपर नहीं पड़ने देना चाहती। अब उनसे मेरा कोई संबंध नहीं। मैं अनाथा हूं, अभागिनी हूं, संसार में कोई मेरा नहीं है।

कोई किवाड़ खटखटाता है, लालटेन लेकर नीचे जाती है, और किवाड़ खोलती है, ज्ञानी का प्रवेश।

ज्ञानी : बहिन, क्षमा करना, तुम्हें असमय कष्ट दिया। मेरे स्वामीजी यहां हैं या नहीं ? मुझे एक बार उनके दर्शन कर लेने दो।

राजेश्वरी : रानीजी, सत्य कहती हूं वह यहां नहीं आये।

ज्ञानी : यहां नहीं आये !

राजेश्वरी : न ! जब से गए हैं फिर नहीं आये।

ज्ञानी : घर पर भी नहीं हैं। अब किधर जाऊं ? भगवन्, उनकी रक्षा करना। बहिन, अब मुझे उनके दर्शन न होंगे। उन्होंने कोई भयंकर काम कर डाला। शंका से मेरा हृदय कांप रहा है। तुमसे उन्हें प्रेम था। शायद वह एक बार फिर आएं। उनसे कह देना, ज्ञानी तुम्हारे पदरज को शीश पर चढ़ाने के लिए आयी थी। निराश होकर चली गयी। उनसे कह देना वह अभागिनी, भ्रष्टा, तुम्हारे प्रेम के योग्य नहीं रही।

हीरे की कनी खा लेती है।

राजेश्वरी : रानीजी, आप देवी हैं; वह पतित हो गए हों, पर आपका चरित्र उज्ज्वल रत्न है। आप क्यों क्षोभ करती हैं !

ज्ञानी : बहिन, कभी यह घमंड था, पर अब नहीं है।

उसका मुख पीला होने लगता है और पैर लड़खड़ाते हैं।

राजेश्वरी : रानीजी, कैसा जी है ?

ज्ञानी : कलेजे में आग-सी लगी हुई है। थोड़ा-सा ठंडा पानी दो। मगर नहीं, रहने दो। जबान सूखी जाती है। कंठ में कांटे पड़ गए हैं। आत्मगौरव से बढ़कर कोई चीज नहीं। उसे खोकर जिये तो क्या जिये !

राजेश्वरी : आपने कुछ खा तो नहीं लिया?

ज्ञानी : तुम आज ही यहां से चली जाओ। अपने पति के चरणों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा करा लो। वह वीरात्मा हैं। एक बार मुझे डाकुओं से बचाया था। तुम्हारे ऊपर दया करेंगे। ईश्वर इस समय उनसे मेरी भेंट करवा देते तो मैं उनसे शपथ खाकर कहती, इस देवी के साथ तुमने बड़ा अन्याय किया है। वह ऐसी पवित्र है जैसे फूल की पंखड़ियों पर पड़ी हुई ओस की बूंदें या प्रभात काल की निर्मल किरणें। मैं सिद्ध करती कि इसकी आत्मा पवित्र है।

पीड़ा से विकल होकर बैठ जाती है।

राजेश्वरी : **(मन में)** इन्होंने अवश्य कुछ खा लिया । आंखें पथरायी जाती हैं, पसीना निकल रहा है। निराशा और लज्जा ने अंत में इनकी जान ही लेकर छोड़ी, मैं इनकी प्राणघातिका हूं। मेरे ही कारण इस देवी की जान जा रही है। इसे मर्यादा-पालन कहते हैं। एक मैं हूं कि कष्ट और अपमान भोगने के लिए बैठी हूं। नहीं देवी, मुझे भी साथ लेती चलो। तुम्हारे साथ मेरी भी लाज रह जाएगी। तुम्हें ईश्वर ने क्या नहीं दिया। दूध-पूत, मान-महातम सभी कुछ तो है। पर केवल पति के पतित हो जाने के कारण तुम अपने प्राण त्याग रही हो। तो मैं, जिसका आंसू पोंछने वाला भी कोई नहीं, कौन-सा सुख भोगने के लिए बैठी रहूं।

ज्ञानी : **(सचेत होकर)** पानी....पानी....।

राजेश्वरी : **(कटोरे में पानी देती हुई)** पी लीजिए।

ज्ञानी : **(राजेश्वरी को ध्यान से देखकर)** नहीं, रहने दो। पतिदेव के दर्शन कैसे पाऊं। मेरे मरने का हाल सुनकर उन्हें बहुत दुःख

होगा। राजेश्वरी, उन्हें मुझसे बहुत प्रेम है। इधर वह मुझसे इतने लज्जित थे कि मेरी तरफ सीधी आंख से ताक भी न सकते थे। **(फिर अचेत हो जाती है।)**

राजेश्वरी : **(मन में)** भगवन् अब यह शोक देखा नहीं जाता। कोई और स्त्री होती तो मेरे खून की प्यासी हो जाती। इस देवी के हृदय में कितनी दया है। मुझे इतनी नीची समझती हैं कि मेरे हाथ का पानी भी नहीं पीतीं, पर व्यवहार में कितनी भलमनसाहत है। मैं ऐसी दया की मूरत की घातिका हूं। मेरा क्या अंत होगा !

ज्ञानी : हाय, पुत्र-लालसा ! तूने मेरा सर्वनाश कर दिया। राजेश्वरी, साधुओं का भेस देखकर धोखे में न आना। **(आंखें बंद कर लेती है।)**

राजेश्वरी : कभी किसी साधु ने इसे जट कर रास्ता लिया होगा। वही सुध आ रही है। तुम तो चली, मेरे लिए कौन रास्ता है ? वह डाकू ही हो गए हैं। अब तक सबलसिंह के भय से इधर न आते थे। अब वह मुझे कब जीता छोड़ेंगे ? न जाने क्या-क्या दुर्गति करें? मैं जीना भी तो नहीं चाहती। मन, अब संसार का मायामोह छोड़ो। संसार में तुम्हारे लिए अब जगह नहीं है। हा ! यही करना था तो पहले ही क्यों न किया ? तीन प्राणियों की जान लेकर तब यह सूझी। कदाचित् तब मुझे मौत से इतना डर न लगता। अब तो जमराज का ध्यान आते ही रोयें खड़े हो जाते हैं। पर यहां की दुर्दशा से वहां की दुर्दशा तो अच्छी। कोई हंसने वाला तो न होगा। **(रस्सी का फंदा बना कर छत से लटका देती है।)** बस, एक झटके में काम तमाम हो जाएगा। इतनी-सी जान के लिए आदमी कैसे-कैसे जतन करता है। **(गले में फंदा डालती है।)** दिल कांपता है। जरा-सा फंदा खींच लूं और बस। दम घुटने लगेगा। तड़प-तड़पकर जान निकलेगी। **(भय से कांप उठती है)** मुझे इतना डर क्यों लगता है ? मैं अपने को इतनी कायर न समझती थी। सास के एक ताने पर, पति की एक कड़ी बात पर स्त्रियां प्राण दे देती हैं। लड़कियां अपने विवाह की चिंता से माता-पिता को बचाने के लिए प्राण दे देती हैं। पहले स्त्रियां पति के साथ सती हो जाती थीं। डर क्या है ? जो भगवान् यहां हैं वही भगवान् वहां हैं। मैंने कोई पाप नहीं

किया है। एक आदमी मेरा धर्म बिगाड़ना चाहता था। मैं और किसी तरह उससे न बच सकती थी। मैंने कौशल से अपने धर्म की रक्षा की। यह पाप नहीं किया। मैं भोग-विलास के लोभ से यहां नहीं आई ! संसार चाहे मेरी कितनी ही निन्दा करे, ईश्वर सब जानते हैं। उनसे डरने का कोई काम नहीं।

फंदा खींच लेती है। तलवार लिए हुए हलधर का प्रवेश।

हलधर : **(आश्चर्य से)** अरे ! यहां तो इसने फांसी लगा रखी है।

तलवार से तुरत रस्सी काट देता है और राजेश्वरी को संभालकर फर्श पर लिट देता है।

राजेश्वरी : **(सचेत होकर)** वही तलवार मेरी गर्दन पर क्यों नहीं चला देते ?

हलधर : जो आप ही मर रही है उसे क्या मारूं ?

राजेश्वरी : अभी इतनी दया है ?

हलधर : वह तुम्हारी लाज की तरह बाजार में बेचने की चीज नहीं है।

ज्ञानी : **(होश में आकर)** कौन कहता है कि इसने अपनी लाज बेच दी? यह आज भी उतनी ही पवित्र है जितनी अपने घर थी। इसने अपनी लाज बेचने के लिए इस मार्ग पर पग नहीं रखा, बल्कि अपनी लाज की रक्षा करने के लिए अपनी। लाज की रक्षा के लिए इसने मेरे कुल का सर्वनाश कर दिया। इसीलिए इसने यह कपटभेष धारण किया। एक सम्पन्न पुरुष से बचने का इसके सिवा और कौन-सा उपाय था। तुम उस पर लांछन लगाकर बड़ा अन्याय कर रहे हो। उसने तुम्हारे कुल को कलंकित नहीं किया, बल्कि उसे उज्ज्वल कर दिया। ऐसी बिरली ही कोई स्त्री ऐसी अवस्था में अपने व्रत पर अटल रह सकती थी। यह चाहती तो आजीवन सुख भोग करती, पर इसने धर्म को स्वाद-लिप्सा की भेंट नहीं चढ़ाया....आह ! अब नहीं बोला जाता। बहुत-सी बातें मन में थीं....सिर में चक्कर आ रहा है...स्वामी के दर्शन न कर सकी....**(बेहोश हो जाती है।)**

हलधर : ज्ञानी हैं क्या ?

राजेश्वरी : सबल का दर्शन पाने की आशा से यहां आयी थीं; किंतु बेचारी की लालसा मन में रही जाती है। न जाने उनकी क्या गत हुई ?

हलधर : मैं अभी उन्हें लाता हूं।

राजेश्वरी : क्या अभी वह....

हलधर : हां, उन्होंने प्राण देना चाहा था, पिस्तौल का निशाना छाती पर लगा लिया था, पर मैं पहुंच गया और उनके हाथ से पिस्तौल छीन ली। दोनों भाई वहीं हैं। तुम इनके मुंह पर पानी के छींटे देती रहना। गुलाबजल तो रखा ही होगा, उसे इनके मुंह में टपकाना, मैं अभी आता हूं।

जल्दी से चला जाता है।

राजेश्वरी : (मन में) मैं समझती थी इनका स्वरूप बदल गया होगा। दया नाम को भी न रही होगी। नित्य डाका मारते होंगे, आचरन भ्रष्ट हो गया होगा। पर इनकी आंखों में तो दया की जोत झलकती हुई दिखाई देती है। न जाने कैसे दोनों भाइयों की जान बचा ली। कोई दूसरा होता तो उनकी घात में लगा रहता और अवसर पाते ही प्राण ले लेता। पर इन्होंने उन्हें मौत के मुंह से निकाल दिया। क्या ईश्वर की लीला है कि एक हाथ से विष पिलाते हैं और दूसरे हाथ से अमृत। मुझी को कौन बचाता। सोचता कि मर रही है, मरने दो। शायद यह मुझे मारने के ही लिए यहां तलवार लेकर आए होंगे। मुझे इस दशा में देखकर दया आ गई। पर इनकी दया पर मेरा जी झुंझला रहा है। मेरी यह बदनामी यह जगहंसाई बिल्कुल निष्फल हो गई। इसमें जरूर ईश्वर का हाथ है। सबलसिंह के परोपकार ने उन्हें बचाया। कंचनसिंह की भक्ति ने उनकी रक्षा की। पर इस देवी की जान व्यर्थ जा रही है। इसका दोष मेरी गरदन पर है। इस एक देवी पर कई सबलसिंह भेंट किए जा सकते हैं! **(ज्ञानी को ध्यान से देखकर)** आंखें पथरा गईं, सांस उखड़ गई, पति के दर्शन न कर सकेंगी, मन की कामना मन में ही रह गयी। **(गुलाब के छींटें देकर)** छनभर और....

ज्ञानी : **(आंखें खोलकर)** क्या वह आ गए ? कहां हैं, जरा मुझे उनके

पैर दिखा दो।

राजेश्वरी : **(सजल नयन होकर)** आते ही होंगे, अब देर नहीं है। गुलाबजल पिलाऊं?

ज्ञानी : **(निराशा से)** न आएंगे, कह देना तुम्हारे चरणों की याद में.... **(मूर्च्छित हो जाती है।)**

चेतनदास का प्रवेश।

राजेश्वरी : यह समय भिक्षा मांगने का नहीं है। आप यहां कैसे चले आए ?

चेतनदास : इस समय न आता तो जीवनपर्यन्त पछताता। क्षमा-दान मांगने आया हूं।

राजेश्वरी : किससे?

चेतनदास : जो इस समय प्राण त्याग रही है।

ज्ञानी : **(आंखें खोलकर)** क्या वह आ गए? कोई अचल को मेरी गोद में क्यों नहीं रख देता?

चेतनदास : देवी, सब-के-सब आ रहे हैं। तुम जरा यह जड़ी मुंह में रख लो। भगवान् चाहेंगे तो सब कल्याण होगा।

ज्ञानी : कल्याण अब मेरे मरने में ही है।

चेतनदास : मेरे अपराध क्षमा करो।

ज्ञानी के पैरों पर गिर पड़ता है।

ज्ञानी : यह भेष त्याग दो। भगवान् तुम पर दया करें।

उसके मुंह से खून निकलता है और प्राण निकल जाते हैं, अन्तिम शब्द उसके मुंह से यही निकलता है, 'अचल तू अमर हो।'

राजेश्वरी : अन्त हो गया। **(रोती है)** मन की अभिलाषा मन में ले गई। पति और पुत्र से भेंट न हो सकी।

चेतनदास : देवी थी।

सबलसिंह, कंचनसिंह, अचल, हलधर सब आते हैं।

राजेश्वरी : स्वामीजी, कुछ अपनी सिद्धि दिखाइए। एक पल-भर के लिए सचेत हो जाती तो उनकी आत्मा शांत हो जाती।

चेतनदास : अब ब्रह्मा भी आएं तो कुछ नहीं कर सकते।

अचल रोता हुआ मां के शव से लिपट जाता है, सबल को ज्ञानी की तरफ देखने की भी हिम्मत नहीं पड़ती।

राजेश्वरी : आप लोग एक पल-भर पहले आ जाते तो इनकी मनो-कामना पूरी हो जाती। आपकी ही रट लगाए हुए थीं। अन्तिम शब्द जो उनके मुंह से निकला वह अचलसिंह का नाम था।

सबल : यह मेरी दुष्टता का दंड है। हलधर, अगर तुमने मेरी प्राण रक्षा न की होती तो मुझे यह शोक न सहना पड़ता। ईश्वर बड़े न्यायी हैं। मेरे कर्मों का इससे उचित दंड हो ही नहीं सकता था। मैं तुम्हारे घर का सर्वनाश करना चाहता था। विधाता ने मेरे घर का सर्वनाश कर दिया। आज मेरी आंखें खुल गयीं। मुझे विदित हो रहा है कि ऐश्वर्य और सम्पत्ति जिस पर मानव-समाज मिटा हुआ है, जिसकी आराधना और भक्ति में हम अपनी आत्माओं को भी भेंट कर देते हैं, वास्तव में एक प्रचंड ज्वाला है, जो मनुष्य के हृदय को जलाकर भस्म कर देती है। यह समस्त पृथ्वी किन प्राणियों के पाप-भार से दबी हुई है? वह कौन से लोग हैं जो दुर्व्यसनों के पीछे नाना प्रकार के पापाचार कर रहे हैं? वेश्याओं की अट्टालिकाएं किन लोगों के दम से रौनक पर हैं? किनके घरों की महिलाएं रो-रोकर अपना जीवनक्षेप कर रही हैं? किनकी बंदूकों से जंगल के जानवरों की जान संकट में पड़ी रहती है? किन लोगों की महत्त्वाकांक्षाओं को पूरा करने के लिए आए दिन समर भूमि रक्तमयी होती रहती है। किनके सुख भोग करने के लिए गरीबों को आए दिन बेगारें भरनी पड़ती हैं? यह वही लोग हैं जिनके पास ऐश्वर्य है, सम्पत्ति है, प्रभुत्व है, बल है। उन्हीं के भार से पृथ्वी दबी हुई है, उन्हीं के नखों से संसार पीड़ित हो रहा है। सम्पत्ति ही पाप का मूल है, इसी से कुवासनाएं जागृत होती हैं, इसी से दुर्व्यसनों की सृष्टि होती है। गरीब आदमी अगर पाप करता है तो क्षुधा की तृप्ति के लिए। धनी पुरुष पाप करता है अपनी कुवृत्तियों, और कुवासनाओं की पूर्ति के लिए। मैं इसी व्याधि का मारा हुआ हूं। विधाता ने मुझे

निर्धन बनाया होता, मैं भी अपनी जीविका के लिए पसीना बहाता होता, अपने बाल-बच्चों के उदर-पालन के लिए मजूरी करता होता तो मुझे यह दिन न देखना पड़ता, यों रक्त के आंसू न रोने पड़ते। धनीजन पुण्य भी करते हैं, दान भी करते हैं, दु:खी आदमियों पर दया भी करते हैं। देश में बड़ी-बड़ी धर्मशालाएं, सैकड़ों पाठशालाएं, चिकित्सालय, तालाब, कुएं उनकी कीर्ति के स्तम्भ रूप खड़े हैं, उनके दान से सदाव्रत चलते हैं, अनाथों और विधवाओं का पालन होता है, साधुओं और अतिथियों का सत्कार होता है, कितने ही विशाल मन्दिर सजे हुए हैं, विद्या की उन्नति हो रही है, लेकिन उनकी अपकीर्तियों के सामने उनकी सुकीर्तियां अंधेरी रात में जुगनू की चमक के समान हैं, जो अंधकार को और भी गहन बना देती हैं। पाप की कालिमा दान और दया से नहीं धुलती। नहीं, मेरा तो यह अनुभव है कि धनी जन कभी पवित्र भावों से प्रेरित हो ही नहीं सकते। उनकी दानशीलता, उनकी भक्ति, उनकी उदारता, उनकी दीन-वत्सलता वास्तव में उनके स्वार्थ को सिद्ध करने का साधन-मात्र है। इसी टट्टी की आड़ में वह शिकार खेलते हैं। हाय ! तुम लोग मन में सोचते होगे, यह रोने और विलाप करने का समय है, धन और सम्पदा की निंदा करने का नहीं। मगर मैं क्या करूं? आंसुओं की अपेक्षा इन जले हुए शब्दों से, इन फफोलों के फोड़ने से, मेरे चित्त को अधिक शांति मिल रही है। मेरे शोक हृदय-दाह, और आत्मग्लानि का प्रवाह केवल लोचनों द्वारा नहीं हो सकता, उसके लिए ज्यादा चौड़े, ज्यादा स्थूल मार्ग की जरूरत है। हाय ! इस देवी में अनेक गुण थे। मुझे याद नहीं आता कि इसने कभी एक अप्रिय शब्द भी मुझसे कहा हो, वह मेरे प्रेम में मग्न थी। आमोद और विलास से उसे लेश-मात्र भी प्रेम न था। वह संन्यासियों का जीवन व्यतीत करती थी। मेरे प्रति उनके हृदय में कितनी श्रद्धा थी, कितनी शुभकामना। जब तक जी मेरे लिए जी और जब मुझे सत्पथ से हटते देखा तो यह शोक उसके लिए असह्य हो गया। हाय ! मैं जानता कि वह ऐसा घातक संकल्प कर लेगी तो अपने आत्मपतन का वृत्तांत उससे न कहता ! पर उसकी सहृदयता और सहानुभूति

के रसास्वादन से मैं अपने को रोक न सका। उसकी यह क्षमा, आत्मकृपा कभी न भूलेगी जो इस वृत्तांत को सुनकर उसके उदास मुख पर झलकने लगी। रोष या क्रोध का लेश-मात्र भी चिह्न न था। वह दयामूर्ति सदा के लिए मेरे हृदयगृह को उजाड़ कर अदृश्य हो गई। नहीं, मैंने उसे पटककर चूर-चूर कर दिया। **(रोता है।)** हा ! उसकी याद अब मेरे दिल से कभी न निकलेगी।

चौथा दृश्य

स्थान—गुलाबी का मकान।

समय—दस बजे रात।

गुलाबी : अब किसके बल पर कूदूं। पास जो जमा-पूंजी थी वह निकल गई। तीन-चार दिन के अन्दर क्या-से-क्या हो गया। बना-बनाया घर उजड़ गया। जो राजा थे वह रंक हो गए। जिस देवी की बदौलत इतनी उम्र सुख से कटी वह संसार से उठ गयीं। अब वहां पेट की रोटियों के सिवा और क्या रखा है। न उधर ही कुछ रहा, न इधर ही कुछ रहा। दोनों लोक से गई। उस कलमुंहे साधु का कहीं पता नहीं। न जाने कहां लोप हो गया। रंगा हुआ सियार था। मैं भी उसके छल में आ गई। अब किसके बल पर कूदूं। बेटा-बहू यों ही बात न पूछते थे, अब तो एक बूंद पानी को तरसूंगी। अब किस दावे से कहूंगी, मेरे नहाने के लिए पानी रख दे, मेरी साड़ी छांट दे, मेरा बदन दाब दे। किस दावे पर धौंस जमाऊंगी। सब रुपये के मीत हैं। दोनों जानते थे, अम्मां के पास धन है। इसलिए डरते थे, मानते थे, जिस कल चाहती थी उठाती थी, जिस कल चाहती थी बैठाती थी। उस धूर्त्त साधु को पाऊं तो सैकड़ों गालियां सुनाऊं, मुंह नोच लूं। अब तो मेरी दशा उस बिल्ली की-सी है जिसके पंजे कट गए हों, उस बिच्छु की-सी जिसका डंक टूट गया हो, उस रानी की-सी जिसे राजा ने आखों से गिरा दिया हो।

चम्पा : अम्मां, चलो, रसोई तैयार है।

गुलाबी : चलो बेटी, चलती हूं। आज मुझे ठाकुर साहब के घर से आने में

देर हो गई। तुम्हें बैठने का कष्ट हुआ।

चम्पा : **(मन में)** अम्मां आज इतने प्यार से क्यों बातें कर रही हैं, सीधी बात मुंह से निकलती ही न थी। **(प्रकट)** कुछ कष्ट नहीं हुआ, अम्मां, कौन अभी तो नौ बजे हैं।

गुलाबी : भृगुनाथ ने भोजन कर लिया है न?

चम्पा : **(मन में)** कल तक को अम्मां पहले ही खा लेती थीं, बेटे को पूछती तक न थीं, आज क्यों इतनी खातिर कर रही हैं? **(प्रकट)** तुम चलकर खा लो, हम लोगों को तो सारी रात पड़ी है।

गुलाबी रसोई में जाकर अपने हाथों से पानी निकालती है।

चम्पा : तुम बैठो अम्मां, मैं पानी रख देती हूं।

गुलाबी : नहीं बेटी, मटका भरा हुआ है, तुम्हारी आस्तीन भीग जाएगी।

चम्पा : **(पंखा झलने लगती है।)** नमक तो ज्यादा नहीं हो गया?

गुलाबी : पंखा रख दो बेटी, आज गरमी नहीं है। दाल में जरा नमक ज्यादा हो गया है। लाओ, थोड़ा-सा पानी मिलाकर खा लूं।

चम्पा : मैं बहुत अंदाज से छोड़ती हूं, मगर कभी-कभी कम-बेस हो ही जाता है।

गुलाबी : बेटी, नमक का अंदाज बुढ़ापे तक ठीक नहीं होता; कभी-कभी धोखा हो ही जाता है। **(भृगु आता है।)** आओ बेटा, खाना खा लो, देर हो रही है। क्या हुआ, कंचनसिंह के यहां जवाब मिल गया?

भृगु : **(मन में)** आज अम्मां की बातों में कुछ प्यार भरा हुआ जान पड़ता है। **(प्रकट)** नहीं अम्मां, सच पूछो तो आज ही मेरी नौकरी लगी है। ठाकुरद्वारा बनवाने के लिए मसाला जुटाना मेरा काम तय हुआ है।

गुलाबी : बेटा, यह धरम का काम है, हाथ-पांव संभालकर रहना।

भृगु : दस्तूरी तो छोड़ता नहीं, और कहीं हाथ मारने की गुंजाइश नहीं। ठाकुर जी सीधे से दे दें तो उंगली क्यों टेढ़ी करनी पड़े।

भोजन करने बैठता है।

चम्पा : **(भृगु से)** कुछ और लेना हो तो ले लो, मैं जाती हूं अम्मां का बिछावन बिछाने।

गुलाबी : रहने दो बेटी, मैं आप बिछा लूंगी।

भृगु : **(चम्पा से)** यह आज दाल में नमक क्यों झोंक दिया? नित्य यही काम करती हो, फिर भी तमीज नहीं आती?

चम्पा : ज्यादा हो गया, हाथ ही तो है।

भृगु : शर्म नहीं आती, ऊपर से हेकड़ी करती हो।

गुलाबी : जाने दो बेटा, अंदाज न मिला होगा। मैं तो रसोई बनाते-बनाते बुड्ढी हो गई, लेकिन कभी-कभी नमक घट-बढ़ जाता ही है।

भृगु : **(मन में)** अम्मां आज क्यों इतनी मुलायम हो गई हैं। शायद ठाकुरों का पतन देख के इनकी आंखें खुल गई हैं। यह अगर इसी तरह प्यार से बातें करें तो हम लोग तो इनके चरण धो-धोकर पियें। **(प्रकट)** मैं तो किसी तरह खा लूंगा, पर तुम तो न खा सकोगी।

गुलाबी : खा लिया बेटा, एक दिन जरा नमक ज्यादा ही सही। देखो बेटी, खा-पीकर आराम से सो रहना, मेरा बदन दाबने मत आना। रात अधिक हो गई है।

चम्पा : **(मन में)** आज तो ऐसा जी चाहता है कि इनके चरण धोकर पीऊं। इसी तरह रोज रहें तो फिर यह घर स्वर्ग हो जाये। **(प्रकट)** जरा बदन दबा देने से कौन बड़ी रात निकल जाएगी।

गुलाबी : **(मन में)** आज कितने प्रेम से बहू मेरी सेवा कर रही है, नहीं तो जरा-जरा-सी बात पर नाक-भौं सिकोड़ा करती थी **(प्रकट)** जी चाहे तो थोड़ी देर के लिए आ जाना, तुम्हें प्रेमसागर सुनाऊंगी।

चेतनदास का प्रवेश।

गुलाबी : **(आश्चर्य से)** महाराज, आप कहां चले गए थे? मैं दिन में कई बार आपकी कुटी पर गई।

चेतनदास : आज मैं एक कार्यवश बाहर चला गया था। अब एक महान् तीर्थ पर जाने का विचार है। अपना धन ले लो गिन लेना, कुछ-न-कुछ अधिक ही होगा। मैं वह मन्त्र भूल गया जिससे धन दूना हो जाता था।

गुलाबी : **(चेतनदास के पैरों पर गिरकर)** महाराज, बैठ जाइए, आपने

यहां तक आने का कष्ट किया है, कुछ भोजन कर लीजिए। कृतार्थ हो जाऊंगी।

चेतनदास : नहीं माताजी, मुझे विलम्ब होगा। मुझे आज्ञा दो और मेरी यह बात ध्यान से सुनो। आगे किसी साधु-महात्मा को अपना धन दूना करने के लिए मत देना नहीं तो धोखा खाओगी। **(चम्पा और भृगु आकर चेतनदास के चरण छूते हैं।)** माता, तेरे पुत्र और वधू बहुत सुशील दीखते हैं। परमात्मा इनकी रक्षा करें। तू भूल जा कि मेरे पास धन है। धन के बल से नहीं, प्रेम के बल से अपने घर में शासन कर।

चेतनदास का प्रस्थान।

पांचवां दृश्य

स्थान—स्वामी चेतनदास की कुटी।

समय—रात, चेतनदास गंगा तट पर बैठे हैं।

चेतनदास : **(आप-ही-आप)** मैं हत्यारा हूं, पापी हूं, धूर्त हूं। मैंने सरल प्राणियों को ठगने के लिए यह भेष बनाया है। मैंने इसीलिए योग की क्रियाएं सीखीं, इसीलिए हिप्नाटिज्म सीखी, मेरा लोग कितना सम्मान, कितनी प्रतिष्ठा करते हैं। पुरुष मुझसे धन मांगते हैं, स्त्रियां मुझसे सन्तान मांगती हैं। मैं ईश्वर नहीं कि सबकी मुरादें पूरी कर सकूं तिस पर भी लोग मेरा पिंड नहीं छोड़ते। मैंने कितने घर तबाह किए, कितनी सती स्त्रियों को जाल में फंसाया, कितने निश्छल पुरुषों को चकमा दिया। यह सब स्वांग केवल सुखभोग के लिए, मुझ पर धिक्कार है ! पहले मेरा जीवन कितना पवित्र था। मेरे आदर्श कितने ऊंचे थे। मैं संसार से विरक्त हो गया। पर स्वार्थी संसार ने मुझे खींच लिया। मेरी इतनी मान-प्रतिष्ठा थी, मैं पाखंडी हो गया, नर से पिशाच हो गया। हां, मैं पिशाच हो गया। हां ! मेरे कुकर्म मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं। उनके स्वरूप कितने भयंकर हैं। वह मुझे निगल जाएंगे। भगवन्, मुझे बचाओ ! वह सब अपने मुह खोले मेरी ओर लपके चले आते हैं। **(आंखें बन्द कर लेते हैं)** ज्ञानी ! ईश्वर के लिए मुझे छोड़ दो। कितना विकराल

स्वरूप है। तेरे मुख से ज्वाला निकल रही है। तेरी आंखों से आग की लपटें आ रही हैं। मैं जल जाऊंगा। भस्म हो जाऊंगा। तू कैसी सुन्दर थी। कैसी कोमलांगी थी ! तेरा यह रौद्र रूप नहीं, तू वह सती नहीं, वह कमल की-सी आंखें, वह पुष्प के-से कपोल कहां हैं। नहीं, यह मेरे अधर्मों का, मेरे दुष्कर्मों का मूर्तिमान स्वरूप है, मेरे दुष्कर्मों ने यह पैशाचिक रूप धारण किया है। यह मेरे ही पापों की ज्वाला है। क्या मैं अपने ही पापों की आग में जलूंगा? अपने ही बनाए हुए नरक में पड़ूंगा? **(आंखें बंद करके हाथों से हटाने की चेष्टा करके)** नहीं, मैं ईश्वर की शपथ खाता हूं, अब कभी ऐसे कर्म न करूंगा। मुझे प्राण-दान दे। आह, कोई विनय नहीं सुनता। ईश्वर, मेरी क्या गति होगी ! मैं इस पिशाचिनी के मुख का ग्रास बना जा रहा हूं। यह दया-शून्य, हृदय-शून्य राक्षसी मुझे निगल जाएगी। भगवन् ! कहां जाऊं, कहां भागूं? अरे रे.... जला....

दौड़कर नदी में कूद पड़ता है, और एक बार फिर ऊपर आकर नीचे डूब जाता है।

छठा दृश्य

स्थान—मधुबन।

समय—सावन का महीना, पूजा-उत्सव, ब्रह्मभोज, राजेश्वरी और सलोनी गांव की अन्य स्त्रियों के साथ गहने-कपड़े पहने पूजा करने जा रही हैं।

गीत

जय जगदीश्वरी मात सरस्वती, सरनागत प्रतिपालनहारी।
चंद्र-जोत-सा बदन बिराजे, सीस मुकुट माला गलधारी।जय०।
बीना बाम अंग में सोहे, सामगीत धुन मधुर पियारी।जय०।
श्वेत बसन कमलासन सुन्दर, संग सखी अरु हंस सवारी।जय०।

सलोनी : **(देवी की पूजा करके राजेश्वरी से)** आ, तेरे गले में माला डाल दूं, तेरे माथे पर भी टीका लगा दूं। तू भी हमारी

देवी है। मैं जीती रही तो इस गांव में तेरा मन्दिर बनवाकर छोड़ूंगी।

एक वृद्धा : साक्षात् देवी है। इसके कारन हमारे भाग जाग गए, नहीं तो बेगार भरने और रो-रोकर दिन काटने के सिवा और क्या था!

सलोनी : **(राजेश्वरी से)** क्यों बेटी, तूने वह विद्या कहां पढ़ी थी। धन्न है तेरे माई-बाप को, जिनके कोख से तूने जन्म लिया। मैं तुझे नित्य कोसती थी, कुल-कलंकिनी कहती थी। क्या जानती थी कि तू वहां सबके भाग संवार रही है।

राजेश्वरी : काकी, मैंने तो कुछ नहीं किया। जो कुछ हुआ ईश्वर की दया से हुआ। ठाकुर सबलसिंह देवता हैं। मैं तो उनसे अपने अपमान का बदला लेने गई थी। मन में ठान लिया था कि उनके कुल का सर्वनाश करके छोड़ूंगी। अगर तुम्हारे भतीजे ने उनकी जान न बचा ली होती तो आज कोई कुल में पानी देने वाला भी न रहता।

सलोनी : ईश्वर की लीला अपार है।

राजेश्वरी : ज्ञानीदेवी ने अपने प्राण देकर हम सभी को उबार लिया। इस शोक ने ठाकुर साहब को विरक्त कर दिया। कोई दूसरा समझता, बला से मर गई, दूसरा ब्याह कर लेंगे, संसार में कौन लड़कियों की कमी है। लेकिन उनके मन में दया और धर्म की जोत चमक रही थी। ग्लानि उत्पन्न हुई कि मैंने इस कुमार्ग पर पैर न रखा होता तो यह देवी क्यों लज्जा और शोक से आत्म-हत्या करती। उनके मन ने कहा, तुम्हीं हत्यारे हो, तुम्हीं ने इसकी गरदन पर छुरी चलाई है। इसी ग्लानि की दशा में उनको विदित हुआ कि इन सारी विपत्तियों का मूल कारन मेरी सम्पत्ति है। यह न होती तो मेरा मन इतना चंचल न होता। ऐसी सम्पत्ति ही क्यों न त्याग दूं जिससे ऐसे-ऐसे अनर्थ होते हैं। मैं तो बखानूंगी उस दुधमुंहे अचलसिंह को जो ठाकुर साहब के मुंह से बात निकलते ही सब कोठी, महल, बाग-बगीचा त्यागने पर तैयार हो गया। उनके छोटे भाई कंचनसिंह पहले ही से भगवद्-भजन में मग्न रहते थे। उनकी अभिलाषा एक ठाकुरद्वारा और एक धर्मशाला बनवाने की थी। राजभवन खाली हो गया। उसी को धर्मशाला बनायेंगे। घर में सब मिलाकर कोई पचास-साठ हजार नकद रुपये थे। हवागाड़ी, फिटन, घोड़े, लकड़ी के

सामान, झाड़-फानूस, पलंग, मसहरी, कालीन, दरी, इन सब चीजों के बेचने से पच्चीस हजार मिल गए, दस हजार के ज्ञानदेवी के गहने थे। वह भी बेच दिए गए। इस तरह सब जोड़कर एक लाख रुपये ठाकुरद्वारा के लिए जमा हो गए। ठाकुरद्वारे के पास ही ज्ञानीदेवी के नाम का एक पक्का तालाब बनेगा। जब कोई लोभ ही न रह गया तो जमींदारी रखकर क्या करते। सब जमीन असामियों के नाम दर्ज कराके तीरथयात्रा करने चले गए।

सलोनी : और अचलसिंह कहां गया? मैं तो उसे देख लेती तो छाती से लगा लेती। लड़का नहीं है, भगवान् का अवतार है।

एक स्त्री : उसके चरन धोकर पीना चाहिए।

राजेश्वरी : गुरुकुल में पढ़ने चला गया। कोई नौकर भी साथ नहीं लिया। अब अकेले कंचनसिंह रह गए हैं। वह ठाकुरद्वारा बनवा रहे हैं।

सलोनी : अच्छा अब चलो, अभी दस मन की पूरियां बेलनी हैं।

सब स्त्रियां गाती हुई लौटती हैं, लक्ष्मी की स्तुति करती हुई जाती हैं।

फत्तू : चलो, चलो, कड़ाह की तैयारी करो। रात हुई जाती है। हलधर देखो, देर न हो, मैं जाता हूं मौलूद सरीफ का इंतजाम करने। फरस और सामियाना आ गया।

हलधर : तुम उधर थे, इधर थानेदार आए थे ठाकुर सबलसिंह की खोज में। कहते थे उनके नाम वारंट है। मैंने कह दिया उन्हें जाकर अब स्वर्गधाम में तलाश करो। मगर यह तो आने का बहाना था। असल में आए थे नजर लेने। मैंने कहा, नजर तो देते नहीं, हां हजारों रुपये खैरात हो रहे हैं, तुम्हारा जी चाहे तुम भी ले लो। मैंने तो समझा था कि यह सुनकर अपना-सा मुंह लेके चला जाएगा लेकिन इस महकमे वालों को हया नहीं होती, तुरन्त हाथ फैला दिए। आखिर मैंने पच्चीस रुपये हाथ पर रख दिए।

फत्तू : कुछ बोला तो नहीं?

हलधर : बोलता क्या, चुपके से चला गया।

फत्तू : गाने वाले आ गए?

हलधर : हां, चौपाल में बैठे हैं, बुलाता हूं।

मंगरू : **(गांव की ओर से आकर)** हलधर भैया, सबकी सलाह है कि तुम्हारा विमान सजाकर निकाला जाए, वहां से लौटने पर गाना-बजाना हो।

हरदास : तुम्हारी बदौलत सब कुछ हुआ है, तुम्हारा कुछ तो महातम होना चाहिए।

हलधर : मैंने कुछ नहीं किया। सब भगवान् की इच्छा है। जरा गाने वालों को बुला लो !

हरदास जाता है।

मंगरू : भैया, अब तो जमींदार को मालगुजारी न देनी पड़ेगी?

हलधर : अब तो हम आप ही जमींदार हैं, मालगुजारी सरकार को देंगे।

मंगरू : तुमने कागद-पत्तर देख लिये हैं? रजिस्टरी हो गई है?

हलधर : मेरे सामने ही हो गई थी।

हलधर किसी काम से चला जाता है, हरदास गाने वालों को बुला लाता है, वह सब साज मिलाने लगते

मंगरू : **(हरदास से)** इसमें हलधर का कौन एहसान है? इनका बस होता तो सब अपने ही नाम चढ़वा लेते।

हरदास : एहसान किसी का नहीं है। ईश्वर की जो इच्छा होती है वही होता है। लेकिन यह तो समझ रहे हैं कि मैं ही सबका ठाकुर हूं। जमीन पर पांव ही नहीं रखते। चंदे के रुपये ले लिये, लेकिन हमसे कोई सलाह तक नहीं लेते। फत्तू और यह दोनों जो जी चाहता है, करते हैं।

मंगरू : दोनों खासी रकम बना लेंगे। दो हजार चंदा उतरा है। खरचा वाजिबी-ही-वाजिबी हो रहा है।

गाना होता है।

जगदीश सकल जगत का तू ही अधार है
भूमि, नीर, अगिन, पवन, सूरज, चंद, शैल, गगन

तेरा किया चौदह भुवन का पसार है।जगदीश०।
सुर, नर, पशु, जीव-जंतु, जल, थल, चर है अनंत,
तेरी रचना का नहीं अंत पार है।जगदीश०।
करुनानिधि, विश्वभरण, शरणागत, तापहरण,
सत चित सुखरूप सदा निरविकार है।जगदीश०।
निरगुन सब गुन-निधान निगमागम करत गान,
सेवक नमन करत बार-बार है।जगदीश०।

कर्बला

रचनाकाल : जुलाई, 1923 – जनवरी, 1924

प्रकाशनकाल : नवम्बर, 1924

कथा-सार

हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद कुछ ऐसी परिस्थिति हुई कि ख़िलाफ़त का पद उनके चचेरे भाई और दामाद हज़रत अली को न मिलकर उमर फ़ारूक़ को मिला। हज़रत मुहम्मद ने स्वयं ही व्यवस्था की थी कि ख़लीफ़ा सर्व-सम्मति से चुना जाया करे, और सर्व-सम्मति से उमर फ़ारूक़ चुने गए। उनके बाद अबूबकर चुने गए। अबूबकर के बाद यह पद उसमान को मिला। उसमान अपने कुटुंब वालों के साथ पक्षपात करते थ, और उच्च राजकीय पद उन्हीं को दे रखे थे। उनकी इस अनीति से बिगड़कर कुछ लोगों ने उनकी हत्या कर डाली। उसमान के संबंधियों को संदेह हुआ कि यह हत्या हज़रत अली की ही प्रेरणा से हुई है। अतएव उसमान के बाद अली ख़लीफ़ा तो हुए, किंतु उसमान के एक आत्मीय संबंधी ने, जिसका नाम मुआबिया था, और जो शाम-प्रांत का सूबेदार था, अली के हाथों पर बैयत न की, अर्थात् अली को ख़लीफ़ा नहीं स्वीकार किया। अली ने मुआबिया को दंड देने के लिए सेना नियुक्त की। लड़ाइयां हुईं, किंतु पांच वर्ष की लगातार लड़ाई के बाद अन्त को मुआबिया की ही विजय हुई हज़रत अली अपने प्रतिद्वंद्वी के समान कूटनीतिज्ञ न थे। वह अभी मुआबिया को दबाने के लिए एक नई सेना संगठित करने की चिंता में ही थे कि एक हत्यारे ने उनका वध कर डाला।

मुआबिया ने घोषणा की थी कि अपने बाद में अपने पुत्र को ख़लीफ़ा नामज़द न करूंगा, वरन् हज़रत अली के ज्येष्ठ पुत्र हसन को ख़लीफ़ा बनाऊंगा। किंतु जब इसका अंत-काल निकट आया, तो उसने अपने पुत्र यज़ीद को ख़लीफ़ा बना दिया। हसन इसके पहले ही मर चुके थे। उनके छोटे भाई हज़रत हुसैन ख़िलाफ़त के उम्मीदवार थे, किंतु मुआबिया ने यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी बनाकर हुसैन को निराश कर दिया।

ख़लीफ़ा हो जाने के बाद यज़ीद को सबसे अधिक भय हुसैन का था, क्योंकि वह हज़रत अली के बेटे और हज़रत मुहम्मद के नवासे (दौहित्र) थे। उनकी माता का नाम फ़ातिमा ज़ोहरा था, जो मुस्लिम विदुषियों में सबसे श्रेष्ठ थीं, हुसैन बड़े विद्वान्, सच्चरित्र, शांत-प्रकृति, नम्र, सहिष्णु, ज्ञानी, उदार और धार्मिक

पुरुष थे। वह वीर थे, ऐसे वीर कि अरब में कोई उनकी समता का न था। किंतु वह राजनीतिक छल-प्रपंच और कुत्सित व्यवहारों से अपरिचित थे। यज़ीद इन सब बातों में निपुण था। उसने अपने पिता अमीर मुआबिया से कूटनीति की शिक्षा पाई थी। उसके गोत्र (क़बीले) के सब लोग कूटनीति के पंडित थे। धर्म को वे केवल स्वार्थ का एक साधन समझते थे। भोग-विलास और ऐश्वर्य का उनको चस्का पड़ चुका था। ऐसे भोग-लिप्सु प्राणियों के समाने सत्यव्रती हुसैन की भला कब चल सकती थी, और चली भी नहीं।

यज़ीद ने मदीने के सूबेदार को लिखा कि हुसैन से मेरे नाम पर बैयत, अर्थात् उनसे मेरे ख़लीफ़ा होने की शपथ लो। मतलब यह कि वह गुप्त रीति से उन्हें क़त्ल करने का षड्यंत्र रचने लगा। हुसैन ने बैयत लेने से इनकार किया। यज़ीद ने समझ लिया कि हुसैन बग़ावत करना चाहते हैं, अतएव वह उनसे लड़ने के लिए शक्ति-संचय करने लगा। कूफ़ा-प्रांत के लोगों को हुसैन से प्रेम था। वे उन्हीं को अपना ख़लीफ़ा बनाने के पक्ष में थे। यज़ीद को जब यह बात मालूम हुई, तो उसने कूफ़ा के नेताओं को धमकाना और नाना प्रकार के कष्ट देना आरंभ किया। कूफ़ा-निवासियों ने हुसैन के पास, जो उस समय मदीने से मक्के चले गए थे, संदेशा भेजा कि आप आकर हमें इस संकट से मुक्त कीजिए। हुसैन ने इस संदेश का कुछ उत्तर न दिया, क्योंकि वह राज्य के लिए ख़ून बहाना नहीं चाहते थे। इधर कूफ़ा में हुसैन के प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उनके नाम पर बैयत करने लगे। थोड़े ही दिनों में इन लोगों की संख्या बीस हज़ार तक पहुंच गई। इस बीच में इन्होंने हुसैन की सेवा में दो संदेश भेजे, किंतु हुसैन ने उसका भी कुछ उत्तर नहीं दिया। अंत को कूफ़ा वालों ने एक अत्यंत आग्रहपूर्ण पत्र लिखा, जिसमें हुसैन को हज़रत मुहम्मद और दीन-इस्लाम के निहोरे अपनी सहायता करने को बुलाया। उन्होंने बहुत अनुनय-विनय के बाद लिखा था—"अगर आप न आए, तो कल क़यामत के दिन अल्लाह-ताला के हुज़ूर में हम आप पर दावा करेंगे कि या इलाही, हुसैन ने हमारे ऊपर अत्याचार किया था, क्योंकि हमारे ऊपर अत्याचार होते देखकर वह ख़ामोश बैठे रहे। और, सब लोग फ़रयाद करेंगे कि ऐ खुदा, हुसैन से हमारा बदला दिला दे। उस समय आप क्या जबावं देंगे, और खुदा को क्या मुंह दिखाएंगे ?"

धर्म-प्राण हुसैन ने जब यह पत्र पढ़ा, तो उसके रोएं खड़े हो गए, और उनका हृदय जल के समान तरल हो गया। उनके गालों पर धर्मानुराग के आंसू बहने लगे। उन्होंने तत्काल उन लोगों के नाम एक आश्वासन-पत्र लिखा—"मैं शीघ्र ही तुम्हारी सहायता को आऊंगा।" और अपने चचेर भाई मुसलिम के साथ उन्होंने यह पत्र कूफ़ा वालों के पास भेज दिया।

मुसलिम मार्ग की कठिनाइयां झेलते हुए कूफ़ा पहुंचे। उस समय कूफ़ा का

सूबेदार एक शांत पुरुष था। उसने लोगों को समझाया—"नगर में कोई उपद्रव न होने पाए। मैं उस समय तक किसी से न बोलूंगा, जब तक कोई मुझे क्लेश न पहुंचाएगा।"

जिस समय यज़ीद को मुसलिम के कूफ़ा पहुंचने का समाचार मिला, तो उसने एक दूसरे सूबेदार को कूफ़ा में नियुक्त किया जिसका नाम 'ओबैद बिन-ज़ियाद' था। यह बड़ा निठुर और कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। इसने आते-ही-आते कूफ़ा में एक सभा की, जिसमें घोषणा की गई कि "जो लोग यज़ीद के नाम पर बैयत लेंगे, उन पर ख़लीफ़ा की कृपादृष्टि होगी, परंतु जो लोग हुसैन के नाम पर बैयत लेंगे, उनके साथ किसी तरह की रियायत न की जाएगी। हम उसे सूली पर चढ़ा देंगे और उनकी जागीर या वृत्ति ज़ब्त कर लेंगे।" इस घोषणा ने यथेष्ट प्रभाव डाला। कूफ़ा वालों के हृदय कांप उठे। ज़ियाद को वे भली-भांति जानते थे। उस दिन जब मुसलिम भी मस्जिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए, तो किसी ने उसका साथ न दिया। जिन लोगों ने पहले हुसैन की सेवा में आवेदन-पत्र भेजा था, उनका कहीं पता न था। सभी के साहस छूट गए थे। मुसलिम ने एक बार कुछ लोगों की सहायता से ज़ियाद को घेर लिया। किंतु ज़ियाद ने अपने एक विश्वास-पात्र सेवक के मकान की छत पर चढ़कर लोगों को यह संदेशा दिया कि "जो लोग यज़ीद की मदद करेंगे उन्हें जागीर दी जाएगी, और जो लोग बग़ावत करेंगे, उन्हें ऐसा दंड दिया जाएगा कि कोई उनके नाम को रोने वाला भी न रहेगा।" नेतागण यह धमकी सुनकर दहल उठे और मुसलिम को छोड़-छोड़कर दस-दस, बीस-बीस आदमी विदा होने लगे। यहां तक कि मुसलिम वहां अकेला रह गया। विवश हो उसने एक वृद्धा के घर में शरण लेकर अपनी जान बचाई। दूसरे दिन जब ओबैदुल्लाह को मालूम हुआ कि मुसलिम अमुक वृद्धा के घर में छिपा है, तो उसने तीन सौ सिपाहियों को उसे गिरफ्तार करने के लिए भेजा। असहाय मुसलिम ने तलवार खींच ली, और शत्रुओं पर टूट पड़े। पर अकेले कर ही क्या सकते थे। थोड़ी देर में जख़्मी होकर गिर पड़े। उस समय सूबेदार से उनकी जो बातें हुईं, उनसे विदित होता है कि वह कैसे वीर पुरुष थे। गवर्नर उनकी भय-शून्य बातों से और भी गर्म हो गया। उसने उन्हें तुरंत कत्ल करा दिया।

हुसैन, अपने पूज्य पिता की भांति, साधुओं का-सा सरल जीवन व्यतीत करने के लिए बनाए गए थे। कोई चतुर मनुष्य होता तो, उस समय दुर्गम पहाड़ियों में जा छिपता, और यमन के प्राकृतिक दुर्गों में बैठकर चारों ओर से सेना एकत्र करता। देश में उनका जितना मान था और लोगों को उन पर जितनी भक्ति थी, उसके देखते बीस-पच्चीस हज़ार सेना एकत्र कर लेना उनके लिए कठिन न था। किंतु वह अपने को पहले ही से हारा हुआ समझने लगे। यह सोचकर वह कहीं भागते न थे। उन्हें

भय था कि शत्रु मुझे अवश्य खोज लेगा। वह सेना जमा करने का भी प्रयत्न न करते थे। यहां तक कि जो लोग उनके साथ थे, उन्हें भी अपने पास से चले जाने की सलाह देते थे। इतना ही नहीं, उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं ख़लीफ़ा बनना चाहता हूं। वह सदैव यही कहते रहे कि मुझे लौट जाने दो, मैं किसी से लड़ाई नहीं करना चाहता। उनकी आत्मा इतनी उच्च थी कि वह सांसारिक राज्य-भोग के लिए संग्राम-क्षेत्र में उतरकर उसे कलुषित नहीं करना चाहते थे। उनके जीवन का उद्देश्य आत्म-शुद्धि और धार्मिक जीवन था। वह कूफ़ा में जाने को इसलिए सहमत नहीं हुए थे कि वहां ख़िलाफ़त स्थापित करें बल्कि इसलिए कि वह अपने सहधर्मियों की विपत्ति को देख न सकते थे। वह कूफ़ा जाते समय अपने सब संबंधियों से स्पष्ट शब्दों में कह गए थे कि मैं शहीद होने जा रहा हूं। यहां तक कि वह एक स्वप्न का भी उल्लेख करते थे, जिसमें उनके नाना ने उनको स्वर्ग आने का निमंत्रण दिया था, और वह उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी टेक केवल यह थी कि मैं यज़ीद के नाम पर बैयत न करूंगा। इसका कारण यही था कि यज़ीद मद्यप, व्यभिचारी और इस्लाम-धर्म के नियमों का पालन, न करने वाला था। यदि यज़ीद ने उनकी हत्या कराने की चेष्टा न की होती, तो वह शांतिपूर्वक मदीने में जीवन-भर पड़े रहते। पर समस्या यह थी कि उनके जीवित रहते हुए यज़ीद को अपना स्थान सुरक्षित नहीं मालूम हो सकता था। उसके निष्कंटक राज्य-भोग के लिए हुसैन का उसके मार्ग से सदा के लिए हट जाना परम आवश्यक था। और इस हेतु कि ख़िलाफ़त एक धर्म-प्रधान संस्था थी, अतः यज़ीद को हुसैन के रण-क्षेत्र में आने का उतना भय न था, जितना उनके शांति-सेवन का। क्योंकि शांति-सेवन से जनता पर उनका प्रभाव बढ़ता जाता था, इसीलिए यज़ीद ने यह भी कहा था कि हुसैन का केवल उसके नाम पर बैयत लेना ही पर्याप्त नहीं है, उन्हें उसके दरबार में भी आना चाहिए। यज़ीद को उनकी बैयत पर विश्वास न था। वह उन्हें किसी भांति अपने दरबार में बुलाकर उनकी जीवन-लीला को समाप्त कर देना चाहता था। इसलिए यह धारणा कि हुसैन अपनी ख़िलाफ़त क़ायम करने के लिए कूफ़ा गए, निर्मूल सिद्ध होती है। वह कूफ़ा इसीलिए गए कि अत्याचार-पीड़ित कूफ़ा-निवासियों की सहायता करें। उन्हें प्राणरक्षा के लिए कोई जगह दिखाई न देती थी। यदि वह ख़िलाफ़त के उद्देश्य से कूफ़ा जाते, तो अपने कुटुंब के केवल बहत्तर प्राणियों के साथ न जाते, जिनमें बालवृद्ध सभी थे। कूफ़ा वालों पर कितना ही विश्वास होने पर भी वह अपने साथ अधिक मनुष्यों को लाने का प्रयत्न करते। इसके सिवा उन्हें यह बात पहले से ज्ञात थी कि कूफ़ा के लोग अपने वचनों पर दृढ़ रहने वाले नहीं हैं। उन्हें कई बार इसका प्रमाण भी मिल चुका था कि थोड़े-से प्रलोभन पर भी वे अपने वचनों से विमुख हो जाते हैं। हुसैन के इष्ट-मित्रों ने उनका ध्यान कूफ़ा वालों की

इस दुर्बलता की ओर खींचा भी, पर हुसैन ने उनकी सलाह न मानी। वह शहादत का प्याला पीने के लिए, अपने को धर्म की वेदी पर बलि देने के लिए, विकल हो रहे थे। इससे हितैषियों के मना करने पर भी वह कूफ़ा चले गए। दैव-संयोग से यह तिथि वही थी। जिस दिन कूफ़ा में मुसलिम शहीद हुए थे। अट्ठारह दिन की कठिन यात्रा के बाद वह 'नाहनेवा' के समीप, कर्बला के मैदान में पहुंचे, जो फ़रात नदी के किनारे था। इस मैदान में न कोई बस्ती थी, न कोई वृक्ष। कूफ़ा के गवर्नर की आज्ञा से वह इसी निर्जन और निर्जल स्थान में डेरे डालने को विवश किए गए।

शत्रुओं की सेना हुसैन के पीछे-पीछे मक्के से ही आ रही थी। और सेनाएं भी चारों ओर फैला दी गई थीं कि हुसैन किसी गुप्त मार्ग से कूफ़ा, न पहुंच जाएं। कर्बला पहुंचने के एक दिन पहले उन्हें हुर की सेना मिली। हुसैन ने हुर को बुलाकर पूछा, "तुम मेरे पक्ष में हो, या विपक्ष में ?" हुर ने कहा, "मैं आपसे लड़ने के लिए भेजा गया हूं।" जब तीसरा पहर हुआ, तो हुसैन नमाज़ पढ़ने के लिए खड़े हुए, और उन्होंने हुर से पूछा—"तू क्या मेरे पीछे खड़ा होकर नमाज़ पढ़ेगा ?" हुर ने हुसैन के पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ना स्वीकार किया। हुसैन ने अपने साथियों के साथ हुर की सेना को भी नमाज़ पढ़ाई। हुर ने यज़ीद की बैयत ली थी। पर वह सद्विचारशील पुरुष था। हज़रत मुहम्मद के नवासे से लड़ने में उसे संकोच होता था। वह बड़े धर्म-संकट में पड़ा। वह सच्चे हृदय से चाहता था कि हुसैन मक्का लौट जाएं। प्रकट रूप से तो हुसैन को ओबैदुल्लाह के पास ले चलने की धमकी देता था, पर हृदय से उन्हें अपने हाथों कोई हानि नहीं पहुंचाना चाहता था। उसने खुले हुए शब्दों में हुसैन से कहा—"यदि मुझसे कोई ऐसा अनुचित कार्य हो गया, जिससे आपको कोई कष्ट पहुंचा, तो मेरे लोक और परलोक, दोनों बिगड़ जाएंगे। और यदि मैं आपको ओबैदुल्लाह के पास न ले जाऊं, तो कूफ़ा में नहीं घुस सकता। हां, संसार विस्तृत है, कयामत के दिन आपके नाना की कृपादृष्टि से वंचित होने की अपेक्षा यही कहीं अच्छा है कि किसी दूसरी ओर निकल जाऊं। आप मुख्य मार्ग को छोड़कर किसी अज्ञात मार्ग से कहीं और चले जाएं। मैं कूफ़ा के गवर्नर (अर्थात् 'आमिल') को लिख दूंगा कि हुसैन से मेरी भेंट नहीं हुई, वह किसी दूसरी ओर चले गए। मैं आपको क़सम दिलाता हूं कि अपने ऊपर दया कीजिए, और कूफ़ा न जाइए।" पर हुसैन ने कहा—"तुम मुझे मौत से डाराते हो ? मैं तो शहीद होने के लिए ही चला हूं।" उस समय यदि हुसैन हुर को सेना पर आक्रमण करते, तो संभव था, उसे परास्त कर देते, पर अपने इष्ट-मित्रों के अनुरोध करने पर भी उन्होंने यही कहा—"हम लड़ाई के मैदान में अग्रसर न होंगे, यह हमारी नीति के विरुद्ध है।" इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि हुसैन को अब अपनी आत्मरक्षा का कोई उपाय न सूझता था। उनमें साधुओं का-सा संतोष था, पर योद्धाओं का-सा धैर्य न था, जो कठिन-से-

कठिन समय पर भी कष्ट-निवारण का उपाय निकाल लेते हैं। उनमें महात्मा गांधी का-सा आत्मसमर्पण था, किंतु शिवाजी की दूरदर्शिता न थी।

इधर हुसैन और उनके आत्मीय तथा सहायकगण तो अपने-अपने ख़ीमे गाड़ रहे थे, और उधर ओबैदुल्लाह—कूफ़ा का गवर्नर—लड़ाई की तैयारी कर रहा था। उसने 'उमर-बिन-साद' नाम के एक योद्धा को बुलाकर हुसैन की हत्या करने के लिए नियुक्त किया, और इसके बदले में 'रै' सूबे के आमिल का उच्च पद देने को कहा। उमर-बिन-साद विवेकहीन प्राणी न था। वह भली-भांति जानता था कि हुसैन की हत्या करने से मेरे मुख पर ऐसी कालिमा लग जाएगी, किंतु 'रै' सूबे का उच्च पद उसे असमंजस में डाले हुए था। उसके संबंधियों ने समझाया—"तुम हुसैन की हत्या करने का बीड़ा न उठाओ, इसका परिणाम अच्छा न होगा।" उमर ने जाकर ओबैदुल्लाह से कहा—"मेरे सिर पर हुसैन के वध का भार न रखिए।" परंतु 'रै' की गवर्नरी छोड़ने को वह तैयार न हो सका। अतएव अब ओबैदुल्लाह ने साफ़-साफ़ कह दिया कि 'रै' का उच्च पद हुसैन की हत्या किए बिना नहीं मिल सकता। यदि तुम्हें यह सौदा महंगा जंचता हो, तो कोई ज़बरदस्ती नहीं है। किसी और को यह पद दिया जाएगा।" तो उमर का आसन डोल गया। वह इस निषिद्ध कार्य के लिए तैयार हो गया। उसने अपनी आत्मा को ऐश्वर्य-लालसा के हाथ बेच दिया। ओबैदुल्लाह ने प्रसन्न होकर उसे बहुत कुछ इनाम-इक़राम दिया, और चार हज़ार सैनिक उसके साथ नियुक्त कर दिए। उमर-बिन-साद की आत्मा अब भी उसे क्षुब्ध करती रही। वह सारी रात पड़ा अपनी अवस्था या दुरवस्था पर विचार करता रहा। वह जिस विचार से देखता, उसी से अपना यह कर्म घृणित जान पड़ता था। प्रातःकाल वह फिर कूफ़ा के गवर्नर के पास गया। उसने फिर अपनी लाचारी दिखाई। परंतु 'रै' की सूबेदारी ने उस पर फिर विजय पाई। जब वह चलने लगा, तो ओबैदुल्लाह ने उसे कड़ी ताक़ीद कर दी कि हुसैन और उनके साथी फ़रात नदी के समीप किसी तरह न आने पाएं, और एक घूंट पानी भी न पी सकें। हुर की एक हज़ार सेना भी उमर के साथ आ मिली। इस प्रकार उमर के साथ पांच हज़ार सैनिक हो गए। उमर अब भी यही चाहता था कि हुसैन के साथ लड़ना न पड़े। उसने एक दूत उनके पास भेजकर पूछा—"आप अब क्या निश्चय करते हैं?" हुसैन ने कहा—"कूफ़ा वालों ने मुझसे दग़ा की है। इन्होंने अपने कष्ट की कथा कहकर मुझे यहां बुलाया और अब वह मेरे शत्रु हो गए हैं। ऐसी दशा में मैं मक्के लौट जाना चाहता हूं, यदि मुझे ज़बरदस्ती रोका न जाए।" उमर मन में प्रसन्न हुआ कि शायद अब कलंक से बच जाऊं। उसने यह समाचार तुरंत ओबैदुल्लाह को लिख भेजा। किंतु वहां तो हुसैन की हत्या करने का निश्चय हो चुका था। उसने उमर को उत्तर दिया—"हुसैन से बैयत लो, और यदि वह इस पर राजी न हों, तो मेरे पास लाओ।"

शत्रुओं को, इतनी सेना जमाकर लेने पर भी, सहसा हुसैन पर आक्रमण करते डर लगता था कि कहीं जनता में उपद्रव न मच जाए। इसलिए इधर तो उमर-बिन-साद कर्बला को चला और उधर ओबैदुल्लाह ने कूफ़ा की जामामस्जिद में लोगों को जमा किया। उसने एक व्याख्यान देकर उन्हें समझाया—"यज़ीद के ख़ानदान ने तुम लोगों पर कितना न्याय-युक्त शासन किया है, और वे तुम्हारे साथ कितनी उदारता से पेश आए हैं ! यज़ीद ने अपने सुशासन से देश को कितना समृद्धिपूर्ण बना दिया है ! रास्ते में अब चोरी और लुटेरों का कोई खटका नहीं है। न्यायालयों में सच्चा, निष्पक्ष न्याय होता है। उसने कर्मचारियों के वेतन बढ़ा दिए हैं। राज भक्तों की जागीरें बढ़ा दी गई हैं। विद्रोहियों के कोट-तहस-नहस कर दिए गए हैं, जिसमें वे तुम्हारी शांति में बाधक न हो सकें। तुम्हारे जीवन-निर्वाह के लिए उसने चिरस्थाई सुविधाएं दे रक्खी हैं। ये सब उनकी दयाशीलता और उदारता के प्रमाण हैं। यज़ीद ने मेरे नाम फ़रमान भेजा है कि मैं तुम्हारे ऊपर विशेष कृपादृष्टि करूं, और जिसे एक दीनार वृत्ति मिलती है, उनकी वृत्ति सौ दीनार कर दूं। इसी तरह वेतन में भी वृद्धि कर दूं। और तुम्हें उसके शत्रु हुसैन से लड़ने के लिए भेजूं। यदि तुम अपनी उन्नति और वृद्धि चाहते हो तो तुरंत तैयार हो जाओ। विलंब से काम बिगड़ जाएगा।"

यह व्याख्यान सुनते ही स्वार्थ के मतवाले नेता लोग, धर्माधर्म के विचार को तिलांजलि देकर, समर-भूमि में चलने की तैयारी करने लगे। 'शिमर' ने चार हज़ार सवार जमा किए, और वह बिन-साद से जा मिला। रिकाब ने दो हज़ार, हसीन ने चार हज़ार, मसायर ने तीन हज़ार और एक अन्य सरदार ने दो हज़ार योद्धा जमा किए। सब-के-सब दल-बल साजकर कर्बला को चले। उमर-बिन-साद के पास अब पूरे बाईस सहस्त्र सैनिक हो गए। कैसी दिल्लगी है कि बहत्तर आदमियों को परास्त करने के लिए इतनी बड़ी सेना खड़ी हो जाए ! उन बहत्तर आदमियों में भी कितने ही बालक और कितने ही वृद्ध थे। फिर प्यास ने सभी को अधमरा कर रखा था।

किंतु शत्रुओं ने अवस्था को भली-भांति समझकर यह तैयारी की थी। हुसैन की शक्ति न्याय और सत्य की शक्ति थी। यह यज़ीद और हुसैन का संग्राम न था। यह इस्लामी धार्मिक जन-सत्ता का पूर्व इस्लाम की राजसत्ता से संघर्ष था। हुसैन उन सब व्यवस्थाओं के पक्ष में थे, जिनका हजरत मोहम्मद द्वारा प्रादुर्भाव हुआ था। मगर यज़ीद उन सभी बातों का प्रतिपक्षी था। दैवयोग से इस समय अधर्म ने धर्म को पैरों-तले दबा लिया था; पर यह अवस्था एक क्षण में परिवर्तित हो सकती थी, और इसके लक्षण भी प्रकट होने लगे थे। बहुतेरे सैनिक जाने को तो चले जाते थे, परंतु अधर्म के विचार से सेना से भाग आते थे। जब ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने कई निरीक्षक नियुक्त किए। उनका काम यही था कि भागने वालों का पता

लगाएं। कई सिपाही इस प्रकार जाने से मार डाले गए। यह चाल ठीक पड़ी। भगोड़े भयभीत होकर फिर सेना में जा मिले।

इस संग्राम में सबसे घोर निर्दयता जो शत्रुओं ने हुसैन के साथ की, वह पानी का बंद कर देना था। ओबैदुल्लाह ने उमर को कड़ी ताक़ीद कर दी थी कि हुसैन के आदमी नदी के समीप न जाने पाएं। यहां तक कि वे कुएं खोदकर भी पानी न निकालने पाएं। एक सेना फ़रात-नदी की रक्षा के लिए भेज दी गई। उसने हुसैन की सेना और नदी के बीच में डेरा जमाया। नदी की ओर जाने का कोई रास्ता न रहा। थोड़े नहीं, छः हज़ार सिपाही नदी का पहरा दे रहे थे। हुसैन ने यह ढंग देखा, तो स्वयं इन सिपाहियों के सामने गए, और उन पर प्रभाव डालने की कोशिश की, पर उन पर कुछ असर न हुआ। लाचार होकर वह लौट आए। उस समय प्यास के मारे इनका कंठ सूखा जाता था, स्त्रियां और बच्चे बिलख रहे थे, किंतु उन पाषाण-हृदय पिशाचों को इन पर दया न आती थी।

शहीद होने के तीन दिन पहले हुसैन और अन्य प्राणी प्यास के मारे बेहोश हो गए। तब हुसैन ने अपने प्रिय बंधु अब्बास को बुलाकर, उन्हें बीस सवार तथा तीस पैदल देकर, उनसे कहा—"अपने साथ बीस मश्कें ले जाओ, और पानी से भर लाओ।" अब्बास ने सहर्ष इस आदेश को स्वीकार किया। वह नदी के किनारे पहुंचे। पहरेदार ने पुकारा—"कौन है ?" इधर उस पहरेदार का एक भाई भी था। वह बोला—"मैं हूं, तेरे चाचा का बेटा। पानी पीने आया हूं।" पहरेदार ने कहा—"पी ले।" भाई ने उत्तर दिया—"कैसे पी लूं ? जब हुसैन और उनके बाल-बच्चे प्यासे मर रहे हैं, तो मैं किस मुंह से पी लूं ?" पहरेदार ने कहा—"यह तो जानता हूं, पर करूं क्या, हुक्म से मजबूर हूं !" अब्बास के आदमी मश्कें लेकर नदी की ओर गए और पानी भर लिया। रक्षक-दल ने इनको रोकने की चेष्टा की, पर ये लोग पानी लिए हुए बच निकले।

हुसैन ने अंतिम बार संधि करने का प्रयास किया। उन्होंने उमर-बिन-साद को संदेशा भेजा कि "आज मुझसे रात को, दोनों सेनाओं के बीच में, मिलना।" उमर निश्चित समय पर आया। हुसैन से उसकी बहुत देर तक एकांत में बातें हुईं। हुसैन ने संधि की तीन शर्तें बताईं—(1) या तो हम लोगों को मक्के वापस जाने दिया जाए, (2) या सीमा प्रांत की ओर शांतिपूर्वक चले जाने की अनुमति मिले, (3) या मैं यज़ीद के पास भेज दिया जाऊं। उमर ने ओबैदुल्लाह को यह शुभ सूचना सुनाई, और वह उसे मानने के लिए तैयार भी मालूम होता था, किंतु शिमर ने ज़ोर दिया कि दुश्मन चंगुल में आ फंसा है, तो इसे निकलने न दो, नहीं तो उसकी शक्ति इतनी बढ़ जाएगी कि तुम उसका सामना न कर सकोगे। उमर मजबूर हो गया।

मोहर्रम की नवीं तारीख को, अर्थात् हुसैन की शहादत से एक दिन पहले,

कूफ़ा के दिहातों से कुछ लोग हुसैन की सहायता करने आए। ओबैदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने उन आदमियों को भगा दिया, और उमर को लिखा—"अब तुरंत हुसैन पर आक्रमण करो, नहीं तो इस टालमटोल की तुम्हें सजा दी जाएगी।" फिर क्या था; प्रातःकाल बाईस हज़ार योद्धाओं की सेना हुसैन से लड़ने चली। जुगुनू की चमक को बुझाने के लिए मेघ-मंडल का प्रकोप हुआ।

हुसैन को मालूम हुआ, तो वे घबराए। उन्हें यह अन्याय मालूम हुआ कि अपने साथ अपने साथियों और सहायकों के भी प्राणों की आहुति दें। उन्होंने इन लोगों को इसका एक अवसर देना उचित समझा कि वे चाहें, तो अपनी जान बचाएं, क्योंकि यज़ीद को उन लोगों से कोई शत्रुता न थी। इसलिए उन्होंने उमर-बिन-साद को पैग़ाम भेजा कि हमें एक रात के लिए मोहलत दो। उमर ने अन्य सेना-नायकों से परामर्श करके मोहलत दे दी। तब हज़रत हुसैन ने अपने समस्त सहायकों तथा परिवार वालों को बुलाकर कहा—"कल ज़रूर यह भूमि मेरे खून से लाल हो जाएगी। मैं तुम लोगों का हृदय से अनुगृहीत हूं कि तुमने मेरा साथ दिया। मैं अल्लाहताला से दुआ करता हूं कि वह तुम्हें इस नेकी का सवाब दे। तुमसे अधिक वीरात्मा और पवित्र हृदय वाले मनुष्य संसार में न होंगे। मैं तुम लोगों को सहर्ष आज्ञा देता हूं कि तुममें से जिसकी जहां इच्छा हो, चला जाए, मैं किसी को दबाना नहीं चाहता, न किसी को मजबूर करता हूं। किंतु इतना अनुरोध अवश्य करूंगा कि तुममें से प्रत्येक मनुष्य मेरे आत्मीय जनों में से एक-एक को अपने साथ ले ले। संभव है, खुदा तुम्हें तबाही से बचा ले, क्योंकि शत्रु मेरे रुधिर का प्यासा है। मुझे पा जाने पर उसको और किसी की तलाश न होगी।"

यह कहकर उन्होंने इसलिए चिराग़ बुझा दिया कि जाने वालों को संकोच-वश वहां न रहना पड़े। कितना महान्, पवित्र और निस्वार्थ आत्मसमर्पण है !

किंतु इस वाक्य का समाप्त होना था कि सब लोग चिल्ला उठे—"हम ऐसा नहीं कर सकते। खुदा वह दिन न दिखाए कि हम आपके बाद जीते रहें। हम दूसरों को क्या मुंह दिखाएंगे ? उनसे क्या यह कहेंगे कि हम अपने स्वामी, अपने बंधु तथा अपने इष्ट-मित्र को शत्रुओं के बीच में छोड़ आए, उनके साथ एक भाला भी न चलाया, एक तलवार भी न चलाई ! हम आपको अकेला छोड़कर कदापि नहीं जा सकते, हम अपने को, अपने धन को और अपने कुल को आपके चरणों पर न्योछावर कर देंगे।"

इस तरह नवीं तारीख, मोहर्रम की रात, आधी कटी। शेष रात्रि लोगों ने ईश्वर-प्रार्थना में काटी। हुसैन ने एक रात की मोहलत इसलिए नहीं ली थी कि समर की रही-सही तैयारी पूरी कर लें। प्रातःकाल तक सब लोग सिजदे करते और अपनी मुक्ति के लिए दुआएं मांगते रहे।

प्रभात हुआ—वह प्रभात, जिसकी संसार के इतिहास में उपमा नहीं है ! किसकी आंखों ने यह अलौकिक दृश्य देखा होगा कि बहत्तर आदमी बाईस हज़ार योद्धाओं के सम्मुख खड़े हुसैन के पीछे सुबह की नमाज़ इसलिए पढ़ रहे हैं कि अपने इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ने का शायद यह अंतिम सौभाग्य है। वे कैसे रणधीर पुरुष हैं, जो जानते हैं कि एक क्षण में हम सब-के-सब इस आंधी में उड़ जाएंगे, लेकिन फिर भी पर्वत की भांति अचल खड़े हैं; मानो संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो उन्हें भयभीत कर सके। किसी के मुख पर चिंता नहीं है, कोई निराश और हताश नहीं है। युद्ध के उन्माद ने, अपने सच्चे स्वामी के प्रति अटल विश्वास ने, उनके मुख को तेजस्वी बना दिया है। किसी के हृदय में कोई अभिलाषा नहीं है। अगर कोई अभिलाषा है, तो यही कि कैसे अपने स्वामी की रक्षा करें। इसे सेना कौन कहेगा, जिसके दमन को बाईस हज़ार योद्धा एकत्र किए गए थे। इन बहत्तर प्राणियों में एक भी ऐसा न था, जो सर्वथा लड़ाई के योग्य हो। सब-के-सब भूख-प्यास से तड़प रहे थे। कितनों के शरीर पर तो मांस का नाम तक नहीं था, और उन्हें बिना ठोकर खाए दो पग चलना भी कठिन था। इस प्राण-पीड़ा के समय ये लोग उस सेना से लड़ने को तैयार थे, जिसमें अरब-देश के वे चुने हुए जवान थे, जिन पर अरब को गर्व हो सकता था।

उन दिनों समर की दो पद्धतियां थीं—एक तो सम्मिलित, जिसमें समस्त सेना मिलकर लड़ती थी, और दूसरी व्यक्तिगत, जिसमें दोनों दलों से एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे। हुसैन के साथ इतने कम आदमी थे कि सम्मिलित संग्राम में शायद वह एक क्षण भी न ठहर सकते। अत: उनके लिए दूसरी शैली ही उपयुक्त थी। एक-एक करके योद्धागण समर-क्षेत्र में आने और शहीद होने लगे। लेकिन इसके पहले अंतिम बार हुसैन ने शत्रुओं से बड़ी ओजस्विनी भाषा में अपनी निर्दोषिता सिद्ध की। उनके अंतिम शब्द ये थे—

"खुदा की क़सम, मैं पद-दलित और अपमानित होकर तुम्हारी शरण न जाऊंगा, और न मैं दासों की भांति लाचार होकर यज़ीद की ख़िलाफ़त को स्वीकार करूंगा। ऐ खुदा के बंदो ! मैं खुदा से शांति का प्रार्थी हूं। और उन प्राणियों से, जिन्हें खुदा पर विश्वास नहीं है, जो गरूर में अंधे हो रहे हैं, पनाह मांगता हूं।"

शेष कथा आत्म-त्याग, प्राण-समर्पण, विशाल धैर्य और अविचल वीरता की अलौकिक और स्मरणीय गाथा है, जिसके कहने और सुनने से आंखों में आंसू उमड़ आते हैं, जिस पर रोते हुए लोगों को तेरह शताब्दियां बीत गईं, और अभी अनंत शताब्दियां रोते बीतेंगी।

हुर का ज़िक्र पहले आ चुका है। यह वही पुरुष है, जो एक हज़ार सिपाहियों के साथ हुसैन के साथ-साथ आया था, और जिसने उन्हें इस निर्जल मरुभूमि पर

ठहरने को मजबूर किया था। उसे अभी तक आशा थी कि शायद ओबैदुल्लाह हुसैन के साथ न्याय करे। किंतु जब उसने देखा कि लड़ाई छिड़ गई, और अब समझौते की कोई आशा नहीं है, तो अपने कृत्य पर लज्जित होकर वह हुसैन की सेना से आ मिला। जब वह अनिश्चित भाव से अपने मोरचे से निकलकर हुसैन की सेना की ओर चला, तब उसी सेना के एक सिपाही ने कहा—"तुमको मैंने किसी लड़ाई में इस तरह कांपते हुए चलते नहीं देखा।"

हुर ने उत्तर दिया—"मैं स्वर्ग और नरक की दुविधा में पड़ा हुआ हूं, और सच यह है कि मैं स्वर्ग के सामने किसी चीज़ की हस्ती नहीं समझता, चाहे कोई मुझे मार डाले।"

यह कहकर उसने घोड़े के एड़ लगाई, और हुसैन के पास आ पहुंचा। हुसैन ने उसका अपराध क्षमा कर दिया, और उसे गले से लगाया। तब हुर ने अपनी सेना को संबोधित करके कहा—"तुम लोग हुसैन की शर्तें क्यों नहीं मानते ? कितने खेद की बात है कि तुमने स्वयं उन्हें बुलाया, और जब वह तुम्हारी सहायता करने आए, तो तुम उन्हीं को मारने पर उद्यत हो गए। वह अपनी जान लेकर चले भी जाना चाहते हैं, किंतु तुम लोग उन्हें कहीं जाने भी नहीं देते ? सबसे बड़ा अन्याय यह कर रहे हो कि उन्हें नदी से पानी नहीं लाने देते ! जिस पानी को पशु और पक्षी तक पी सकते हैं, वह भी उन्हें मयस्सर नहीं !"

इस पर शत्रुओं ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी और हुर भी लड़ते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए। उन्हीं के साथ उनका पुत्र भी शहीद हुआ।

आश्चर्य होता है और दुःख भी कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी हुसैन को इन नर-पिशाचों से कुछ कल्याण की आशा बनी हुई थी। वह जब अवसर पाते थे, तभी अपनी निर्दोषिता प्रकट करते हुए उनसे आत्मरक्षा की प्रार्थना करते थे। दुराशा में भी यह आशा इसलिए थी कि वह हज़रत मोहम्मद के नवासे थे, और उन्हें आशा होती थी कि शायद अब भी मैं उनके नाम पर इस कष्ट से मुक्त हो जाऊं। उनके इन सभी संभाषणों में आत्म-रक्षा की इतनी विषद चिंता व्याप्त है, जो दीन चाहे न हो, पर करुण अवश्य है, और एक आत्मदर्शी पुरुष के लिए, जो स्वर्ग में इससे कहीं उत्तम जीवन का स्वप्न देख रहा हो, जिसको अटल विश्वास हो कि स्वर्ग में हमारे लिए अकथनीय सुख उपस्थित है, शोभा नहीं देती। हुर के शहीद होने के पश्चात् हुसैन ने फिर शत्रु-सेना के सम्मुख खड़े होकर कहा—

"मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि मेरी इन तीन बातों में से एक को मान लो—

(1) मुझे यज़ीद के पास जाने दो कि उससे बहस करूं। यदि मुझे निश्चय हो जाएगा कि वह सत्य पर है, तो मैं उसकी बैयत कर लूंगा।

इस पर किसी पाषाण-हृदय ने कहा—"तुम्हें यज़ीद के पास न जाने देंगे। तुम मधुरभाषी हो, अपनी बातों में उसे फंसा लोगे, और इस समय मुक्त होकर देश में विद्रोह फैला दोगे।"

(2) जब यह नहीं मानते, तो छोड़ दो कि मैं अपने नाना के रोज़े की मुजाबिरी करूं।

(इस पर भी किसी ने उपर्युक्त शंका प्रकट की।)

(3) अगर ये दोनों बातें तुम्हें अस्वीकार हैं, तो मुझे और मेरे साथियों को पानी दो; क्योंकि प्राणि-मात्र को पानी लेने का हक है।

(इसका भी वैसा ही कठोर और निराशाजनक उत्तर मिला।)

इस प्रश्नोत्तर के बाद हुसेन की ओर से बुरीर मैदान में आए। उधर से मुअक्कल निकला। बुरीर ने अपने प्रतिपक्षी को मार लिया, और फिर खुद सेना के हाथों मारे गए। बुरीर के बाद अब्दुल्लाह निकले और दस-बीस शत्रुओं को मारकर काम आए।

अब्दुल्लाह के बाद उनका पुत्र, जिसका नाम वहब था, मैदान में आया। उसकी वीर-गाथा अत्यंत मर्मस्पर्शी है, और राजपूताने के अमर वीर-वृत्तांत की याद दिलाती है। वहब का विवाह हुए अभी केवल सत्रह दिन हुए थे। हाथ की मेंहदी तक न छूटी थी। जब उसके पिता शहीद हो गए, तो उसकी माता उससे बोलीं—

"मीख्वाहम कि मरा अज़ खूने-खुद शरबते दिही ताशीरे कि अज़पिस्ताने मन खुरदई बर तो हलाल गरदद।"

कितने सुंदर शब्द हैं, जो शायद ही किसी वीर-माता के मुंह से निकले होंगे। भावार्थ यह है—

"मेरी इच्छा है कि तू अपने रक्त का एक घूंट मुझे दे, जिसमें कि वह दूध, जो तूने मेरे स्तन से पिया है, तुझ पर हलाल हो जाए।"

वहब के शहीद हो जाने के बाद क्रम से कई योद्धा निकले, और मारे गए। इस्लामी पुस्तकों में तो उनकी वीरता का बड़ा प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है। उनमें से प्रत्येक ने कई-कई सौ शत्रुओं को परास्त किया। ये भक्तों के मानने की बातें हैं। जो लोग प्यास से तड़प रहे थे, भूख से आंखों तले अंधेरा छा जाता था, उनमें इतनी आसाधारण शक्ति और वीरता कहां से आ गई ? उमर-बिन-साद की सैना में 'शिमर' बड़ा क्रूर और दुष्ट आदमी था। इस समर में हुसैन और उनके साथियों के साथ जिस अपमान-मिश्रित निर्दयता का व्यवहार किया गया, उसका दायित्व इसी शिमर के सिर है। यह धार्मिक संग्राम था, और इतिहास साक्षी है कि धार्मिक संग्राम में पाशविक प्रवृत्तियां अत्यंत प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं। पर इस संग्राम में ऐसे

प्रतिष्ठित प्राणी के साथ जितनी घोर दुष्टता और दुर्जनता दिखाई गई, उसकी उपमा संसार के धार्मिक संग्रामों में भी मुश्किल से मिलेगी, हुसैन के जितने साथी शहीद हुए, प्रायः उन सभी की लाशों को पैरों तले रौंदा गया, उनके सिर काटकर भालों पर उछाले और पैरों से ठुकराए गए। पर कोई भी अपमान और बड़ी-से-बड़ी निर्दयता उनकी उस कीर्ति को नहीं मिटा सकती, जो इस्लाम के इतिहास का आज भी गौरव बढ़ा रही है। इस्लाम के साहित्य और इतिहास में उन्हें वह स्थान प्राप्त है, जो हिन्दू-साहित्य में अंगद, जामवंत, अर्जुन, भीम आदि को प्राप्त हैं। सूर्यास्त होते-होते सहायकों में कोई भी नहीं बचा।

अब निज कुटुंब के योद्धाओं की बारी आई। इस वंश के पूर्वज 'हाशिम' नाम के पुरुष थे। इसीलिए हज़रत मोहम्मद का वंश हाशिमी कहलाता है। इस संग्राम में पहला हाशिमी जो क्षेत्र में आया, वह अब्दुल्लाह था। यह उसी मुसलिम साम के वीर का बालक था, जो पहले शहीद हो चुका था। उसके बाद कुटुंब के और वीर निकले। जाफर इमाम हसन के तीन बेटे, अब्बास के कई भाई, हज़रत अली के कई बेटे और सब बारी-बारी से लड़कर शहीद हुए। हज़रत अब्बास से हुसैन ने कहा—"मैं बहुत प्यासा हूं।" संध्या हो गई थी। अब्बास पानी लाने चले, पर रास्ते में घिर गए। वह असाधारण वीर पुरुष थे। हाशिमी लोगों में इतनी वीरता से कोई नहीं लड़ा। एक हाथ कट गया, तो दूसरे हाथ से लड़े। जब वह हाथ भी कट गया तो ज़मीन पर गिर पड़े। उनके मरने का हुसैन को अत्यंत शोक हुआ। बोले—"अब मेरी कमर टूट गई।" अब्बास के बाद हुसैन के नौजवान बेटे अकबर मैदान में उतरे। हुसैन ने अपने हाथों उन्हें शस्त्रों से सुसज्जित किया। आह ! कितना हृदय-विदारक दृश्य है। बेटे ने खड़े होकर हुसैन से जाने की आज्ञा मांगी, पिता का वीर हृदय अधीर हो गया। हुसैन ने निराशा और शोक से अली अकबर को देखा, फिर आंखें नीची कर लीं और रो दिए। जब वह शहीद हो गया, तो शोक विह्वल पिता ने जाकर लाश के मुंह पर अपना मुंह रख दिया, और कहा—"बेटा, तुम्हारे बाद अब जीवन को धिक्कार है।" पुत्र-प्रेम की इहलोक की ममता के आदर्श पर, धर्म पर, गौरव पर कितनी बड़ी विजय है ?

अब हुसैन अकेले रह गए। केवल एक सात वर्ष का भतीजा और हसन का एक दुधमुहा पोता बाक़ी था। हुसैन घोड़े पर सवार महिलाओं के ख़ीमों की ओर आए, और बोले—"बच्चे को लाओ, क्योंकि अब उसे कोई प्यार करने वाला न रहेगा।" स्त्रियों ने शिशु को उनकी गोद में रख दिया। वह अभी उसे प्यार कर रहे थे कि अकस्मात् एक तीर उसकी छाती में लगा, और वह हुसैन की गोदी में ही चल बसा। उन्होंने तुरंत तलवार से गढ़ा खोदा और बच्चे की लाश वहीं गाड़ दी। फिर अपने भतीजे को शत्रुओं के सामने खड़ा करके बोले—"ऐ अत्याचारियों, तुम्हारी

निगाह में मैं पापी हूं, पर इस बालक ने तो कोई अपराध नहीं किया, इसे क्यों प्यासों मारते हो ?" यह सुनकर किसी नर-पिशाच ने एक तीर चलाया, जो बालक के गले को छेदता हुआ हुसैन की बांह में गड़ गया। तीर के निकलते ही बालक की क्रीड़ाओं का अंत हो गया।

हुसैन अब रण-क्षेत्र की ओर चले। अब तक रण में जाने वालों को वह अपने ख़ीमे के द्वार तक पहुंचाने आया करते थे। उन्हें पहुंचाने वाला अब कोई मर्द न था। अब आपकी बहन जैनब ने आपको रोकर विदा किया। हुसैन अपनी पुत्री सकीना को बहुत प्यार करते थे। जब वह रोने लगी, तो आपने उसे छाती से लगाया और तत्काल शोक के आवेग में कई शेर पढ़े, जिनका एक-एक शब्द करुण-रस में डूबा हुआ है। उनके रण-क्षेत्र में आते ही शत्रुओं में खलबली पड़ गई, जैसे गीदड़ों में कोई शेर आ गया। हुसैन तलवार चलाने लगे, और इतनी वीरता से लड़े कि दुश्मनों के छक्के छूट गए। जिधर उनका घोड़ा बिजली की तरह कड़ककर जाता था, लोग काई की भांति फट जाते थे। कोई सामने आने की हिम्मत न कर सकता था। इस भांति सिपाहियों के दलों को चीरते-फाड़ते हुए वह फरात के किनारे पहुंच गए, और पानी पीना चाहते थे कि किसी ने कपट भाव से कहा—"तुम यहां पानी पी रहे हो, उधर सेना स्त्रियों के ख़ीमों में घुसी जा रही है।" इतना सुनते ही लपककर इधर आए, तो ज्ञात हुआ किसी ने छल किया है। फिर मैदान में पहुंचे, और शत्रु दल का संहार करने लगे। यहां तक कि शिमर ने तीन सेनाओं को मिलाकर उन पर हमला करने की आज्ञा दी। इतना ही नहीं, बग़ल से और पीछे से भी उन पर तीरों की बौछार होने लगी। यहां तक कि ज़ख्मों से चूर होकर वह ज़मीन पर गिर पड़े और शिमर की आज्ञा से एक सैनिक ने उनका सिर काट लिया। कहते हैं, जैनब यह दृश्य देखने के लिए खीमे से बाहर निकल आई थी। उसी समय उमर-बिन-साद से उनका सामना हो गया। तब वह बोलीं—"क्यों उमर, हुसैन इस बेकसी से मारे जाएं, और तुम देखते रहो !" उमर का दिल भर आया, आंखें सजल हो गईं और कई बूंदें दाढ़ी पर गिर पड़ीं।

हुसैन की शहादत के बाद शत्रुओं ने उनकी लाश की जो दुर्गति की, वह इतिहास की अत्यंत लज्जाजनक घटना है। उससे यह भली-भांति प्रकट हो जाता है कि मानव हृदय कितना नीचे गिर सकता है। गुरु गोविन्दसिंह के बच्चे की कथा भी यहां मात हो जाती है, क्योंकि ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी धर्म-संचालक के नवासों को अपने नाना के अनुयायियों के हाथों यह बुरा दिन देखना पड़ा हो।

पात्र-परिचय

पुरुष पात्र

हुसैन	:	हज़रत अली के बेटे और हज़रत मुहम्मद के नवासे। इन्हें फ़र्ज़दे रसूल, शब्बीर भी कहा गया है।
अब्बास		हज़रत हुसैन के चचेरे भाई
अली अकबर		हज़रत हुसैन के बड़े बेटे
अली असग़र		हज़रत हुसैन के छोटे बेटे
मुसलिम		हज़रत हुसैन के चचेरे भाई
जुबेर		मक्का का एक रईस
वलीद		मदीना का नाज़िम
मरवान		वलीद का सहायक अधिकारी
हानी		कूफ़ा का एक रईस
यज़ीद		ख़लीफ़ा
जुहाक, शम्स, सरजोन, रूमी		यज़ीद के मुसाहिब
ज़ियाद		बसरे और कूफ़े का नाज़िम
साद		यज़ीद की सेना का सेनापति
अब्दुल्लाह, वहब, कसीर, मुख़्तार, हुर, ज़हीर, हबीब, आदि	:	हज़रत हुसैन के सहायक
हज्जाज, हारिस, अशअस, कीस, वलाल, आदि	:	यज़ीद के सहायक
हरजसराय, सिंहदत्त, रामसिंह, भीरुदत्त एवं साहसराय	:	अरब निवासी हिन्दू
मुआबिया	:	यज़ीद का पिता

स्त्री पात्र

जैनब	:	हुसैन की बहन
शहरबानू	:	हुसैन की स्त्री
सकीना	:	हुसैन की बेटी
क़मर	:	अब्दुल्लाह की स्त्री
तौआ	:	कूफ़ा की वृद्धा स्त्री
हिन्दा	:	यज़ीद की बेगम

कासिद सिपाही, जल्लाद, आदि

पहला अंक

पहला दृश्य

समय—नौ बजे रात्रि। यज़ीद, ज़ुहाक, शम्स कई दरबारी बैठे हुए हैं। शराब की सुराही और प्याला रखा हुआ है।

यज़ीद : नगर में मेरी ख़िलाफ़त का ढिंढोरा पीट दिया गया ?

ज़ुहाक : कोई गली, कूचा, नाका, सड़क, मस्जिद, बाज़ार, ख़ानक़ाह ऐसा नहीं है, जहां हमारे ढिंढोरे की आवाज़ न पहुंची हो। यह आवाज़ वायु-मंडल को चीरती हुई हिजाज़, यमन, इराक़, मक्का-मदीना में गूंज रही है। और उसे सुनकर शत्रुओं के दिल दहल उठे हैं।

यज़ीद : नक्क़ार्ची को ख़िलअत दिया जाय।

ज़ुहाक : बहुत ख़ूब अमीर !

यज़ीद : मेरी बैयत लेने के लिए सबको हुक्म दे दिया गया ?

ज़ुहाक : अमीर के हुक्म देने की ज़रूरत न थी। कल सूर्योदय से पहले सारा शाम बैयत लेने को हाज़िर हो जाएगा।

यज़ीद : **(शराब का प्याला पीकर)** नबी ने शराब को हराम कहा है। यह इस अमृत-रस के साथ कितना घोर अन्याय है ! उस समय के लिए यह निषेध सर्वथा उचित था, क्योंकि उन दिनों किसी को यह आनंद भोगने का अवकाश न था। पर अब वह हालत नहीं है। तख़्त पर बैठे हुए ख़लीफ़ा के लिए ऐसी नियामत हराम समझने से तो यह कहीं अच्छा है कि वह ख़लीफ़ा ही न रहे। क्यों ज़ुहाक, कोई क़ासिद मदीने भेजा गया ?

ज़ुहाक : अमीर के हुक्म का इंतज़ार था।

यज़ीद : ज़ुहाक, क़सम है अल्लाह की; मैं इस विलंब को कभी क्षमा

नहीं कर सकता। फ़ौरन क़ासिद भेजो और वलीद को सख्त ताक़ीद लिखो कि वह हुसैन से मेरे नाम पर बैयत ले। अगर वह इन्कार करें, तो उन्हें क़त्ल कर दे। इसमें ज़रा भी देर न होनी चाहिए।

जुहाक : या मौला ! मेरी तो अर्ज़ है कि हुसैन क़बूल भी कर लें, तो भी उनका ज़िंदा रहना अबूसिफ़ियान के खानदान के लिए उतना ही घातक है, जितना किसी सर्प को मारकर उसके बच्चे को पालना। हुसैन ज़रूर दावा करेंगे।

यज़ीद : जुहाक, क्या तुम समझते हो कि हुसैन कभी मेरी बैयत क़बूल कर सकते हैं ? यह मुहाल है, असंभव है। हुसैन कभी मेरी बैयत न लेगा, चाहे उसकी बोटियां काट-काटकर कौवों को खिला दी जायं। अगर तक़दीर पलट सकती है, अगर दरिया का बहाव उलट सकता है, अगर समय की गति रुक सकती है, तो हुसैन भी मेरे नाम पर बैयत ले सकता है। मगर बैयत ले चुकने के बाद मुमकिन है, तक़दीर पलट जाय, दरिया का बहाव उलट जाय, समय की गति रुक जाय, पर हुसैन दावा नहीं कर सकता। उसके बैयत लेने का मतलब ही यही है कि उसे इस जहान से रुख़सत कर दिया जाय। हुसैन ही मेरा दुश्मन है। मुझे और किसी का खौफ़ नहीं, मैं सारी दुनिया की फ़ौजों से नहीं डरता, मैं डरता हूं इसी निहत्थे हुसैन से। **(प्याला भरकर पी जाता है।)** इसी हुसैन ने मेरी नींद, मेरा आराम हराम कर रखा है। अबूसिफ़यान की संतान हाशिश के बेटों के सामने सिर न झुकाएगी। ख़िलाफ़त को मुल्लाओं के हाथों में फिर न जाने देंगे। इन्होंने छोटे-बड़े की तमीज़ उठा दी। हर एक दहकान समझता है कि मैं ख़िलाफ़त की मसनद पर बैठने लायक़ हूं, और अमीरों के दस्तर्ख़ान पर खाने का मुझे हक़ है। मेरे मरहूम बाप ने इस भ्रांति को बहुत कुछ मिटाया; और आज ख़लीफ़ा शान व शौकत में दुनिया के किसी ताजदार से शर्मिंदा नहीं हो सकता। जूते सीने वाले और रूखी रोटियां खाकर खुदा का शुक्रिया अदा करने वाले ख़लीफ़ों के दिन गए।

जुहाक : खुदा न करे, वह फिर आए।

अब्दुलशम्स : इन हाशिमियों से हमें उस्मान के ख़ून का बदला लेना है।

यज़ीद : ख़जाना खोल दो और रियाया का दिल अपनी मुट्ठी में कर लो।

रुपया खुदा के ख़ौफ़ को दिल से दूर कर देता है। सारे शहर की दावत करो। कोई मुज़ायक़ा नहीं, अगर ख़जाना ख़ाली हो जाए। हर एक सिपाही को निहाल कर दो। और अगर इतनी रियायतें करने पर भी कोई तुमसे खिंचा रहे, तो उसे क़त्ल कर दो। मुझे इस वक्त रुपये की ताकत से धर्म और भक्ति को जीतना है।

हिन्दा का प्रवेश।

यज़ीद : हिन्दा, तुमने इस वक्त कैसे तकलीफ़ की ?

हिन्दा : या अमीर ! मैं आपकी ख़िदमत में सिर्फ़ इसलिए हाज़िर हुई हूं कि आपको इस इरादे से बाज़ रखूं। आपको अमीर मुआबिया की क़सम, अपने दीन को, अपनी नजात को, अपने ईमान को यों न ख़राब कीजिए। जिस नबी से आपने इस्लाम की रोशनी पाई, जिसकी ज़ात से आपको यह रुतबा मिला, जिसने आपकी आत्मा को अपने उपदेशों से जगाया, जिसने आपको अज्ञान के गढ़े से निकालकर आफ़ताब के पहलू में बिठा दिया, उसी खुदा के भेजे हुए बुजुर्ग के नवासे का ख़ून बहाने के लिए आप आमादा हैं !

यज़ीद : हिन्दा, ख़ामोश रहो।

हिन्दा : कैसे ख़ामोश रहूं ! आपको अपनी आंखों से ज़हन्नुम के ग़ार में गिरते देखकर ख़ामोश नहीं रह सकती। आपको मालूम नहीं कि रसूल की आत्मा स्वर्ग में बैठी हुई आपके इस अन्याय को देखकर आपको लानत दे रही होगी। और, हिसाब के दिन आप अपना मुंह उन्हें न दिखा सकेंगे। क्या आप नहीं जानते, आप अपनी नजात का दरवाज़ा बंद कर रहे हैं ?

यज़ीद : हिन्दा, ये मज़हब की बातें मज़हब के लिए हैं, दुनिया के लिए नहीं। मेरे दादा ने इस्लाम इसलिए क़बूल किया था कि इससे उन्हें दौलत और इज़्ज़त हाथ आती थी। नजात के लिए वह इस्लाम पर ईमान नहीं लाए थे, और न मैं ही इस्लाम को नजात का जामिन समझने को तैयार हूं।

हिन्दा : अमीर, खुदा के लिए यह कुवाक्य मुंह से न निकालो। आपको मालूम है, इस्लाम ने अरब से अधर्म के अंधेरे को कितनी आसानी से दूर कर दिया। अकेले एक आदमी ने काफ़िरों का

निशान मिटा दिया। क्या खुदा की मरज़ी बिना यह बात हो सकती थी ? कभी नहीं। तुम्हें मालूम है कि रसूल हुसैन को कितना प्यार करते थे ? हुसैन को वह कंधों पर बिठाते और अपनी नूरानी दाढ़ी को उनके हाथों से नुचवाते थे। जिस माथे को अपने पैरों पर झुकाना चाहते हो, उनके रसूल बोसे लेते थे। हुसैन से दुश्मनी करके तुम अपने हक़ में कांटे बो रहे हो। ख़िलाफ़त उसकी है, जिसे पंच दे; यह किसी की मीरास नहीं है। तुम खुद मदीने जाओ, और देखो, क़ौम किस पर ख़िलाफ़त का बार रखती है। उसके हाथों पर बैयत लो। अगर क़ौम तुमको इस रुतबे पर बैठा दे, तो मदीने में रहकर शौक़ से इस्लाम की ख़िदमत करो। मगर खुदा के वास्ते यह हंगामा न उठाओ।

जाती है।

यज़ीद : सरजून रूमी को बुला लो।

सरजून आकर आदाब बजा लाता है।

यज़ीद : आपने वालिद मरहूम की ख़िदमत जितनी वफ़ादारी के साथ की, उसके लिए मैं आपका शुक्रगुज़ार हूं। मगर इस वक्त मुझे आपकी पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरत है। बसरे की सूबेदारी के लिए आप किसे तजबीज करते हैं ?

रूमी : खुदा अमीर को सलामत रखे। मेरे ख़याल में अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद से ज्यादा लायक़ आदमी आपको मुश्किल से मिलेगा। ज़ियाद ने अमीर मुआबिया की जो ख़िदमत की, वह मिटाई नहीं जा सकती। अब्दुल्लाह उसी बाप का बेटा और ख़ानदान का उतना ही सच्चा गुलाम है। उसके पास फ़ौरन क़ासिद भेज दीजिए।

यज़ीद : मुझे ज़ियाद के बेटे से शिकायत है कि उसने बसरे वालों के इरादों की मुझे इत्तिला नहीं दी। और, मुझे यक़ीन है कि बसरे वाले मुझसे बग़ावत कर जाएंगे।

रूमी : या अमीर, आपका ज़ियाद पर शक़ करना बेजा है। आपके मददगार आपके पास खुद-ब-खुद न आएंगे। वह तलाश करने से, मिन्नत करने से, रियायत करने से आएंगे। आप-ही-आप

वे लोग आएंगे, जो आपकी ज़ात से खुद फ़ायदा उठाना चाहते हैं। इस मंसब के लिए ज़ियाद से बेहतर आदमी आपको न मिलेगा।

यज़ीद : सोचूंगा। (**शराब का प्याला उठाता है।**) जुहाक ! कोई गीत तो सुनाओ, जिसकी मिठास उस फ़िक्र को मिटा दे, जो इस वक़्त मेरे दिल और जिगर पर पत्थर की चट्टान की तरह रखी हुई है।

जुहाक : जैसा हुक्म।

दफ़ बजाकर गाता है।

गाना

सफ़ी थक के बैठे दवा करने वाले,
उठे हाथ उठाकर दुआ करने वाले।
वफ़ा पर हैं मरते वफ़ा करने वाले,
जफ़ा कर रहे हैं जफ़ा करने वाले।
बचाकर चले ख़ाक से अपना दामन,
लहद पर जो गुजरी हवा करने वाले।
किसी बात पर भी तो क़ायम नहीं हैं,
ये ज़ालिम, सितमगर, दग़ा करने वाले।
तअज्जुब नहीं है, जो अब ज़हर दे दें,
ये ज़िच हो गए हैं दवा करने वाले।
समझ लें कि दुश्वार है राज़दारी,
किसी का किसी से गिला करने वाले।
अभी है बुतों को खुदाई का दावा,
खुदा जाने, हैं और क्या करने वाले !

दूसरा दृश्य

समय—रात। मदीने का गवर्नर वलीद अपने दरबार में बैठा हुआ है।

वलीद : (**स्वगत**) मरवान कितना खुदगरज आदमी है। मेरा मातहत होकर भी मुझ पर रोब जमाना चाहता है। उसकी मर्जी पर चलता, तो आज सारा मदीना मेरा दुश्मन होता। उसने रसूल के

ख़ानदान से हमेशा दुश्मनी की है।

क़ासिद का प्रवेश।

क़ासिद : या अमीर, यह ख़लीफ़ा यज़ीद का ख़त है।

वलीद : **(घबराकर)** ख़लीफ़ा यज़ीद ! अमीर मुआबिया को क्या हुआ ?

क़ासिद : आपको पूरी क़ैफियत इस ख़त से मालूम होगी।

ख़त वलीद के हाथ में देता है।

वलीद : **(ख़त पढ़कर)** अमीर मुआबिया की रूह को खुदा जन्नत में दाख़िल करे। मगर समझ में नहीं आता कि यज़ीद क्योंकर ख़लीफ़ा हुए। क़ौम के नेताओं की कोई मजलिस नहीं हुई और किसी ने उनके हाथ पर बैयत नहीं ली। मदीने-भर में यह ख़बर फैलेगी, तो गज़ब हो जाएगा। हुसैन यज़ीद को कभी ख़लीफा न मानेंगे।

क़ासिद : **(दूसरा ख़त देकर)** हुजूर, इसे भी देख लें।

वलीद : **(ख़त लेकर पढ़ता है।)** ''वलीद, हाकिम मदीना को ताक़ीद की जाती है कि इस ख़त को देखते ही हुसैन मेरे नाम पर बैयत न लें, तो उन्हें क़त्ल कर दें, और उनका सिर मेरे पास भेज दें।''

सर्द सांस लेकर फ़र्श पर लेट जाता है।

क़ासिद : मुझे क्या हुक्म होता है ?

वलीद : तुम जाकर बाहर ठहरो; **(दिल में)** खुदा वह दिन न लाए कि मुझे रसूल के नवासे के साथ यह घृणित व्यवहार करना पड़े। वलीद इतना बेदीन नहीं है। खुदा रसूल को इतना नहीं भूला है। मेरे हाथ गिर पड़ें इसके पहले कि मेरी तलवार हुसैन की गर्दन पर पड़े। काश, मुझे मालूम होता कि अमीर मुआबिया की मौत इतनी नज़दीक है, और उसकी आंखें बंद होते ही मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा, तो पहले ही इस्तीफ़ा देकर चला जाता। मरवान की सूरत देखने को जी नहीं चाहता, मगर इस वक्त उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ काम करना अपनी मौत

को बुलाना है। वह रत्ती-रत्ती ख़बर यज़ीद के पास भेजेगा। उसके सामने मेरी कुछ भी न सुनी जाएगी। ऐसा अफ़सर, जो मातहतों से डरे, मातहत से भी बदतर है। जिस वज़ीर का गुलाम बादशाह का विश्वास-पात्र हो, उसके लिए जंगल में ऊंट चराना उससे हज़ार दर्जे बेहतर है कि वह वज़ीर की मसनद पर बैठे।

गुलाम को बुलाता है।

गुलाम : अमीर क्या हुक्म फ़र्माते हैं ?

वलीद : जाकर मरवान को बुला ला।

गुलाम : जो हुक्म।

जाता है।

वलीद . **(दिल में)** हुसैन कितना नेक आदमी है। उसकी ज़बान से कभी किसी की बुराई नहीं सुनी। उसने कभी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाया। उससे मैं क्योंकर बैयत लूंगा।

मरवान का प्रवेश।

मरवान : इतनी रात गए मुझे आप न बुलाया करें। मेरी जान इतनी सस्ती नहीं है कि बागियों को इस पर छिपकर हमला करने का मौक़ा दिया जाए।

वलीद : तुम्हारा बर्ताव ही क्यों ऐसा हो कि तुम्हारे ऊपर किसी क़ातिल की तलवार उठे। अभी-अभी क़ासिद मुआबिया की मौत की ख़बर लाया है, और यज़ीद का यह ख़त भी आया है। मुझे तुमसे इसकी बावत सलाह लेनी है।

ख़त देता है।

मरवान : **(ख़त पढ़कर)** आह ! मुआबिया, तुमने बेवक़्त वफ़ात पाई। तुम्हारा नाम तारीख़ में हमेशा रोशन रहेगा। तुम्हारी नेकियों को याद करके लोग बहुत दिनों तक रोएंगे। यज़ीद ने ख़िलाफ़त अपने हाथ में ले ली, यह बहुत ही मुनासिब हुआ। मेरे ख़याल में हुसैन को इसी वक़्त बुलाना चाहिए।

वलीद : तुम्हारे ख़याल में बैयत ले लेंगे ?

मरवान : ग़ैरमुमकिन। उनसे बैयत लेना उन्हें क़त्ल करने को कहना है।

मगर अभी मुआबिया के मरने की ख़बर मशहूर न होनी चाहिए।

वलीद : इस मामले पर ग़ौर करो।

मरवान : ग़ौर की ज़रूरत नहीं, मैं आपकी जगह होता, तो बैयत का ज़िक्र ही न करता। फ़ौरन क़त्ल कर डालता। हुसैन के ज़िंदा रहते हुए यज़ीद को कभी इत्मीनान नहीं हो सकता। यह भी याद रखिए कि मुआबिया के मरने की ख़बर फैल गई, तो न हमारी जान सलामत रहेगी, न आपकी। हुसैन से आपका कितना ही दोस्ताना हो, लेकिन वही हुसैन आपका जानी दुश्मन हो जाएगा।

वलीद : तुम्हें उम्मीद है कि वह इस वक़्त यहां आएंगे। उन्हें शुबहा हो जाएगा।

मरवान : आपके ऊपर हुसैन को इतना भरोसा है, तो इस वक़्त भी चले आएंगे। मगर आपकी तलवार तेज़ और ख़ून गर्म रहना चाहिए। यही कारगुजारी का मौक़ा है। अगर हम लोगों ने इस मौक़े पर यज़ीद की मदद की, तो कोई शक़ नहीं कि हमारे इक़बाल का सितारा रोशन हो जाएगा।

वलीद : मरवान, मैं यज़ीद का गुलाम नहीं, ख़लीफ़ा का नौकर हूं, और ख़लीफ़ा वही है, जिसे क़ौम चुनकर मसनद पर बिठा दे। मैं अपने दीन और ईमान का ख़ून करने से यह कहीं बेहतर समझता हूं कि क़ुरान पाक की नक़ल करके ज़िंदगी बसर करूं।

मरवान : या अमीर, मैं आपको यज़ीद के गुस्से से होशियार किए देता हूं। मेरी और आपकी भलाई इसी में है कि यज़ीद का हुक्म बजा लाएं। हमारा काम उनकी बंदगी करना है, आप दुविधा में न पड़ें। इसी वक़्त हुसैन को बुला भेजें।

गुलाम को पुकारता है।

गुलाम : या अमीर, क्या हुक्म है ?

मरवान : जाकर हुसैन बिन अली को बुला ला। दौड़ते जाना और कहना कि अमीर आपके इंतजार में बैठे हैं।

गुलाम चला जाता है।

तीसरा दृश्य

समय—रात। हुसैन और अब्बास मस्जिद में बैठे बातें कर रहे हैं। एक दीपक जल रहा है।

हुसैन : मैं जब ख़याल करता हूं कि नाना मरहूम ने तनहा बड़े-बड़े सरकश बादशाहों को पस्त कर दिया, और इतनी शानदार ख़िलाफ़त क़ायम कर दी, तो मुझे यक़ीन हो जाता है कि उन पर खुदा का साया था। खुदा की मदद के बगैर कोई इंसान यह काम न कर सकता था। सिकंदर की बादशाहत उसके मरते ही मिट गई, क़ैसर की बादशाहत उसकी ज़िंदगी के बाद बहुत थोड़े दिनों तक क़ायम रही, उन पर खुदा का साया न था। वह अपनी हवस की धुन में क़ौमों को फ़तह करते हैं। नाना ने इस्लाम के लिए झंडा बुलंद किया, इसी से वह कामयाब हुए।

अब्बास : इसमें किसको शक़ हो सकता है कि वह खुदा के भेजे हुए थे। खुदा की पनाह, जिस वक़्त हज़रत ने इस्लाम की आवाज़ उठाई थी, इस मुल्क़ में अज्ञान का कितना गहरा अंधकार छाया हुआ था। वह खुदा की ही आवाज़ थी, जो उनके दिल में बैठी हुई बोल रही थी, जो कानों में पड़ते ही दिलों में उतर जाती थी। दूसरे मज़हब वाले कहते हैं, इस्लाम ने तलवार की ताक़त से अपना प्रचार किया। काश, उन्होंने हज़रत की आवाज़ सुनी होती ! मेरा तो दावा है कि क़ुरान में एक आयत भी ऐसी नहीं है, जिसकी मंशा तलवार से इस्लाम को फैलाना हो।

हुसैन : मगर कितने अफ़सोस की बात है कि अभी से क़ौम ने उनकी नसीहतों को भूलना शुरू किया, और वह नापाक, जो उनकी मसनद पर बैठा हुआ है, आज खुले बंदों शराब पीता है।

गुलाम का प्रवेश।

गुलाम : नबी के बेटे पर खुदा की रहमत हो ! अमीर ने आपको किसी बहुत ज़रूरी काम के लिए तलब किया है।

अब्बास : यह वक़्त वलीद के दरबार का नहीं है।

गुलाम : हुज़ूर, कोई ख़ास काम है।

हुसैन : अच्छा, तू जा। हम घर जाने लगेंगे, तो उधर से होते हुए जाएंगे।

गुलाम चला जाता है।

अब्बास : भाई जान ! मुझे तो इस बेवक्त की तलबी से घबराहट हो गई है। यह वक्त वलीद के इजलास का नहीं है। मुझे दाल में कुछ काला नज़र आता है। आप कुछ क़यास कर सकते हैं कि किसलिए बुलाया होगा ?

हुसैन : मेरा तो दिल गवाही देता है कि मुआबिए ने वफ़ात पाई।

अब्बास : तो वलीद ने आपको इसलिए बुलाया होगा कि आपसे यज़ीद की बैयत ले।

हुसैन : मैं यज़ीद की बैयत क्यों करने लगा ! मुआबिया ने भैया इमाम हसन के साथ क़सम खाकर शर्त की थी कि वह अपने मरने के बाद अपनी औलाद में किसी को ख़लीफ़ा न बनाएगा। हसन के बाद ख़िलाफ़त पर मेरा हक़ है। अगर मुआबिया मर गया है, और यज़ीद को ख़लीफ़ा बनाया गया है, तो उसने मेरे साथ और इस्लाम के साथ दग़ा की है। यज़ीद शराबी है, बदकार है, झूठा है, बेदीन है, कुत्तों को गोद में लेकर बैठता है। मेरी जान भी जाए तो क्या, पर मैं उसकी बैयत न अख़्तियार करूंगा।

अब्बास : मामला नाजुक है। यज़ीद की जात से कोई बात बईद नहीं। काश, हमें मुआबिया की बीमारी और मौत की ख़बर पहले ही मिल गई होती !

गुलाम का फिर प्रवेश।

गुलाम : हुज़ूर तशरीफ़ नहीं लाए, अमीर आपके इंतज़ार में बैठे हुए हैं।

हुसैन : तुफ है तुझ पर ! तू वहां पर गया भी कि रास्ते से ही लौट आया? चल, मैं अभी आता हूं। तू फिर न आना।

गुलाम : हुज़ूर, अमीर से जाकर जब मैंने कहा कि वह अभी आते हैं, तो वह चुप हो गए, लेकिन मरवान ने कहा कि वह कभी न आएंगे, आपसे दावा कर रहे हैं। इस पर अमीर उनसे बहुत नाराज़ हुए, और कहा—हुसैन क़ौल के पक्के हैं, जो कहते हैं, उसे पूरा करते हैं।

हुसैन : वलीद शरीफ़ आदमी है। तुम जाओ, हम अभी आते हैं।

गुलाम चला जाता है।

अब्बास : आप जाएंगे ?

हुसैन : जब तक कोई सबब न हो, किसी की नीयत पर शुबहा करना

मुनासिब नहीं।

अब्बास : भैया, मेरी जान आप पर फ़िदा हो। मुझे डर है कि कहीं वह आपको क़ैद न कर ले।

हुसैन : वलीद पर मुझे पूरा एतबार है। आबूसिफ़ियान की औलाद होने पर भी वह शरीफ़ और दीनदार है।

अब्बास : आप एतबार करें, लेकिन मैं आपको वहां जाने की हरगिज़ सलाह न दूंगा। इस सन्नाटे में अगर उसने कोई दग़ा की तो, कोई फ़र्याद भी न सुनेगा। आपको मालूम है कि मरवान कितना दग़ाबाज़ और हरामकार है। मैं उसके साए से भी भागता हूं। जब तक आप मुझे ये इत्मीनान न दिला दीजिएगा कि दुश्मन यहां आपका बाल बांका न कर सकेगा, मैं दामन न छोड़ूंगा।

हुसैन : अब्बास, तुम मेरी तरफ़ से बेफिक्र रहो, मुझे हक़ पर इतना यक़ीन है, और मुझमें हक़ की इतनी ताक़त है कि मेरी बात और वलीद तो क्या, यज़ीद की सारी फ़ौज भी मुझे कुछ नुकसान नहीं पहुंचा सकती। यक़ीन है कि मेरी एक आवाज़ पर हजारों खुदा के बंदे और रसूल के नाम पर मिटने वाले दौड़ पड़ेंगे। और अगर कोई मेरी आवाज़ न सुने, तो भी मेरे बाजुओं में इतना बल है कि मैं अकेले उनमें से एक सौ को ज़मीन पर सुला सकता हूं। हैदर का बेटा ऐसे गीदड़ों से नहीं डर सकता। आओ, ज़रा नाना की क़ब्र की ज़ियारत कर लें।

दोनों हज़रत मुहम्मद की कब्र के सामने खड़े हो जाते हैं, हाथ बांधकर दुआ पढ़ते हैं, और मस्जिद से निकलकर घर की तरफ़ चलते हैं।

चौथा दृश्य

समय—रात। वलीद का दरबार। वलीद और मरवान बैठे हुए हैं।

मरवान : अब तक नहीं आए ! मैंने आपसे कहा कि वह हरगिज़ न आएंगे।

वलीद : आएंगे, और ज़रूर आएंगे। मुझे उनके क़ौल पर पूरा भरोसा है।

मरवान : कहीं ऐसा तो नहीं हुआ कि उन्हें अमीर की वफ़ात की ख़बर

लग गई हो, और वह अपने साथियों को जमा करके हमसे जंग करने आ रहे हों।

हुसैन का प्रवेश। वलीद सम्मान के भाव से खड़ा हो जाता है, और दरवाज़े पर आकर हाथ मिलाता है। मरवान अपनी जगह पर बैठा रहता है।

हुसैन : खुदा की तुम पर रहमत हो। **(मरवान को बैठे देखकर)** मेल फूट से और प्रेम द्वेष से बहुत अच्छा है। मुझे क्यों याद किया है ?

वलीद : इस तकलीफ़ के लिए माफ़ कीजिए, आपको यह सुनकर अफ़सोस होगा कि अमीर मुआबिया ने वफ़ात पाई।

मरवान : और ख़लीफ़ा यज़ीद ने हुक्म दिया है कि आपसे उनके नाम की बैयत ली जाए।

हुसैन : मेरे नज़दीक यह मुनासिब नहीं है कि मुझ जैसा आदमी छुपे-छुपे बैयत ले। यह न मेरे लिए मुनासिब है, और न यज़ीद के लिए काफ़ी। बेहतर है, आप एक आम जलसा करें, और शहर के सब रईसों और आलिमों को बुलाकर यज़ीद की बैयत का सवाल पेश करें। मैं भी उन लोगों के साथ रहूंगा, और उस वक्त सबके पहले जवाब देने वाला मैं हूंगा।

वलीद : मुझे आपकी सलाह माक़ूल मालूम होती है। बेशक़, आपके बैयत लेने से वह नतीजा न निकलेगा, जो यज़ीद की मंशा है। कोई कहेगा कि आपने बैयत ली, और कोई कहेगा कि नहीं। और, उसकी तसदीक़ करने में बहुत वक्त लगेगा। तो जलसा करूं ?

मरवान : अमीर, मैं आपको ख़बरदार किए देता हूं कि इनकी बातों में न आइए। बग़ैर बैयत लिए इन्हें यहां से न जाने दीजिए, वरना इनसे उस वक्त तक बैयत न ले सकेंगे, जब तक खून की नदी न बहेगी। यह चिनगारी की तरह उड़कर सारी ख़िलाफ़त में आग लगा देंगे।

वलीद : मरवान, मैं तुमसे मिन्नत करता हूं, चुप रहो।

मरवान : हुसैन, मैं खुदा को गवाह करके कहता हूं कि मैं आपका दुश्मन नहीं हूं। मेरी दोस्ताना सलाह यह है कि आप यज़ीद की बैयत मंजूर कर लीजिए, ताकि आपको कोई नुकसान न पहुंचे।

आपस का फ़साद मिट जाए और हज़ारों खुदा के बंदों की जानें बच जाएं। ख़लीफ़ा आपके बैयत की ख़बर सुनकर बेहद खुश होंगे, और आपके साथ ऐसे सलूक करेंगे कि ख़िलाफ़त में कोई आदमी आपकी बराबरी न कर सकेगा। मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि आपकी जागीरें और वज़ीफ़े दोचंद करा दूंगा, और आप मदीने में इज्ज़त के साथ रसूल के क़दमों में लगे हुए दीन और दुनिया में सुर्ख़रू होकर ज़िंदगी बसर करेंगे।

हुसैन : बस करो मरवान, मैं तुम्हारी दोस्ताना सलाह सुनने के लिए नहीं आया हूं। तुमने कभी अपनी दोस्ती का सबूत नहीं दिया, और इस मौक़े पर मैं तुम्हारी सलाह को दोस्ताना न समझ कर दग़ा समझूं, तो मेरा दिल और मेरा खुदा मुझसे नाखुश न होगा। आज इस्लाम इतना कमज़ोर हो गया है कि रसूल का बेटा यज़ीद की बैयत लेने के लिए मजबूर हो !

मरवान : उनकी बैयत से आपको क्या एतराज है ?

हुसैन : इसलिए कि वह शराबी, झूठा, दग़ाबाज़, हरामकार और ज़ालिम है। वह दीन के आलिमों की तौहीन करता है। जहां जाता है, एक गधे पर बंदर को आलिमों के कपड़े पहनाकर साथ ले जाता है। मैं ऐसे आदमी की बैयत अख्तियार नहीं कर सकता।

मरवान : या अमीर, आप इनसे बैयत लेंगे या नहीं ?

हुसैन : मेरी बैयत किसी के अख्तियार में नहीं है।

मरवान : क़सम खुदा की, आप बैयत क़बूल किए बिना नहीं जा सकते! मैं तुम्हें यहीं क़त्ल कर डालूंगा।

तलवार खींचकर बढ़ता है।

हुसैन : **(डपटकर)** तू मुझे क़त्ल करेगा, तुझमें इतनी हिम्मत नहीं है ! दूर रह। एक क़दम भी आगे रखा, तो तेरा नापाक सिर ज़मीन पर होगा।

अब्बास तीस सशस्त्र आदमियों के साथ तलवार खींचे हुए घुस आते हैं।

अब्बास : **(मरवान की तरफ़ झपटकर)** मलऊन, यह ले; तेरे लिए दोज़ख का दरवाज़ा खुला हुआ है।

हुसैन : **(मरवान के सामने खड़े होकर)** अब्बास, तलवार म्यान में

करो। मेरी लड़ाई मरवान से नहीं, यज़ीद से है। मैं खुश हूं कि यह अपने आक़ा का ऐसा वफ़ादार ख़ादिम है।

अब्बास : इस मरदूद की इतनी हिम्मत कि आपके मुबारक़ जिस्म पर हाथ उठाए ! क़सम खुदा की, इसका ख़ून पी जाऊंगा।

हुसैन : मेरे देखते, मुसलमान पर मुसलमान का ख़ून हराम है।

वलीद : (हुसैन से) मैं सख़्त नादिम हूं कि मेरे सामने आपकी तौहीन हुई। खुदा इसका अज़ाब मुझे दे।

हुसैन : वलीद, मरी तक़दीर में अभी बड़ी-बड़ी सख्तियां झेलनी बदा हैं। यह उस मार्के की तमहीद है, जो पेश आने वाला है। हम और तुम शायद फिर मिलें, इसलिए रुख़सत। मैं तुम्हारी मुरौवत और भलमनसी को कभी न भूलूंगा। मेरी तुमसे सिर्फ़ इतनी अर्ज़ है कि मेरे यहां से जाने में जरा भी रोक-टोक न करना।

दोनों गले मिलकर विदा होते हैं। अब्बास और तीसों आदमी बाहर चले जाते हैं।

मरवान : वलीद, तुम्हारी बदौलत मुझे यह ज़िल्लत हुई।

वलीद : तुम नाशुक्रे हो। मेरी बदौलत तुम्हारी जान बच गई; वरना तुम्हारी लाश फ़र्श पर तड़पती नज़र आती।

मरवान : तुमने यज़ीद की ख़िलाफ़त यज़ीद से छीनकर हुसैन को दे दी। तुमने आबूसिफ़ियान की औलाद होकर उसके ख़ानदान से दुश्मनी की। तुम खुदा की दरगाह में उस क़त्ल और ख़ून के ज़िम्मेदार होंगे, जो आज की ग़फ़लत या नरमी का नतीजा होगा।

मरवान चला जाता है।

पांचवां दृश्य

समय—आधी रात। हुसैन और अब्बास मस्जिद के सहन में बैठे हुए हैं।

अब्बास : बड़ी खैरियत हुई, वरना मलऊन ने दुश्मनों का काम ही तमाम कर दिया था।

हुसैन : तुम लोगों की जतन बड़े मौक़े पर काम आई। मुझे गुमान न था कि ये सब मेरे साथ इतनी दग़ा करेंगे। मगर यह जो कुछ हुआ,

आगे चलकर इससे भी ज़्यादा होगा। मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि हमें चैन से बैठना भी नसीब न होगा। मेरा भी वही हाल होने वाला है, जो भैया इमाम हसन का हुआ।

अब्बास : खुदा न करे, खुदा न करे !

हुसैन : अब मदीने में हम लोगों का रहना कांटे पर पांव रखना है। भैया, शायद नबियों की औलाद शहीद होने ही के लिए पैदा होती है। शायद नबियों को भी होनहार की ख़बर नहीं होती; नहीं तो क्या नाना की मसनद पर वे लोग बैठते, जो इस्लाम के दुश्मन हैं, और जिन्होंने सिर्फ़ अपनी ग़रज़ पूरी करने के लिए इस्लाम का स्वांग भरा है। मैं रसूल ही से पूछता हूं कि वह मुझे क्या हुक्म देते हैं ? मदीने में ही रहूं या कहीं और चला जाऊं ? **(हज़रत मुहम्मद की क़ब्र पर जाकर)** ऐ खुदा, यह तेरे रसूल मुहम्मद की ख़ाक है, और मैं उनकी बेटी का बेटा हूं। तू मेरे दिल का हाल जानता है। मैंने तेरी और तेरे रसूल की मर्ज़ी पर हमेशा चलने की कोशिश की है। मुझ पर रहम कर और उस पाक नबी के नाते, जो इस क़ब्र में सोया हुआ है, मुझे हिदायत कर कि इस वक्त मैं क्या करूं ?

रोते हैं, और क़ब्र पर सिर रखकर बैठ जाते हैं। एक क्षण में चौंककर उठ बैठते हैं।

अब्बास : भैया, अब यहां से चलो। घर के लोग घबरा रहे होंगे।

हुसैन : नहीं अब्बास, अब मैं लौटकर घर न जाऊंगा। अभी मैंने ख्वाब देखा कि नाना आए हैं, और मुझे छाती से लगाकर कहते हैं— "बहुत थोड़े दिनों में तू ऐसे आदमियों के हाथ में शहीद होगा, जो अपने को मुसलमान कहते होंगे, और मुसलमान न होंगे। मैंने तेरी शहादत के लिए कर्बला का मैदान चुना है, उस वक्त तू प्यासा होगा, पर तेरे दुश्मन तुझे एक बूंद पानी भी न देंगे। तेरे लिए यहां बहुत ऊंचा रुतबा रखा गया है, पर वह रुतबा शहादत के बग़ैर हासिल नहीं हो सकता।" यह कहकर नाना ग़ायब हो गए।

अब्बास **(रोकर)** भैया, हाय भैया, यह ख्वाब या पेशीनगोई ?

मुहम्मद हंफ़िया का प्रवेश।

मुहम्मद : हुसैन, तुमने क्या फ़ैसला किया ?

हुसैन : खुदा की मर्ज़ी है कि मैं क़त्ल किया जाऊं।

मुहम्मद : खुदा की मर्जी खुदा ही जानता है। मेरी सलाह तो यह है कि तुम किसी दूसरे शहर चले जाओ, और वहां से अपने क़ासिदों को उस जवार में भेजो। अगर लोग तुम्हारी बैयत मंजरू कर लें, तो खुदा का शुक्र करना, वरना यों भी तुम्हारी आबरू क़ायम रहेगी। मुझे ख़ौफ़ यही है कि कहीं तुम ऐसी जगह न जा फंसो, जहां कुछ लोग तुम्हारे दोस्त हों, और कुछ तुम्हारे दुश्मन। कोई चोट बग़ली घूंसों की तरह नहीं होती, कोई सांप इतना क़ातिल नहीं होता, जितना आस्तीन का। कोई कान इतना तेज़ नहीं होता, जितना दीवार का। और कोई दुश्मन इतना ख़ौफ़नाक नहीं होता, जितनी दग़ा। इससे हमेशा बचते रहना।

हुसैन : आप मुझे कहां जाने की सलाह देते हैं ?

मुहम्मद : मेरे ख़याल से मक्का से बेहतर कोई जगह नहीं है। अगर क़ौम ने तुम्हारी बैयत मंजूर की, तो पूछना ही क्या ? वरना पहाड़ियों की घाटियां तुम्हारे लिए क़िलों का काम देंगी, और थोड़े से मददगारों के साथ तुम आज़ादी से ज़िंदगी बसर करोगे। खुदा चाहेगा तो लोग बहुत जल्द यज़ीद से बेजार होकर तुम्हारी पनाह में आएंगे।

हुसैन : अजीज़ों को यहां छोड़ दूं ?

मुहम्मंद : हरगिज़ नहीं। सबको अपने साथ ले जाओ।

हुसैन : यहां की हालत से मुझे जल्द-जल्द इत्तिला देते रहिएगा।

मुहम्मद : इसका इत्मीनान रखो।

मुहम्मद हुसैन से गले मिलकर चले जाते हैं।

अब्बास : भैया, अब तो घर चलिए, क्या सारी रात जागते रहिएगा।

हुसैन : अब्बास, मैं पहले ही कह चुका हूं कि लौटकर घर न जाऊंगा।

अब्बास : अगर आपकी इजाज़त हो, तो मैं भी कुछ अर्ज करूं। आप मुझे अपना सच्चा दोस्त समझते हैं या नहीं ?

हुसैन : खुदा पाक की क़सम, तुमसे ज़्यादा सच्चा दोस्त दुनिया में नहीं है।

अब्बास : क्यों न आप इस वक्त यज़ीद की बैयत मंजूर कर लीजिए ? खुदा कारसाज है, मुमकिन है, थोड़े दिनों में यज़ीद खुद ही मर

जाय, तो आपको ख़िलाफ़त आप-ही-आप मिल जाएगी। जिस तरह आपने मुआबिया के ज़माने में सब्र किया, उसी तरह यज़ीद के ज़माने को भी सब्र के साथ काट दीजिए। यह भी मुमकिन है कि थोड़े ही दिनों में यज़ीद के जुल्म से तंग आकर लोग बग़ाबत कर बैठें, और आपके लिए मौक़ा निकल आए। सब्र सारी मुश्किलों को आसान कर देता है।

हुसैन : अब्बास, यह क्या कहते हो ? अगर मैं खौफ़ से यज़ीद की बैयत क़बूल कर लूं, तो इस्लाम का मुझसे बड़ा दुश्मन और कोई न होगा। मैं रसूल को, वालिद को, भैया हसन को क्या मुंह दिखाऊंगा। अब्बाजान ने शहीद होना क़बूल किया, पर मुआबिया की बैयत न मंजूर की। भैया ने भी मुआबिया की बैयत को हराम समझा, तो मैं क्यों खानदान में दाग़ लगाऊं ? इज्ज़त की मौत बेइज्ज़ती की ज़िंदगी से कहीं अच्छी है।

अब्बास : **(विस्मित होकर)** खुदा की क़सम, यह हुसैन की आवाज़ नहीं, रसूल की आवाज़ है, और ये बातें हुसैन की नहीं, अली की हैं। भैया ! आपको खुदा ने अक्ल दी है, मैं तो आपका ख़ादिम हूं, मेरी बात आपको नागवार हुई हो, तो माफ़ करना।

हुसैन : **(अब्बास को छाती से लगाकर)** अब्बास, मेरा खुदा मुझसे नाराज़ हो जाय, अगर मैं तुमसे ज़रा भी मलाल रखूं। तुमने मुझे जो सलाह दी, वह मेरी भलाई के लिए दी। इसमें मुझे ज़रा भी शक़ नहीं। मगर तुम इस मुग़ालते में हो कि यज़ीद के दिल की आग मेरे बैयत ही से ठंडी हो जाएगी, हालांकि यज़ीद ने मुझे क़त्ल करने का यह हीला निकाला है। अगर वह जानता कि बैयत ले लूंगा, तो वह कोई और तदबीर सोचता।

अब्बास : अगर उसकी यह नीयत है, तो कलाम पाक की क़सम, मैं पसीने की जगह अपना खून बहा दूंगा, और आपसे आगे बढ़कर इतनी तलवारें चलाऊंगा कि मेरे दोनों हाथ कटकर गिर जाएं।

जैनब, शहरबानू और घर के अन्य लोग आते हैं।

जैनब : अब्बास, बातें न करो। **(हुसैन से)** भैया, मैं आपके पैरों पड़ती हूं। आप यह इरादा तर्क कर दीजिए, और मदीने में रसूल की

क़ब्र से लगे हुए ज़िंदगी बसर कीजिए, और अपनी गर्दन पर इस्लाम की तबाही का इल्ज़ाम न लीजिए।

हुसैन : जैनब, ऐसी बातों पर तुफ़ है ! जब तक ज़मीन और आसमान क़ायम है, मैं यज़ीद की बैयत नहीं मंजूर कर सकता। क्या तुम समझती हो कि मैं ग़लती पर हूं ?

जैनब : नहीं भैया, आप ग़लती पर नहीं हैं। अल्लाहताला अपने रसूल के बेटे को ग़लत रास्ते पर नहीं ले जा सकता, मगर आप जानते हैं कि ज़माने का रंग बदला हुआ है। ऐसा न हो, लोग आपके ख़िलाफ़ उठ खड़े हों।

हुसैन : बहन, इंसान सारी दुनिया के ताने बर्दाश्त कर सकता है, पर अपने ईमान का नहीं। अगर तुम्हारा यह ख़याल है कि मेरे बैयत न लेने से इस्लाम में तफ़र्क़ा पड़ जाएगा, तो यह समझ लो कि इत्तिफ़ाक़ कितनी ही अच्छी चीज़ हो, लेकिन रास्ती उससे कहीं अच्छी है। रास्ती को छोड़कर मेल को क़ायम रखना वैसा ही है, जैसे जान निकल जाने के बाद जिस्म क़ायम रखना। रास्ती क़ौम की जान है, उसे छोड़कर कोई क़ौम बहुत दिनों तक ज़िंदा नहीं रह सकती। इस बारे में मैं अपनी राय क़ायम कर चुका, अब तुम लोग मुझे रुख़सत करो। जिस तरह मेरी बैयत से इस्लाम का वक़ार मिट जायगा, उसी तरह मेरी शहादत से उसका वक़ार क़ायम रहेगा। मैं इस्लाम की हुरमत पर निसार हो जाऊंगा।

शहरबानू : (रोकर) क्या आप हमें अपने क़दमों से जुदा करना चाहते हैं ?

अली अकबर : अब्बाजान, अगर शहीद ही होना है, तो हम भी वह दर्जा क्यों न हासिल करें ?

मुसलिम : या अमीर, हम आपके क़दमों पर निसार होना ही अपनी ज़िंदगी का हासिल समझते हैं। आप न ले जायंगे तो हम जबरन आपके साथ चलेंगे।

अली असगर : अब्बा, मैं आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ता था। आप यहां छोड़ देंगे, तो मैं नमाज़ कैसे पढूंगा ?

जैनब : भैया, क्या कोई उम्मीद नहीं ? क्या मदीने में रसूल के बेटे पर हाथ रखने वाला, रसूल की बेटियों की हुरमत पर जान देने वाला, हक़ पर सिर कटाने वाला कोई नहीं है ? इसी शहर से वह नूर फैला, जिससे सारा जहान रोशन हो गया। क्या वह हक़

की रोशनी इतनी जल्द ग़ायब हो गई ? आप यहीं से हिजाज़ और यमन की तरफ़ कासिदों को क्यों नहीं रवाना फरमाते ?

हुसैन : अफ़सोस है जैनब, खुदा को कुछ और ही मंजूर है। मदीने में हमारे लिए अब अमन नहीं है। यहां अगर हम आज़ादी से खड़े हैं, तो यह वलीद की शराफ़त है; वरना यज़ीद की फ़ौजों ने हमको घेर लिया होता। आज मुझे सुबह होते-होते निकल जाना चाहिए। यज़ीद को मेरे अज़ीजों से दुश्मनी नहीं, उसे ख़ौफ़ सिर्फ मेरा है। तुम लोग मुझे यहां से रुख़सत करो। मुझे यक़ीन है कि यज़ीद तुम लोगों को तंग न करेगा। उसके दिल में चाहे न हो, मगर मुसलिम के दिल में गैरत बाक़ी है। वह रसूल की बहू-बेटियों की आबरू लुटते देखेंगे, तो उनका खून ज़रूर गर्म हो जायगा।

जैनब : भैया, यह हरगिज़ न होगा। हम भी आपके साथ चलेंगी। अगर इस्लाम का बेटा अपनी दिलेरी से इस्लाम का वक़ार क़ायम रखेगा, तो हम अपने सब्र से, जब्त से और बर्दाश्त से उसकी शान निभाएंगे। हम पर जिहाद हराम है, लेकिन हम मौक़ा पड़ने पर मरना जानती हैं। रसूल पाक की क़सम, आप हमारी आंखों में आंसू न देखेंगे, हमारे लबों से फ़रियाद न सुनेंगे, और हमारे दिलों से आह न निकलेगी। आप हक़ पर जान देकर इस्लाम की आबरू रखना चाहते हैं, तो हम भी एक बेदीन और बदकार की हिमायत में रहकर इस्लाम के नाम पर दाग़ लगाना नहीं चाहतीं।

सिपाहियों का एक दस्ता सड़क पर आता दिखाई पड़ता है।

हुसैन : अब्बास, यज़ीद के आदमी हैं। वलीद ने भी दग़ा दी। आह ! हमारे हाथों में तलवार भी नहीं। ऐ खुदा मदद !

अब्बास : कलाम पाक की क़सम, ये मरदूद आपके क़रीब न आने पाएंगे।

जैनब : भैया, तुम सामने से हट जाओ।

हुसैन : जैनब, घबराओ मत, आज मैं दिखा दूंगा कि अली का बेटा कितनी दिलेरी से जान देता है।

अब्बास बाहर निकलकर फ़ौज के सरदार से—

अब्बास : ऐ सरदार, किसकी बदनसीबी है कि तू उसके नज़दीक जा रहा है ?

सरदार : या हज़रत, हमें शहर में गश्त लगाने का हुक्म हुआ है कि कहीं बाग़ी तो जमा नहीं हो रहे हैं।

हुसैन : अब देर करने का मौक़ा नहीं है। चलूं, अम्मांजान से रुख़सत हो लूं। **(फ़ातिमा की क़ब्र पर जाकर)** ऐ मादरेजहान, तेरा बदनसीब बेटा—जिसे तूने गोद में प्यार से खिलाया था, जिसे तूने सीने से दूध पिलाया था—आज तुझसे रुख़सत हो रहा है, और फिर शायद उसे तेरी जियारत नसीब न हो। **(रोते हैं।)**

मदीने के सब नगरवासियों का प्रवेश।

सब : ऐ अमीर, आप हमें अपने क़दमों से क्यों जुदा करते हैं ? हम आपका दामन न छोड़ेंगे। आपके क़दमों से लगे हुए गुरबत की ख़ाक छानना इससे कहीं अच्छा है कि एक बदकार और ज़ालिम ख़लीफ़ा की सख्तियां झेलें। आप नबी के ख़ानदान के आफ़ताब हैं। उसकी रोशनी से दूर होकर हम अंधेरे में ख़ौफ़नाक जानवरों से क्योंकर अपनी जान बचा सकेंगे ? कौन हमें हक़ और दीन की राह सुझाएगा ? कौन हमें अपनी नसीहतों का अमृत पिलाएगा? हमें अपने क़दमों से जुदा न कीजिए। **(रोते हैं।)**

हुसैन : मेरे प्यारे दोस्तो, मैं यहां से खुद नहीं जा रहा हूं। मुझे तक़दीर लिए जा रही है। मुझे वह दर्दनाक नज़ारा देखने की ताब नहीं है कि मदीने की गलियां इस्लाम और रसूल के दोस्तों के ख़ून से रंगी जायं। मैं प्यारे मदीने को उस तबाही और ख़ून से बचाना चाहता हूं। तुम्हें मेरी यही आख़िरी सलाह है कि इस्लाम की हुरमत क़ायम रखना, माल और ज़र के लिए अपनी क़ौम और अपनी मिल्लत से बेवफ़ाई न करना, खुदा के नज़दीक इससे बड़ा गुनाह नहीं है। शायद हमें फिर मदीने के दर्शन न हों, शायद हम फिर इन सूरतों को न देख सकें। हां, शायद फिर हमें उन बुजुर्गों की सूरत देखनी नसीब न हो, जो हमारे नाना के शरीक और हमदर्द रहे, जिनमें से कितनों ही ने मुझे गोद में खेलाया है। भाइयो, मेरी ज़बान में इतनी ताक़त नहीं है कि उस रंज और ग़म को ज़ाहिर कर सकूं, जो मेरे सीने में दरिया की

लहरों की तरह उठ रहा है। मदीने की ख़ाक से जुदा होते हुए जिगर के टुकड़े हुए जाते हैं। आपसे जुदा होते आंखों में अंधेरा छा जाता है, मगर मजबूर हूं। खुदा की और रसूल की यही मंशा है कि इस्लाम का पौधा मेरे ख़ून से सींचा जाए, रसूल की खेती रसूल की औलाद के ख़ून से हरी हो, और मुझे उनके सामने सिर झुकाने के सिवा और कोई चारा नहीं।

नागरिक : या अमीर, हमें अपने क़दमों से जुदा न कीजिए। हाय अमीर, हाय रसूल के बेटे, हम किसका मुंह देखकर जिएंगे। हम क्योंकर सब्र करें, अगर आज न रोएं, तो फिर किस दिन के लिए आंसुओं को उठा रखें ? आज से ज्यादा मातम का और कौन दिन होगा ?

हुसैन : **(मुहम्मद की क़ब्र पर जाकर)** ऐ रसूल-खुदा, रुख़सत। आपका नवासा मुसीबत में गिरफ्तार है। उसका बेड़ा पार कीजिए।

सब लोग मुझे छोड़के पहले ही सिधारे,
मिलता नहीं आराम नवासे को तुम्हारे।
ख़ादिम को कोई अमन की अब जा नहीं मिलती,
राहत कोई साइत मेरे मौला, नहीं मिलती।
दु:ख कौन-सा और कौन-सी ईज़ा नहीं मिलती,
हैं आप जहां, राह वह मुझको नहीं मिलती।
दुनिया में मुझे कोई नहीं और ठिकाना,
आज आख़िरी रुख़सत को गुलाम आया है, नाना !
बच जाऊं जो, पास अपने बुला लीजिए नाना,
तुरबत में नवासे को छिपा लीजिए नाना।

भाई की क़ब्र पर जाकर

सुन लीजिए शब्बीर की रुख़सत है बिरादर,
हज़रत को तो पहलू हुआ अम्मां का मयस्सर।
क़ब्रें भी जुदा होंगी यहां अब तो हमारी !
देखें हमें ले जाय कहां ख़ाक़ हमारी !

मैं नहीं चाहता कि तेरे साथ एक चिउंटी की भी जान खतरे में पड़े। अपने अज़ीजों से, अपनी मस्तूरात से, अपने दोस्तों से यही सवाल है कि मेरे लिए ज़रा भी ग़म

न करो, मैं वहीं जाता हूं, जहां खुदा की मर्ज़ी लिए जाती है।

अब्बास : या हज़रत, खुदा के लिए हमारे ऊपर यह सितम न कीजिए। हम जीते-जी कभी आपसे जुदा न होंगे।

जैनब : भैया, मेरी जान तुम पर फिदा हो। अगर औरतों को तुमने छोड़ दिया, तो लौटकर उन्हें जीता न पाओगे। तुम्हारी तीनों फूल-सी बेटियां ग़म से मुरझाई जा रही हैं। शहरबानू का हाल देख ही रहे हो। तुम्हारे बग़ैर मदीना सूना हो जायगा, और घर की दीवारें हमें फाड़ खायंगी। हमारे ऊपर इस बदनामी का दाग़ न लगाओ कि मुसीबत में रसूल की बेटियों ने अपने सरदार से बेवफ़ाई की। तुम्हारे साथ के फ़ाके यहां के मीठे लुक़मों से ज़्यादा मीठे मालूम होंगे। जिस्म को तकलीफ़ होगी, पर दिल को तो इत्मीनान रहेगा।

अली अकबर : अब्बा, मैं इस मुसीबत का सारा मज़ा आपको अकेले न उठाने दूंगा। इसमें मेरा भी हिस्सा है। कौन हमारे नेजों की चमक देखेगा ? किसे हम अपनी दिलेरी के जौहर दिखाएंगे ? नहीं, हम यह ग़म की दावत आपको अकेले न खाने देंगे।

अली असगर : अब्बा, मुझे अपने आगे घोड़े पर बिठाकर रास मेरे हाथों में दे दीजिएगा। मैं उसे ऐसा दौड़ाऊंगा कि हवा भी हमारी गर्द को न पहुंचेगी।

हुसैन : हाय, अगर मेरी तक़दीर की मंशा है कि मेरे ज़िगर के टुकड़े मेरी आंखों के सामने तड़पें, तो मेरा क्या बस है ! अगर खुदा को यही मंजूर है कि मेरा बाग़ मेरी नज़रों के सामने उजाड़ा जाय, तो मेरा क्या चारा है ! खुदा गवाह रहना कि इस्लाम की इज्जत पर रसूल की औलाद कितनी बेदरदी से क़ुरबान की जा रही है !

छठा दृश्य

समय—संध्या। कूफ़ा शहर का एक मकान। अब्दुल्लाह, क़मर, वहब बातें कर रहे हैं।

अब्दुल्लाह : बड़ा ग़ज़ब हो रहा है। शामी फ़ौज के सिपाही शहर वालों को

पकड़-पकड़ ज़ियाद के पास ले जा रहे हैं, और वहां जबरन उनसे बैयत ली जा रही है।

क़मर : तो लोग क्यों उसकी बैयत क़बूल करते हैं ?

अब्दुल्लाह : न करें, तो क्या करें। अमीरों और रईसों को तो जागीर और मंसब की हवस ने फोड़ लिया। बेचारे ग़रीब क्या करें। नहीं बैयत लेते, तो मारे जाते हैं, शहरबदर किए जाते हैं। जिन गिने-गिनाए रईसों ने बैयत नहीं ली, उन पर भी सख्ती करने की तैयारियां हो रही हैं। मगर ज़ियाद चाहता है कि कूफ़ा वाले आपस में ही लड़ जायं। इसलिए उसने अब तक कोई सख्ती नहीं की है।

क़मर : यज़ीद को ख़िलाफ़त का कोई हक़ तो है नहीं, महज़ तलवार का ज़ोर है। शरा के मुताबिक़ हमारे ख़लीफ़ा हुसैन हैं।

अब्दुल्लाह : यह तो ज़ाहिर ही है, मगर यहां के लोगों को तो जानते हो न। पहले तो ऐसा शोर मचाएंगे, गोया जान देने पर आमादा हैं, पर ज़रा किसी ने लालच दिखलाया, और सारा शोर ठंडा हो गया ! गिने हुए आदमियों को छोड़कर सभी बैयत ले रहे हैं।

क़मर : तो फिर हमारे ऊपर भी तो वही मुसीबत आनी है।

अब्दुल्लाह : इसी फ़िक्र में तो पड़ा हूं। कुछ सूझता ही नहीं।

क़मर : सूझना ही क्या है। यज़ीद की बैयत हरगिज़ मत क़बूल करो।

अब्दुल्लाह : अपनी खुशी की बात नहीं है।

क़मर : क्या होगा ?

अब्दुल्लाह : वजीफ़ा बंद हो जायेगा।

क़मर : ईमान के सामने वजीफ़े की कोई हस्ती नहीं।

अब्दुल्लाह : जागीर ज्यादा नहीं, तो परवरिश तो हो ही जाती है। वह फ़ौरन छिन जाएगी। कितनी मेहनत से हमने मेवों का बाग़ लगाया है। यह कब गवारा होगा कि हमारी मेहनत का फल दूसरे खाएं। कलाम पाक की क़सम, मेरे बाग़ पर बड़े-बड़ों को रश्क है।

क़मर : बाग़ के लिए ईमान बेचना पड़े, तो बाग़ की तरफ़ आंख उठाकर देखना भी गुनाह है।

अब्दुल्लाह : क़मर, मामला इतना आसान नहीं है, जितना तुमने समझ रखा है। जायदाद के लिए इंसान अपनी जान देता है, भाई-भाई दुश्मन हो जाते हैं, बाप-बेटों में, मियां-बीवी में तिफ़ाक़ पड़

जाता है। अगर उसे लोग इतनी आसानी से छोड़ सकते, तो दुनिया जन्नत बन जाती।

क़मर : यह सही है, मगर ईमान के मुक़ाबले जायदाद ही की नहीं, ज़िंदगी की भी कोई हस्ती नहीं। दुनिया की चीज़ें एक दिन छूट जाएंगी, मगर ईमान तो हमेशा हाथ रहेगा।

अब्दुल्लाह : शहरबदर होना पड़ा, तो यह मकान हाथ से निकल जाएगा। अभी पिछले साल बनकर तैयार हुआ है। देहातों में, जंगल में बद्दुओं की तरह मारे-मारे घूमना पड़ेगा। क्या जला-वतनी कोई मामूली चीज़ है ?

क़मर : दीन के लिए लोगों ने सल्तनतें तर्क कर दी हैं, सिर कटाए हैं, और हंसते-हंसते सूलियों पर चढ़ गए हैं। दीन की दुनिया पर हमेशा जीत रही है, और रहेगी।

अब्दुल्लाह : वहब, अपनी अम्मांजान की बातें सुन रहे हो ?

वहब : जी हां, सुन रहा हूं, और दिल में फ़ख्र कर रहा हूं कि मैं ऐसी दीन-परवर मां का बेटा हूं। मैं आपसे सच अर्ज़ करता हूं कि कीस, हज्जाज, हुर, अशअस जैसे रऊसा को बैयत क़बूल करते देखकर मैं भी नीम राज़ी हो गया था, पर आपकी बातों ने हिम्मत मज़बूत कर दी। अब मैं सब कुछ झेलने को तैयार हूं।

अब्दुल्लाह : वहब, दीन हम बूढ़ों के लिए है, जिन्होंने दुनिया के मज़े उठा लिए। जवानों के लिए दुनिया है। तुम अभी शादी करके लौटे हो, बहू की चूड़ियां भी मैली नहीं हुईं। जानते हो वह एक रईस की बेटी है, नाजों में पली है, क्या उसे भी ख़ानावीरानी की मुसीबतों में डालना चाहते हो? हम और क़मर तो हज करने चले जाएंगे। तुम मेरी जायदाद के वारिस हो, मुझे यह तस्कीन रहेगा कि मेरी मिहनत रायगां नहीं हुई। तुमने मां की नसीहत पर अमल किया, तो मुझे बेहद सदमा होगा। पहले जाकर नसीम से पूछो तो ?

वहब : मुझे अपने ईमान के मामले में किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं। मुझे यक़ीन है कि ख़िलाफ़त के हक़दार हज़रत हुसैन हैं। यज़ीद की बैयत कभी न क़बूल करूंगा; जायदाद रहे या न रहे, जान रहे या न रहे।

क़मर : बेटा, तेरी मां तुझ पर फ़िदा हुई, तेरी बातों ने दिल खुश कर

दिया। आज मेरी-जैसी खुशनसीब मां दुनिया में न होगी। मगर बेटा, तुम्हारे अब्बाजान ठीक कहते हैं। नसीमा से पूछ लो, देखो, वह क्या कहती है। मैं नहीं चाहती कि हम लोगों की दीन-परवरी के बाइस उसे तकलीफ़ हो, और जंगलों की ख़ाक छाननी पड़े। उसकी दिलजोई करना तुम्हारा फ़र्ज़ है।

वहब : आप फ़रमाती हैं, तो मैं उससे भी पूछ लूंगा। मगर मैं साफ़ कहे देता हूं कि उसकी रज़ा का गुलाम न बनूंगा। अगर उसे दीन के मुक़ाबले में ऐश व आराम ज़्यादा पसंद है, तो शौक से रहे, लेकिन मैं बैयत की जिल्लत न उठाऊंगा।

दरवाज़ा खोलकर बाहर चला जाता है।

सातवां दृश्य

अरब का एक गांव—एक विशाल मंदिर बना हुआ है, तालाब है, जिसके पक्के घाट बने हुए हैं, मनोहर बग़ीचा, मोर, हरिण, गाय आदि पशु-पक्षी इधर-उधर विचर रहे हैं। साहसराय और उनके बंधु तालाब के किनारे संध्या-हवन, ईश्वर-प्रार्थना कर रहे हैं।

गाना (स्तुति)

हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।
अखिलेश, अनंत विधाता हो, मंगलमय, मोदप्रदाता हो
भय-भंजन शिव, जन-त्राता हो, अविनाशी अद्भुत ज्ञाता हो
तेरा ही एक सहारा हो।
हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।
बल, वीर्य, पराक्रम त्वेष रहे, सद्धर्म धरा पर शेष रहे
श्रुति-भानु, एकता-वेश रहे, धन-ज्ञान-कला-युत देश रहे
सर्वत्र प्रेम की धारा हो।
हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।
भारत तन-मन-धन सारा हो, उसकी सेवा सब द्वारा हो
निज मान-समान दुलारा हो, सबकी आंखों का तारा हो
जीवन सर्वस्य हमारा हो।
हरि, धर्म प्राण से प्यारा हो।

साहसराय प्रार्थना करते हैं।

साहसराय : भगवान्, हमें शक्ति प्रदान कीजिए कि सदैव अपने व्रत का पालन करें। अश्वत्थामा की संतान का, निरंतर सेवा-मार्ग का अवलंबन करें, रक्त सदैव दीनों की रक्षा में बहता रहे, उनके सिर सदैव न्याय और सत्य पर बलिदान होते रहें। और, प्रभो ! वह दिन आए कि हम प्रायश्चित-संस्कार में मुक्त होकर तपोभूमि भारत को प्रयाण करें, और ऋषियों के सेवा-सत्कार में मग्न होकर अपना जीवन सफल करें। हे नाथ, हमें सद्बुद्धि दीजिए कि निरंतर कर्म-पथ पर स्थिर रहें, और उस कलंक-कालिमा को, जो हमारे आदि पुरुष ने हमारे मुख पर लगा दी है, अपनी सुकीर्ति से धोकर अपना मुख उज्ज्वल करें। जब हम स्वदेश-यात्रा करें, तो हमारे मुख पर आत्मगौरव का प्रकाश हो, हमारे स्वदेश-बंधु सहर्ष हमारा स्वागत करें, और हम वहां पतित बनकर नहीं, समाज के प्रतिष्ठित अंग बनकर जीवन व्यतीत करें।

सेवक का प्रवेश।

सेवक : दीनानाथ, समाचार आया है, अमीर मुआबिया के बेटे यज़ीद ने ख़िलाफ़त पर अधिकार कर लिया।

साहसराय : यज़ीद ने ख़िलाफ़त पर अधिकार कर लिया ! यह कैसे ? उसका ख़िलाफ़त पर क्या स्वत्व था ? ख़िलाफ़त तो हज़रत अली के बेटे इमाम हुसैन को मिलनी चाहिए थी।

हरजसराय : हां, हक़ तो हुसैन ही का है। मुआबिया से पहले से इसी शर्त पर संधि हुई थी।

सिंहदत्त : यज़ीद की शरारत है। मुझे मालूम है, वह अभिमानी, तामसी और विलास-भोगी मनुष्य है। विषय-वासना में मग्न रहता है। हम ऐसे दुर्जन की ख़िलाफ़त कदापि स्वीकार नहीं कर सकते।

पुण्यराज : **(सेवक से)** कुछ मालूम हुआ, हुसैन क्या कर रहे हैं ?

सेवक : दीनबंधु, वह मदीना से भागकर मक्का चले गए हैं।

सिंहदत्त : यह उनकी भूल है, तुरंत मदीनावासियों को संगठित करके यज़ीद के नाज़िम का वध कर देना चाहिए था, इसके पश्चात् अपनी ख़िलाफ़त की घोषणा कर देनी थी। मदीना को छोड़कर उन्होंने अपनी निर्बलता स्वीकार कर ली।

रामसिंह : हुसैन धर्मनिष्ठ पुरुष हैं। अपने बंधुओं का रक्त नहीं बहाना

चाहते।

ध्रुवदत्त : जीव-हिंसा महापाप है। धर्मात्मा पुरुष कितने ही संकट में पड़े, किंतु अहिंसा-व्रत को नहीं त्याग सकता।

भीरुदत्त : न्याय-रक्षा के लिए हिंसा करना पाप नहीं। जीव-हिंसा न्याय-हिंसा से अच्छी है।

साहसराय : अगर वास्तव में यज़ीद ने ख़िलाफ़त का अपहरण कर लिया है, तो हमें अपने व्रत के अनुसार न्याय-पक्ष ग्रहण करना पड़ेगा। यज़ीद शक्तिशाली है, इसमें संदेह नहीं; पर हम न्याय-व्रत का उल्लंघन नहीं कर सकते। हमें उसके पास दूत भेजकर इसका निश्चय कर लेना चाहिए कि हमें किस पथ का अनुसरण करना उचित है।

सिंहदत्त : जब यह सिद्ध है कि उसने अन्याय किया, तो उसके पास दूत भेज़कर विलंब क्यों किया जाए ? हमें तुरंत उससे संग्राम करना चाहिए। अन्याय को भी अपने पक्ष का समर्थन करने के लिए युक्तियों का अभाव नहीं होता।

हरजसराय मैं पूछता हूं, अभी समर की बात ही क्यों की जाए। राजनीति के तीनों सिद्धांतों की परीक्षा कर लेने के पश्चात् ही शस्त्र ग्रहण करना चाहिए। विशेषकर इस समय हमारी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं है कि हम आत्म-गौरव की दुहाई देते हुए रण-क्षेत्र में कूद पड़ें। शस्त्र-ग्रहण सर्वदा अंतिम उपाय होना चाहिए।

सिंहदत्त : धन आत्मा की रक्षा के लिए ही है।

हरजसराय : आत्मा बहुत ही व्यापक शब्द है। धन केवल धर्म की रक्षा के लिए है।

रामसिंह : धर्म की रक्षा रक्त से नहीं होती, शील, विनय, सदुपदेश, सहानुभूति, सेवा, ये सब उसके परीक्षित साधन हैं, और हमें स्वयं इन साधनों की सफलता का अनुभव हो चुका है।

सिंहदत्त : राजनीति के क्षेत्र में ये साधन उसी समय सफल होते हैं, जब शस्त्र उनके सहायक हों। अन्यथा युद्ध-लाभ से अधिक उनका मूल्य नहीं होता।

साहसराय : हमारा कर्त्तव्य अपनी वीरता का प्रदर्शन अथवा राज्य-प्रबंध की निपुणता दिखाना नहीं है, न हमारा अभीष्ट अहिंसा-व्रत का पालन करना है। हमने केवल अन्याय के दमन करने का व्रत

धारण किया है, चाहे उसके लिए किसी उपाय का अवलंबन करना पड़े। इसलिए सबसे पहले हमें दूतों द्वारा यज़ीद के मनोभाव का परिचय प्राप्त करना चाहिए। उसके पश्चात् हमें निश्चय करना होगा कि हमारा कर्त्तव्य क्या है। मैं रामसिंह और भीरुदत्त से अनुरोध करता हूं कि ये आज ही शाम को यात्रा पर अग्रसर हो जाएं।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

हुसैन का क़ाफ़िला मक्का के निकट पहुंचता है। मक्का की पहाड़ियां नज़र आ रही हैं। लोग काबा की मस्जिद के द्वार पर हुसैन का स्वागत करने को खड़े हैं।

हुसैन : यह लो, मक्क़ाशरीफ आ गया। यही वह पाक मुक़ाम है, जहां रसूल ने दुनिया में क़दम रखे। ये पहाड़ियां रसूल के सिजदों से पाक और उनके आंसुओं से रोशन हो गई हैं। अब्बास, काबा को देखकर मेरे दिल में अजीब-सी धड़कन हो रही है, जैसे कोई ग़रीब मुसाफ़िर एक मुद्दत के बाद अपने वतन में दाख़िल हो।

सब लोग घोड़ों से उतर पड़ते हैं।

जुबेर : आइए हज़रत हुसैन, हमारे शहर को अपने क़दमों से रोशन कीजिए।

हुसैन सबसे गले मिलते हैं।

हुसैन : मैं इस मेहमाननवाजी के लिए आपका मशकूर हूं।

जुबेर : हमारी जानें आप पर निसार हों। आपको देखकर हमारी आंखों में नूर आ गया है, और हमारे कलेजे ठंडे हो गए हैं। खुदा गवाह है, आपने रसूल पाक ही का हुलिया पाया है। आइए, काबा हाथ फैलाए आपका इंतज़ार कर रहा है।

सब लोग मस्जिद में दाखिल होते हैं। स्त्रियां हरम में जाती हैं।

अली असगर : अब्बा, इन पहाड़ों पर से तो हमारा घर दिखाई देता होगा ?

हुसैन : नहीं बेटा, हम लोग घर से बहुत दूर आ गए हैं। तुमने कुछ नाश्ता नहीं किया ?

अली असगर : मुझे भूख नहीं है। पहले मालूम होती थी, लेकिन अब ग़ायब हो गई।

हुसैन : तो तुम यहीं रहो कि तुम्हें भूख ही न लगे।

हबीब : या हज़रत, आप भी ज़रा आराम फ़रमा लें। हमारी बहुत दिनों से तमन्ना है कि आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ पढ़ें।

जुबेर और अब्बास को छोड़कर सब लोग वजू करने चले जाते हैं।

हुसैन : क्यों जुबेर, यहां के लोगों के क्या ख़यालात हैं ?

जुबेर : कुछ न पूछिए, मुझे यहां की क़ैफ़ियत बयान करते शर्म आती है। यों ज़ाहिर में तो सब-के-सब आप पर निसार होने के लिए क़सम खाएंगे, बैयत लेने को भी तैयार नज़र आयेंगे, मगर दिल किसी का भी साफ़ नहीं।

हुसैन : क्या दग़ा का अंदेशा है ?

जुबेर : यह तो मैं नहीं कह सकता, क्योंकि कोई ऐसी बात देखने में नहीं आई, लेकिन इधर-उधर की बातों से पता चलता है कि इनकी नीयत साफ़ नहीं। अजब नहीं कि यज़ीद दौलत और जागीर का लालच देकर इन्हें मिला ले। उस वक्त ये ज़रूर आपके साथ दग़ा कर जाएंगे। मैं तो आपको भी यही सलाह दूंगा कि आप मदीने वापस जाएं।

हुसैन : मुझे तो इनकी तरफ़ से दग़ा का गुमान नहीं होता। दग़ा में एक झिझक होती है, जो यहां किसी के चेहरे पर नज़र नहीं आती। दग़ा उसी तरह शक पैदा कर देती है, जैसे हमदर्दी एतबार पैदा करती है।

जुबेर : मगर आपको यह भी तो मालूम होगा कि दग़ा गिरगिट की तरह कभी अपने असली रंग में दिखाई नहीं देती। वह हाथों का बोसा लेती है, पैरों तले आंखें बिछाती है, और बातों से शक्कर बरसाती है।

अब्बास : दोस्त बनकर सलाह देती है, खुद किनारे पर रहती है, पर दूसरों को दरिया में ढकेल देती है। आप हंसती है, पर दूसरों को

रुलाती है और अपनी सूरत को हमेशा जाहिद के लिबास में छिपाए रहती है।

जुबेर : खुदा पाक की क़सम, आप मेरी तरफ़ इशारा कर रहे हैं। अगर आप जानते कि मैं हज़रत हुसैन की कितनी इज्ज़त करता हूं तो मुझ पर दग़ा का शक न करते। अगर मैं यज़ीद का दोस्त होता, तो अब तक दौलत से मालामाल हो जाता। अग़र खुद बैयत की नीयत रखता, तो अब तक ख़ामोश न बैठा रहता। आप मुझ पर यह शुबहा कर बड़ा सितम कर रहे हैं।

हुसैन : अब्बास, मुझे तुम्हारी बातें सुनकर बड़ी शर्म आती है। जुबेर सबसे अलग-विलग रहते हैं। किसी के बीच में नहीं पड़ते। एकांत में बैठने वाले आदमियों पर अक्सर लोग शुबहा करने लगते हैं। तुम्हें शायद यह नहीं मालूम है कि दग़ा गोशे से सोहबत को कहीं ज्यादा पसंद करती है।

हबीब का प्रवेश।

हबीब : या हज़रत, मुझे अभी मालूम हुआ कि आपके तशरीफ़ लाने की ख़बर यज़ीद के पास भेज दी गई है, और मरवान यहां का नाज़िम बनाकर भेजा जा रहा है।

हुसैन : मालूम होता है, मरवान हमारी जान लेकर ही छोड़ेगा। शायद हम ज़मीन के पर्दे में चले जाएं, तो वहां भी हमें आराम न लेने देगा।

अब्बास : यहां उसे उसकी शामत ला रही है। कलाम पाक की क़सम, वह यहां से जान सलामत न ले जाएगा। काबा में खून बहाना हराम ही क्यों न हो, पर ऐसे रूह-स्याह का ख़ून यहां भी हलाल है।

हबीब : वलीद माजूल कर दिया गया। यहां का आलिम मदीने जा रहा है।

हुसैन : वलीद की माजूली का मुझे सख्त अफ़सोस है। वह इस्लाम का सच्चा दोस्त था। मैं पहले ही समझ गया था कि ऐसे नेक और दीनदार आदमी के लिए यज़ीद के दरबार में जगह नहीं है। अब्बास, वलीद की माजूली मेरी शहादत की दलील है।

हबीब : यह भी सुना है कि यज़ीद ने अपने बेटे को, जो आपका खैर-ख़्वाह है, नज़रबंद कर दिया है। उसने खुल्लम-खुल्ला यज़ीद

की बेइंसाफ़ी पर एतराज़ किया था। यहां तक कहा था कि ख़िलाफ़त पर तुम्हारा कोई हक़ नहीं है। यज़ीद यह सुनकर आग-बबूला हो गया। उसे क़त्ल करना चाहता था, लेकिन रूमी ने बचा लिया।

अब्बास : ऐसे ज़ालिम का क़त्ल कर देना ऐन सबाब है।

हुसैन : अब्बास, यह खुदा की मंशा की दूसरी दलील है। यह उसकी बदनसीबी है कि तक़दीर ने उसे मेरी शहादत का वसीला बनाया है। अपने बेटे को क़ैद करने से किसी को खुशी नहीं हो सकती। जो आदमी अपने बेटे की जबान से अपनी तौहीन सुने, उससे ज्यादा बदनसीब दुनिया में और कौन होगा ?

जुबेर : मेरे ख़याल में अगर आप कूफ़े की तरफ़ जायं, तो वहां आपको मददगारों की कमी न रहेगी।

हबीब : या हज़रत, मैं कूफ़ा के क़रीब का रहने वाला हूं, और कूफ़ियों की आदत से खूब वाकिफ़ हूं। दग़ा उनकी ख़मीर में मिली हुई है। आप उनसे बचे रहिएगा। वे आपके पास अपने बैयत के पैगाम भेजेंगे। उनके क़ासिद-पर-क़ासिद आयंगे, और आपको चैन न लेने देंगे। उनके ख़तों से ऐसा मालूम होगा कि सारा मुल्क आप पर फ़िदा होने के लिए तैयार है। पर आप उनकी बातों में हरग़िज न आइएगा। भूलकर भी कूफ़ा की तरफ़ रुख न कीजिएमा। मेरी आपसे यही अर्ज़ है कि क़ाबा से बाहर क़दम न रखिएगा, जब तक आप यहां रहेंगे, आप सब बलाओं से बचे रहेंगे। कूफ़ा वाले वफ़ादारी से उतना ही महरूम हैं, जैसे चिड़िया दूध से।

हुसैन : मैं कूफ़ा वालों से खूब वाकिफ़ हूं। तुमने और भी ख़बरदार कर दिया, इसके लिए मैं तुम्हारा मशकूर हूं।

हबीब : मैं यही अर्ज़ करने के लिए आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूं। अगर वे लोग रोते हुए आकर आपके पैरों पर गिर पड़ें, तो भी आप उन्हें ठुकरा दीजिएगा। इसमें शक नहीं कि वे दिलेर हैं, दीनदार हैं, मेहमान-नवाज़ हैं, पर दौलत के गुलाम हैं। इस ऐब ने उनकी सारी खूबियों पर पर्दा डाल दिया है। वज़ीफ़े और जागीर के लालच और वजीफ़े तथा जागीर की जब्ती की खौफ़ उनसे ऐसे क़ौल करा सकता है, जिसकी इंसान से उम्मीद नहीं की जा सकती।

हुसैन : हबीब, मैं तुम्हारी सलाह को हमेशा याद रक्खूंगा।

जुबेर : हबीब, तुमने कूफ़ियों के बारे में जो कुछ कहा, वह बहुत कुछ दुरुस्त है, लेकिन तुम हज़रत हुसैन के दोस्त हो, तुमसे कहने में कोई खौफ़ नहीं कि मक्का वाले भी इस मामले में कूफ़ा वालों के ही भाई-बंद हैं। इनके क़ौल और फ़ेल का भी कोई एतबार नहीं। कूफ़े की आबादी ज्यादा है, वे अगर दिल से किसी बात पर आ जायं, तो यज़ीद के दांत खट्टे कर सकते हैं। मक्का की थोड़ी-सी आबादी अगर वफ़ादार भी रहे, तो उससे भलाई की कोई उम्मीद नहीं हो सकती। शाम की दो हज़ार फ़ौज इन्हें घेर लेने को क़ाफ़ी है। भलाई या बुराई किसी ख़ास मुल्क या क़ौम का हिस्सा नहीं होती। वही सिपाह जो एक बार मैदान में दिलेरी के जौहर दिखाती है, दूसरी बार दुश्मन को देखते ही भाग खड़ी होती है। इसमें सिपाह की ख़ता नहीं; उसके फ़ेल की ज़िम्मेदारी उसके सरदार पर है। वह अगर दिलेर है, तो सिपाह में दिलेरी की रूह फूंक सकता है; कम-हिम्मत है, तो सिपाह की हिम्मत को भी पस्त कर देगा। आप रसूल के बेटे हैं, आपको भी खुदा ने वही अक्ल और कमाल अता किया है। यह क्योंकर मुमकिन है कि आपकी सोहबत का उन पर असर न पड़े। कूफ़ा तो क्या, आप हक़ को भी रास्ते पर ला सकते हैं। मेरे ख़याल में आपको किसी से बदगुमान होने की ज़रूरत नहीं।

अब्बास : जुबेर, सलाह कितनी माक़ूल हो, लेकिन उसमें ग़रज की बू आते ही उसकी मंशा फ़ौत हो जाती है।

हुसैन : अगर तुम्हारा इरादा यहां लोगों से बैयत लेने का हो, तो शौक़ से लो, मैं ज़रा भी दख़ल न दूंगा।

जुबेर : या हज़रत, मेरा खुदा गवाह है कि मैं आपके मुक़ाबले में अपने को ख़िलाफ़त के लायक़ नहीं समझता। मैं यज़ीद की बैयत न करूंगा। लेकिन खुदा मुझे नजात न दे, अगर मेरे दिल में आपका मुक़ाबला करने का ख़याल भी आया हो।

हबीब : या इमाम, अगर तकलीफ़ न हो, तो सहन में तशरीफ लाइए। अज़ान हो चुकी है। लोग आपकी राह देख रहे हैं।

सब लोग नमाज़ पढ़ने जाते हैं।

दूसरा दृश्य

यज़ीद का दरबार—यज़ीद, जुहाक़, रूमी, हुर और अन्य सभासद बैठे हुए हैं। दो वेश्याएं शराब पिला रही हैं।

यज़ीद : तुममें से कोई बता सकता है, जन्नत कहां है ?

हुर : रसूल ने तो चौथे आसमान पर फ़रमाया।

शम्स : मैं चौथे-पांचवें आसमान का क़ायल नहीं। खुदा का फ़जल और करम की जन्नत है।

रूमी : खुदा की निगाह कोई कब्रिस्तान नहीं है कि वहीं मुर्दे दफ़न हों। जन्नत वहीं होगी, जहां लाशें दफ़न की जाती होंगी।

यज़ीद : उस्ताद, तुम भी चूक गए, फिर ज़ोर लगाना। अब की जुहाक़ की बारी है। कहिए शेख़जी, जन्नत कहां है ?

जुहाक़ : बतलाऊं ? इस शराब के प्याले में।

यज़ीद : पते पर पहुंचे, पर अभी कुछ कसर है। ज़रा और ज़ोर लगाओ।

जुहाक़ : उस प्याले में, जो किसी नाज़नीन के हाथ से मिले।

यज़ीद : लाना हाथ। बस, वही जन्नत है। मए-गुलफ़ाम हो, और किसी नाज़नीन का पंजए-मरजान हो। इस एक जन्नत पर रसूल की हज़ारों जन्नतें क़ुरबान हैं। अच्छा अब बताओ, दोज़ख़ कहां है ?

हुर : या ख़लीफ़ा, आपको दीन-हक़ की तौहिन मुनासिब नहीं।

यज़ीद : हुर, तुमने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया। आंखों की क़सम है, तुम मेरी मजलिस में बैठने के क़ाबिल नहीं हो। सारा मज़ा ख़ाक में मिला दिया। यज़ीद के सामने दीन का नाम लेना मना है। दीन उन मुल्लाओं के लिए है, जो मस्जिदों में पड़े हुए गोश्त की हड्डियों को तरसते हैं; दीन उनके लिए है, जो मुसीबतों के सबब से ज़िंदगी से बेज़ार हैं, जो मुहताज हैं, बेबस हैं, भूखों मरते हैं, जो गुलाम हैं, दुर्रे खाते हैं। दीन बूढ़े मर्दों के लिए, रांड औरतों के लिए, दिवालिए सौदागरों के लिए है। इस ख़याल से उनके आंसू पुंछते हैं, दिल को तस्कीन होती है। बादशाहों के लिए दीन नहीं है। उनकी नजात रसूल और खुदा के निगाह-करम की मुहताज नहीं। उनकी नजात उनके हाथों में है। दोस्तो, बतलाना, हमारा पीर कौन है ?

जुहाक : पीर मुगां (साक़ी)।

यज़ीद : लाना हाथ। हमारा पीर साक़ी है, जिसके दोस्त-करम से हमें

यह नियामत मयस्सर हुई है। अच्छा, कौन मेरे ख़याल का जवाब देता है। दोजख़ कहां है ?

शम्स : किसी सूदख़ोर की तोंद में।

यज़ीद : बिल्कुल ग़लत।

रूमी : ख़लीफ़ा के गुस्से में।

यज़ीद : **(मुस्कराकर)** इनाम के क़ाबिल जवाब है, मगर ग़लत।

कीस : किसी मुल्ला की नमाज़ में, जो ज़मीन पर माथा रगड़ते हुए ताकता रहता है कि कहीं से रोटियां आ रही हैं या नहीं।

यज़ीद : वल्ला, खूब जवाब है, मगर ग़लत।

ज़ुहाक़ : किसी नाज़नीन के रूठने में।

यज़ीद : ठीक-ठीक, बिल्कुल ठीक। लाना हाथ। दिल खुश हो गया। **(वेश्याओं से)** नरगिस, इस जवाब की दाद दो। जुहरा, शेख जी के हाथों में बोसा दो। वह गीत गाओ जिसमें शराब की बू हो, शराब का नशा हो, शराब की गर्मी हो।

नरगिस : आज ख़लीफ़ा से कोई बड़ा इनाम लूंगी।

गाती है।

हां खुले साक़ी दरे-मैख़ाना आज,
ख़ैर हो, भर दे मेरा पैमाना आज।
नाज़ करता झूमता मस्ताना वार,
अब्र आता है, सूए-मैख़ाना आज।
बोसए-लब हुस्न के सदके में दे,
ओ बुते तरसा हमें तरसा न आज।
इश्के-चश्मे-मस्त का देखो असर,
पांव पड़ता है मेरा मस्ताना आज।
मेरी सीरो की इलाही ख़ैर हो,
है बहुत मुज़तरे दिले दीवाना आज।
मुहतसिब का डर नहीं 'बिस्मिल' तुम्हें
सूए-मस्जिद जाते ही रंदाना आज।

एक कासिद का प्रवेश।

क़ासिद : अस्सलामअलेक या इनाम, बिन जियाद ने मुझे कूफ़ा से आपकी ख़िदमत में भेजा है।

यज़ीद : *ख़त लाया है ?*

क़ासिद : *ख़त इस ख़ौफ़ से नहीं लाया कि कहीं रास्ते में बाग़ियों के हाथ गिरफ्तार न हो जाऊं।*

यज़ीद : क्या पैग़ाम लाया है ?

क़ासिद : बिन ज़ियाद ने गुजारिश की है कि यहां के लोग हुजूर की बैयत क़बूल नहीं करते, और बग़ावत पर आमादा हैं। हुसैन बिन अली को अपनी बैयत लेने को बुला रहे हैं। तीन क़ासिद जा चुके हैं, मगर अभी तक हुसैन आने पर रज़ामंद नहीं हुए, अब शहर के कई रऊसा खुद जा रहे हैं।

यज़ीद : बिन ज़ियाद से कहो, जो आदमी मेरा बैयत न मंजूर करे, उसे क़त्ल कर दें। मुझसे पूछने की ज़रूरत नहीं।

रूमी : दुश्मन के साथ मुख्तलिफ़ रियायत की ज़रूरत नहीं। ज़ियाद को चाहिए कि तलवार का इस्तेमाल करने में देर न करे।

हुर : मुझे खौफ़ है कि बग़ावत हो जायगी।

रूमी : सज़ा और सख्ती यही हुकूमत के दो गुर हैं। मेरी उम्र बादशाहत के इंतज़ाम ही में गुज़री है, इससे बेहतर और कारगर कोई तदबीर न नजर आई। खुदा को भी अपना निज़ाम क़ायम रखने के लिए दोज़ख की ज़रूरत पड़ी। दोज़ख़ का खौफ़ ही दुनिया को आबाद रखे हुए है। उसका रहम और इंसाफ़ फ़क़ीरों और बेकसों की तसख़ीन के लिए है। ख़ौफ़ ही सल्तनत की बुनियाद है। नरमी से सल्तनत का बक़ार मिट जाता है। लोग सरक़श हो जाते हैं, फ़साद का बाज़ार गर्म हो जाता है। ज़ियाद से कहना, ऐसा क़त्ल करो कि देखने वालों के दिल थर्रा जाएं। तीरों से छिदवाओ, कुत्तों से नुचवाओ, ज़िंदा खाल खिंचवाओ, लाल लोहे से दाग़ दो। जो हुसैन का नाम ले, उसकी ज़बान तालू से खींच ली जाय। वह सज़ा नहीं, जो सख्त न हो।

यज़ीद : मैं इस हुक्म की ताईद करता हूं। जा, और फिर ऐसी छोटी-छोटी बातों के लिए मेरे आराम में बाधा न डालना।

क़ासिद का प्रस्थान।

हुसैन का कूफ़ा आना मेरे लिए मौत के आने से कम नहीं। क़सम है आंखों की, वह कूफ़ा न आने पाएगा, अगर मेरा बस है।

शम्स : ताज्जुब यही है कि कूफ़ा वालों ने तीन क़ासिद भेजे, और हुसैन जाने पर राजी नहीं हुए।

यज़ीद : तैयारियां कर रहा होगा। वलीद अगर मेरे चचा का बेटा न होता, तो मैं अपने हाथों से उसकी आंखें निकाल लेता। उसने जान-बूझकर हुसैन को मक्का जाने दिया। मदीना ही में क़त्ल कर देता, तो मुझे आज इतनी परेशानी क्यों होती ? कौन जाकर उसे गिरफ्तार कर सकता है ?

हुर : मैं इस ख़िदमत के लिए हाज़िर हूं।

यज़ीद : अगर तुम यह काम पूरा कर दिखाओ, तो इसके सिले में मैं तुम्हें एक सूबा दूंगा, जिस पर जन्नत भी फ़िदा हो। मेरी फ़ौज से एक हज़ार चुने हुए आदमी ले लो, और जब आफ़ताब निकले तो तुम्हें यहां से बीस फ़र्सख़ पर देखें।

हुर : इंशाअल्लाह !

यज़ीद : जैसे शिकारी शिकार की तलाश करता है, उसी तरह हुसैन की तलाश करना। बीहड़ रास्ते, अंधेरी घाटियां, घने जंगल, रेतीले मैदान, सब छान डालना। दिन की फ़िक्र नहीं, पर रात को अपनी आंखों से नींद को यों भगा देना, जैसे कोई दीनदार आदमी अपने दरवाज़े से कुत्ते को भगाता है।

हुर : हुक्म की तामील करूंगा। (स्वगत) यज़ीद बदकार है, बेदीन है, शराबी है; मगर ख़िलाफ़त को संभाले हुए तो है। हुसैन की बैयत मुसलमानों में दुश्मनी पैदा कर देगी, खून का दरिया बहा देगी, और ख़िलाफ़त का निशान मिटा देगी। ख़िलाफ़त क़ायम करना व देखना मेरा पहला फ़र्ज है। ख़लीफ़ा कौन और कैसा हो, यह बाद को देखा जायगा।

हुर का प्रस्थान।

यज़ीद : नरगिस, रिंदों में एक ज़ाहिद था, वह खिसका, अब कोई मस्त करने वाली ग़ज़ल गाओ। काश, सल्तनत की फ़िक्र न होती, तो तुम्हारे हाथों शराब के प्याले पीता उम्र गुज़ार देता।

नरगिस : ख़ौफ से कांपती हुई बुलबुल मस्ताना ग़ज़लें नहीं गा सकती। शाख पर है तो उड़ जाएगी, कफ़स में है तो मर जायगी। मैंने ख़ौफ़ से गुलशन को आबाद होते नहीं, वीरान देखा है। मेरा वतन कूफ़ा है, और मैं कूफ़ियों को खूब जानती हूं। उन पर

सख्तियां करके आप हुसैन को बुला रहे हैं। हुसैन कूफ़े में दाख़िल हो गए, तो फिर आप हमेशा के लिए इराक़ से हाथ धो बैठेंगे। कूफ़ा वाले रियायतों से, जागीरों से, वजीफ़ों से, थपकियों से क़ाबू में आ सकते हैं, सख्ती से नहीं। अगर एतबार न हो, तो मुझ पर अपनी ताक़त आज़मा लो। अगर तुम्हारी दसों उंगलियां दस तलवारें हो जाएं, तो भी आप मेरे मुंह से एक सुर भी नहीं निकलवा सकते। कूफ़ा मुसीबत में मुब्तिला है, मैं यहां नहीं रह सकती।

प्रस्थान।

तीसरा दृश्य

कूफ़ा की अदालत—क़ाज़ी और अमले बैठे हुए हैं। क़ाज़ी के सिर पर अमामा है, बदन पर कबा; कमर में कमरबंद, सिपाही नीचे कुरते पहने हुए हैं। अदालत से कुछ दूर पर एक मस्जिद है। मुक़दमे पेश हो रहे हैं। कई आदमी एक शरीफ की मुश्कें कसे लाते हैं।

क़ाज़ी : इसने क्या ख़ता की है ?

एक सिपाही : हुज़ूर, यह आदमी मस्जिद में खड़ा लोगों से कह रहा था कि किसी को फ़ौज में न दाख़िल होना चाहिए।

क़ाज़ी : गवाह है ?

एक आदमी : हुज़ूर, मैंने अपने कानों सुना है।

क़ाज़ी : इसे ले जाकर क़त्ल कर दो।

मुल्ज़िम : हुज़ूर, बिल्कुल बेगुनाह हूं। ये दोनों सिपाही मेरी दुकान से कपड़े उठाए लाते थे। मैंने छीन लिया, इस पर इन्होंने मुझे पकड़ लिया। हुज़ूर, मेरे पड़ोस के दुकानदारों से पूछ लें। बेगुनाह मारा जा रहा हूं। मेरे बाल-बच्चे तबाह हो जायंगे।

क़ाज़ी : इसे यहां से हटाओ।

मुल्ज़िम : (चिल्लाकर) या रसूल, तुम क़यामत के लिए मेरा और इस क़ातिल का फ़ैसला करना।

दोनों सिपाही उसे ले जाते हैं। मस्जिद की तरफ़ से आवाज़ें आती हैं।

आवाज़ें : 'या खुदा, हम बेसक तेरी बारगाह में फ़रियाद करने आए हैं,

हमें ज़ालिमों के फ़ंदे से आज़ाद कर।'

चार सिपाही पंद्रह-बीस आदमियों की मुश्कें कसे कोड़े मारते हुए लाते हैं।

क़ाज़ी : इन पर क्या इल्ज़ाम है ?

एक सिपाही : हुज़ूर, ये उन आदमियों में हैं, जिन्होंने हुसैन के पास क़ासिद भेजे थे।

क़ाज़ी : संगीन जुर्म है। कोई गवाह ?

एक सिपाही : हुज़ूर, कोई गवाह नहीं मिलता। शहर वालों के डर के मारे कोई गवाही देने पर राज़ी नहीं होता।

क़ाज़ी : इन्हें हिरासत में रखो, और जब गवाह मिल जायं, तो फिर पेश करो।

सिपाही उन आदमियों को ले जाते हैं। फिर दो सिपाही एक औरत को दोनों कलाइयां बांधे हुए, लाते हैं।

क़ाज़ी : इस पर क्या इल्जाम है ?

एक सिपाही : हुज़ूर, जब हम लोग उन मुल्ज़िमों को गिरफ्तार कर रहे थे, जो अभी गए हैं, तो इसने ख़लीफ़ा को ज़ालिम कहा था।

क़ाज़ी : गवाह ?

एक औरत : हुज़ूर, खुदा इसका मुंह न दिखाए, बड़ी बदज़बान है।

क़ाज़ी : इसका मकान जब्त कर लो, और इसके सिर के बाल नोच लो।

मुल्ज़िम औरत : खुदावंद, मेरी आंखें फूट जायं जो मैंने किसी को कुछ कहा हो। यह औरत मेरी सौत है। इसने डाह में मुझे फंसा दिया है। खुदा गवाह है कि बेक़सूर हूं।

क़ाज़ी : इसे फ़ौरन ले जाओ।

एक युवक : **(रोता हुआ)** या क़ाज़ी, मेरी मां पर इतना जुल्म न कीजिए। आप भी तो किसी मां के बच्चे हैं। अगर कोई आपकी मां के बाल नोचवाता, तो आपके दिल पर क्या गुज़रती ?

क़ाज़ी : इस मलऊन को पकड़कर दो सौ दुर्रे लगाओ।

कई सिपाही आदमियों के गोल को बांधे हुए लाते हैं।

इन्होंने खुदा के किस हुक्म को तोड़ा है ?

एक सिपाही : हुज़ूर, ये सब आदमी सामने वाली मस्जिद में खड़े होकर रो रहे थे।

क़ाज़ी : रोना कुफ़ है, इन सबों की आंखें फ़ोड़ डाली जायं।

सैकड़ों आदमी मस्जिद की तरफ़ से तलवारें और भाले लिए दौड़े आते हैं, और अदालत को घेर लेते हैं।

सुलेमान : क़त्ल कर दो इस मरदूद मक्कार को, जो अदालत के मसनद पर बैठा हुआ अदालत का ख़ून कर रहा है।

मूसा : नहीं, पकड़ लो। इसे ज़िंदा जलाएंगे।

कई आदमी क़ाज़ी पर टूट पड़ते हैं।

क़ाज़ी : शरा के मुताबिक मुसलमान का ख़ून हराम है।

सुलेमान : तू मुसलमान नहीं ! इन सिपाहियों में से एक भी न जाने पाए।

एक सिपाही : या सुलेमान, हमारी क्या ख़ता है ? जिस आँक़ा के गुलाम हैं, उसका हुक्म न मानें, तो रोटियां क्योंकर चलें ?

मूसा : जिस पेट के लिए तुम्हें खुदा के बंदों को ईजा पहुंचानी पड़े, उसको चाक कर देना चाहिए।

सिपाहियों और बाग़ियों में लड़ाई होने लगती है।

सुलेमान : भाइयो, आपने इन ज़ालिमों के साथ वही सलूक किया, जो वाजिब था, मगर भूल न जाइए कि ज़ियाद इसकी इत्तिला यज़ीद को ज़रूर देगा, और हमें कुचलने के लिए शाम से फ़ौज आएगी। आप लोग उसका मुक़ाबला करने को तैयार हैं ?

एक आवाज़ : अगर तैयार नहीं हैं, तो हो जाएंगे।

सुलेमान : हमने अभी तक यज़ीद की बैयत नहीं क़बूल की, और न करेंगे। इमाम हुसैन की ख़िदमत में बार-बार क़ासिद भेजे गए, मगर वह तशरीफ़ नहीं लाए। ऐसी हालत में हमें क्या करना चाहिए ?

हानी : इसमें से चंद ख़ास आदमी खुद जाएं, और इन्हें साथ लाएं।

मुख़्तार : हम लोगों ने रसूल की औलाद के साथ बार-बार ऐसी दग़ा की है कि हमारा एतबार उठ गया। मुझे खौफ़ है कि हज़रत हुसैन यहां हरग़िज न आएंगे।

सुलेमान : एक बार आख़िरी कोशिश करना हमारा फ़र्ज है। हम लोग चलकर उनसे अर्ज़ करें कि हम क़त्ल किए जा रहे हैं, लूटे जा रहे हैं, हमारी औरतों की आबरू भी सलामत नहीं। हमारी

मुसीबत की कहानी सुनकर हुसैन को तरस आएगा, उनका दिल इतना सख़्त नहीं हो सकता।

मुख़्तार मगर वही आपकी मुसीबतों पर तरस खाकर आए, और तुमने उनकी मदद की, तो सब-के-सब रूस्याह कहलाओगे। हमने पहले जो दवाएं की हैं, उनका फल पा रहे हैं, और फिर वही हरकत की, तो हम दुनिया और दीन में कहीं भी मुंह न दिखा सकेंगे। खूब सोच लो, आखिर तक तुम अपने इरादे पर क़ायम रह सकोगे। अगर तुम्हारा दिल हामी भरे, तो मैं दावे से कह सकता हूं कि इन्हें खींच लाऊंगा। लेकिन अगर तुम्हारे दिल कच्चे हैं, तुम अपनी जानें निसार करने को तैयार नहीं हो, अगर तुम्हें खौफ़ है कि लालच के शिकार बन जाओगे, तो तुम उन्हें मक्के में पड़े रहने दो।

हज्जाज ख़ुदा की क़सम हम उनके पैरों पर अपनी जानें निछावर कर देंगे।

हारिस हम अपनी बदनामी के दाग़ मिटा देंगे।

मुख़्तार ख़ुदा को हाज़िर जानकर वादा करो कि अपने क़ौल पर क़ायम रहोगे।

कई आदमी : **(एक साथ)** अल्लाहो अकबर ! हम हुसैन पर फ़िदा हो जाएंगे।

सुलेमान : तो मैं उनकी ख़िदमत में ख़त लिखता हूं।

ख़त लिखता है।

हज्जाज : इतना ज़रूर लिख देना कि हम आपके नाना मुहम्मद मुस्तफ़ा का वास्ता देकर अर्ज़ करते हैं कि हमारे ऊपर रहम कीजिए।

हारिस : यह और लिख देना कि हम बेशुमार अर्जियां आपकी ख़िदमत में भेज चुके, और आप तशरीफ़ न लाए। अगर आप अब भी न आए, तो हम कल कयामत के रोज़ रसूल के हजूर में आपका दामन पकड़ेंगे।

हज्जाज : और कहेंगे या खुदा, हुसैन ने हम पर जुल्म किया था। क्योंकि हम पर जुल्म होते देखकर वह ख़ामोश बैठे रहे, तो उस वक़्त आप क्या जवाब देंगे और रसूल को क्या मुंह दिखाएंगे।

कीस : मेरे क़बीले में एक हज़ार जवान हैं, जो हुसैन के इंतज़ार में बैठे हुए हैं।

हज्जाज : शायद शाम तक ज़ियाद कुछ आदमी जमा कर ले।

हारिस : अभी वह ख़ामोश रहेगा। यज़ीद की फ़ौज आ जायगी, तब हमारे ऊपर हमला करेगा।

शिमिर : क्यों न लगे हाथ उसका भी ख़ात्मा कर दें, क़िस्सा पाक हो।

हारिस : वाह, अब तक वह यहां बैठा होगा ?

सुलेमान : मैंने सारी दास्तान लिख दी। कौन इस ख़त को ले जायगा।

शिमिर : मैं हाज़िर हूं।

सुलेमान : किसके पास ऐसी सांड़नी है, जो थकान न जानती हो। जो इस तरह दौड़ सकती हो, जैसे ज़ियाद लूट के माल की तरफ़ ?

एक युवक : मेरे पास ऐसी सांड़नी है, जो तीन दिन में इस ख़त का जवाब ला सकती है। यह ख़िदमत बजा लाने का हक़ मेरा है; क्योंकि मुझसे ज्यादा मजलूम और कोई न होगा, जिसकी मां के बाल क़ाज़ी के हुक्म से अभी-अभी नोचे गए हैं।

सुलेमान : बेशक तुम्हारा हक़ सबसे ज्यादा है। यह ख़त लो और इससे पहले कि हमारा पसीना ठंडा हो, मक्का की तरफ़ रवाना हो जाओ।

युवक चला जाता है।

सुलेमान : आइए, हम लोग मस्जिद में नमाज़ अदा कर लें। ख़त का जवाब तीन दिन में आयगा। हज़रत हुसैन के आने में अभी एक महीने की देर है। ज़ियाद भी शायद उसके पहले नहीं लौट सकता। ये दिन हमें अपनी तैयारियों में सर्फ़ करने चाहिए, क्योंकि यज़ीद की ख़िलाफ़त का फ़ैसला कूफ़ा में होगा। या तो वह ख़िलाफ़त में मनसद पर बैठेगा, या जाहिलों की इबादत का मज़ार बनेगा। अगर कूफ़ा ने ख़िलाफ़त को नबी के ख़ानदान में वापस कर दिया, तो उसका नाम हमेशा रोशन रहेगा।

सब जाते हैं।

चौथा दृश्य

स्थान—काबा, मरदाना बैठक। हुसैन, जुबेर, अब्बास, मुसलिम अली असगर आदि बैठे दिखाई देते हैं।

हुसैन : यह पांचवीं सफ़ारत है। एक हज़ार से ज्यादा ख़तूत आ चुके हैं।

उन पर दस्तख़त करने वालों की तादाद पंद्रह हजार से कम नहीं है।

मुसलिम : और सभी बड़े-बड़े क़बीलों के सरदार हैं। सुलेमान, हारिस, हज्जाज, शिमिर, मुख़्तार, हानी, ये मामूली आदमी नहीं हैं।

जुबेर : मैं तो अर्ज़ कर चुका कि मुसल्लम इराक आपकी बैयत क़बूल करने के लिए बेकरार है।

हुसैन : मुझे तो अभी तक उनकी बातें पर एतबार नहीं होता, खुदा जाने क्यों मेरे दिल पर उनकी तरफ़ से दगा का शुबहा घुसा हुआ है। मुझे हसीब की बातें नहीं भूलतीं, जो उसने चलते-चलते कही थीं।

मुसलिम : गुस्ताख़ी तो है, पर आपका उन पर शक़ करना बेजा है। आख़िर आप उनकी वफ़ादारी का और क्या सबूत चाहते हैं ? वे क़सम खाते हैं, वादे करते हैं, साफ़ लिखते हैं कि आपकी मदद के लिए बीस हज़ार सूरमा तैयार बैठे हुए हैं। अब और क्या चाहिए ?

जुबेर : कम-से-कम मैं तो ऐसे सबूत पाकर पल की भी देर न करता।

अब्बास : मुझे तो इन क़ूफियों पर उस वक़्त भी एतबार न आएगा, अगर उनके बीसों हज़ार आदमी यहां आकर आपकी बैयत की क़सम खा लें। अगर वह क़ुरान शरीफ़ हाथ में लेकर क़समें खाएं, तो भी मैं उनसे दूर भागूं।

तारिक आता है।

तारिक : अस्सलाम अलेक या हुसैन।

हुसैन : खुदा तुम पर रहमत करे। कहां से आ रहे हो ?

तारिक : कूफ़ा के मज़लूमों ने अपनी फ़रियाद सुनाने के लिए आपकी ख़िदमत में भेजा है। आफ़ताब डूबते चला था, और आफ़ताब डूबते आया हूं, और आफ़ताब निकलने से पहले यहां से जाना है।

मुसलिम : हवा पर आए हो या तख़्तए-सुलेमान पर ? क़सम है पाक रसूल की कि मैं उस घोड़े के लिए पांच हज़ार दीनार पेश कर सकता हूं।

तारिक : हुजूर, घोड़ी नहीं, सांड़नी है, जो सफ़र में खाना और थकना नहीं जानती।

हुसैन के हाथ में ख़त देता है !

हुसैन : (ख़त पढ़कर) आह, कितना दर्द-भरा ख़त है। ज़ालिमों ने दिल निकालकर रख दिया है। यह कितना गज़ब का जुमला है कि अगर आप न आएंगे, तो हम आक़बत में आपसे इंसाफ़ का दावा करेंगे। आह ! उन्होंने नाना का वास्ता दिया है। मैं नाना के नाम पर अपनी जान को यों फ़िदा कर सकता हूं, जैसे कोई हरीस अपना ईमान फ़िदा कर देता है। इतना ज़ुल्म ! इतनी सख्ती ! दिनदहाड़े लूट !! दिनदहाड़े औरतों की बेआबरूई ! ज़रा-ज़रा-सी बात पर लोगों का क़त्ल किया जाना ! अब्बास, अब मुझे सब्र की ताब नहीं है मैं अपनी बैयत के लिए हरगिज़ न जाता, पर मुसीबतज़दों की हिमायत के लिए न जाऊं, यह मेरी ग़ैरत गवारा नहीं करती।

मुसलिम : या बिरादर, आप इसका कुछ ग़म न करें, मैं इसी क़ासिद के साथ वहां जाऊंगा, और वहां की कैफ़ियत की इत्तिला दूंगा। मेरा ख़त देखकर आप मुनासिब फ़ैसला कीजिएगा।

हुसैन : तब तक यज़ीद उन ग़रीबों पर खुदा जाने क्या-क्या सितम ढाए। उसका अज़ाब मेरी गर्दन पर होगा। सोचो, जब क़यामत के दिन वे लोग फ़रियादी होंगे, तो मैं नाना को क्या मुंह दिखाऊंगा। वह जब मुझसे पूछेंगे कि तुझे जान इतनी प्यारी थी कि तूने मेरे बंदों पर ज़ुल्म होते देखे, और ख़ामोश बैठा रहा, उस वक्त मैं उन्हें क्या जवाब दूंगा। मुसलिम, मेरा जी चाहता है कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूं।

मुसलिम : मुझे तो यक़ीन है कि सुलेमान-जैसा आदमी कभी दग़ा नहीं कर सकता।

जुबेर : हरगिज़ नहीं।

मुसलिम : पर मैं यही मुनासिब समझता हूं कि पहले वहां जाकर अपना इत्मीनान कर लूं।

हुसैन : बच्चों को ग़ैब का इल्म होता है। इसका फ़ैसला अली असगर पर छोड़ दिया जाए। क्यों बेटा, मैं भी मुसलिम के साथ जाऊं, या उनके ख़त का इंतज़ार करूं ?

अली असगर : नहीं अब्बाजान, अभी, मुसलिम चाचा को ही जाने दीजिए। आप चलेंगे तो कई दिन तैयारियों में लग जाएंगे। ऐसा न हो, इतने दिनों में वे बेचारे निराश हो जाएं।

अब्बास : बेटा, तेरी उम्र दराज़ हो। तूने खूब फ़ैसला किया। खुदा तुझे बुरी नज़र से बचाए।

हुसैन : अच्छी बात है, मुसलिम, तुम सबेरे रवाना हो जाओ। अपने साथ पांच गुलाम लेते जाओ। रास्ते में शायद इनकी ज़रूरत पड़े। मैं कूफ़ा वालों के नाम यह ख़त लिख देता हूं, उन्हें दिखा देना। इंशा अल्लाह, हम तुमसे जल्द ही मिलेंगे। वहां बड़े एहतियात से काम लेना, अपने को छिपाए रखना और किसी ऐसे आदमी के घर उतरना जो सबसे ज्यादा एतबार के लायक हो। मेरे पास एक ख़त रोज़ाना भेजना।

मुसलिम : खुदा से दुआ कीजिए कि वह मेरी हिदायत करे। मैं बड़ी भारी जिम्मेदारी लेकर जा रहा हूं। सुबह की नमाज़ पढ़कर मैं रवाना होऊंगा। तब तक तारिक की सांड़नी भी आराम कर लेगी।

हुसैन ने ख़त लिखकर मुसलिम को देते हैं। मुसलिम दरवाज़े की तरफ़ चलते हैं।

हुसैन : **(मुसलिम के साथ दरवाज़े तक आकर)** रात तो अंधेरी है।

मुसलिम : उम्मीद की रोशनी तो दिल में है।

हुसैन : **(मुसलिम से बगलगी होकर)** अच्छा भैया, जाओ। मेरा दिल तुम्हारे साथ रहेगा। जो कुछ होने वाला है, जानता हूं। इसकी ख़बर मिल चुकी है। तक़दीर से कोई चारा नहीं। नहीं जानता, यह तक़दीर क्या है ! अगर खुदा का हुक्म है तो छुपकर सूरत बदलकर, दग़ाबाज़ों की तरह क्यों आती है। खुदा क्या साफ़ और खुले हुए अल्फ़ाज में अपना हुक्म नहीं भेजता ? अपने बेकस बच्चों का शिकार टट्टी की आड़ से क्यों करता है ? 'जाओ' कहता हूं, पर जी चाहता है, न जाने दूं। काश, तुम कह देते कि मैं न जाऊंगा। मगर तक़दीर ने तुम्हारी ज़बान बंद कर रखी है। अच्छा, रुख़सत। उम्मीद है कि अल्लाह हम दोनों को एक साथ शहादत का दर्जा देगा।

मुसलिम बाहर चला जाता है। हुसैन आंखें पोंछते हुए हरम में दाख़िल होते हैं।

जैनब : भैया, आज फिर कोई क़ासिद आया था क्या ?

हुसैन : हां, जैनब, आया था। यज़ीद कूफ़ा वालों पर बड़ा जुल्म कर

रहा है। मेरा वहां जाना लाज़िमी है। अभी तो मैंने मुसलिम को वहां भेज दिया है, पर फिर खुद जल्द जाना चाहता हूं।

जैनब : आपने एकाएक क्यों अपनी राय बदल दी ? कम-से-कम मुसलिम के ख़त के आने का इंतज़ार कीजिए। मैं तो आपको हरगिज़ न जाने दूंगी। आपको यह ख्वाब याद है, जो आपने रसूल की कब्र पर देखा था।

हुसैन : हां, जैनब, खूब याद है, और इसी वजह से मैं जाने की जल्दी कर रहा हूं। उस ख्वाब ने मेरी तक़दीर को मेरे सामने खोलकर रख दिया। तक़दीर से बचने की भी कोई तदबीर है ? खुदा का हुक्म भी टल सकता है। ख़िलाफ़त की तमन्ना को दिल से मिटा सकता हूं, पर ग़ैरत को तो नहीं मिटा सकता। बेकसों की इमदाद से तो मुंह नहीं मोड़ सकता।

शहरबानू : आप जो कुछ करते हैं, उसमें खुदा और तक़दीर को क्यों खींच लाते हैं। जब आपको मालूम है कि कूफ़ा में लोग आपसे दग़ा करेंगे, तो वहां जाइए ही क्यों ? तक़दीर आपको खींच तो न ले जाएगी ? बेकसों की इमदाद ज़रूर आपका और आप ही का नहीं, हर एक इंसान का फ़र्ज़ है, लेकिन आपके कुनबे की भी तो कोई ख़बर लेने वाला हो ? इंसान पर दुनिया से पहले ख़ानदान का हक़ होता है।

हुसैन : ज़रा इस ख़त को पढ़ लो और तब कहो कि मैंने जो फ़ैसला किया है, वह मुनासिब है या नहीं। **(शहरबानू के हाथ में ख़त देकर)** देखा ! इससे क्या साबित होता है। ? लेकिन जितने आदमियों ने इस पर दस्तख़त किए हैं, उसके आधे भी मेरे साथ हो जायंगे, तो यज़ीद का काफ़िया तंग कर दूंगा। इस्लाम की ख़िलाफ़त इतना आला रुतबा है कि इसकी कोशिश में जान दे देना भी जिल्लत नहीं। जब मेरे हाथों में एक स्याहकार बेदीन आदमी को सज़ा देने का मौक़ा आया है, तो इससे फ़ायदा न उठाना पहले सिरे की पस्तहिम्मती है। घर में आग लगते देखकर उसमें कूद पड़ना नादानी है, लेकिन पानी मिल रहा हो तो उससे आग न बुझाना, उससे भी बड़ी नादानी है।

सकीना : मगर अब्बाजान, अब तो मुहर्रम का महीना आ रहा है। फूफीजान की बहुत दिनों से आरज़ू थी कि इस महीने में यहां रहती।

हुसैन : तुम लोगों को ले जाने का मेरा इरादा नहीं है।

जैनब : मैया, ऐसा भी हो सकता है कि आप वहां जाएं, और हम यहां रहें ! खुदा जाने, कैसी पड़े, कैसी न पड़े।

सकीना : अब्बाजान दिल्लगी करते हैं, और आप लोग सच समझ गईं।

कुलसूम : और कोई चले चाहे न चले, मैं तो जरूर ही जाऊंगी। मेरे दिल में लगी है कि एक बार यज़ीद को खूब आड़े हाथों लेती।

सकीना : मैं अपनी फ़तह का कसीदा लिखने के लिए बेताब हूं।

शहरबानू : आप समझते हैं कि हमारे साथ रहने से आपको तरद्दुद होगा, पर मैं पूछती हूं, आपको वहां फंसाकर दुश्मनों ने इधर हमला कर दिया, तो हमारी हिफ़ाजत की फ़िक्र आपको चैन लेने देगी ?

जैनब : असग़र हुड़क-हुड़ककर जान दे देगा।

सकीना : हम अपने ऊपर इस बदनामी का दाग़ नहीं लगा सकतीं कि रसूल के बेटों ने तो इस्लाम की हिमायत में जान दी, और बेटियां हरम में बैठी रहीं।

हुसैन : **(स्वगत)** शहरबानू ने मार्के की बात कही। अगर दुश्मनों ने हरम पर हमला कर दिया, तो हम वहां बैठे-बैठे क्या करेंगे ? इन्हें यहां छोड़ देना अपने क़िले की दीवार में शिग़ाफ़ कर देने से कम ख़तरनाक नहीं। **(प्रकट)** नहीं, मैं तुम लोगों पर ज़ब्र नहीं करता, अगर चलना चाहती हो तो शौक से चलो।

पांचवां दृश्य

यज़ीद का दरबार। मुआबिया बेड़ियां पहने हुए बैठा हुआ है। चार गुलाम नंगी तलवारें लिए उसके चारों तरफ़ खड़े हैं। यज़ीद के तख्त के करीब सरजून रूमी बैठा हुआ है।

मुआबिया : **(दिल में)** नबी की औलाद पर यह जुल्म ! मुझी से तो इसका बदला लिया जायेगा। बाप का क़र्ज़ बेटे ही को तो अदा करना पड़ता है। मगर मेरे खून से इस जुल्म का दाग़ न मिटेगा, हर्गिज़ नहीं। इस ख़ानदान का निशान मिट जाएगा। कोई फ़ातिहा पढ़ने वाला भी न रहेगा। आह ! नबी की औलाद पर यह जुल्म ! जिनके क़दमों की ख़ाक आंखों में लगानी चाहिए थी, तबाही के सामान हैं। ऐ रसूल पाक मैं बेगुनाह हूं ! **(प्रकट)** आप जानते हैं मौलाना रूमी के वालिद का मुझे कब तक इंतज़ार करना पड़ेगा।

रूमी : आते होंगे। ज़ियाद से कुछ बातें हो रही हैं।

मुआबिया : वालिद मुझसे चाहते हैं कि मैं इस मार्के में शरीक हो जाऊं लेकिन अगर जालिमों के हाथ से अख्तियार छीनने के लिए, हक़ की हिमायत के लिए यह पहलू अख्तियार किया जाता, तो सबसे पहले तलवार म्यान से निकलती, सबसे पहले में ज़िहाद का झंडा उठाता, हक़ का खून करने के लिए मेरी तलवार कभी बाहर न निकलेगी, और मेरी ज़बान उस वक़्त तक मलामत करती रहेगी, जब तक वह तालू से खींच न ली जाय। नबी की मसनद पर **जिसने दुनिया को हिदायत का चिराग़ दिखलाया, जिसने इस्लामी क़ौम की बुनियाद** डाली। उस शख्स को बैठने का मजाज नहीं है, जो दीन पैरों-तले कुचलता हो, जो इंसानियत के नाम को दाग़ लगाता हो, चाहे वह मेरा बाप ही क्यों न हो। इस्लाम का ख़लीफ़ा उसे होना चाहिए जिस पर इंसानियत को ग़रूर हो, जो दीनदार हो, हक़परस्त हो, बेदार हो, बेलौस हो, दूसरों के लिए नमूना हो, जो ताक़त से नहीं, फ़ौज से नहीं, अपने कमाल से, अपने सिफ़ात से दूसरों पर अपना वक़ार जमाए।

यज़ीद, जुहाक, ज़ियाद, शरीक, शम्स आदि आते हैं।

यज़ीद : आप लोग देखिए, यह मेरा सपूत बेटा है, जो अपने बाप को कुत्ते से भी ज़्यादा नापाक समझता है। मेरी फूलों की सेज में यही एक कांटा है, मेरी नियामतों की थाल में यही एक मक्खी है। आप लोग इसे समझाएं, इसे क़ायल करें, इसीलिए मैंने इसे यहां बुलाया है। इसको समझाइए कि ख़लीफ़ा के लिए दीनदारी से ज्यादा मुल्कदारी की ज़रूरत है। दीन मुल्लाओं के लिए है, बादशाहों के लिए नहीं। दीनदारी और मुल्कदारी दो अलग-अलग चीज़ें हैं, और एक ही जात में दोनों का मेल मुमकिन नहीं।

मुआबिया : अगर हुक़ूमत करने के लिए दीन और हक़ का खून करना ज़रूरी है, तो मैं गदागदी करने को उससे बेहतर समझता हूं। मुल्कदारी की मंशा इंसाफ़ और सच्चाई की हिफ़ाज़त करना है, उसका खून करना नहीं।

यज़ीद : आप लोग सुनते हैं इसकी बातें। यह मुझे मुल्कदारी का सबक

सिखा रहा है। इसके सिर से अभी सौदा नहीं उतरा। इसे फिर वहीं ले जाओ। ऐसे आदमी को आज़ाद रखना ख़तरनाक है, चाहे वह तख्त का वारिस ही क्यों न हो। बाज हालतें ऐसी होती हैं, जब इंसान को अपने ही से बचाना ज़रूरी होता है। दीवाने को न रोको तो वह अपना गोश्त काट खाता है। **(गुलाम मुआबिया को ले जाता है)** ज़ियाद, अब तुम अपनी दास्तान कहो। जब तक तुम मुझे इसका यक़ीन न दिला दोगे कि तुम कूफ़ा से अपनी जान के ख़ौफ़ से नहीं, मेरे फ़ायदे के ख़याल से आए हो, मैं तुम्हें मुआफ़ न करूंगा। ऐसे नाजुक मौक़े पर जब शहर में बग़ावत का हंगामा गर्म हो, सल्तनत के हर एक मुलाजिम का, चाहे वह सूबे का आमिल हो या शाही महल कर दरबान, यही फ़र्ज़ है कि वह अपनी जगह पर आखिर तक खड़ा रहे, चाहे उसका जिस्म तीरों से छलनी क्यों न हो जाय।

ज़ियाद : या ख़लीफ़ा, मैं अपने फ़र्ज़ से वाक़िफ़ हूं। पर मैं सिर्फ यह अर्ज़ करने के लिए हाजिर हुआ हूं, कि इस वक्त रियाया पर सख्ती करने से हालत नाजुक हो जाएगी। जब सल्तनत को किसी दूसरे मुद्दई का खौफ़ हो, तो बादशाह को रियाया के साथ नरमी का बर्ताव करके उसे अपना दोस्त बना लेना मुनासिब है। बिगड़ी हुई रियाया तिनके की तरह है, जो एक चिनगारी से जल उठती है। मेरी अर्ज़ है कि हमें इस वक्त नियाया का दिल अपने हाथ में कर लेना चाहिए, उनकी गर्दनें एहसानों से दबा देनी चाहिए, ताकि वह सिर न उठा सकें।

यज़ीद : मेरी फ़ौज बाग़ियों का सिर कुचलने के लिए काफ़ी है।

रूमी : नाजुक मौक़े पर अगर कोई चीज़ सल्तनत को बचा सकती है तो वह सख्ती है। शायद और किसी हालत में सख्ती की इतनी ज़्यादा ज़रूरत नहीं होती।

ज़ुहाक : बादशाह की रियाया उसकी ज़ौजा की तरह है। ज़ौजा पर हम निसार होते हैं, उसके तलवे सहलाते हैं, उसकी बलाएं लेते हैं, लेकिन जब उसे किसी रकीब से मुख़ातिब होते देखते हैं तो उस वक्त उसकी बलाएं नहीं लेते। हमारी तलवार म्यान से निकल आती है, और या तो रकीब की गर्दन पर गिरती है या बीवी की गर्दन पर या दोनों की गर्दनों पर।

रूमी : बेशक, कूफ़ा को कुचल दो; कूफ़ा को कोफ्त कर दो।

यज़ीद : कूफ़ा को कोफ्त में डाल दो। यहां से जाते-ही-जाते फ़ौजी क़ानून जारी कर दो। एक हजार आदमियों को तैयार रखो। जो आदमी ज़रा भी गर्म हो, उसे फौरन क़त्ल कर दो। सरदारों को एकबारगी गिरफ्तार कर लो, फ़ौज को रोज़ाना शहर में गश्त करने का हुक्म दो। सबकी ज़बान बंद कर दो, यहां तक कि कोई शायर शेर न पढ़ने पाए। मस्जिदों में खुतबे न होने पाएं। मकतबों में कोई लड़का न जाने पाए। रईसों को खूब ज़लील करो। जिल्लत सबसे बड़ी सज़ा है।

एक क़ासिद आता है।

शम्स : कहां से आते हो ?

क़ासिद : ख़लीफ़ा को मेरा सलाम हो। मुझे मक्का के अमीर ने आपकी ख़िदमत में यह अर्ज़ करने को भेजा है कि हुसैन का चचेरा भाई मुसलिम कूफ़ा की तरफ़ रवाना हो गया है।

यज़ीद : कोई ख़त भी लाया है ?

क़ासिद : आमिल ने ख़त इसलिए नहीं दिया कि कहीं मुझे दुश्मन गिरफ्तार न कर लें।

यज़ीद : ज़ियाद, तुम इसी वक्त कूफ़ा चले जाओ। तुम्हें मेरे सबसे तेज़ घोड़े को ले जाने का अख्तियार है। अगर मेरा क़ाबू होता, तो तुम्हें हवा के घोड़े पर सवार कराता।

ज़ियाद : ख़लीफ़ा पर मेरी जान निसार हो। मुझे इस मुहिम पर जाने से मुआफ़ रखिए। जुहाक़ या शम्स को तैनात फ़रमाएं।

यज़ीद : इसके मानी यह है कि मैं अपनी एक आंख फोड़ लूं।

रूमी : आख़िर तुम क्या चाहते हो ?

ज़ियाद : मेरा सवाल सिर्फ इतना है कि इस मौक़े पर रियाया के साथ मुलायमियत का बर्ताव किया जाय, सरदारों को जागीरें दी जायं, उनके वजीफ़े बढ़ाए जाएं। यतीमों और बेवाओं की परवरिश का इंतज़ाम किया जाय। मैंने कूफ़ा वालों की ख़सलत का ग़ौर से मुताला किया है, वे हयादार नहीं हैं, दिलैर नहीं हैं, दीनदार नहीं हैं। चंद ख़ास आदमियों को छोड़कर, सब-के-सब लोभी और खुदग़र्ज हैं। बात पर अड़ना नहीं जानते, शान पर मरना नहीं जानते। थोड़े से फ़ायदे के लिए भाई-भाई का गला काटने पर आमादा हो जाते हैं। कुत्तों को भगाने के लिए

लाठी से ज्यादा आसान हड्डी का एक टुकड़ा होता है। सब-के-सब उस पर टूट पड़ते और एक-दूसरे को भंभोड़ खाते हैं। ख़लीफ़ा का ख़ज़ाना दस-बीस हज़ार दीनारों के निकल जाने से खाली हो जाएगा, पर एक क़ौम हमारे हाथ आ जाएगी। सख़्ती कमज़ोरी के हक़ में वही काम करती है, जो ऐंठन तिनके के साथ। हम ऐंठन के बदले हवा के झोंके से तिनकों को बिखेर सकते हैं। फ़ौज से फ़ौज कुचली जा सकती है, एक क़ौम नहीं।

रूमी : मैं तो हमेशा सख़्ती का हामी रहा और रहूंगा।

शरीक : कामिल हक़ीम वह है, जो मरीज़ के मिजाज़ के मुताबिक दवा में तबदीली करता रहे। आपने उस हक़ीम का क़िस्सा नहीं सुना जो हमेशा फ़स्द खोलने की तजवीज़ किया करता था। एक बार एक दीवाने का फ़स्द खोलने गया। दीवान ने हक़ीम की गर्दन इतने ज़ोर से दबाई कि हक़ीम साहब की ज़बान बाहर निकल आई। मुल्कदारी के आईन मौक़े ज़रूरत के मुताबिक़ बदलते रहते हैं।

यज़ीद : ज़ियाद, मैं इस मुआमले में तुम्हें मुख़्तार बनाता हूं। मुझे भी कुछ-कुछ अंदेशा हो रहा है कि कहीं हुसैन के बाद कूफ़ा वालों को लुभा न लें। तुम जो मुनासिब समझो, करो, लेकिन याद रखो, अगर कूफ़ा गया तो तुम्हारी जान उसके साथ जाएगी। यह शर्त मंजूर है ?

ज़ियाद : मंजूर है।

यज़ीद : हुर को ताक़ीद कर दो कि बहुत नमाज़ न पढ़े, और मुसलिम को इस तरह तलाश करे, जैसे कोई बख़ील अपनी खोई मुर्ग़ी को तलाश करता है। तुम्हारी नर्मी कमज़ोरों की नर्मी नहीं होनी चाहिए, जिसे खुशामद कहते हैं। उसमें हुकूमत की शान क़ायम रहनी चाहिए; बस, जाओ।

ज़ियाद, शरीक, और क़ासिद चले जाते हैं।

ज़ुहाक़ : नरगिस को बुलाओ, ज़रा ग़म ग़लत करे। **(गुलाम के हाथ से शराब का प्याला लेकर)** यह मेरी फ़तह का जाम है।

रूमी : मुबारक हो, **(दिल में)** ज़ियाद तुम्हें डुबा देगा, तब नर्मी का मज़ा मालूम होगा।

नरगिस जुहाक़ की पीठ पर बैठी हुई आती है।

यज़ीद : शाबाश नरगिस, शाबाश ! क्या ख़ूब ख़च्चर है। इसकी कोई तशवीह (उपमा) देना शम्स।

शम्स : मुर्ग़ के सिर पर ताज है।

रूमी : लीद पर मक्खी बैठी हुई है।

नरगिस : **(गर्दन पर से कूदकर)** लाहौल-विला-कूवत।

यज़ीद : वल्लाह, इस तशबीह से दिल खुश हो गया। नरगिस, बस, इसी बात पर एक मस्ताना ग़ज़ल सुनाओ। खुदा तुम्हारे दीवानों को तुम पर निसार करे।

नरगिस गाती है।

शबे-वस्ल वह रूठ जाना किसी का
वह रूठे को अपने मनाना किसी का,
कोई दिल को देखे न तिरछी नज़र से
ख़ता कर न जाए निशाना किसी का,
अभी थाम लोगे तुम अपने जिगर को
सुनो, तो सुनाएं फ़िसाना किसी का,
ज़रा देख ले चलके सैयाद, तू भी
कि उठता है अब आब-दाना किसी का,
वह कुछ सोचकर हो लिए उसके पीछे
जनाज़ा हुआ जब रवाना किसी का,
बुरा वक़्त जिस वक़्त आता है 'बिस्मिल'
नहीं साथ देता ज़माना किसी का।

छठा दृश्य

समय—संध्या। सूर्यास्त हो चुका है। कूफ़ा का शहर—कई सारवान ऊंट का गल्ला लिए दाख़िल हो रहे हैं।

पहला : यार, गलियों से चलना, नहीं तो किसी सिपाही की नज़र पड़ जाय तो महीनों बेगार झेलनी पड़े।

दूसरा : हां-हां; वे बला के मूज़ी हैं। कुछ लादने को नहीं होता, तो यों ही बैठ जाते हैं, और दस-बीस कोस का चक्कर लगाकर लौट

आते हैं। ऐसा अंधेर पहले कभी न होता था। मजूरी तो भाड़ में गई, ऊपर से लात और गालियां खाओ।

तीसरा : यह सब महज़ पैसे आंटने के हथकंडे हैं। न जाने कहां के कुत्ते आके सिपाहियों में दाख़िल हो गए। छोटे-बड़े एक ही रंग में रंगे हुए हैं।

चौथा : अमीर के पास फ़रियाद लेकर जाओ तो उल्टे और बौछार पड़ती है। अजीब मुसीबत का सामना है। हज़रत हुसैन जब तक न आएंगे, हमारे सिर से यह बला न टलेगी।

मुसलिम पीछे से आते हैं।

मुसलिम : क्यों यारो, इस शहर में कोई खुदा का बंदा ऐसा है जिसके यहां मुसाफ़िरों को ठहरने की जगह मिल जाय ?

पहला : यहां के रईसों की कुछ न पूछो। कहने को दो-चार बड़े आदमी हैं, मगर किसी के यहां पूरी मजूरी नहीं मिलती। हां, ज़रा गालियां कम देते हैं।

मुसलिम : सारे शहर में एक भी सच्चा मुसलमान नहीं है ?

दूसरा : जनाब, यहां कोई शहर के क़ाज़ी तो हैं नहीं। हां, मुख्तार की निस्बत सुनते हैं कि बड़े दीनदार आदमी हैं। हैसियत तो ऐसी नहीं, मगर खुदा ने हिम्मत दी है। कोई ग़रीब चला जाय, तो भूखा न लौटेगा।

तीसरा : सुना है, उनकी जागीर ज़ब्त कर ली गई है।

मुसलिम : यह क्यों ?

तीसरा : इसलिए कि उन्होंने अब तक यज़ीद की बैयत नहीं ली।

मुसलिम : तुममें से मुझे कोई उनके घर तक पहुंचा सकता है ?

चौथा : जनाब, यह ऊंटनियों के दुहने का वक्त है। हमें फ़ुर्सत नहीं। सीधे चले जाइए, आगे लाल मस्जिद मिलेगी। वहीं उनका मकान है।

मुसलिम : खुदा तुम पर रहमत करे। अब चला जाऊंगा।

मस्जिद के क़रीब मुख्तार का मकान

मुसलिम : **(एक बूढ़े से)** यही मुख्तार का मकान है न ?

बूढ़ा : जी हां, ग़रीब ही का नाम मुख्तार है। आइए, कहां से तशरीफ़ ला रहे हैं ?

मुसलिम : मक्केशरीफ़ से।

मुख़्तार : **(मुसलिम के गले से लिपटकर)** मुआफ़ कीजिएगा। बुढ़ापे की बीनाई शराबी की तोबा की तरह कमज़ोर होती है। आज बड़ा मुबारक दिन है। बारे हज़रत ने हमारी फ़रियाद सुन ली। ख़ैरियत से हैं न ?

मुसलिम : **(घोड़े से उतरकर)** जी हां, सब ख़ुदा का फ़जल है।

मुख़्तार : ख़ुदा जानता है, आपको देखकर आंखें शाद हो गईं। हज़रत का इरादा कब तक आने का है ?

मुसलिम : **(ख़त निकालकर मुख़्तार को देते हैं।)** इसमें उन्होंने सब कुछ मुफ़स्सल लिख दिया है।

मुख़्तार : **(ख़त को छाती और आंखों से लगाकर पढ़ता है।)** खुशनसीब कि हज़रत के क़दमों से यह शहर पाक होगा। मेरी बैयत हाज़िर है, और मेरे दोस्तों की तरफ़ से भी कोई अंदेशा नहीं।

गुलाम को बुलाता है।

गुलाम : जनाब ने क्यों याद फ़रमाया ?

मुख़्तार : देखो, इसी वक़्त हारिस, हज्जाज, सुलेमान, शिमर, कीस, शैस और हानी के मकान पर जाओ, और मेरा यह रुक्का दिखाकर जवाब लाओ।

गुलाम रुक्का लेकर चला जाता है।

मुख़्तार : पहले मुझे ऐसा मालूम होता था कि हज़रत का कोई क़ासिद आएगा तो मैं शायद दीवाना हो जाऊंगा, पर इस वक़्त आपको सामने देखकर भी ख़ामोश बैठा हुआ हूं। किसी शायर ने सच कहा है 'जो मज़ा इंतजार में देखा, वह नहीं वस्लेयार में देखा।' जन्नत का ख़याल कितना दिलफ़रेब है, पर शायद उसमें दाखिल होने पर इतनी खुशी न रहे। आइए, नमाज़ अदा कर लें। इसके बाद कुछ आराम फ़रमा लीजिए। फिर दम मारने की फ़ुर्सत न मिलेगी।

दोनों मकान में अंदर चले जाते हैं। मुसलिम और मुख़्तार बैठे हुए हैं।

मुसलिम : कितने आदमी बैयत लेने के लिए तैयार हैं ?

मुख्तार : देखिए, सब अभी आ जाते हैं। अगर यज़ीद की जानिब से ज़ुल्म और सख्ती इस तरह होती रही, तो हमारे मददगारों की तादाद दिन-दिन बढ़ती जाएगी। लेकिन कहीं उसने दिलजोई शुरू कर दी, तो हमें इतनी आसानी से कामयाबी न होगी।

सुलेमान का प्रवेश।

सुलेमान : अस्सलामअलेक हज़रत मुसलिम आपको देख़कर आंखें रोशन हो गईं। मेरे कबीले के सौ आदमी बैयत लेने को हाज़िर हैं। और सब-के-सब अपनी बात पर मर मिटने वाले आदमी हैं।

मुसलिम : आपको खुदा नजात दे। इन आदमियों से कहिए, कल जामा मस्ज़िद में जमा हों। आपका ख़त पढ़कर भैया को बहुत रंज हुआ। उन्होंने तो फ़ैसला कर लिया था कि रसूल के मज़ार पर बैठे हुए ज़िंदगी गुजार दें, पर आपके आख़िरी ख़त ने उन्हें बेक़रार कर दिया। सायल की हिमायत से वह कभी नहीं मुंह मोड़ सकते।

शैस, कीस, शिमर, साद और हज्जाज का प्रवेश।

शैस : अस्सलामअलेक हज़रत, आपको देखकर जिगर ठंडा हो गया।

कीस : अस्सलामअलेक, आपके क़दमों से हकारे वीरान घर आबाद हो गए।

हज्जाज : अस्सलामअलेक, आपको देखकर हमारे मुर्दा तन में जान आ गईं।

मुसलिम : **(सबसे गले मिलकर)** हज़रत इमाम ने मुझे यह ख़त देकर आपकी ख़िदमत में भेजा है।

शिमर ख़त को लेकर ऊंची आवाज़ से पढ़ता है और सब लोग सिर झुकाए सुनते हैं।

शैस : हमारे ज़हेनसीब, मैं तो अभी दस्तरख्वान पर था। ख़बर पाते ही आपकी ज़ियारत करने दौड़ा।

हज्जाज : मैं तो अभी-अभी बसरे से लौटा हूं। दम भी न मारने पाया था कि आपके तशरीफ़ लाने की ख़बर पाई; मेरे क़बीले के बहुत से आदमी बैयत लेने को बाहर खड़े हैं।

मुसलिम : उन्हें कल जामा मस्ज़िद में बुलाइए।

शिमर : वह कौन-सा दिन होगा कि मलऊन यज़ीद के ज़ुल्म से नजात होगी।

शैस हज़रत हुसैन ने हम ग़रीबों की आवाज़ सुनी ली। अब हमारे बुरे दिन न रहेंगे।

क़ीस हमारी क़िस्मत के सितारे अब रोशन होंगे। मेरी दिली तमन्ना है कि ज़ियाद का सिर अपने पैरों के नीचे देखूं।

शिमर मैंने तो मन्नत मानी है कि मलऊन ज़ियाद के मुंह में कालिख लगाकर सारे शहर में फिराऊं ?

क़ीस मैं तो यज़ीद की नाक काटकर उसकी हथेली पर रख देना चाहता हूं।

हानी, कसीर और अशअस का प्रवेश।

हानी या बिरादर हुसैन, आप पर, खुदा की रहमत हो।

क़ीस अल्लाहताला आप पर साया रखे। हम सब आपकी राह देख रहे थे।

मुसलिम : भाई साहब ने मुझे यह ख़त देकर आपकी तस्क़ीन के लिए भेजा है।

हानी ख़त लेकर आंखों से लगाता है, और आंखों में ऐनक लगाकर पढ़ता है।

शिमर : अब ज़ियांद की खबर लूंगा।

क़ीस : मैं तो यज़ीद की आंखों में मिर्च डालकर उसका तड़पना देखूंगा।

मुसलिम : आप लोग भी अपने क़बीले वालों को जामा मस्ज़िद में बुलाएं। कल तीन-चार हज़ार आदमी आ जाएंगे ?

शैस : खुदा झूठ न बुलवाए, तो इसके दसगुने हो जाएंगे।

हानी : नबी की औलाद की शान और ही है। वह हुस्न, वह इखलाक़, वह शराफ़त कहीं नज़र ही नहीं आती।

क़ीस : यज़ीद को देखो, ख़ासा हब्शी मालूम होता है।

हज्जाज : ज़ियाद तो ख़ासा सारवान है।

मुसलिम : तो कल शाम को जामा मस्ज़िद में आने की ठहरी।

शिमर : तो हम लोग चलकर अपने क़बीलों को तैयार करें, ताकि जो लोग इस वक्त न हों वे भी आ जाएं।

सब लोग चले जाते हैं।

मुसलिम : (दिल में) ये सब कूफ़ा के नामी सरदार हैं। हमारी फ़तह ज़रूर होगी, और एक बार तक़दीर को जक उठानी पड़ेगी। बीस हजार आदमियों की बैयत मिल गई तो फिर हुसैन को ख़िलाफ़त की मसनद पर बैठने से कौन रोक सकता है, ज़रूर बैठेंगे।

सातवां दृश्य

कूफ़ा के चौक में कई दुकानदार बातें कर रहे हैं।

पहला : सुना, आज हज़रत हुसैन तशरीफ़ लाने वाले हैं।

दूसरा : हां, कल मुख़्तार के मकान पर बड़ा जमघट था। मक्का से कोई साहब उनके आने की ख़बर लाए हैं।

तीसरा : ख़ुदा करे, जल्द आवें। किसी तरह इन ज़ालिमों से पीछा छूटे। मैंने बैयत तो यज़ीद की ले ली है, लेकिन हज़रत आएंगे तो फ़ौरन फिर जाऊंगा।

चौथा : लोग कहते थे, बड़ी धूम-धाम से आ रहे हैं। पैदल और सवार फ़ौजें हैं। खेमे वग़ैरह ऊंटों पर लदे हुए हैं।

पहला : दुकान बढ़ाओ, हम लोग भी चलें। तक़दीर में जो कुछ बिकना था, बिक चुका। आक़बत की भी तो फ़िक्र करनी चाहिए। (चौंककर) अरे बाजे की आवाज़ें कहां से आ रही हैं ?

दूसरा : आ गए शायद।

सब दौड़ते हैं। ज़ियाद का जुलूस सामने से आता है। ज़ियाद मिंबर पर खड़ा हो जाता है।

कई आवाज़ें : मुबारक हो, मुबारक हो, या हज़रत हुसैन !

ज़ियाद : दोस्तो, मैं हुसैन नहीं हूं। हुसैन का अदना गुलाम रसूल पाक के क़दमों पर निसार होने वाला आपका नाचीज ख़ादिम बिन ज़ियाद हूं।

एक आवाज़ : जियाद है, मलऊन ज़ियाद है।

दूसरा : गिरा दो मिंबर पर से; उतार दो मरदूद को।

तीसरा : लगा दो तीर का निशाना। ज़ालिम की ज़बान बंद हो जाए।

चौथा : ख़ामोश, ख़ामोश। सुनो क्या कहता है ?

ज़ियाद : अगर आप समझते हैं कि मैं ज़ालिम हूं, तो बेशक, मुझे तीर का निशाना बनाइए, पत्थरों से मारिए, क़त्ल कीजिए, हाज़िर हूं। ज़ालिम गर्दनज़दनी है, और जो जुल्म बर्दाश्त करे, वह बेगैरत है। मुझे गरूर है कि आपमें गैरत है, जोश है।

कई आवाज़ें : सुनो-सुनो, ख़ामोश।

ज़ियाद : हां, मैं ग़ैरत से, गुरूर से, नहीं डरता, क्योंकि यही वह ताक़त है जो किसी क़ौम को ज़ालिम के हाथ से बचा सकती है। खुदा के लिए उस जुल्म की नाक़दरी न कीजिए, जिसने आपकी ग़ैरत को जगाया। यही मेरी मंशा थी, यही यज़ीद की मंशा थी, और खुदा का शुक्र है कि हमारी तमन्ना पूरी हुई। अब हमें यक़ीन हो गया कि हम आपके ऊपर भरोसा कर सकते हैं। ज़ालिम उस्ताद की भी कभी-कभी ज़रूरत होती है। हज़रत हुसैन जैसा पाक़-नीयत दीनदार बुजुर्ग आपको यह सबक़ न दे सकता था। यह हम जैसे कमीना, खुदग़र्ज़ आदमियों ही का काम था। लेकिन अगर हमारी नीयत ख़राब होती, तो आप मुझे आज यहां खड़े होकर उन रियायतों का एलान करते न देखते, जो मैं अभी-अभी करने आया हूं। इन एलानों से आप पर मेरे क़ौल की सच्चाई रोशन हो जाएगी।

कई आवाज़ें : ख़ामोश-ख़ामोश, सुनो-सुनो।

ज़ियाद : ख़लीफ़ा यज़ीद का हुक्म है कि कूफ़ा और बसरा का हर एक बालिग़ मर्द पांच सौ दिरहम सालाना ख़ज़ाने से पाए।

कई आवाज़ें : सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद : और कूफ़ा व बसरा की हर एक बालिग़ औरत दो सौ दिरहम पाए, जब तक उसका निकाह न हो।

कई आवाज़ें : सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद : और हर एक बेवा को सौ दिरहम सालाना मिलें, जब तक उसकी आंखें बंद न हो जाएं, या वह दूसरा निकाह न कर ले।

कई आवाज़ें : सुभानअल्लाह, सुभानअल्लाह।

ज़ियाद : यह मेरे हाथ में ख़लीफ़ा का फ़रमान है। देखिए, जिसे यक़ीन न हो। हर एक यतीम को बालिग़ होने तक सौ दिरहम सालाना मुक़र्रर किया गया है। हर एक जवान मर्द और औरत को शादी के वक्त एक हज़ार दिरहम एकमुश्त खर्च के लिए दिया जाएगा।

कई आवाजें खुदा ख़लीफ़ा यज़ीद को सलामत रखे। कितनी फैयाजी की है।

ज़ियाद अभी और सुनिए तब फ़ैसला कीजिए कि यज़ीद ज़ालिम है या रियायापरवर ? उसका हुक्म है कि हर एक क़बीले के सरदार को दरिया के किनारे की उतनी ज़मीन अता-जाय जितनी दूर उसका तीर जा सके।

कई आवाजें हम यज़ीद की बैयत मंजूर करते हैं। यज़ीद हमारा ख़लीफ़ा है।

ज़ियाद नहीं, यज़ीद बैयत के लिए आपको रिश्वत नहीं देता। बैयत आपके अख्तियार में है, जिसे जी चाहे, दीजिए। यज़ीद हुसैन से दुश्मनी करना नहीं चाहता। उसका हुक्म है कि नदियों के घाट का महसूल मुआफ़ कर दिया जाए।

कई आवाजें हम यज़ीद को अपना ख़लीफ़ा तस्लीम करते हैं।

ज़ियाद नहीं-नहीं, यज़ीद कभी हुसैन के हक़ को जायल न करेगा। हुसैन मालिक हैं, फ़ाजिल हैं, आबिद हैं; ज़ाहिद हैं; यज़ीद को इनमें से कोई सिफ़र रखने का दावा नहीं। यज़ीद में अगर कोई सिफ़त है, तो यह कि जुल्म करना जानता है। ख़ासकर नाजुक वक्त पर, जब माल और जान की हिफ़ाजत करने वाला कोई न हो, जब सब अपने हक़ और दावे पेश करने में मसरूफ़ हों।

कई आवाजें ज़ालिम यज़ीद ही हमारा अमीर है। दिल से उसकी बैयत क़बूल करते हैं।

ज़ियाद : सोचिए, और ग़ौर से सोचिए। अगर ख़िलाफ़त के दूसरे दावेदारों की तरह यज़ीद भी किसी गोशे में बैठे हुए बैयत की फ़िक्र करते, तो आज मुल्क की क्या हालत होती ? आपकी जान व माल को हिफ़ाजत कौन करता ? कौन मुल्क को बाहर के हमलों से और अंदर की लड़ाइयों से बचाता ? कौन सड़कों और बंदरगाहों को डाकुओं से महफ़ूज़ रखता ? कौन क़ौम की बहू-बेटियों की हुरमत का ज़िम्मेदार होता ? जिस एक आदमी की ज़ात से क़ौम और मुल्क को नाज़ुक मौक़े पर कितने फ़ायदे पहुंचे हों, और जिसने ख़लीफ़ा चुने जाने का इंतज़ार न करके ये बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां सिर पर ले ली हों, क्या वह इसी क़ाबिल है कि उसे मलऊन और मरदूद कहा जाय, उसे सरे बाजार गालियां दी जाएं ?

एक आवाज : हम बहुत नादिम हैं। खुदा हमारा गुनाह मुआफ़ करे।

शिमर : हमने ख़लीफ़ा यज़ीद के साथ बड़ी बेइंसाफ़ी की है।

ज़ियाद : हां, आपने ज़रूर बेइंसाफ़ी की है। मैं यह बिला ख़ौफ़ कहता हूं, ऐसा आदमी इससे कहीं अच्छे बर्ताव के लायक़ था। हुसैन की इज्ज़त यज़ीद के और मेरे दिल में ज़रा भी कम नहीं है, जितनी और किसी के दिल में होगी। अगर आप उन्हें अपना ख़लीफ़ा तस्लीम करते हैं, तो मुबारक हो। हम खुश, हमारा खुदा खुश। यज़ीद सबसे पहले उनकी बैयत मंजूर करेगा, उसके बाद मैं हूंगा। रसूल पाक ने ख़िलाफ़त के लिए इंतख़ाब की शर्त लगा दी है। मगर हुसैन के लिए इसकी क़ैद नहीं।

क़ीस : है। यह क़ैद सबके लिए एक-सा है।

ज़ियाद : अगर है, तो इंतख़ाब का बेहतर और कौन मौक़ा होगा। आप अपनी रज़ा और रग़बत से किसी का लिहाज़ और मुरौवत किए बग़ैर जिसे चाहें, ख़लीफ़ा तस्लीम कर लें। मैं कसरत राय को मानकर यज़ीद को इसकी इत्तला दे दूंगा।

एक तरफ़ से : हम यज़ीद को ख़लीफ़ा मानते हैं।

दूसरी तरफ़ से : हम यज़ीद की बैयत क़बूल करते हैं।

तीसरी तरफ़ से : यज़ीद, यज़ीद, यज़ीद।

ज़ियाद : ख़ामोश ! हुसैन को कौन ख़लीफ़ा मानता है ?

कोई आवाज़ नहीं आती।

ज़ियाद : आप जानते हैं, यज़ीद आबिद नहीं।

कई आवाज़ें : हमें आबिद की ज़रूरत नहीं।

ज़ियाद : यज़ीद आलिम नहीं, फ़ाज़िल नहीं, हाफ़िज़ नहीं।

कई आवाज़ें : हमें आलिम फ़ाज़िल की ज़रूरत नहीं।

हज्जाज : कितना फ़ैयाज है।

शिमर : किसी ख़लीफ़ा ने इतनी फ़ैयाज़ी नहीं की।

शैस : आबिद कभी फ़ैयाज नहीं होता।

अशअस : अजी, कुछ न पूछो, मस्ज़िदों के मुल्लाओं को देखो, रोटियों पर जान देते हैं।

ज़ियाद : अच्छा, यज़ीद को आपने अपना ख़लीफ़ा तो मान लिया, लेकिन हेजाज, मिस्र, यमन के लोग किसी और को ख़लीफ़ा मान लें, तो ?

कई आवाज़ें : हम ख़लीफ़ा यज़ीद के लिए जान दे देंगे।

ज़ियाद : बहुत मुमकिन है कि हज़रत हुसैन ही को वे लोग अपना ख़लीफ़ा बनाएं, तो आप अपना क़ौल निभाएंगे ?

कई आवाजें : निभाएंगे। यज़ीद के सिवा और कोई ख़लीफ़ा नहीं हो सकता।

ज़ियाद : मैंने सुना है, हज़रत हुसैन ने अपने चचेरे भाई मुसलिम को आपकी बैयत लेने के लिए भेजा है। और शायद खुद भी आ रहे हैं। यज़ीद को गोश में बैठकर खुदा की याद करना इससे कहीं अच्छा मालूम होगा कि वह इस्लाम में निफ़ाक़ की आग भड़काएं। अभी मौक़ा है, आप लोग खूब ग़ौर कर लें।

शिमर : हमने खूब ग़ौर कर लिया है।

हज्जाज : हुसैन को न जाने क्यों ख़िलाफ़त की हवस है। बैठे हुए खुदा की इबादत क्यों करते ?

क़ीस : हुसैन मदीना वालों के साथ जो सलूक़ करेंगे, वह कभी हमारे साथ नहीं कर सकते।

शैस : उनका आना बला का आना है।

ज़ियाद : अगर आप चाहते हैं कि मुल्क में अमन रहे, तो ख़बरदार, इस वक़्त एक आदमी भी जामा मस्ज़िद में न जाय। हुसैन आएं, हमारे सिर आंखों पर। हम उनकी ताजीम करेंगे, उनकी ख़िदमत करेंगे, लेकिन उन्हें ख़िलाफ़त का दावा पेश करते देखेंगे, तो मुल्क में अमन रखने के लिए हमें आपकी मदद की ज़रूरत होगी। यही आपकी आज़माइश का वक़्त होगा, और इसी में पूरे उतरने पर इस्लाम की ज़िदगी का दारमदार है।

मिंबर पर से उतर आता है।

शैस : बड़ी ग़लती हुई कि हुसैन को ख़त लिखा।

शिमर : मैं तो अब जामा मस्ज़िद न जाऊंगा।

क़ीस : यहां कौन जाता है !

शैस : काश, इन्हीं रियायतों का चंद रोज पहले एलान कर दिया गया होता, तो ख़त लिखने की नौबत ही क्यों आती !

शिमर : दीन की फिक्र मोटे आदमी करें, यहां दुनिया की फिक्र काफ़ी है।

सब जाते हैं।

आठवां दृश्य

समय—नौ बजे रात। कूफ़ा की जामा मस्जिद। मुसलिम, मुख़्तार, सुलेमान और हानी बैठे हुए हैं। कुछ आदमी द्वार पर बैठे हुए हैं।

सुलेमान : अब तक लोग नहीं आए ?

हानी : अब आने की कम उम्मीद है।

मुसलिम : आज ज़ियाद का लौटना सितम हो गया। उसने लोगों को वादों के सब्ज़बाग़ दिखाए होंगे।

सुलेमान : इसी को तो सियासत का आईन कहते हैं।

मुसलिम : इन ज़ालिमों ने सियासत को ईमान से बिल्कुल जुदा कर दिया है। दूसरे ख़लीफ़ों ने इन दोनों को मिलाया था। सियासत को दग़ा से पाक कर दिया था।

मुखतार : हज़रत मुसलिम, अब आप अपनी तक़रीर शुरू कीजिए शायद लोग जमा हो जाएं।

मुसलिम मिंबर पर चढ़कर भाषण देते हैं।

मुसलिम : "शुक्र है उस पाक खुदा का, जिसने हमें आज दीन इस्लाम के लिए एक ऐसे बुर्जुग को ख़लीफ़ा चुनने का मौक़ा दिया है, जो इस्लाम का सच्चा दोस्त...."

बहुत-से आदमी मस्जिद में घुस पड़ते हैं।

एक आदमी : बस हज़रत मुसलिम, ज़बान बंद कीजिए।

दूसरा आदमी : जनाब, आप चुपके से मदीने की राह लें। यज़ीद हमारे ख़लीफ़ा हैं, और यज़ीद हमारा इमाम है।

सुलेमान : मुझे मालूम है कि ज़ियाद ने आज तुम्हारी पीठ पर खूब हाथ फेरे हैं; और हरी-हरी घास दिखाई है, पर याद रक्खो, घास के नीचे जाल बिछा हुआ है।

बाहर से ईंट और पत्थर की वर्षा होने लगती है।

एक आदमी : मारो-मारो, यह क़ौम का दुश्मन है।

सुलेमान : ज़ालिमो, यह खुदा का घर है। इसकी हुरमत का तो ख़याल रखो।

दूसरा आदमी : खुदा का घर नहीं; इस्लाम के दुश्मनों का अड्डा है।

तीसरा आदमी : मारो-मारो, अभी तक इसकी ज़बान बंद नहीं हुई।

सुलेमान ज़ख्मी होकर गिर पड़ते हैं। मुसलिम बाहर आकर कहते हैं।

"ऐ बदनसीब क़ौम, अगर तू इतनी जल्दी रसूल की नसीहतों को भूल सकती है, और तुझमें नेक व बद की तमीज़ नहीं रही, अगर तू इतनी जल्द जुल्म और जिल्लत को भूल सकती है, तो तू दुनिया में कभी सुर्ख़रू न होगी।"

एक आदमी : इस्लाम का दुश्मन है।

दूसरा आदमी : नहीं-नहीं, हज़रत हुसैन के चचेरे भाई हैं। इनकी तौहीन मत करो।

तीसरा आदमी : इन्हें पकड़कर शहर की किसी अंधेरी गली में छोड़ दो। हम इनके ख़ून से हाथ न रंगेंगे।

कई आदमी मुसलिम पर टूट पड़ते हैं और उन्हें खींचते हुए ले जाते हैं, और अंधेरे में छोड़ देते हैं।

मुसलिम : (दिल में) ज़ालिमों ने कहां लाकर छोड़ दिया। कुछ नहीं सूझता। रास्ता नहीं मालूम। कहां जाऊं ? कोई आदमी नज़र नहीं आता कि उससे रास्ता पूछूं।

हानी आता हुआ दिखाई देता है।

मुसलिम : ऐ खुदा के नेक बंदे, मुझे यहां से निकलने का रास्ता बता दो।

हानी : हज़रत मुसलिम ! क्या अभी आप यहीं खड़े हैं ?

मुसलिम : आप हैं, हानी ? रसूल पाक की क़सम, इस वक़्त तन में जान पड़ गई। मुझे तो कई आदमियों ने पकड़ लिया, और यहां छोड़कर चल दिए।

हानी : वे मेरे ही आदमी थे। मैंने वहां की हालत देखी, तो आपको वहां से हटा देना मुनासिब समझा। मैंने उन्हें तो ताकीद की थी कि आपको मेरे घर पहुंचा दें।

मुसलिम : पहले आपके आदमी होंगे, अब नहीं हैं। ज़ियाद की तक़रीर ने उन पर भी असर किया है।

हानी : खैर, कोई मुज़ायका नहीं, मेरा मकान क़रीब है; आइए। हम सियासत के मैदान में ज़ियाद से नीचा खा गए। उसने यह ख़बर मशहूर कर दी है कि हुसैन आ रहे हैं। इस हीले से लोग जमा

हो गए, और उसे उनको फरेब देने का मौका मिल गया।

मुसलिम : मुझे तो अब चारों तरफ अंधेरा-ही-अंधेरा नज़र आता है।

हानी : ज़िहाद की तकरीर ने सूरत बदल दी। जिन आदमियों ने हज़रत के पास ख़त भेजने पर ज़ोर दिया था, वे भी फ़रेब में आ गए।

सुलेमान और मुख़्तार आते हैं। सुलेमान के सिर में पट्टी बंधी हुई है।

मुख़्तार : शुक्र है, आप खैरियत से पहुंच गए। ज़ियाद के आदमी आपको तलाश करते फिरते हैं।

मुसलिम : हानी, ऐसी हालत में यहां रहकर मैं आपको ख़तरे में नहीं डालना चाहता। मुझे रुख़सत कीजिए। रात को किसी मस्जिद में पड़ रहूंगा।

हानी : मुआजअल्लाह, यह आप क्या फरमाते हैं ! यह आपका घर है। मैं और मेरा सब कुछ हज़रत हुसैन के क़दमों पर निसार है।

शरीक का प्रवेश।

शरीक : अस्सलामअलेक या हज़रत मुसलिम! मैं भी हुसैन के गुलामों में हूं।

हानी : हज़रत मुसलिम, आपने शरीक का नाम सुना होगा। आप हज़रत अली के पुराने ख़ादिम हैं, और उनकी शान में कई क़सीदे लिख चुके हैं।

मुसलिम : **(शरीक के गले मिलकर)** ऐसा कौन बदनसीब होगा, जिससे आपका क़लाम न देखा गया हो।

शरीक : मैं हज़रत का खादिम और नबी का गुलाम हूं। बसरेवालों की फरियाद लेकर यज़ीद के पास गया था। वहां मालूम हुआ कि आप मक्का से रवाना हो गए हैं। मैं ज़ियाद के साथ ही इधर चल पड़ा कि शायद आपकी कुछ ख़िदमत कर सकूं। यज़ीद ने अब सख्ती की जगह नर्मी और रियायत से काम लेना शुरू किया है। और आज ज़ियाद की तक़रीर का असर देखकर मुझे यक़ीन हो गया है कि यहां के लोग हज़रत हुसैन से ज़रूर दग़ा कर जाएंगे। हमें भी फ़रेब का जवाब फ़रेब से ही देना लाजिम है।

मुसलिम : क्योंकर ?

शरीक : इसकी आसान तरकीब है। मैं ज़ियाद को अपनी बीमारी की खबर दूंगा। वह यहां मेरी मिज़ाज़पुर्सी करने ज़रूर आवेगा, आप उसे क़त्ल कर दीजिए।

मुसलिम : अल्लाहताला ने फ़रमाया है कि मुसलमान को मुसलमान का खून करना जायज नहीं।

शरीक : मगर अल्लाहताला ने यह भी फ़रमाया है कि बेदीन को अमन देना सांप को पालना है।

मुसलिम : पर मेरी इंसानियत इसकी इज़ाजत नहीं देती।

शरीक : बेदीन को क़त्ल करना ऐन सबाब है। ज़िहाद में इंसानियत को दख़ल नहीं, हक़ का रास्ता डाकुओं और लुटेरों से ख़ाली नहीं है। और उनका ख़ौफ़ है, तो इस रास्ते पर क़दम ही न रखना चाहिए। आप इस मामले को सोचिए।

बाहर से आदमियों का एक गिरोह हानी का दरवाज़ा तोड़कर अंदर घुस आता है।

एक आदमी : इन्हीं ने हुसैन को ख़त लिखा था। पकड़ लो इन्हें।

मुसलिम : **(सामने आकर)** यहां से चले जाओ।

दूसरा आदमी : यही हज़रत मुसलिम हैं। इन्हें गिरफ़्तार कर लो।

मुसलिम : हां, मैं ही मुसलिम हूं। मैं ही तुम्हारा ख़तावार हूं। अगर चाहते हो, तो मुझे क़त्ल करो। **(कमर से तलवार फेंककर)** यह लो, अब तुम्हें मुझसे कोई ख़ौफ़ नहीं है। अगर तुम्हारा ख़लीफ़ा मेरे ख़ून से खुश हो, तो उसे खुश करो। मगर खुदा के लिए हुसैन को लिख दो कि आप यहां न आएं। उन्हें ख़िलाफ़त की हवस नहीं है। उनकी मंशा सिर्फ़ आपकी हिमायत करना था। वह आप पर अपनी जान निसार करना चाहते थे। उनके पास फ़ौज नहीं थी, हथियार नहीं थे, महज़ आपके लिए अपनी जान देने का जोश था, इसीलिए उन्होंने अपने गोशे को छोड़ना मंजूर किया। अब आपको उनकी ज़रूरत नहीं है, तो उन्हें मना कर दीजिए कि यहां मत आओ। उन्हें बुलाकर शहीद कर देने से आपको नदामत और अफ़सोस के सिवा और कुछ हाथ न आएगा। उनकी जान लेनी मुश्किल नहीं; यहां की कैफ़ियत देखकर वह इस सदमे से खुद ही मर जाएंगे। वह इसे आपका क़सूर नहीं, अपना क़सूर समझेंगे कि वही उम्मत, जो मेरे नाना

पर जान देती थी, अगर आज मेरे खून की प्यासी हो रही है, तो यह मेरी ख़ता है। यह ग़म उनका काम तमाम कर देगा। आपका और आपके अमीर का मंशा खुब-ब-खुद पूरा हो जाएगा। बोलो, मंजूर है ? उन्हें लिख दूं कि आपने जिनकी हिमायत के लिए शहीद होना क़बूल किया था, वह अब आपको शहीद करने की फ़िक्र में हैं। आप इधर रुख़ न कीजिए। **(कोई नहीं बोलता।)** ख़ामोशी नीम रज़ा है। आप कहते हैं कि यह कैफ़ियत उन्हें लिख दी जाए।

कई आवाज़ें : नहीं-नहीं, इसकी ज़रूरत नहीं।

मुसलिम : तो क्या आप यहीं उनकी लाश को अपनी आंखों के सामने तड़पती देखना चाहते हैं ?

एक आवाज़ : मुआज़अल्लाह हम हज़रत हुसैन के क़ातिल न होंगे।

मुसलिम : ऐसा न कहिए, वरना रसूल को जन्नत में में भी तकलीफ़ होगी। आप अपनी ख़रज़ के गुलाम हैं, दौलत के गुलाम हैं। रसूल ने आपको हमेशा सब्र और संतोष की हिदायत की। आप जानते हैं वह खुद कितनी सादगी से ज़िंदगी बसर करते थे। आपको पहले ख़लीफ़ा का हाल मालूम है, हज़रत फ़ारूक़ के हालात से भी आप वाक़िफ़ हैं। अफ़सोस ! आप उस वसूल को भूल गए, जो तवहीद के बाद इस्लाम का सबसे पाक वसूल है, वरना आप वसीकों और जागीरों के जाल में न फंस जाते। आपने एक पल के लिए भी ख़याल नहीं किया कि वह जागीरें और वसीक़े किसके घर से आएंगे। दूसरों से, जो कई पुश्तों से अपनी ज़मीन पर क़ाबिज़ हैं, वे ज़मीनें छीनकर आपको दी जाएंगी। दूसरों से जबरन रुपये वसूल करके आपको वसीक़े दिए जायेंगे। आपको खुश करने के लिए दूसरों को तबाह करने का बहाना हाथ आ जाएंगा। आप अपने भाइयों के हक़ छीनकर अपनी हवस की प्यास बुझाना चाहते हैं ? दीन-परवरी नहीं है, यह भाई-बंदी नहीं, इसका कुछ और ही नाम है।

कई आवाज़ें : नहीं-नहीं, हम हराम का माल नहीं चाहते।

मुसलिम : मैं यज़ीद का दुश्मन नहीं हूं; मैं ज़ियाद का दुश्मन नहीं हूं; मैं इस्लाम का दोस्त हूं। जो आदमी इस्लाम को पैरों से कुचलता है, चाहे वह यज़ीद हो, ज़ियाद हो, या खुद हुसैन हो, उसका दुश्मन हूं। जो शख़्स क़ुरान की और रसूल की तौहीन करता है,

वह मेरा दुश्मन है।

कई आवाज़ें : हम भी उसके दुश्मन हैं। वह मुसलमान नहीं काफ़िर है।

मुसलिम : बेशक, और कोई मुसलमान, अगर वह मुसलमान है, काफ़िर को ख़लीफ़ा न तस्लीम करेगा, चाहे वह उसका दामन हीरे-जवाहरात से भर दे।

कई आवाज़ें : बेशक, बेशक !

मुसलिम : उससे एक सच्चा दीनदार आदमी कहीं अच्छा ख़लीफ़ा होगा, चाहे वह चिथड़े ही पहने हुए हो।

कई आवाज़ें : बेशक, बेशक !

मुसलिम : तो अब आप तस्लीम करते हैं, कि ख़लीफ़ा उसे होना चाहिए जो इस्लाम का सच्चा पैरो हो। वह नहीं, जो एक का घर लूटकर दूसरे का दिल भरता हो।

कई आदमी : बेशक, बेशक !

मुसलिम : किसी मुसलमान के लिए इससे बड़ी शरम की बात नहीं हो सकती कि वह किसी को महज़ दौलत या हुकूमत की बदौलत अपना इमाम समझे। इमाम के लिए सबसे बड़ी शर्त क्या है ? इस्लाम का सच्चा पैरो होना। इस्लाम ने दौलत को हमेशा हक़ीर समझा है। वह इस्लाम की मौत का दिन होगा, जब वह दौलत के सामने सिर झुकाएगा। खुदा हमको और आपको वह दिन देखने के लिए ज़िंदा न रखे। हमारा दुनिया से मिट जाना इससे कहीं अच्छा है। तुम्हारा फ़र्ज़ है कि बैयत लेने से पहले तहक़ीक़ कर लो, जिसे तुम ख़लीफ़ा बना रहे हो, वह रसूल की हिदायतों पर अमल करता है या नहीं। तहक़ीक़ करो, वह शराब तो नहीं पीता ?

कई आदमी : क्या तहक़ीक़ करना तुम्हारा काम है ? जांच करो कि तुम्हारा ख़लीफ़ा ज़िनाकार तो नहीं ?

मुसलिम : यह जांच करना तुम्हारा काम है। दर्याफ़्त करो कि वह नमाज़ पढ़ता है, रोजे रखता है, आलिमों की इज़्ज़त करता है, ख़ज़ाने का बेजा इस्तेमाल तो नहीं करता ? अगर इन बातों की जांच किए बग़ैर तुम महज़ जागीरों और वसीकों की उम्मीद पर किसी की बैयत क़बूल करते हो, तो तुम क़यामत के रोज़ खुदा के सामने शर्मिंदा होगे। जब वह पूछेगा कि तुमने इंतख़ाब के हक़ का क्यों बेजा इस्तेमाल किया, तो तुम कैसे क्या जवाब

दोगे ? जब रसूल तुम्हारा दामन पकड़कर पूछेंगे कि तुमने उसकी अमानत को, जो मैंने तुम्हें दी थी, क्यों मिटा दिया, तो तुम उन्हें कौन-सा मुंह दिखाओगे।

कई आदमी : हमें ज़ियाद ने धोखा दिया। हम यज़ीद की बैयत से इनकार करते हैं।

मुसलिम : पहले खूब जांच लो। मैं किसी पर इल्ज़ाम नहीं लगाता। कौन खड़ा होकर कह सकता है कि यज़ीद इन बुराइयों से पाक है।

कई आदमी : हम जांच कर चुके।

मुसलिम : तो तुम्हें किसी की बैयत मंज़ूर है ?

कई आवाज़ें : हुसैन की ! रसूल के नवासे की।

मुसलिम : उनके बारे में तुमने इन बातों की जांच कर ली ? तुम्हें यक़ीन है कि हुसैन उन बुराइयों से पाक हैं ?

कई आवाज़ें : हमने जांच कर ली। हुसैन में कोई बुराई नहीं। हम हुसैन को अपना ख़लीफ़ा तस्लीम करते हैं। ज़ियाद ने हमें गुमराह कर दिया था।

एक आदमी : पहले ज़ियाद को क़त्ल कर दो।

दूसरा आदमी : बेशक, उसी ने गुमराह किया था।

मुसलिम : नहीं, तुम्हें रसूल का वास्ता है। मोमिन पर मोमिन का ख़ून हराम है।

सब आदमी वहीं बैठ जाते हैं, और मुसलिम के हाथों पर हुसैन की बैयत करते हैं।

नवां दृश्य

समय—दोपहर। हानी का मकान। शरीक एक चारपाई पर पड़े हुए हैं। सामने ताक़ पर शीशियां और दवा के प्याले रखे हुए हैं। मुसलिम और हानी फ़र्श पर बैठे हैं।

शरीक : ज़ियाद अब आता ही होगा। मुसलिम, तलवार को तेज़ रखना।

हानी : मैं खुद उसे क़त्ल करता, पर जईफ़ी ने हाथों में क़ूवत बाक़ी नहीं रखी।

शरीक : इसमें पसोपेश की मुतलक ज़रूरत नहीं। हक़ की हिमायत के लिए, इस्लाम की हिमायत के लिए, क़ौम की हिमायत के

लिए, अगर ख़ून का दरिया बहा दिया जाए, तो उसमें फ़रिश्ते वज़ू करेंगे। औलिया की रूहें उसमें नहाएंगी। जो हाथ हक़ की हिमायत में न उठे, वह अंधी आंखों से, बुझे हुए चिराग़ से, दिन के चांद से भी ज्यादा बेकार है। इस्लाम की ख़िदमत का इससे बेहतर मौक़ा आपको फिर न मिलेगा। शायद फिर कभी किसी को न मिलेगा। कूफ़ा और बसरा पर क़ब्ज़ा करके आप यज़ीद की बड़ी-से-बड़ी फ़ौज का मुक़ाबला कर सकते हैं। यज़ीद की ख़िलाफ़त इस्लाम को दुनियादारी और इस्लाम की तरफ़ ले जाएगी, और हुसैन की ख़िलाफ़त हक़ और सच्चाई की तरफ़। क्या यह आपको मंजूर है कि यज़ीद के हाथों इस्लाम तबाह हो जाए।

ज़ियाद आता है। और मुसलिम बग़ल की कोठरी में छिप जाते हैं।

ज़ियाद : अस्सलामअलेक या शरीक ! तुम्हारी हालत तो बहुत ख़राब नज़र आती है।

हानी : कल से आंखें नहीं खोलीं। सारी रात कराहते गुज़री है।

शरीक : खुदा फ़रमाता है, 'हक़ के वास्ते जो तलवार उठाता है, उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ है।'

ज़ियाद : शरीक, शरीक ! कैसी तबियत है ?

शरीक : शौक़ कहता था कि हां, हसरत यह कहती थी, नहीं, मैं इधर मुश्किल में था, कातिल उधर मुश्किल में था।

हानी : आंखें खोलो। अमीर तुम्हारी मुलाक़ात को आए हैं।

शरीक : **सल्ब की कूवत, तड़पने की, तड़पता किस तरह,**
एक दिल में दूसरा खंजर क़फे-क़ातिल में था।

ज़ियाद : क्या रात भी इनकी यही हालत थी ?

हानी : जी हां, यों ही बकते रहे।

शरीक : **गले पर छुरी क्यों नहीं फेर देते,**
हक़ीक़त पर अपनी नज़र करने वाले।

ज़ियाद : किसी हकीम को बुलाना चाहिए।

शरीक : कौन आया है, ज़ियाद !
हुजूमे-आरज़ू से बढ़ गईं बेताबियां दिल की,
अरे वो छिपनेवाले यह हिजाबे जां सितां कब तक।

ज़ियाद : तुम्हारे घर वालों को ख़बर दी जाए ?

शरीक : मैं यहीं मरूंगा, यहीं मरूंगा।

मेरी खुशी पर आसमां हंसता है, और हंसे न क्यों,
बैठा हूं जाके चैन से दोस्त की बज़्मे-नाज़ में।

ज़ियाद : खुदा किसी ग़रीब को बेवतनी में मरीज़ न बनाए। हानी, मैंने सुना है, मुसलिम मक्के से यहां आए हैं। ख़लीफ़ा ने मुझे सख़्त ताक़ीद की है कि उन्हें गिरफ्तार कर लूं। आप शहर के रईस हैं, उनका कुछ सुराग़ मिले, तो मुझे इत्तिला दीजिएगा। मुझे आपके ऊपर पूरा भरोसा है। आप समझ सकते हैं कि उनके आने से मुल्क में कितना शोर-शर पैदा होगा। क़सम है कलाम पाक की, इस वक्त जो उनका सुराग़ लगा दे, उनका दामन जवाहरात से भर दूं। मैं इसी फिक्र में जाता हूं। आप भी तलाश में रहिए।

चला जाता है।

शरीक : हज़रत मुसलिम, आपसे आज जो ग़लती हुई है, उस पर आप मरते दम तक पछताएंगे, और आपके बाद मुसलमान क़ौम इसका ख़ामियाजा उठाएगी। तुम क़यास नहीं कर सकते कि तुमने इस्लाम को आज कितना बड़ा नुक़सान पहुंचाया है। शायद खुदा को यही मंजूर है कि रसूल का लगाया हुआ बाग़ यज़ीद के हाथों बरबाद हो जाए।

मुसलिम : शरीक, मैंने कभी दग़ा नहीं की, और मुझे यक़ीन है कि हज़रत हुसैन मेरी इस हरकत को कभी पसंद न करते। इस्लाम का दरख्त हक़ के बीज से उगा है। दग़ा से उसकी आबपाशी करने में अंदेशा है कि कहीं दरख़्त सूख न जाए। हक़ पर क़ायम रहते हुए अगर इस्लाम का नामोनिशान दुनिया से मिट जाए, तो भी इससे कहीं बेहतर है कि उसे ज़िंदा रहने के लिए दग़ा का सहारा लेना पड़े। **(हानी से)** भाई साहब को इत्तिला दे दूं कि यहां अठारह हज़ार आदमियों ने आपकी बैयत क़बूल कर ली है।

हानी : ज़रूर। मेरा गुलाम इस ख़िदमत के लिए हाज़िर है।

मुसलिम : **(दिल में)** यह ग़ैरमुमकिन है कि इतने आदमी बैयत लेकर फिर उसे तोड़ दें। कल मुझे चारों तरफ़ अंधेरा-ही-अंधेरा नज़र आता था। आज चारों तरफ़ रोशनी नज़र आती है। मेरी ही

तहरीक़ पर हुसैन यहां आने के लिए राज़ी हुए। खुदा का हज़ार शुक्र है कि मेरा दावा सही निकला, और मेरी उम्मीद पूरी हुई।

दसवां दृश्य

समय—संध्या। ज़ियाद का दरबार।

ज़ियाद : तुम लोगों में ऐसा एक आदमी भी नहीं है, जो मुसलिम का सुराग़ लगा सके। मैं वादा करता हूं कि पांच हज़ार दीनार उसकी नज़र करूंगा।

एक दरबारी : हुज़ूर, कहीं सुराग़ नहीं मिलता। इतना पता तो मिलता है कि कई हज़ार आदमियों ने उनके हाथ पर हुसैन की बैयत की है। पर वह कहां ठहरे हैं, इसका पता नहीं चलता।

मुअक्किल का प्रवेश।

मुअक्किल : हुजूर को खुदा सलामत रखे, एक खुशख़बरी लाया हूं। अपना ऊंट लेकर शहर के बाहर चारा काटने गया था कि एक आदमी को बड़ी तेज़ी से सांड़नी पर जाते देखा। मैंने पहचान लिया, वह सांड़नी हानी की थी। उनकी ख़िदमत में कई साल रह चुका हूं। शक़ हुआ कि यह आदमी इधर कहां जा रहा है। उसे एक टीले से रोककर पकड़ लिया। जब मारने की धमकी दी, तो उसने क़बूल किया कि मुसलिम का ख़त लेकर मक्के जा रहा हूं। मैंने वह ख़त उससे छीन लिया, यह हाज़िर है। हुक्म हो, तो क़ासिद को पेश करूं।

ज़ियाद : **(ख़त पढ़कर)** क़सम खुदा की, मैं मुसलिम को जिंदा न छोड़ूंगा। मैं यहां मौजूद रहूं, और अठारह हज़ार आदमी हुसैन की बैयत क़बूल कर लें। **(क़ासिद से)** तू किसका नौकर है ?

क़ासिद : अपने आक़ा का।

ज़ियाद : तेरा आक़ा कौन है ?

क़ासिद : जिसने मुझे मिस्त्रियों के हाथ से ख़रीदा था।

ज़ियाद : किसने तुझे ख़रीदा ?

क़ासिद : जिसने रुपये दिए ?

ज़ियाद : किसने रुपये दिए ?

क़ासिद : मेरे आक़ा ने।

ज़ियाद : तेरा आक़ा कहां रहता है ?

क़ासिद : अपने घर में।

ज़ियाद : उसका घर कहां है ?

क़ासिद : जहां उसके बुजुर्गों ने बनवाया था।

ज़ियाद : क़सम खुदा की, तू एक ही शैतान है। मैं जानता हूं कि तुझ जैसे आदमियों के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए। **(जल्लाद से)** इसे ले जाकर क़त्ल कर दे।

मुअक्किल : हुज़ूर, मैं ख़ूब पहचानता हूं कि यह सांड़नी हानी की है।

ज़ियाद : अगर तू मुसलिम का सुराग़ लगा दे, तो तुझे आज़ाद कर दूं, और पांच हज़ार दीनार इनाम दूं।

मुअक्किल : **(दिल में)** ये बड़े-बड़े हाकिम बड़ी-बड़ी थैलियां हड़प करने के लिए ही हैं। अक्ल खाक नहीं होती। जब सांड़नी मौजूद है, तो उसके मालिक का पता लगाना क्या मुश्किल है? आज किसी भले आदमी का मुंह देखा था। चलकर सांड़नी पर बैठ जाता हूं, और उसकी नकेल छोड़ देता हूं। आप ही अपने घर पहुंच जाएगी। वहीं मुसलिम का पता लग जाएगा।

ज़ियाद : **(दिल में)** अगर यह सांड़नी हानी की है, तो साफ़ ज़ाहिर है कि वह भी इस साज़िश में शरीक़ है। मैं अब तक उसे अपना दोस्त समझता था। खुदा, कुछ नहीं मालूम होता कि कौन मेरा दोस्त है, और कौन दुश्मन ! मैं अभी उसके घर गया था। अगर शरीक भी हानी का मददगार है तो यही कहना पड़ेगा कि दुनिया में किसी पर भी एतबार नहीं किया जा सकता।

ग्यारहवां दृश्य

समय—दस बजे रात। ज़ियाद के महल के सामने सड़क पर सुलेमान, मुख़्तार और हानी चले आ रहे हैं।

सुलेमान : ज़ियाद के बर्ताव में अब कितना फ़र्क़ नज़र आता है ?

मुख़्तार : हां, वरना हमें मशविरा देने के लिए क्यों बुलाता।

हानी : मुझे तो ख़ौफ़ है कि उसे मुसलिम की बैयत लेने की ख़बर मिल गई है। कहीं उसकी नीयत ख़राब न हो।

मुख़्तार : शक़ और एतबार साथ-साथ नहीं होता। वरना वह आज आपके

घर न जाता।

हानी : उस वक़्त भी शायद भेद लेने ही के इरादे से गया हो। मुझसे ग़लती हुई कि अपने क़बीले के कुछ आदमियों को साथ न लाया, तलवार भी नहीं ली।

सुलेमान : यह आपका वहम है।

ज़ियाद के मकान में वे सब दाख़िल होते हैं। वहां क़ीस, शिमर, हज्जाज आदि बैठे हुए हैं।

ज़ियाद : अस्सलामअलेक। आइए, आप लोगों से एक ख़ास मुआमले में सलाह लेनी है। क्यों शेख हानी, आपके साथ ख़लीफ़ा यज़ीद ने जो रियायतें कीं, क्या उनका यह बदला होना चाहिए था कि आप मुसलिम को अपने घर में ठहराएं और लोगों को हुसैन की बैयत लेने पर आमादा करें ? हम आपका रुतबा और इज़्ज़त बढ़ाते हैं, और आप हमारी जड़ खोदने की फिक्र में हैं।

हानी : या अमीर, खुदा जानता है, मैंने मुसलिम को खुद नहीं बुलाया, वह रात को मेरे घर आए, और पनाह चाही। यह इंसानियत के ख़िलाफ़ था कि मैं उन्हें घर से बाहर निकाल देता। आप खुद सोच सकते हैं कि इसमें मेरी क्या ख़ता थी।

ज़ियाद : तुम्हें मालूम था कि हुसैन ख़लीफ़ा यज़ीद के दुश्मन हैं।

हानी : अगर मेरा दुश्मन भी मेरी पनाह में आता तो मैं दरवाज़ा बंद न करता।

ज़ियाद : अगर तुम अपनी ख़ैरियत चाहते हो, तो मुसलिम को मेरे हवाले कर दो। वरना कलाम पाक की क़सम, तुम फिर आफ़ताब की रोशनी न देखोगे।

हानी : या अमीर, अगर आप मेरे ज़िस्म के टुकड़े-टुकड़े कर डालें, और उन टुकड़ों को आग में जला डालें, तो भी मैं मुसलिम को आपके हवाले न करूंगा। मुरौवत इसे कभी क़बूल नहीं करती कि अपनी पनाह में आने वाले आदमी को दुश्मन के हवाले किया जाए। यह शराफ़त के ख़िलाफ़ है, अरब की आन के ख़िलाफ़ है। अगर मैं ऐसा करूं तो अपनी ही निगाह में गिर जाऊंगा। मेरे मुंह पर हमेशा के लिए स्याही का दाग़ लग जाएगा, और आने वाली नस्लें मेरे नाम पर लानत करेंगी।

क़ीस : **(हानी को एक किनारे ले जाकर)** हानी, सोचो, इसका अंजाम

क्या होगा ? तुम पर, तुम्हारे ख़ानदान पर, तुम्हारे क़बीलों पर आफ़त आ जाएगी। इतने आदमियों को क़ुर्बान करके एक आदमी की जान बचाना कहां की दानाई है ?

हानी : क़ीस, तुम्हारे मुंह से ये बातें जेबा नहीं देतीं ? मैं हुसैन के चचेरे भाई के साथ कभी दग़ा न करूंगा चाहे मेरा सारा ख़ानदान क़त्ल कर दिया जाए।

ज़ियाद : शायद तुम अपनी ज़िंदगी से बेजार हो गए हो।

हानी : आप मुझे अपने मकान पर बुलाकर मुझे क़त्ल की धमकी दे रहे हैं। मैं कहता हूं कि मेरा एक क़तरा ख़ून इस आलीशान इमारत को हिला देगा। हानी बेकस, बेजार और बेमददगार नहीं है।

ज़ियाद : **(हानी के मुंह पर सोंटे से मार कर)** ख़लीफ़ा का नायब किसी के मुंह से अपनी तौहीन न सुनेगा, चाहे वह दस हज़ार कबीले का सरदार क्यों न हो।

हानी : **(नाक से खून पोंछते हुए)** ज़ालिम ! तुझे शर्म नहीं आती कि एक निहत्थे आदमी पर वार कर रहा है। काश, मैं जानता कि तू दग़ा करेगा, तो तू यों न बैठा रहता।

सुलेमान : ज़ियाद ! मैं तुम्हें ख़बरदार किए देता हूं कि अगर हानी को क़ैद किया, तो तू भी सलामत न बचेगा।

ज़ियाद सुलेमान को मारने उठता है, लेकिन हज्जाज उसे रोक लेता है।

ज़ियाद : तुम लोग बैठे मुंह क्या ताक रहे हो, पकड़ लो इस बुड्ढे को। **(बाहर की तरफ़ शोर मचता है)** यह कैसा शोर है ?

क़ीस : **(खिड़की से बाहर की तरफ झांककर)** बाग़ियों की एक फ़ौज इस तरफ़ बढ़ती चली आ रही है।

ज़ियाद : कितने आदमी होंगे ?

क़ीस : क़सम खुदा की, दस हज़र से कम नहीं।

ज़ियाद : **(सिपाही को बुलाकर)** हानी को ले जाओ और उस कोठरी में बंद कर दो, जहां कभी आफ़ताब की किरणें नहीं पहुंचतीं।

सुलेमान : ज़ियाद, मैं तुझे ख़बरदार किए देता हूं कि तुझे खुद न उसी कोठरी में क़ैद होना पड़े।

सुलेमान और मुख़्तार बाहर चले जाते हैं।

क़ीस : बाग़ियों की एक फ़ौज बड़ी तेज़ी से बढ़ती चली आ रही है। बीस हज़ार से कम न होगी। मुस्लिम झंडा लिए हुए सबके आगे हैं।

जियाद : दरवाज़े बंद कर लो। अपनी-अपनी तलवारें लेकर तैयार हो जाओ। क़सम खुदा की, मैं इस बग़ावत का मुक़ाबला ज़बान से करूंगा। **(छत पर चढ़कर बाग़ियों से पूछता है।)** तुम लोग शोर क्यों मचाते हो ?

एक आदमी : हम तुझसे हानी के ख़ून का बदला लेने आए हैं।

जियाद : कलाम पाक की क़सम, जीते-जागते आदमी के ख़ून का बदला आज तक कभी किसी ने न लिया। अगर मैं झूठा हूं, तो तुम्हारे शहर काज़ी तो झूठ न बोलेंगे। **(काज़ी को नाचे से बुलाकर)** बाग़ियों से कह दो, हानी ज़िंदा है।

काज़ी · या-अमीर ! मैं हानी को जब तक अपनी आंखों से देख न लूं, मेरी ज़बान से यह तसदीक़ न होगी।

जियाद : कलाम पाक की क़सम, मैं तमाम मुल्लाओं को वासिल जहन्नुम कर दूंगा। जा, देख आ, जल्दी कर।

काज़ी नीचे जाता है और क्षण भर के बाद लौट आता है।

काज़ी : ऐ कूफ़ा के बाशिंदो ! मैं ईमान की रू से तसदीक़ करता हूं कि शेख़ हानी ज़िंदा हैं। हां, उनकी नाक से ख़ून जारी है।

मुसलिम : बढ़े चलो। महल पर चढ़ जाओ। क्या कहा, ज़ीने नहीं हैं ? जवांमरदों को कभी ज़ीने का मुहताज नहीं देखा। तुम आप ज़ीने बन जाओ।

जियाद : **(दिल में)** ज़ालिम एक-दूसरे के कंधों पर चढ़ रहे हैं। **(प्रकट)** दोस्तो, यह हंगामा किसलिए है ? मैं हुसैन का दुश्मन नहीं हूं। मुसलिम का दुश्मन नहीं हूं, अगर तुमने हुसैन की बैयत क़बूल की है, तो मुबारक़ हो। वह शौक़ से आएं। मैं यज़ीद का गुलाम नहीं हूं। जिसे क़ौम ख़लीफ़ा बनाए, उसका गुलाम हूं, लेकिन इसका तसफ़िया हंगामे से न होगा, इस मकान को पस्त करने से न होगा, अगर ऐसा हो, तो सबसे पहले इस पर मेरा हाथ उठेगा। मुझे क़त्ल करने से भी फ़ैसला न होगा, अगर ऐसा हो, तो मैं अपने हाथों अपना सिर क़लम करने को तैयार हूं। इसका फ़ैसला आपस की सलाह

से होगा।

मुसलिम : ठहरो, बस थोड़ी कसर और है। ऊपर पहुंचे कि तुम्हारी फतह है।

सुलेमान : ऐं ! ये लोग भागे कहां जाते हैं ? ठहरो-ठहरो, क्या बात है ?

एक सिपाही : देखिए, क़ीस कुछ कह रहा है।

क़ीस : **(खिड़की से सिर निकालकर)** भाइयो, हम और तुम एक शहर के रहने वाले। क्या तुम हमारे ख़ून से अपनी तलवारों की प्यास बुझाओगे ? तुममें से कितने ही मेरे साथ खेले हुए हैं। क्या यह मुनासिब है कि हम एक-दूसरे का ख़ून बहाएं ! हम लोगों ने दौलत के लालच से, रुतबे के लालच से और हुकूमत के लालच से यज़ीद की बैयत नहीं क़बूल की है, बल्कि महज़ इसलिए कि कूफ़ा की गलियों में ख़ून के नाले न बहें।

कई आदमी : हम ज़ियाद से लड़ना चाहते हैं, अपने भाइयों से नहीं।

मुसलिम : ठहरो-ठहरो। इस दग़ाबाज़ की बातों में न आओ।

सुलेमान : अफ़सोस, कोई नहीं सुनता। सब भागे जाते हैं। वह कौन बदनसीब है, जिसके आदमी इतनी आसानी से बहकाए जा सकते हैं।

मुसलिम : मेरी नादानी थी कि इन पर एतबार किया।

सुलेमान : मैं हज़रत हुसैन को कौन-सा मुंह दिखाऊंगा। ऐसे लोग दग़ा देते जा रहे हैं, जिनको मैं तक़दीर से ज़्यादा अटल समझता था। क़ीस गया, हज्जाज गया, हारिस गया, शोस ने दग़ा दी, अशअस ने दग़ा दी। जितने अपने थे, सब बेगाने हो गए।

मुख़्तार : अब हमारे साथ कुल तीस आदमी और रह गए।

यज़ीद के सिपाही महल से निकलते हैं।

मुख़्तार : खुदा, इन मूज़ियों से बचाओ। हज़रत मुसलिम, मुझे अब कोई ऐसा मकान नज़र नहीं आता, जहां आपकी हिफ़ाज़त कर सकूं। मुझे यहां की मिट्टी से भी दग़ा की बू आ रही है।

कसीर : ग़रीब का मकान हाज़िर है।

मुख़्तार : अच्छी बात है। हज़रत मुसलिम, आप इनके साथ जाएं। हमें रुख़सत कीजिए। हम दो-चार ऐसे आदमियों का रहना ज़रूरी है, जो हज़रत हुसैन पर अपनी जान निसार कर सकें। हमें अपनी जान प्यारी नहीं, लेकिन हुसैन की ख़ातिर उसकी

हिफ़ाज़त करनी पड़ेगी।

वे दोनों एक गली में ग़ायब हो जाते हैं।

बारहवां दृश्य

समय—नौ बजे रात। मुसलिम एक अंधेरी गली में खड़े हैं। थोड़ी दूर पर एक चिराग़ जल रहा है। तौआ अपने मकान के दरवाजे पर बैठी हुई है।

मुसलिम : **(स्वगत)** उफ्! इतनी गर्मी मालूम होती है कि बदन का खून आग हो गया। दिन-भर गुज़र गया, कहीं पानी की एक बूंद भी न नसीब हुआ। एक दिन, सिर्फ एक दिन पहले, बीस हजार आदमियों ने मेरे हाथों पर हुसैन की बैयत ली थी। आज किसी से एक बूंद पानी मांगते हुए खौफ़ होता है कि गिरफ्तार न हो जाऊं। साये पर दुश्मन का गुमान होता है। खुदा से अब मेरी यही दुआ है कि हुसैन मक्के से न चले हों! आह कसीर! खुदा तुम्हें जन्नत में जगह दे। कितना दिलेर, कितना जांबाज़! दोस्त की हिमायत का पाक फ़र्ज़ इतनी जवांमरदी से किसने पूरा किया होगा! तुम दोनों बाप और बेटे इस दगा और फरेब की दुनिया में रहने के लायक न थे। तुम्हारी मज़ार पर हूरें फातिहा पढ़ने आएंगी। आह! अब प्यास के मारे नहीं रहा जाता दुश्मन की तलवार से मरना इतना ख़ौफ़नाक नहीं, जितना प्यास से तड़प-तड़पकर मरना। चिराग़ नज़र आता है। वहां चलकर पानी मांगूं, शायद मिल जाए। **(प्रकट)** ऐ नेक बीबी, मेरा प्यास के मारे बुरा हाल है, थोड़ा-सा पानी पिला दो।

तौआ : आओ, बैठो, पानी लाती हूं।

वह पानी लाती है, मुसलिम पानी पीकर, दीवार से लगकर बैठते हैं।

तौआ : ऐ खुदा के बंदे, क्या तूने पानी नहीं पिया ?

मुसलिम : पी चुका।

तौआ : तो अब घर जाओ। यहां अकेले पड़े रहना मुनासिब नहीं है। ज़ियाद के सिपाही चक्कर लगा रहे हैं, ऐसा न हो, तुम्हें शुबहे

में पकड़ लें।

मुसलिम : चला जाऊंगा।

तौआ : हां बेटा, ज़माना ख़राब है, अपने घर चले जाओ।

मुसलिम : चला जाऊंगा।

तौआ : रात गुज़रती जाती है। तुम चले जाओ, तो दरवाज़ा बंद कर लूं।

मुसलिम : चला जाऊंगा।

तौआ सुभानअल्लाह ! तुम भी अजीब आदमी हो। मैं तुमसे बार-बार घर जाने को कहती हूं, और तुम उठते ही नहीं। मुझे तुम्हारा यहां पड़े रहना पसंद नहीं। कहीं कोई वारदात हो जाए, तो मैं खुदा के दरगाह में गुनहगार बनूं।

मुसलिम : ऐ नेक बीबी, जिसका यहां घर ही न हो, वह किसके घर चला जाए। जिसके लिए घरों के दरवाजे नहीं, सड़कें बंद हो गई हों, उसका कहां ठिकाना है। अगर तुम्हारे घर में जगह और दिल में दर्द हो, तो मुझे पनाह दो। शायद मैं कभी इस नेकी का बदला दे सकूं।

तौआ : तुम कौन हो ?

मुसलिम : मैं वही बदनसीब आदमी हूं, जिसकी आज घर-घर तलाश हो रही है। मेरा नाम मुसलिम है।

तौआ : या हजरत, तुम पर मेरी जान फिदा हो। जब तक तौआ जिन्दा है, आपको किसी दूसरे घर जाने की जरूरत नहीं। खुशनसीब के मरने के वक्त आपकी ज़ियारत हुई। मैं ज़ियाद से क्यों डरूं ? जिसके लिए मौत के सिवा और कोई आरजू नहीं। आइये, आपको अपने मकान के दूसरे हिस्से में ठहरा दूं, जहां किसी का गुज़र नहीं हो सकता (**मुसलिम तौआ के साथ जाते हैं।**) यहां आप आराम कीजिए, मैं खाना लाती हूं।

बलाल का प्रवेश।

बलाल : अम्मां, आज ज़ियाद ने लोगों की ख़ताएं माफ़ कर दीं, सबको तसल्ली दी और इत्मीनान दिलाया कि तुम्हारे साथ कोई सख़्ती न की जाएगी। हजरत मुसलिम का न जाने क्या हाल हुआ !

तौआ : जो हुसैन का दुश्मन है, उसके कौल का क्या एतबार !

बलाल : नहीं अम्मां, छोटे-बड़े खातिर से पेश आए। उसकी बातें ऐसी होती हैं कि एक-एक लफ़्ज़ दिल में चुभ जाता है। हज़रत

मुसलिम का बचना अब मुझे भी मुश्किल जान पड़ता है। अब ख़याल होता है, उनके यहां आने से हम लोगों में निफ़ाक़ पैदा हो गया है। ज़ियाद ने वादा किया है कि जो उन्हें गिरफ़्तार करा देगा, उसे बहुत कुछ इनाम-एकराम मिलेगा।

तौआ : बेटा, कहीं तेरी नीयत तो नहीं बदल गई। खुदा की कसम, मैं तुझे कभी दूध न बख़्शूंगी।

बलाल : अम्मां, खुदा न करे, मेरी नीयत में फर्क आए। मैं तो सिर्फ बात कह रहा था। आज सारा शहर ज़ियाद को दुआएं दे रहा है।

तौआ प्याले में खाना लेकर मुसलिम को दे आती है।

बलाल : हज़रत हुसैन तशरीफ़ न लाएं, तो अच्छा हो। मुझे खौफ़ है कि लोग उनके साथ दग़ा करेंगे।

तौआ : ऐसी बातें मुंह से न निकाल। हाथ-मुंह धो ले। क्या तुझे भूख नहीं लगी, या ज़ियाद ने दावत कर दी ?

बलाल : खुदा मुझे उसकी दावत से बचाए। खाना ला।

तौआ उसके सामने खाना रख देती है, और फिर प्याले में कुछ लेकर मुसलिम को दे आती है।

बलाल : यह पिछवाड़े की तरफ़ बार-बार क्यों जा रही हो, अम्मां ?

तौआ : कुछ नहीं, बेटा ! यों ही एक जरूरत से चली गई थी।

बलाल : हज़रत मुसलिम पर न जाने क्या गुज़री।

खाना खाकर चारपाई पर लेटता है, तौआ बिस्तर लेकर मुसलिम की चारपाई पर बिछा आती है।

बलाल : अम्मां, फिर तुम उधर गईं, और कुछ लेकर गईं। आख़िर माज़रा क्या है ? कोई मेहमान तो नहीं आया है ?

तौआ : बेटा, मेहमान आता, तो क्या उसके लिए यहां जगह न थी ?

बलाल : मगर कोई-न-कोई बात ज़रूर है। क्या मुझसे भी छिपाने की ज़रूरत है ?

तौआ : तू सो जा, तुझसे क्या !

बलाल : जब तक बतला न दोगी, तब तक मैं न सोऊंगा।

तौआ : किसी से कहेगा तो नहीं ?

बलाल : तुम्हें मुझ पर भी एतबार नहीं ?

तौआ : क़सम खा।

बलाल : खुदा की क़सम है जो किसी से कहूं।

तौआ : **(बलाल के कान में)** हज़रत मुसलिम हैं।

बलाल : अम्मां, ज़ियाद को ख़बर मिल गई, तो हम तबाह हो जाएंगे।

तौआ : ख़बर कैसे हो जाएगी ! मैं तो कहूंगी नहीं। हां, तेरे दिल की नहीं जानती। करती क्या, एक तो मुसाफ़िर, दूसरे हुसैन के भाई। घर में जगह न होती, तो दिल में बैठा लेती।

बलाल : **(दिल में)** अम्मां ने मुझे यह राज़ बता दिया, बड़ी ग़लती हुई। दिल पर क्योंकर क़ाबू रख सकता हूं। एक वार से बादशाहत मिलती हो, तो ऐसा कौन हाथ है, जो न उठ जाएगा। एक बात से दौलत मिलती हो, ज़िंदगी के सारे हौसले पूरे होते हों, तो वह कौन जुबान है, जो चुप रह जाएगी। ऐ दिल, गुमराह न हो, तूने सख़्त क़समें खाई हैं। लानत का तौक़ गले में न डाल। लेकिन होगा तो वही, जो मुक़द्दर में है। अगर मुसलिम की तक़दीर में बचना लिखा है, तो बचेंगे, चाहे सारी दुनिया दुश्मन हो जाए। मरना लिखा है तो मरेंगे,चाहे सारी दुनिया उन्हें बचाए।

उठकर तौआ की चारपाई की तरफ़ देखता है, और चुपके-से दरवाजा खोलकर चला जाता है।

तौआ : **(चौंककर उठ बैठती है।)** आह ! ज़ालिम,मां से भी दग़ा की। तुझे यह भी शर्म नहीं आई कि हुसैन का भाई मेरे मकान में गिरफ़्तार हो। आक़बत के दिन खुदा को कौन-सा मुंह दिखाएगा। एक कसीर था कि अपनी और अपने बेटे की जान अपने मेहमान पर निसार कर दी, और एक बदनसीब मैं हूं कि मेरा बेटा उसी मेहमान को दुश्मनों के हवाले करने जा रहा है।

बाहर शोर सुनाई देता है। मुसलिम तौआ के कमरे में आते हैं।

मुसलिम : तौआ, यह शोर कैसा है ?

तौआ : या हज़रत ! क्या बताऊं, मेरा बेटा मुझसे दग़ा कर गया। वह बुरी सायत थी कि मैंने अपने घर में आपको पनाह दी। काश, अगर मैंने उस वक्त बेमुरौवती की होती, तो आप इस ख़तरे में न पड़ते। अगर कभी किसी मां को बेटा जनने पर अफ़सोस

हुआ है, तो वह बदनसीब मां मैं हूं। अगर जानती कि यह यों दग़ा करेगा, तो ज़च्चेखाने ही में उसका गला घोंट देती।

मुसलिम : नेक बीबी, शर्मिंदा न हो। तेरे बेटे की ख़ता नहीं, सब कुछ वही हो रहा है, जो तक़दीर में था, और जिसकी मुझे ख़बर थी। लेकिन दुनिया में रहकर इंसाफ़, इज्ज़त और ईमान के लिए प्राण देना हर एक सच्चे मुसलमान का फ़र्ज़ है। खुदा नबियों के हाथों हिदायत के बीज बोता है, और शहीदों के खून से उसे सींचता है। शहादत वह आला-से-आला रुतबा है कि जो खुदा इंसान को दे सकता है। मुझे अफ़सोस सिर्फ़ यह है कि जो बात एक दिन पहले होनी चाहिए थी, वह आज दो खुदा के बन्दों का खून बहाने के बाद हो रही है।

ज़ियाद के आदमी बाहर से तौआ के घर में आग लगा देते हैं। और मुसलिम बाहर निकलकर दुश्मनों पर टूट पड़ते हैं।

एक सिपाही : तलवार क्या है, बिजली है। खुदा बचाए।

मुसलिम का हाथ पड़ता है, और वहीं गिर पड़ता है।

दूसरा सिपाही : अब इधर चला, जैसे कोई मस्त शेर डकराता हुआ चला आता हो। बंदा तो घर की राह लेता है, कौन जान दे।

भागता है।

तीसरा सिपाही : अर....र...र या हज़रत, मैं ग़रीब मुसाफ़िर हूं, देखने आया था कि यहां क्या हो रहा है।

मुसलिम का हाथ पड़ता है, और वहीं गिर पड़ता है।

चौथा सिपाही : जहन्नुम में जाय ऐसी नौकरी। आदमी आदमी से लड़ता है कि देव से। या हज़रत, मैं नहीं हूं, मैं तो हुज़ूर के हाथों पर बैयत करने आया था।

मुसलिम का हाथ पड़ता है,और वहा गिर पड़ता है।

पांचवां सिपाही : किधर से भागें, कहीं जगह नहीं मिलती। या हज़रत, अपनी बूढ़ी मां का अकेला लड़का हूं। जान बख़्शें, तो हुज़ूर की जूतियां सीधी करूंगा।

तलवार पड़ते ही गिर पड़ता है। सिपाहियों में भगदड़ मच जाती है।

क़ीस : जवानो, हिम्मत न हारो। तुम तीन सौ हो। कितने शर्म की बात है कि एक आदमी से इतना डर रहे हो।

एक सिपाही : बड़े बहादुर हो, तो तुम्हीं क्यों नहीं उससे लड़ आते? दुम दबाए पीछे क्यों खड़े हो ? क्या तुम्हीं को अपनी जान प्यारी है ?

क़ीस : हज़रत मुसलिम, अमीर ज़ियाद का हुक्म है कि अगर आप हथियार रख दें तो आपको पनाह दी जाय। (**सिपाहियों से**) तुम सब छतों पर चढ़ जाओ, और ऊपर से पत्थर फेंको।

मुसलिम : ऐ खुदा और रसूल के दुश्मन, मुझे तेरी पनाह की ज़रूरत नहीं है। मैं यहां तुमसे पनाह मांगने नहीं आया हूं, तुझे सच्चाई के रास्ते पर लाने आया हूं। (**एक पत्थर सिर पर आता है।**) ऐ गुमराही ! क्या तुमने इस्लाम से मुंह फेरकर शराफ़त और इंसानियत से भी मुंह फेर लिया ? क्या तुम्हें शर्म नहीं आती कि तुम अपने रसूल पाक के अज़ीज़ पर पत्थर फेंक रहे हो। हमारे साथ तुम्हारा यह कमीनापन !

तलवार लेकर टूट पड़ते हैं और गाते हैं।–

कूचे में रास्ती के हम अब गदा हुए हैं।
क्या ख़ौफ़ मौत का है, हक़ पर फ़िदा हुए हैं।
ईमां है अपना मुसलिक, मकरोदग़ा से नफ़रत,
दुनिया से मुंह फेरकर मुंह नक़शे-वफ़ा हुए हैं।
क्या उनपे हाथ उठाऊं, जो मौत से हैं ख़ायफ़,
जो राहे-हक़ से फिरकर सरफ़े दग़ा हुए हैं।
दुनिया में आके इक दिन हर शख़्स को है मरना,
जन्नत है, उनकी, जो यां वकफ़े जफ़ा हुए हैं।

क़ीस : कलामे पाक की क़सम, हम आपसे फ़रेब न करेंगे। अगर हम आपसे झूठ बोलें, तो हमारी नजात न हो।

मुसलिम : वल्लाह ! मुझे ज़िंदा गिरफ़्तार करके ज़ियाद के तानों का निशाना न बना सकेगा।

क़ीस : (**आहिस्ते से**) यह शेर इस तरह क़ाबू में न आएगा। इसका सामना करना मौत का लुक़मा बनना है। यहां गहरा गड्ढा खोदो। जब

तक वह औरों को गिराता हुआ आए, तब तक गड्ढा तैयार हो जाना चाहिए। यहां अंधेरा है, वह जोश में इधर आते ही गिर जाएगा।

एक सिपाही : ज़ियाद पर लानत हो, जिसने हमें शेर से लड़ने के लिए भेजा। या हज़रत ! रहम, रहम !

दूसरा सिपाही : खुदा खैर करे। क्या जानता था, यहां मौत का सामना करना पड़ेगा। बाल-बच्चों की खबर लेनेवाला कोई नहीं।

मुसलिम गड्ढे में गिर पड़ते हैं।

मुसलिम : ज़ालिमो, आख़िर तुमने दग़ा की।

क़ीस : पकड़ लो, पकड़ लो, निकलने न पाए। ख़बरदार, क़त्ल न करना, ज़िंदा पकड़ लो।

अशअस : तलवार का हक़दार मैं हूं।

क़ीस : जिरह मेरा हिस्सा है।

अशअस : ख़ोद उतार लो, साद को देंगे।

मुसलिम : प्यास ! बड़े ज़ोरों की प्यास है। खुदा के लिए एक घूंट पानी पिला दो।

क़ीस : अब जहन्नुम के सिवा यहां पानी का एक क़तरा भी न मिलेगा।

मुसलिम : तुफ़ है तुझ पर ज़ालिम, तुझे शरीफ़ों की तरह जबह करने की भी तमीज़ नहीं। मरने वालों से ऐसी दिलख़राश बातें की जाती हैं ? अफ़सोस !

अशअस : अब अफ़सोस करने से क्या फ़ायदा? यह तुम्हारे फ़ेल का नतीजा है।

मुसलिम : आह ! मैं अपने लिए अफ़सोस नहीं करता। रोता हूं हुसैन के लिए जिसे मैंने तुम्हारी मदद के लिए आमादा किया। जो मेरी ही मिन्नतों से अपने गोशे से निकालने को राज़ी हुआ। जबकि ख़ानदान के सभी आदमी तुम्हारी दग़ाबाज़ी का ख़ौफ़ दिला रहे थे, मैंने ही उन्हें यहां आने पर मजबूर किया। रोता हूं कि जिस दग़ा ने मुझे तबाह किया, वह उन्हें और उनके साथ खानदान को भी तबाह कर देगी। क्या तुम्हारे ख़याल में यह रोने की बात नहीं है ? तुमसे कुछ सवाल करूं?

अशअस : हुसैन की बैयत के सिवा और जो सवाल चाहे कर सकते हो।

मुसलिम : हुसैन को मेरी मौत की इत्तिला दे देना।

अब्बास : मंजूर है।

कई सिपाही मुसलिम को रस्सियों से बांधकर ले जाते हैं।

तेरहवां दृश्य

समय—प्रातःकाल। ज़ियाद का दरबार। मुसलिम को कई आदमी मुश्क कसे लाते हैं।

मुसलिम : मेरा उस पर सलाम, जो हिदायत पर चलता है, आक़बत से डरता है, और सच्चे बादशाह की बंदगी करता है।

चोबदार : मुसलिम ! अमीर को सलाम करो।

मुसलिम : चुप रह। अमीर, मेरा मालिक, मेरा आक़ा, मेरा इमाम हुसैन है।

ज़ियाद : तुमने क़ूफ़ा में आकर क़ानून के मुताबिक़ क़ायम की हुई बादशाहत को उखाड़ने की कोशिश की, बाग़ियों को भड़काया, और रियासत में निफ़ाक़ पैदा किया ?

मुसलिम : क़ूफ़ा-कानून के मुताबिक़ न कोई सल्तनत क़ायम थी, न है। मैं उस शख़्श का क़ासिद हूं, जो चुनाव के क़ानून से, विरासत के क़ानून से और लियाक़त से अमीर है। क़ूफ़ा वालों ने खुद उसे अमीर बनाया। अगर तुमने लोगों के साथ इंसाफ़ किया होता, तो बेशक, तुम्हारा हुक्म जायज़ था। रियाया की मर्जी और सब हक़ों को मिटा देती है। मगर तुमने लोगों पर वे ज़ुल्म किए जो क़ैसर ने भी न किए थे। बेगुनाहों को सज़ाएं दीं, ज़ुर्माने के हीले से उनकी दौलत लूटी, अमन रखने के हीले से उनके सरदारों को क़त्ल किया। ऐसे ज़ालिम हाकिम को, चाहे वह किसी हक़ के बिना पर हुक़ूमत करता हो, हुक़ूमत करने का कोई हक नहीं रहता, क्योंकि हैवानी ताक़त कोई हक़ नहीं है। ऐसी हुक़ूमत को मिटाना हर सच्चे आदमी का फ़र्ज़ है। और, जो इस फ़र्ज से ख़ौफ़ या लालच के कारण मुंह मोड़ता है, वह इंसान और खुदा दोनों की निगाहों में गुनहगार है। मैंने, अपने मक़दूर-भर रियाया को तेरे पंजे से छुड़ाने की कोशिश की, और मौक़ा पाऊंगा तो फिर करूंगा।

ज़ियाद वल्लाह, तू फिर इसका मौक़ा न पाएगा। तूने बग़ावत की है। बग़ावत की सज़ा क़त्ल है। और बाग़ियों की इब्रत के लिए मैं तुझे इस तरह क़त्ल कराऊंगा जैसे कोई अब तक न किया गया होगा।

मुसलिम बेशक। यह लियाक़त तुझी में है।

ज़ियाद इस गुस्ताख़ को ले जाओ, और सबसे ऊंची छत पर क़त्ल करो।

मुसलिम साद, तुमको मालूम है कि तुम मेरे क़राबतमंद हो ?

साद मालूम है।

मुसलिम मैं तुमसे कुछ वसीयत करना चाहता हूं।

साद शौक़ से करो।

मुसलिम मैंने यहां कई आदमियों से क़र्ज लेकर अपनी जरूरतों पर खर्च किए थे। इस काग़ज़ पर उनके नाम और रक़में दर्ज हैं। तुम मेरा घोड़ा और मेरे हथियार बेचकर यह क़र्ज अदा कर देना, वरना हिसाब के दिन मुझे इन आदमियों से शर्मिंदा होना होगा।

साद इसका इतमीनान रखिए।

मुसलिम मेरी लाश को दफ़न करा देना।

साद यह मेरे इमकान में नहीं है।

जल्लाद आकर मुसलिम को ले जाता है।

अशअस या अमीर, मुसलिम क़त्ल हुए। अब बग़ावत का कोई अंदेशा नहीं। अब आप हानी की जानबख़्शी कीजिए।

जियाद कलाम पाक की क़सम, अगर मेरी नजात भी होती हो, तो हानी को नहीं छोड़ सकता।

अशअस लोग बिगड़ खड़े हों, तो ?

जियाद जब क़ौम के सरदार मेरे तरफ़दार हैं, तो रियाया की तरफ़ से कोई अंदेशा नहीं। (**जल्लाद को बुलाकर**) तूने मुसलिम को क़त्ल किया ?

जल्लाद अमीर के हुक्म की तामील हो गई। खुदावंद किसी को इतनी दिलेरी से जान देते नहीं देखा। पहले नमाज़ पढ़ी, तब मुझसे मुस्कराकर कहा—तू अपना काम कर।

जियाद तूने उसे नमाज़ क्यों पढ़ने दिया ? किसके हुक्म से ?

जल्लाद : ग़रीबपरवर, आखिर नमाज़ के रोकने का अज़ाब जल्लादों के लिए भी भारी है। जिस्म को सिर से अलग कर देना इतना बड़ा गुनाह नहीं है, जितना किसी को खुदा की इबारत से रोकना।

ज़ियाद : चुप नामाक़ूल। तू क्या जानता है, किसको क्या सज़ा देनी चाहिए। ग़ैरतमंदों के लिए रूहानी ज़िल्लत क़त्ल से कहीं ज़्यादा तकलीफ़ देती है। ख़ैर, अब हानी को ले जा, और चौराहे पर क़त्ल कर डाल।

एक आदमी : खुदाबंद, यह ख़िदमत मुझे सुपुर्द हो।

ज़ियाद : तू कौन है ?

आदमी : हानी का गुलाम हूं। मुझ पर उसने कितने जुल्म किए हैं कि मैं उनके खून का प्यासा हो गया हूं। आपकी निगाह हो जाय, तो मेरी पुरानी आरज़ू पूरी हो। मैं इस तरह क़त्ल करूंगा कि देखने वाले आंखें बंद कर लेंगे।

ज़ियाद : कलाम पाक की क़सम, तेरा सवाल ज़रूर पूरा करूंगा।

गुलाम हानी को पकड़े हुए ले जाता है। कई सिपाही तलवारें लिये साथ-साथ लाते हैं।

गुलाम : (**हानी से**) मेरे प्यारे आक़ा, मैंने ज़िंदगी-भर आपका नमक खाया, कितनी ही खताएं कीं, पर आपने कभी कड़ी निगाहों से नहीं देखा। अब आपके जिस्म पर किसी बेदर्द क़ातिल का हाथ पड़े, वह मैं नहीं देख सकता। मैं इन हालात में भी आपकी ख़िदमत करना चाहता हूं। मैं आपकी रूह को इस जिस्म की क़ैद से इस तरह आज़ाद करूंगा कि ज़रा भी तकलीफ़ न हो। खुदा आपको जन्नत दे, और ख़ता माफ़ करे।

तीसरा अंक

पहला दृश्य

समय —दोपहर। रेगिस्तान में हुसैन के क़ाफ़िले का पड़ाव। बगुले उड़ रहे हैं। हुसैन असग़र को गोद में लिये अपने ख़ेमे के द्वार पर खड़े हैं।

हुसैन : **(मन में)** उफ़ यह गर्मी ! निगाहें जलती हैं। पत्थर की चट्टानों से चिनगारियां निकल रही हैं। झीलें, कुएं, सब सूखे पड़े हुए हैं, गोया उन्हें गर्मी ने जला दिया हो। हवा से बदन झुलसा जाता है। बच्चों के चेहरे कैसे संवला गए हैं। यह सफ़ेदी, यह रेगिस्तान, इसकी कहीं हद भी है या नहीं ! जिन लोगों ने प्यास के मारे हौक-हौककर पानी पी लिया है, उनके कलेजे में दर्द हो रहा है। अब तक क़ूफ़ा से कोई क़ासिद नहीं आया। खुदा जाने मुसलिम का क्या हाल हुआ ! क़रीने से ऐसा मालूम होता है कि इराक़ वालों ने उनसे दग़ा की, और उनको शहीद कर दिया, वरना यह खामोशी क्यों ? अगर वह जन्नत को सिधारे हैं, तो मेरे लिए भी दूसरा रास्ता नहीं है। शहादत मेरा इन्तज़ार कर रही है। कोई मुझसे मिलने आ रहा है।

फ़र्ज़ूक़ का प्रवेश।

फ़र्ज़ूक़ : अस्सलामअलेक या हजरत हुसैन ! मैंने बहुत चाहा कि मक्के ही में आपकी ज़ियारत करूं, लेकिन अफसोस, मेरी कोशिश बेकार हुई।

हुसैन : अगर इराक़ से आए हो, तो वहां की क्या ख़बर है ?

फ़र्ज़ूक़ : या हज़रत ! वहां की ख़बरें वे ही हैं, जो आपको मालूम हैं। लोगों के दिल आपके साथ हैं, क्योंकि आप हक़ पर हैं। और,

उनकी तलवारें यज़ीद के साथ हैं क्योंकि उसके पास दौलत है।

हुसैन : और मेरे भाई मुसलिम की भी कुछ ख़बर लाए हो ?

फ़र्ज़ूक़ : उनकी रूह जन्नत में है, और सिर किले की दीवार पर।

मातम है कई दिन से मुसलमानों के घर में,
खंदक में है लाश उनकी व सिर किले की दर में।

हुसैन : **(सीने पर हाथ धरकर)** आह ! मुसलिम, वही हुआ, जिसका मुझे खौफ़ था। अब तक तुम्हें क़फ़न भी नसीब नहीं हुआ। क्या तुम्हारी नेकनीयती का यही सिला था ? आह ! तुम इतने दिनों तक मेरे साथ रहे, पर मैंने तुम्हारी क़द्र न जानी। मैंने तुम्हारे ऊपर जुल्म किया, मैंने जान-बूझकर तुम्हारी जान ली। मेरे अज़ीज़ और दोस्त, सब-के-सब क़ूफ़ा वालों से होशियार कर रहे थे, पर मैंने किसी की न सुनी, और तुम्हें हाथ से खोया। मैं उनके बेटों को और उनकी बीवी को कौन मुंह दिखाऊंगा !

मुसलिम की लड़की फ़ातिमा आती है।

हुसैन : आओ बेटी, बैठो, मेरी गोद में चली आओ। कुछ खाया कि नहीं ?

फ़ातिमा : बुआ ने शहद और रोटी दी थी। चचाजान, हम लोग कै दिन में अब्बा के पास पहुंचेंगे ? पांच-छः दिन तो हो गए।

हुसैन : **(दिल में)** आह ! कलेजा मुंह को आता है। इस सवाल का क्या जवाब दूं। कैसे कह दूं कि अब तेरे अब्बा जन्नत में मिलेंगे। **(प्रकट)** बेटी, खुदा की जब मर्जी होगी।

अली असग़र : आह ! तुम अब्बाजान की गोद में बैठ गई। उतरिए चटपट।

फ़ातिमा : तुम मेरे अब्बाजान की गोद में बैठोगे, तो मैं भी उतार दूंगी।

हुसैन : बेटी, मैं ही तुम्हारा अब्बाजान हूं। तुम बैठी रहो। इसे बकने दो।

फ़ातिमा : आप मेरी तरफ़ देखकर आंखों में आंसू क्यों भरे हुए हैं? आप मुझे इतना प्यार क्यों कर रहे हैं ? आप यह क्यों कहते हैं कि मैं ही अब्बजान हूं ? ऐसी बातें तो यतीमों से की जाती हैं।

हुसैन : **(रोकर)** बेटी, तेरे अब्बा को खुदा ने बुला लिया।

फ़ातिमा रोती हुई अपनी मां के पास जाती है। औरतें रोने

लगती हैं।

जैनब : (बाहर आकर) भैया, यह क्या ग़जब हो गया ?

हुसैन : बहन, क्या कहूं, सितम टूट पड़ा। मुसलिम तो शहीद हो गए। कूफ़ा वालों ने दग़ा की।

जैनब : तो ऐसे दग़ाबाजों से मदद की क्या उम्मीद हो सकती है ? मैं तो तुमसे मिन्नत करती हूं कि यहीं से वापस चलो। क़ूफ़ा वालों ने कभी वफ़ा नहीं की।

मुसलिम के बेटे अब्दुल्ला का प्रवेश।

अब्दुल्ला : फूफीजान, अब तो अगर तक़दीर भी रास्ते में खड़ी हो जाय, तो भी मेरे क़दम पीछे न हटेंगे। तुफ् है मुझ पर, अगर अपने बाप का बदला न लूं ! हाय वह इंसान, जिसने कभी किसी से बदी नहीं की, जो दिल का इतना साफ़ था कि उसे किसी पर शुबहा न होता था, इतनी बेदरदी से क़त्ल किया जाय।

अब्बास का प्रवेश।

अब्बास : बेशक, अब क़ूफ़ा वालों को उनकी दग़ा की सज़ा दिए बग़ैर लौट जाना ऐसी जिल्लत है, जिससे हमारी गर्दन हमेशा झुकी रहेगी। खुदा को जो कुछ मंजूर है, वह होगा। हम सब शहीद हो जायं, रसूल के ख़ानदान का निशान मिट जाय, पर यहां से लौटकर हम दुनिया को अपने ऊपर हंसने का मौका न देंगे। मुझे यक़ीन है कि यह शरारत क़ूफ़ा के रईसों और सरदारों की है, जिन्हें ज़ियादे के वादों ने दीवाना बना रखा है। आप जिस वक्त क़ूफ़ा में क़दम रखेंगे, रियाया अपने सरदारों से मुंह फेरकर आपके क़दमों पर झुकेगी। और वह दिन दूर नहीं, जब यज़ीद का नापाक सिर उसके तन से जुदा होगा। आप खुदा का नाम लेकर खेमे उखड़वाइए। अब देर करने का मौक़ा नहीं है। हक़ के लिए शहीद होना वह मौत है, जिसके लिए फ़रिस्तों की रूहें भी तड़पती हैं।

जैनब : भैया, मैं तुझ पर सदक़े जाऊं ? घर वापस चलो।

हुसैन : आह ! अब यहां से वापस होना मेरे अख्तियार की बात नहीं है। मुझे दूर से दुश्मन की फ़ौज का गुबार नज़र आ रहा है पुश्ते की तरफ़ भी दुश्मन ने रास्ता रोक रखा है। दाहिने-बाएं कोसों

तक बस्ती का निशान नहीं। हम अब क़ूफ़ा के सिवा कहीं नहीं जा सकते। क़ूफ़ा में हमें तख़्त नसीब हो या तख़्ता, हमारे लिए कोई दूसरा मुकाम नहीं है। अब्बास, जाकर मेरे साथियों से कह दो, मैं उन्हें खुशी से इजाज़त देता हूं, जहां जिसका जी चाहे, चला जाय। मुझे किसी से कोई शिकायत नहीं है। चलो, हम लोग खेमे उखाड़ें।

दूसरा दृश्य

समय—संध्या। हुसैन का क़ाफ़िला रेगिस्तान से चला जा रहा है।

अब्बास : अल्लाहोअकबर ! वह क़ूफ़ा के दरख़्त नज़र आने लगे।

हबीब : अभी क़ूफ़ा दूर है। कोई दूसरा गांव होगा।

अब्बास : रसूल पाक की क़सम, फ़ौज है। भालों की नोकें साफ़ नज़र आ रही हैं।

हुसैन : हां, फ़ौज ही है। दुश्मनों ने कूफ़े से हमारी दावत का यह सामान भेजा है। वहीं उस टीले के क़रीब ख़ेमे लगा दो। अजब नहीं कि इसी मैदान में क़िस्मतों का फ़ैसला हो।

क़ाफ़िला रुक जाता है। ख़ेमे गड़ने लगते हैं। बेगमें ऊंटों से उतरती हैं। दुश्मन की फ़ौज क़रीब आ जाती है।

अब्बास : ख़बरदार, कोई एक क़दम आगे न रक्खे। यहां हज़रत हुसैन के खेमे हैं।

अली अकबर : अभी जाकर इन बेअदबों की तंबीह करता हूं।

हुसैन : अब्बास, पूछो, ये लोग कौन हैं, और क्या चाहते हैं ?

अब्बास : (**फ़ौज से**) तुम्हारा सरदार कौन है ?

हुर : (**सामने आकर**) मेरा नाम हुर है। हज़रत हुसैन का गुलाम हूं।

अब्बास : दोस्त दुश्मन बनकर आए, तो वह भी दुश्मन है।

हुर : या हज़रत, हाकिम के हुक्म से मजबूर हूं, बैयत से मजबूर हूं, नमक की क़ैद से मजबूर हूं, लेकिन दिल हुसैन ही का गुलाम है।

हुसैन : (**अब्बास से**) भाई, आने दो, इसकी बातों से सचाई की बू आती है।

हुर : या हज़रत, आपको कूफ़ा वालों ने दग़ा दी है ! ज़ियाद और

यज़ीद, दोनों आपको क़त्ल करने की तैयारियां कर रहे हैं; चारों तरफ़ से फ़ौजें जमा की जा रही हैं। कूफ़े के सरदार आपसे ज़ंग करने को तैयार बैठे हैं।

हुसैन : पहले यह बतलाओ कि तुम्हारे सिपाही क्यों इतने निढाल और परेशान हो रहे हैं ?

हुर : या हज़रत, क्या अर्ज़ करूं। तीन पहर से पानी का एक बूंद न मिला। प्यास के मारे सबों के दम लबों पर आ रहे हैं।

हुसैन : **(अब्बास से)** भैया, प्यासों की प्यास बुझानी एक सौ नमाज़ों से ज़्यादा सवाब का काम है। तुम्हारे पास पानी हो, तो इन्हें पिला दो। क्या हुआ, अगर मेरे ये दुश्मन हैं, हैं तो मुसलमान... .मेरे नाना के नाम पर मरने वाले !

अब्बास : या हज़रत आपके साथ बच्चे हैं, औरतें हैं और पानी यहां उनका है।

हुसैन : इन्हें पानी पिला दो, मेरे बच्चों का खुदा है।

अब्बास, अली अकबर, हबीब पानी की मशकें लाकर सिपाहियों को पानी पिलाते हैं।

अब्बास : हुर, अब यह बतलाओ कि तुम हमसे सुलह करना चाहते हो या ज़ंग ?

हुर : हज़रत, मुझे आपसे न ज़ंग का हुक्म दिया गया है, न सुलह का। मैं सिर्फ़ इसलिए भेजा गया हूं कि हज़रत को ज़ियाद के पास ले जाऊं, और किसी दूसरी तरफ़ न जाने दूं।

अब्बास : इसके मानी यह है कि तुम ज़ंग करना चाहते हो। हम किसी ख़लीफ़ा या आमिल के हुक्म के पाबंद नहीं हैं कि किसी ख़ास तरफ़ जायं। मुल्क खुदा का है। हम आज़ादी से जहां चाहेंगे, जायंगे। अगर हमको कोई रोकेगा, तो उसे कांटों की तरह रास्ते से हटा देंगे।

हुसैन : नमाज़ का वक्त आ गया। पहले नमाज़ अदा कर लें, उसके बाद और बातें होंगी। हुर, तुम मेरे साथ नमाज़ पढ़ोगे या अपनी फ़ौज के साथ ?

हुर : या हज़रत, आपके पीछे खड़े होकर नमाज़ अदा करने का सवाब न छोड़ूंगा, चाहे मेरी फ़ौज मुझसे जुदा क्यों न हो जाय।

तीसरा दृश्य

समय--संध्या। नसीमा बग़ीचे में बैठी आहिस्ता-आहिस्ता गा रही है।

दफ़न करने ले चले जब मेरे घर से मुझे
काश, तुम भी झांक लेते रौजने घर से मुझे,
सांस पूरी हो चुकी दुनिया से रुख़सत हो चुका
तुम सब आए हो उठाने मेरे बिस्तर से मुझे,
क्यों उठाता है, मुझे मेरी तमन्ना को निकाल
तेरे दर तक खींच लाई थी यही घर से मुझे,
हिज्र की शब कुछ यही मुनिस था मेरा ऐ क़ज़ा
एक ज़रा रो लेने दे मिल-मिल के बिस्तर से मुझे,
याद है तस्कीन अब तक वह ज़माना याद है
जब छुड़ाया था फ़लक ने मेरे दिलवर से मुझे।

वहब का प्रवेश। नसीमा चुप हो जाती है।

वहब : खामोश क्यों हो गईं ? यही सुनकर मैं आया था।

नसीमा : मेरा गाना ख़याल है। तनहाई का मूनिस अपना दर्द क्यों सुनाऊं, जब कोई सुनना न चाहे।

वहब : नसीमा, शिकवे करने का हक़ मेरा है, तुम इसे जबर्दस्ती छीन लेती हो।

नसीमा : तुम मेरे हो, तुम्हारा सब कुछ मेरा है, पर मुझे इसका यक़ीन नहीं आता। मुझे हरदम यही अंदेशा रहता है कि तुम मुझे भूल जाओगे, तुम्हारा दिल मुझसे बेजार हो जायगा, मुझसे बेएतनाई करने लगोगे। यह ख़याल दिल से नहीं निकलता। बहुत चाहती हूं कि निकल जाय, पर वह किसी पानी से भीगी हुई बिल्ली की तरह नहीं निकलता। तब मैं रोने लगती हूं, और ग़मनाक खयाल मुझे चारों तरफ़ से घेर लेते हैं। तुमने न-जाने मुझ पर कौन-सा जादू कर दिया है कि मैं अपनी नहीं रही! मुझे ऐसा गुमान होता है कि हमारी बहार थोड़े ही दिनों की मेहमान है। मैं तुमसे इल्तज़ा करती हूं कि मेरी तरफ़ से निगाहें न मोटी करना, वरना मेरा दिल पाशपाश हो जायगा। मुझे यहां आने के पहले कभी न मालूम हुआ था कि मेरा दिल इतना नाज़ुक है।

वहब : मेरी कैफ़ियत इससे ठीक उल्टी है। मेरे दिल में एक नई क़ूवत

आ गई है, मुझे ख़याल होता है कि अब दुनिया की कोई फ़िक्र, कोई तग़ीव, कोई आरज़ू मेरे दिल पर फ़तह नहीं पा सकती। ऐसी कोई ताक़त नहीं है, जिसका मैं मुक़ाबला न कर सकूं। तुमने मेरे दिल की क़ूवत सौगुनी कर दी। यहां तक कि अब मुझे मौत का भी ग़म नहीं है। मुहब्बत ने मुझे दिलेर, बेख़ौफ़, मजबूत बना दिया है, मुझे तो ऐसा गुमान होता है कि मुहब्बत क़ूवते-दिल की कीमिया है।

नसीमा : वहब, इन बातों से वहशत हो रही है, शायद हमारी तबाही के सामान हो रहे हैं। वहब, मैं तुम्हें न जाने दूंगी। कलाम पाक की क़सम, कहीं न जाने दूंगी। मुझे इसकी फ़िक्र नहीं कि कौन ख़लीफ़ा होता है और कौन अमीर। मुझे माल व ज़र की, इलाके व जागीर की मुतलक परवाह नहीं। मैं तुम्हें चाहती हूं, सिर्फ़ तुम्हें।

क़मर का प्रवेश

क़मर : वहब, देख, दरवाज़े पर ज़ालिम ज़ियाद के सिपाही क्या ग़ज़ब कर रहे हैं। तेरे वालिद को गिरफ़्तार कर लिया है, और जामा मस्जिद की तरफ़ खींचे लिये जाते हैं।

नसीमा : हाय सितम ! इसीलिए तो मुझे वहशत हो रही थी।

वहब उठा खड़ा होता है। नसीमा उसका हाथ पकड़ लेती है।

वहब : नसीमा, मैं अभी लौटा आता हूं, तुम घबराओ नहीं।

नसीमा : नहीं-नहीं, तुम यहां मुझे जिंदा छोड़कर नहीं जा सकते। मैं ज़ियाद को जानती हूं, तुमको भी जानती हूं। ज़ियाद के सामने जाकर फिर तुम नहीं लौट सकते।

कमर : बेटा, अगर नसीमा तुझे नहीं जाने देती, तो मत जा। मगर याद रख, तेरे चेहरे पर हमेशा के लिए स्याही का दाग़ लग जायगा। खुद जाती हूं। नसीमा, शायद हमारी-तुम्हारी फिर मुलाक़ात न हो, यह आखिरी मुलाक़ात है। रुखस..। बहब, घर-बार तुझे सौंपा, खुदा तुझे नेकी की तौफ़ीक़ दे, तेरी उम्र दराज़ हो।

वहब : अम्मां, मैं भी चलता हूं।

क़मर : नहीं, तुझ पर अपनी बीवी का हक़ सबसे ज़्यादा है।

वहब : नसीमा, खुदा के लिए....

नसीमा : नहीं। मेरे प्यारे आक़ा, मुझे ज़िंदा छोड़कर नहीं।

क़मर चली जाती है। वहब सिर थामकर बैठ जाता है।

नसीमा : प्यारे तुम्हारी मुहब्बत की ख़तावार हूं, जो सज़ा चाहे दो। मुहब्बत खुदग़रज़ होती है। मैं अपने चमन को हवा के झोंकों से बचाना चाहती हूं। काश ! तक़दीर ने मुझे इस गुलज़ार में न बिठाया होता ! काश ! मैंने इस चमन में अपना घोंसला न बनाया होता तो आज बर्क और सैयद का इतना ख़ौफ़ क्यों होता ! मेरी बदौतल तुम्हें यह नदामत उठानी पड़ी, काश, मैं मर जाती !

नसीमा वहब के पैरों पर सिर रख देती है।

चौथा दृश्य

समय—आधी रात। अब्बास हुसैन के खेमे के सामने खड़े पहरा दे रहे हैं। हुर आहिस्ता से आकर खेमे के क़रीब खड़ा हो जाता है।

हुर : (**दिल में**) खुदा को क्या मुंह दिखाऊंगा ? किस मुंह से रसूल के सामने जाऊंगा। आह, गुलाबी तेरा बुरा हो। जिस बुजुर्ग ने हमें ईमान की रोशनी दी, खुदा की इबादत दिखाई, इंसान बनाया, उसी के बेटे से ज़ंग करना मेरे लिए कितनी शर्म की बात है। यह मुझसे न होगा। मैं जानता हूं, यज़ीद मेरे ख़ून का प्यासा हो जायगा, मेरी जागीरें छीन ली जायंगी, मेरे लड़के रोटियों को मुहताज हो जायंगे, मगर दुनिया खोकर रसूल की निगाह का हक़दार हो जाऊंगा। मुझे न मालूम था कि यज़ीद की बैयत लेकर मैं अपनी आक़बत बिगाड़ने पर मजबूर किया जाऊंगा। अब यह जान हज़रत हुसैन पर निसार है। जो होना है, हो। यज़ीद का ख़िलाफ़त पर कोई हक नहीं। मैंने उसकी बैयत लेने में ख़ास ग़लती की। उसके हुक्म की पाबंदी मुझ पर फ़र्ज़ नहीं। खुदा के दरबार में मैं इसके लिए गुनहगार ठहरूंगा।

आगे बढ़ता है।

अब्बास : कौन है ? ख़बरदार, एक क़दम आगे न बढ़े, वरना लाश ज़मीन पर होगी।

हुर : या हज़रत, आपका गुलाम हुर हूं। हज़रत हुसैन की ख़िदमत में कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं।

अब्बास : इस वक़्त वह आराम फ़रमा रहे हैं।

हुर : मेरा उनसे इसी वक़्त मिलना ज़रूरी है।

अब्बास : **(दिल में)** दग़ा का अंदेशा तो मालूम नहीं होता। मैं भी इसके साथ चलता हूं। जरा भी हाथ-पांव हिलाया कि सिर उड़ा दूंगा। **(प्रकट)** अच्छा, आओ।

अब्बास ख़ेमे से बाहर हुसैन को बुला लाते हैं।

हुर : या हज़रत, मुआफ़ कीजिएगा। मैंने आपको नावक्त तकलीफ़ दी। मैं यह अर्ज़ करने आया हूं कि आप क़ूफ़ा की तरफ़ न जायं। रात का वक़्त है, मेरी फ़ौज सो रही है, आप किसी दूसरी तरफ़ चले जायं। मेरी यह अर्ज़ क़बूल कीजिए।

हुसैन : हुर, यह अपनी जान बचाने का मौक़ा नहीं, इस्लाम की आबरू को क़ायम रखने का सवाल है।

हुर : आप यमन की तरफ़ चले जायं, तो वहां आपको काफ़ी मदद मिलेगी। मैंने सुना है, सुलेमान और मुखतार वहां आपकी मदद के लिए फ़ौज जमा कर रहे हैं।

हुसैन : हुर, जिस लालच ने कूफ़ा के रईसों को मुझसे फेर दिया, क्या वह यमन में अपना असर न दिखाएगा ? इंसान की ग़फ़लत सब जगह एक-सी होती है। मेरे लिए कूफ़ा के सिवा दूसरा रास्ता नहीं है। अगर तुम न जाने दोगे, तो ज़बर्दस्ती जाऊंगा। यह जानता हूं कि वहीं मुझे शहादत नसीब होगी। इसकी ख़बर मुझे नाना की ज़बान मुबारक से मिल चुकी है। क्या ख़ौफ़ से शहादत के रुतबे को छोड़ दूं ?

हुर : अगर आप जाना ही चाहते हैं, तो मस्तूरात को वापस कर दीजिए।

हुसैन : हाय ! ऐसा मुमकिन होता, तो मुझसे ज्यादा ख़ुश कोई न होता। मगर इसमें से कोई मेरा साथ छोड़ने पर तैयार नहीं है।

किसी तरफ़ से ऊं ऊं की आवाज़ आ रही है

हुर : या हज़रत, यह आवाज़ कहां से आ रही है ? इसे सुनकर दिल पर रोब तारी हो रहा है।

एक योगी भभूत रमाए, जटा बढ़ाए, मृग-चर्म कंधे पर रक्खे हुए आते हैं।

योगी : भगवन् ! मैं उस स्थान को जाना चाहता हूं, जहां महर्षि मुहम्मद की समाधि है।

हुसैन : तुम कौन हो ? यह कैसी शक्ल बना रखी है ?

योगी : साधु हूं। उस देश से आ रहा हूं, जहां प्रथम ओंकार-ध्वनि की सृष्टि हुई थी। महर्षि मुहम्मद ने उसी ध्वनि से संपूर्ण जगत को निनादित कर दिया है। उनके अद्वैतवाद ने भारत के समाधि-मग्न ऋषियों को भी जागृति प्रदान कर दी है। उसी महात्मा की समाधि का दर्शन करने के लिए मैं भारत से आया हूं, कृपा कर मुझे मार्ग बता दीजिए।

हुसैन : आइए, खुशनसीब कि आपकी ज़ियारत हुई। रात का वक़्त है, अंधेरा छाया हुआ है। इस वक़्त यहीं आराम कीजिए। सुबह मैं आपके साथ अपना एक आदमी भेज दूंगा।

योगी : **(गौर से हुसैन के चेहरे को देखकर)** नहीं महात्मन्, मेरा व्रत है कि उस पावन भूमि का दर्शन किए बिना कहीं विश्राम न करूंगा। प्रभो, आपके मुखारविंद पर भी मुझे उसी महर्षि के तेज का प्रतिबिंब दिखाई देता है। आप उनके आत्मीय हैं ?

हुसैन : जी हां, उसका नवासा हूं। मगर आपने नाना को तो देखा ही नहीं, फिर आपको कैसे मालूम हुआ कि मेरी सूरत उनसे मिलती है ?

योगी : **(हंसकर)** भगवन् ! मैंने उनका स्थूल शरीर नहीं देखा, पर उनके आत्मशरीर का दर्शन किया है। आत्मा द्वारा उनकी पवित्र वार्ता सुनी है। मैं प्रत्यक्ष देख रहा हूं कि आपमें वही पवित्र आत्मा अवतरित हुई है। आज्ञा दीजिए, आपके चरण रज से अपने मस्तिष्क को पवित्र करूं।

हुसैन : **(पैरों को हटाकर)** नहीं, नहीं, मैं इंसान हूं, और रसूल पाक की हिदायत है कि इंसान को इंसान की इबादत वाजिब नहीं।

योगी : धन्य है ! मनुष्य के ब्रह्मत्व का कितना उच्च आदर्श है ! वह

ज्ञान-ज्योति जो इस देश से उद्‌भावित हुई है, एक दिन समस्त भूमंडल को आलोकित करेगी, और देश-देशांतरों में सत्य और न्याय का मुख उज्ज्वल करेगी। हां, इस महर्षि की संतान न्याय-गौरव का पालन करेगी। अब मुझे आज्ञा दीजिए, आपके दर्शनों से कृतार्थ हो गया।

योगी चला जाता है।

हुसैन : अब मुझे मरने का ग़म नहीं रहा। मेरे नाना की उम्मत हक़ और इंसाफ़ की हिमायत करेगी। शायद इसीलिए रसूल ने अपनी औलाद को हक़ पर क़ुर्बान करने का फ़ैसला किया है। हुर, तुमने इस फ़कीर की पेशगोई सुनी ?

हुर : या हज़रत, आपका रुतबा आज जैसा समझा हूं, ऐसा कभी न समझा था। हुजूर, रसूल पाक से मेरे हक़ में दुआ करें कि खुदा मुझ रूहस्याह के गुनाह मुआफ़ करे।

चला जाता है।

हुसैन : अब्बास, अब हमें कूफ़ा वालों को अपने पहुंचने की इत्तिला देनी चाहिए।

अब्बास : बजा है।

हुसैन : कौन जा सकता है ?

अब्बास : सैदावी को भेज दूं ?

हुसैन : बहुत अच्छी बात है।

अब्बास सैदावी को बुला लाते हैं।

अब्बास : सैदावी, तुम्हें हमारे पहुंचने की ख़बर लेकर कूफ़ा जाना पड़ेगा। यह कहने की ज़रूरत नहीं कि यह बड़े ख़तरे का काम है।

सैदावी : या हज़रत, जब आपकी मुझ पर निगाह है, तो फिर ख़ौफ़ किस बात का।

हुसैन : शाबाश, यह ख़त लो, और वहां किसी ऐसे सरदार को देना, जो रसूल का सच्चा बंदा हो। जाओ खुदा तुम्हें ख़ैरियत से ले जाये।

सैदावी जाता है।

हुसैन : (दिल में) सैदावी, जाते हो, मगर मुझे शक है कि तुम ज़िंदा लौटोगे ! तुमने, जिसे न दीन हिफ़ाज़त का ख़याल है, न हक़ का, जिसे दुश्मनों ने चारों तरफ़ से घेर नहीं रखा है, जिसको शहीद करने के लिए फ़ौजें नहीं जमा की जा रही हैं, जो दुनिया में आराम से ज़िंदगी बसर कर सकता है; महज़ वफ़ादारी का हक़ अदा करने के लिए जान-बूझकर मौत के मुंह में क़दम रखा है, तो मैं मौत से क्यों डरूं !

गाते हैं।

मौत का क्या उसको है, जो मुसलमां हो गया,
जिसकी नीयत नेक है जो सिदक़ू ईमां हो गया;
कब दिलेरों को सताए फ़िक्र जर और ख़ौफ़ का,
अज्म सादिक़ उसका है जो पाक दामा हो गया;
क्यों नदामत हो मुझे दुनिया में गर ज़िंदा रहा,
जाय ग़म क्या है जो नज़रे-तेग़ बुर्रा हो गया;
हो अदू दुनिया में रुसवा आखिरत में ग़म नसीब,
मुनहरिफ़ दीं से हुआ औ' नंग-दौरां हो गया।

पांचवां दृश्य

समय—रात। हुसैन अपने खेमे में सोए हुए हैं। वह चौंक पड़ते हैं और लेटे हुए चौकन्नी आंखों से, इधर-उधर ताकते हैं।

हुसैन : **(दिल में)** यहां तो कोई नज़र नहीं आता। मैं हूं, शमा है, और धड़कता हुआ दिल है। फिर मैंने आवाज़ किसकी सुनी ! सिर में कैसा चक्कर आ रहा है। ज़रूर कोई था। ख़्वाब पर हक़ीक़त का धोखा नहीं हो सकता। ख़्वाब के आदमी शबनम के पर्दे में ढंकी हुई तस्वीरों की तरह होते हैं। ख़्वाब की आवाज़ें ज़मीन के नीचे से निकलने वाली अवाज़ों की तरह मालूम होती हैं। उनमें यह बात कहां ! देखूं, कोई बाहर तो खड़ा नहीं है। **(खेमे से बाहर निकलकर)** उफ़्, कितनी गहरी तारीकी है, गोया मेरी आंखों ने कभी रोशनी देखी ही नहीं। कैसा गहरा सन्नाटा है, गोया सुनने की ताक़त ही से महरूम हूं। गोया यह दुनिया अभी-अभी अदम के ग़ार से निकली

है। (प्रकट) कोई है?

अली अकबर का प्रवेश।

अली अकबर : हाजिर हूं अब्बाजान, क्या इरशाद है ?

हुसैन : यहां से अभी कोई सवार तो नहीं गुज़रा है ?

अली अकबर : अगर मेरे होश-हवास बजा हैं, तो इधर कोई जानदार नहीं गुज़रा।

हुसैन : ताज्जुब है, अभी लेटा हुआ था, और जहां तक मुझे याद है, मेरी पलकें तक नहीं झपकीं, पर मैंने देखा, एक आदमी मुश्की घोड़े पर सवार सामने खड़े होकर मुझसे कह रहा है कि "ऐ हुसैन ! इराक़ जाने की जल्दी कर रहे हो, और मौत तुम्हारे पीछे-पीछे दौड़ी जा रही है।" बेटा, मालूम हो रहा है, मेरी मौत क़रीब है !

अली अकबर : बाबा, क्या हम हक़ पर नहीं हैं ?

हुसैन : बेशक, हम हक़ पर हैं, हक़ हमारे साथ है।

अली अकबर : अगर हम हक़ पर हैं, तो मौत का क्या डर ! क्या परवाह, अगर हम मौत की तरफ़ जाएं या मौत हमारी तरफ़ आए !

हुसैन : बेटा, तुमने दिल खुश कर दिया। खुदा तुमको वह सबसे बड़ा इनाम दे, जो बाप बेटे को दे सकता है।

ज़हीर, हबीब, अब्दुल्ला, कलबी और उसकी स्त्री का प्रवेश।

अली अकबर : कौन इधर से जा रहा है ?

जहीर : हम मुसाफ़िर हैं। ये खेमे क्या हज़रत हुसैन के हैं ?

अली अकबर : हां।

जहीर : खुदा का शुक्र है कि हम मंज़िल मक़सूद पर पहुंच गए। हम उन्हीं की ज़ियारत के लिए क़ूफ़ा से आ रहे हैं।

हुसैन : जिसके लिए आप क़ूफ़ा से आ रहे हैं, वह खुद आपसे मिलने के लिए क़ूफ़ा जा रहा है। मैं ही हुसैन बिन अली हूं।

जहीर : हमारे, जहे-नसीब कि आपकी ज़ियारत हुई। हम सब-के-सब आपके गुलाम हैं। क़ूफ़ा में इस वक़्त, दर व दीवार आपके दुश्मन हो रहे हैं। आप उधर क़स्द न फरमाएं। हम इसीलिए चले आए हैं कि वहां रहकर आपकी कुछ खिदमत नहीं कर

सकते। हमने हज़रत मुस्लिम के क़त्ल का खूनी नज़ारा देखा है, हानी का क़त्ल होते देखा है, और ग़रीब तौआ की चोटियां कटते देखी हैं। जो लोग आपकी दोस्ती का दम भरते थे, वे आज ज़ियाद के दाहिने बाजू बने हुए हैं।

हुसैन : खुदा उन्हें नेक रास्ते पर लाए। तक़दीर मुझे क़ूफ़ा लिए जाती है, और अब कोई ताक़त मुझे वहां जाने से रोक नहीं सकती। आप लोग चलकर आराम फरमाएं। कल का दिन मुबारक होगा, क्योंकि मैं उस मुक़ाम पर पहुंच जाऊंगा, जहां शहादत मेरे इंतज़ार में खड़ी है।

सब जाते हैं।

छठा दृश्य

स्थान—कर्बला का मैदान। एक तरफ़ केरात नदी लहरें मार रही है। हुसैन मैदान में खड़े हैं। अब्बास और अली अकबर भी उनके साथ हैं।

अली अकबर : दरिया के किनारे खेमे लगाए जाएं, वहां ठंडी हवा आएगी।

अब्बास : बड़ी फ़िज़ा की जगह है।

हुसैन : **(आंखों में आंसू भरे हुए)** भाई लहराते हुए दरिया को देखकर खुद-ब-खुद दिल भरा आता है। मुझे खूब याद है कि इसी जगह एक बार वालिद मरहूम की फ़ौज उतरी थी। बाबा बहुत ग़मगीन थे। उनकी आंखों में आंसू न थमते थे। न खाना खाते थे, न सोते थे। मैंने पूछा—"या हज़रत, आप क्यों इस क़दर बेताब हैं ?" मुझे छाती से लिपटाकर बोले—"बेटा, मेरे बाद एक दिन यहां आएगा, उस दिन तुझे मेरे रोने का सबब मालूम होगा।" आज मुझे अनकी यह बात याद आती है। उनका रोना बेसबब नहीं था। इसी जगह हमारे खून बहाए जाएंगे; इसी जगह हमारी बहनें और बेटियां क़ैद की जाएंगी, इसी जगह हमारे आदमी क़त्ल होंगे, और हम जिल्लत उठाएंगे। खुदा की क़सम, इसी जगह मेरी गर्दन की रगें कटेंगी और मेरी दाढ़ी खून में रंगी जाएगी। इसी जगह का वादा मेरे नाना से अल्लाहताला ने किया

है, और उसका वादा तक़रीर की तहरीर है।

गाते हैं।

देगा जगह कोई मेरे मुश्ते गुबार को,
बैठेगा कौन लेके किसी बेक़रार को;
दर सैकड़ों कफ़स में हैं, फिर भी असीर हूं,
कैसा मकां मिला है, ग़रीबे–दयार को;
दिल–सोज़ कौन है, जो ज़माने के ज़ुल्म से,
देखे मेरी बुझी हुई शमए–मज़ार को;
आख़िर है दास्तान शबे–ग़म कि बाद मर्ग,
करता है बंद दीदए–अख़्तर शुमार को;
आवाज़ए–चमन की उम्मीद और मेरे बाद,
चुप कर दिया फ़लक ने ज़बाने–बहार को;
राहत कहां नसीब कि सहराए–ग़म की धूप,
देती है आग हर शजरे शायादार को;
खुद आसमां को नक़्शे–वफ़ा से है दुश्मनी,
तुम क्यों मिटा रहे हो निशाने–मज़ार को;
इस हादिसे से क़ब्ल कि मैं फिर कुछ न कह सकूं,
सुन लो बयान हाले–दिले–बेक़रार को।

जैनब खेमे से बाहर निकल आती है।

जैनब : भैया, यह कौन–सा सहरा है कि इसे देखकर ख़ौफ़ से कलेजा मुंह को आ रहा है। बानू बहुत घबराई हुई है, और असग़र छाती से मुंह नहीं लगाता।

हुसैन : बहन ! यही कर्बला का मैदान है।

जैनब (**दोनों हाथों से सिर पीटकर**) भैया, मेरी आंखों के तारे, तुम पर मेरी जान निसार हो। हमें तक़दीर ने यहां कहां लाके छोड़ा, क्यों कहीं और नहीं चलते ?

हुसैन : बहन, कहां जाऊं, चारों तरफ़ से नाके बंद हैं। ज़ियाद का हुक्म है कि मेरा लश्कर यहीं उतरे। मजबूर हूं। लड़ाई में बहस नहीं करना चाहता।

जैनब : हाय भैया ! यह बड़ी मनहूस जगह है। मुझे लड़कपन से यहां की ख़बर है। हाय भैया, इस जगह तुम मुझसे बिछुड़ जाओगे।

मैं बैठी देखूंगी, और तुम बर्छियां खाओगे। मुझे मदीने भी न पहुंचा सकोगे ? रसूल की औलाद यहीं तबाह होगी, उनकी नामूस यहीं लुटेगी। हाय तक़दीर !

इस दश्त में तुम मुझसे बिछुड़ जाओगे भाई,
गर ख़ाक भी छानूं, तो न हाथ ओगे भाई;
बहनों को मदीने में ने पहुंचाओगे भाई,
मैं देखूंगी और बरछियां तुम खाओगे भाई;
औलाद से बानू की यह छूटने की जगह है,
नामूसे-नबी की यही लुटने की जगह है।

बेहोश हो जाती है। लोग पानी के छींटे देते हैं।

अली अकबर : या हज़रत, खेमे कहां लगाए जाएं ?

अब्बास : मेरी सलाह तो है कि दरिया के किनारे लगें।

हुसैन : नहीं, भैया, दुश्मन हमें दरिया के किनारे न उतरने देंगे। इसी मैदान में खेमा लगाओ, खुदा यहां भी है, और वहां भी। उसकी मर्जी पूरी होकर रहेगी।

जैनब को औरतें उठाकर खेमे में ले जाती हैं।

बानू : हाय-हाय ! बाज़ीजान को क्या हो गया ! या खुदा, हम मुसीबत के मारे हुए हैं, हमारे हाल पर रहम कर !

हुसैन : बानू, यह मेरी बहन नहीं, मां है। अगर इस्लाम में बुतपरस्ती हराम न होती, तो मैं इसकी इबादत करता। यह मेरे ख़ानदान का रोशन सितारा है। मुझ-सा खुशनसीब भाई दुनिया में और कौन होगा, जिसे खुदा ने ऐसी बहन अता की।

जैनब के मुंह पर पानी के छींटे देते हैं।

सातवां दृश्य

समय—बारह बजे रात। नसीमा अपने कमरे में अकेली बैठी हुई है।

नसीमा : **(दिल में)** वह अब तक नहीं आए। गुलाम को उन्हें साथ लाने के लिए भेजा, वह भी वहीं का हो रहा। खुदा करे, वह आते हों। दुनिया में रहते हुए हमारे ऊपर मुल्क की हालत का असर

न पड़े। मुहल्ले में आग लगी हो, तो अपना दरवाज़ा बंद करके बैठे रहना ख़तरे से नहीं बचा सकता। मैंने अपने तईं इन झगड़ों से कितना बचाया था, यहां तक कि अब्बाजान और अम्मां जब यज़ीद की बैयत न क़बूल करने के जुर्म में जलावतन कर दिए गए, तब भी मैं अपना दरवाजा बंद किए बैठी रही, पर कोई तदबीर कारगर न हुई। बैयत की बला फिर गले पड़ी। वहब मेरे लिए सब कुछ करने को तैयार है। यह यज़ीद की बैयत भी क़बूल कर लेता, चाहे उसके दिल को कितना ही सदमा हो। पर जो कुछ हो रहा है, उसे देखकर अब मेरा दिल भी यज़ीद की बैयत की तरफ़ मायल नहीं होता, उससे नफ़रत होती है। मुसलिम कितनी बेदरदी से क़त्ल किए गए, हानी को ज़ालिम ने किस बुरी तरह क़त्ल कराया। यह सब देखकर अगर यज़ीद की बैयत क़बूल कर लूं, तो शायद मेरा ज़मीर मुझे कभी मुआफ़ न करेगा। हमेशा पहलू में खलिश होती रहेगी। आह ! इस खलिश को भी सह सकती हूं, पर वहब की रूहानी कोफ़्त अब नहीं सही जाती। मैंने उन पर बहुत जुल्म किए। अब उनकी मुहब्बत की जंजीर को और न खींचूंगी। जिस दिन से अब्बा और अम्मां निकाले गए हैं, मैंने वहब को कभी दिल से खुश नहीं देखा। उनकी वह जिन्दादिली ग़ायब हो गई। यों वह अब भी मरे साथ हंसते-गाते हैं, पर मैं जानती हूं, यह मेरी दिलजुई है। मैं उन्हें जब अकेले बैठे देखती हूं, तो वह उदास और बेचैन नज़र आते हैं....वह आ गए, चलूं, दरवाज़ा खोल दूं।

जाकर दरवाजा खोल देती है। वहब अंदर दाख़िल होता है।

नसीमा : तुम आ गए, वरना मैं खुद आती। तबीयत बहुत घबरा रही थी। गुलाम कहां रह गया ?

वहब : क़त्ल कर दिया गया। नसीमा, मैंने किसी को इतनी दिलेरी से जान देते नहीं देखा। इतनी लापरवाही से कोई कुत्ते के सामने लुक़मा भी न फेंकता होगा। मैं तो समझता हूं, वह कोई औलिया था।

नसीमा : हाय, मेरे वफ़ादार और ग़रीब सालिम ! खुदा तुझे जन्नत नसीब

करे। ज़ालिमों ने उसे क्यों क़त्ल किया ?

वहब : आह ! मेरे ही कारण उस ग़रीब की जान गई। जामा मस्जिद में हज़ारों आदमी जमा थे। ख़बर है और तहक़ीक़ ख़बर है कि हज़रत हुसैन मक्के से बैयत लेने आ रहे हैं। ज़ालिमों के होश उड़े हुए हैं। जो पहले बच रहे थे, उनसे अब यज़ीद की ख़िलाफ़त का हलफ़ लिया जा रहा है। ज़ियाद ने जब मुझसे हलफ़ लेने को कहा, तो मैं राज़ी हो गया। इनकार करता, तो उसी वक़्त क़ैदखाने में डाल दिया जाता। ज़ियाद ने खुश होकर मेरी तारीफ़ की; और यज़ीद के हाजियों की सफ़ में ऊंचे दरजे पर बिठाया, जागीर में इजाफ़ा किया, और कोई मंसब भी देना चाहते हैं। उसकी मंशा यह भी है कि सब हामियों को एक सफ़ में बिठाकर एकबारगी सबसे हलफ़ ले लिया जाय, इसीलिए मुझे देर हो रही थी। इसी असना में सालिम पहुंचा, और मुझे यज़ीद वालों की सफ़ में बैठे देखकर मुझसे बदज़बानी करने लगा। मुझे दग़ाबाज़, ज़मानासाज़, बेशर्म, खुदा जाने, क्या-क्या कहा, और उसी जोश में यज़ीद और ज़ियाद दोनों ही की शान में बेअदबी की। मुझे ताना देता हुआ बोला,' मैं आज तुम्हारे नमक की क़ैद से आज़ाद हो गया। मुझे क़त्ल होना मंजूर है, मगर ऐसे आदमी की गुलामी मंजूर नहीं, जो खुद दूसरों का गुलाम है।' ज़ियाद ने हुक्म दिया—इस बदमाश की गर्दन मार दो। और, जल्लादों ने वहीं सहन में उसको क़त्ल कर डाला। हाय ! मेरी आंखों के सामने उसकी जान ली गई, और मैं उसके हक़ में ज़बान तक न खोल सका, उसकी तड़पती हुई लाश मेरी आंखों के सामने घसीटकर कुत्तों के आगे डाल दी गई, और मेरे ख़ून में जोश न आया। आफ़ियत बड़े महंगे दामों मिलती है।

नसीमा : बेशक, मंहगे दाम हैं। तुमने अभी बैयत तो नहीं ली ?

वहब : अभी नहीं, बहुत देर हो गई, लोगों की तादाद बढ़ती जाती थी। आख़िर आज हलफ़ लेना मुल्तवी किया गया। कल फ़िर सबकी तलबी है।

नसीमा : तुम इन ज़ालिमों की बैयत हर्गिज़ न लेना।

वहब : नहीं नसीमा, अब उसका मौक़ा निकल गया।

नसीमा : मैं तुमसे मिन्नत करती हूं, हर्गिज़ न लेना।

वहब तुम मेरी दिलजुई के लिए अपने ऊपर ज़ब्र कर रही हो।

नसीमा नहीं वहब, अगर तुम दिल से भी बैयत क़बूल करनी चाहो, तो मैं खुश न हूंगी। मैं भी इंसान हूं वहब, निरी भेड़ नहीं हूं। मेरे दिल जज़्बात मुर्दा नहीं हुए हैं। मैं तुम्हें इन ज़ालिमों के सामने सिर न झुकाने दूंगी। जानती हूं, जागीर ज़ब्त हो जायगी, वजीफ़ा बंद हो जाएगा, जलावतन कर दिए जाएंगे। मैं तुम्हारे साथ ये सारी आफ़तें झेल लूंगी।

बहव और अगर ज़ालिमों ने इतने ही पर बस न की ?

नसीमा आह वहब, अगर यह होना है, तो खुदा के लिए इसी वक़्त यहां से चले चलो। किसी सामान की ज़रूरत नहीं। इसी तरह इन्हीं पांवों चलो। यहां से दूर, किसी दरख़्त के साए में बैठकर दिन काट दूंगी, पर इन ज़ालिमों की खुशामद न करूंगी।

वहब **(नसीमा को गले लगाकर)** नसीमा, मेरी जान तुझ पर फ़िदा हो। ज़ालिमों की सख़्ती मेरे हक़ में अक़सीर हो गई। अब उस जुल्म से मुझे कोई शिकायत नहीं। हमारे जिस्म बारहा गले मिल चुके हैं, आज हमारी रूहें गले मिली हैं, मगर इस वक़्त नाके बंद होंगे।

नसीमा जालिमों के नौकर बहुत ईमानदार नहीं होते। मैं उसे पचास दीनार दूंगी और वह हमें अपने घोड़े पर सवार कराके शहर के बाहर पहुंचा देगा।

वहब : सोच लो, बाग़ियों के साथ किसी क़िस्म की रू-रियायत नहीं हो सकती। उनकी एक ही सज़ा है, और वह है क़त्ल।

नसीमा : वहब, इंसान के दिल की कैफ़ियत हमेशा एक-सी नहीं रहती। केंचुए से डरने वाला आदमी सांप की गर्दन पकड़ लेता है। ऐश के बंदे गुदड़ियों में मस्त हो जाते हैं। मैंने समझा था, जो ख़तरा है, घोसलों से बाहर निकलने में है; अंदर बैठे रहने में आराम ही आराम है। पर अब मालूम हुआ कि सैयद के हाथ घोंसले के अंदर भी पहुंच जाते हैं। हमारी नज़ात ज़माना से भागने में नहीं, उसका मुक़ाबला करने में है। तुम्हारी सोहबत ने, मुल्क की हालत ने, क़ौम के रईसों और अमीरों की पस्ती ने, मुझ पर रोशन कर दिया कि यहां इत्मीनान के मानी ईमान-फ़रोशी और आफ़ियत के मानी हक़कुशी है। ईमान और हक़

की हिफ़ाज़त असली आफ़ियत और इत्मीनान है। शायर ने खूब कहा है—

लुत्फ़ मरने में है बाक़ी न मज़ा जीने में,
कुछ अगर है, वो यही ख़ूने-जिगर पीने में।

वहब : मुआफ़ करो नसीमा, मैंने तुम्हें पहचानने में ग़लती की। चलो, सफ़र का सामान करें।

चौथा अंक

पहला दृश्य

समय—प्रातःकाल। ज़ियाद फ़र्श पर बैठा हुआ सोच रहा है।

ज़ियाद : **(स्वगत)** उस वफ़ादारी की क्या क़ीमत है, जो महज़ ज़बान तक महदूद रहे ? क़ूफ़ा के सभी सरदार मुसलिम बिन अक़ील से जंग करते वक़्त बग़लें झांक रहे हैं। कोई इस मुहिम को अंजाम देने का बीड़ा नहीं उठाता। आक़बत और नजात की आड़ में सब-के-सब पनाह ले रहे हैं। क्या अक़्ल है, जो दुनिया को अक़बा की ख़याली नियामता पर क़ुरबान कर देती है। मजहब ! तेरे नाम पर कितनी हिमाकतें सबाब समझी जाती हैं, तूने इंसान को कितना बातिन-परस्त, कितना कमहिम्मत बना दिया है !

उमर साद का प्रवेश।

साद : अस्सलामअलेक या अमीर ! आपने क्यों याद फ़रमाया ?

ज़ियाद : तुमसे एक ख़ास मामले में सलाह लेनी है। तुम्हें मालूम है, 'रै' कितना ज़रख़ेज़, आबाद और सेहतपरवर सूबा है ?

साद : ख़ूब जानता हूं हुज़ूर, वहां कुछ दिनों रहा हूं, सारा सूबा मेवे के बाग़ों और पहाड़ी चश्मों से गुलज़ार बना हुआ है। बाशिंदे निहायत ख़लीक़ और मिलनसार। बीमार आदमी वहां जाकर तवाना हो जाता है !

ज़ियाद : मेरी तज़वीज़ है कि तुम्हें उस सूबे का आमिल बनाऊं। मंजूर करोगे ?

साद : **(बंदगी करके)** सिर और आंखों से। इस क़द्रदानी के लिए

क़यामत तक शुक्रगुज़ार रहूंगा।

ज़ियाद : माक़ूल सालाना मुशाहरे के अलावा तुम्हें घोड़े, नौकर, गुलाम सरकार की तरफ़ से मिलेंगे।

साद : ऐन बंदानवाज़ी है। खुदा आपको हमेशा खुशखुर्रम रखे।

ज़ियाद : तो मैं मुंशी को हुक्म देता हूं कि तुम्हारे नाम फ़र्मान जारी कर दें, और तुम वहां जाकर काम संभालो।

साद : गुलाम हमेशा आपका मशकूर रहेगा।

ज़ियाद : मुझे यक़ीन है; तुम उतने ही कारगुज़ार और वफ़ादार साबित होगे, जैसी मुझे तुम्हारी ज़ात से उम्मीद है।

मीर मुंशी को बुलाता है, वह साद के नाम का फ़र्मान लिखता है।

साद : **(फ़रमान लेकर)** तो मैं कल चला जाऊं ?

ज़ियाद : नहीं-नहीं, इतनी जल्द नहीं। वहां जाने के पहले तुम्हें अपनी वफ़ादारी का सबूत देना पड़ेगा। इतना ऊंचा मंसब उसी को दिया जा सकता है, जो हमारा एतबार हासिल कर सके। यह किसी बड़ी ख़िदमत का सिला होगा।

साद : मैं हर एक ख़िदमत के लिए दिलोजान से हाजिर हूं। जिस मुहिम को और कोई अंजाम न दे सकता हो, उस पर मुझे भेज दीजिए। खुदा ने चाहा तो कामयाब होकर आऊंगा।

ज़ियाद : बेशक-बेशक, मुझे तुम्हारी ज़ात से ऐसी ही उम्मीद है। तुम्हें मालूम है, हुसैन सिन अली कूफ़े की तरफ़ आ रहे हैं। हमको उनकी तरफ़ से बहुत अंदेशा है। तुमको उनसे जंग करने के लिए जाना होगा। उधर से हमें बेफ़िक्र करके फिर 'रै' की हुकूमत पर जाना।

साद : या अमीर, आप मुझे इस मुहिम पर जाने से मुआफ़ रखें, इसके सिवा आप जो हुक्म देंगे, उसकी तामील में मुझे ज़रा भी उज्ऱ न होगा।

ज़ियाद : क्यों, हुसैन से जंग करने में तुम्हें क्या उज्र है ?

साद : आपका गुलाम हूं, लेकिन हुसैन के मुक़ाबले से मुझे मुआफ़ रखें तो आपका हमेशा एहसान मानूंगा।

ज़ियाद : बेहतर है, तुम्हारी जगह किसी और को भेजूंगा। फ़र्मान वापस देकर घर बैठ जाओ। 'रै' का इलाक़ा उसी आदमी का हक़ है,

जो इस मुहिम को अंजाम दे। मौत के बग़ैर जन्नत नसीब नहीं हो सकती। जो आदमी एक पैर दीन की किश्ती में रखता है, दूसरा पैर दुनिया की किश्ती में, उसे कभी साहिल पर पहुंचना नसीब न होगा।

साद (**दिल में**) एक तरफ़ '**रै**' का इलाक़ा है, दूसरी तरफ़ नजात; एक तरफ़ दौलत और हुकूमत है, दूसरी तरफ़ लानत और अजाब। खुदा ! मेरी तक़दीर में क्या लिखा है। (**प्रकट**) या अमीर, मुझे एक दिन की मुहलत दीजिए। मैं कल इस मामले पर ग़ौर करके आपको जवाब दूंगा।

जियाद अच्छी बात है। सोच लो।

दोनों चले जाते हैं।

दूसरा दृश्य

समय—प्रातःकाल। साद का मकान। साद बैठा हुआ है।

साद : (**मन में**) यार-दोस्त, अपने-बेगाने, अज़ीज़, सब मुझे हुसैन के मुक़ाबले पर जाने से मना करते हैं। बीवी कहती है, अगर तेरे पास दुनिया में कुछ भी बाक़ी न रहे, तो इससे बेहतर है कि तू हुसैन का ख़ून अपनी गर्दन पर ले। आज मैंने ज़ियाद को जवाब देने का वादा किया है। सारी रात सोचते गुज़र गई, और अभी तक कुछ फ़ैसला न कर सका। अजीब दो फ़स्ते में पडा हुआ हूं। अपना दिल भी हुसैन के क़त्ल पर आमादा नहीं होता। गो मैंने यज़ीद के हाथों पर बैयत की। पर हुसैन से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है। कितना दीनदार, किना बेलौस आदमी है। हमीं ने उन्हें यहां बुलाया, बार-बार ख़त और क़ासिद भेजे, और आज जब वह यहां हमारी मदद करने आ रहे हैं, तो हम उनकी जान लेने पर तैयार हैं। हाय खुदग़रजी ! तेरा बुरा हो, तेरे सामने दीन-ईमान, नेक-बद की तरफ़ से आंखें बंद हो जाती हैं। कितना गुनाहे-अजीम है, अपने रसूल के नवासे की गर्दन पर तलवार चलाना ! खुदा न करे, मैं इतना गुमराह हो जाऊं। '**रै**' का सूबा कितना ज़रख़ेज है। वहां थोड़े दिन भी रह गया, तो मालामाल हो जाऊंगा। कितनी शान से बसर होगी। तुफ़ है मुझ

पर, जो अपनी शान और हुकूमत के लिए बड़े-से-बड़े गुनाह करने का इरादा कर रहा हूं। नहीं, मुझसे यह फ़ेल न होगा। 'रै' जन्नत ही सही, पर फ़र्ज़ुदे-रसूल का ख़ून करके मुझे जन्नत में जाना भी मंजूर नहीं।

ज़ियाद का प्रवेश।

साद : अस्सलामअलेक ! अमीर ज़ियाद ! मैं तो खुद ही हाज़िर होने वाला था। आपने नाहक तक़लीफ़ की।

ज़ियाद : शहर का दौरा करने निकला था। बाग़ियों पर इस वक़्त बहुत सख्त निगाह रखने की ज़रूरत है। मुझे मालूम हुआ कि हबीब, ज़हीर, अब्दुल्लाह वगैरा छिपकर हुसैन के लश्कर में दाखिल हो गए हैं। इसकी रोकथाम न की गई, तो बाग़ी शेर हो जाएंगे। हुसैन के साथ आदमी थोड़े हैं, पर मुझे ताज्जुब होगा, अगर यहां आते-आते उनके साथ आधा शहर हो जाए। शेर पिंजरे में भी हो, तो भी उससे डरना चाहिए। रसूल का नाती फ़ौज का मुहताज नहीं रह सकता। कहो, तुमने क्या फ़ैसला किया ? मैं अब ज़्यादा इंतजार नहीं कर सकता।

साद : या अमीर, हुसैन के मुक़ाबले के लिए न तो अपना दिल ही गवाही देता है, और न घर वालो की सलाह होती है। आपने मुझे 'रै' की निज़ामत अता की है, इसके लिए आपको अपना मुरब्बी समझता हूं। मगर क़त्लेहुसैन के वास्ते मुझे न भेजिए।

ज़ियाद : साद, दुनिया में कोई खुशी बग़ैर तकलीफ़ के नहीं हासिल होती। शहद के साथ मक्खी के डंक का ज़हर भी है। तुम शहद का मज़ा उठाना चाहते हो, मगर डंक की तकलीफ़ नहीं उठाना चाहते। बिला मौत की तक़लीफ़ उठाए जन्नत में जाना चाहते हो। तुम्हें मजबूर नहीं करता। इस इनाम पर हुसैन से जंग करने के लिए आदमियों की कमी नहीं है। मुझे फ़र्मान वापस दे दो, और आराम से घर बैठकर रसूल और खुदा की इबादत करो।

साद : या अमीर ! सोचिए, इस हालत में मेरी कितनी बदनामी होगी। सारे शहर में ख़बर फैल गई कि मैं 'रै' का नाज़िम बनाया गया हूं। मेरे यारदोस्त मुझे मुबारकबाद दे चुके। अब जो मुझसे फ़र्मान ले लिया जाएगा, तो लोग दिल में क्या कहेंगे ?

ज़ियाद : यह सवाल तो तुम्हें अपने दिल में पूछना चाहिए।

साद : या अमीर, मुझे कुछ और मुहलत दीजिए।

ज़ियाद : तुम इस तरह टालमटोल करके देर करना चाहते हो। कलाम पाक की क़सम है, अब मैं तुम्हारे साथ ज़्यादा सख़्ती से पेश आऊंगा। अगर शाम हुसैन से जंग करने के लिए तैयार होकर न आए, तो तेरी जायदाद ज़ब्त कर लूंगा, तेरा घर लुटवा दूंगा, यह मकान पामाल हो जाएगा, और तेरी जान की भी ख़ैरियत नहीं।

ज़ियाद का प्रस्थान।

साद : **(दिल में)** मालूम होता है मेरी तक़दीर में रूस्याह होना ही लिखा है। अब महज़ 'रै' की निज़ामत का सवाल है ? अब अपनी जायदाद और जान का सवाल है। इस ज़ालिम ने हानी को कितनी बेरहमी से क़त्ल किया। कसीर को भी अपना अईनपरवरी की गिरां क़ीमत देनी पड़ी। शहर वालों ने ज़बान तक न हिलाई। वह तो महज़ हुसैन के अजीज़ थे। यह मामला उससे कहीं नाजुक है। ज़ियाद बेरहम हो जाएगा, तो जो कुछ न कर गुज़रे, वह थोड़ा है। मैं 'रै' को ईमान पर क़ुर्बान कर सकता हूं, पर जान और जायदाद को नहीं क़ुर्बान कर सकता। मुझमें हानी और कसीर की-सी हिम्मत होती।

शिमर का प्रवेश।

शिमर : अस्सलामअलेकम साद, किस फ़िक्र में बैठे हो, ज़ियाद को तुमने क्या जवाब दिया ?

साद : दिल हुसैन के मुक़ाबले पर राज़ी नहीं होता।

शिमर : सरवत और दौलत हासिल करने का ऐसा सुनहरा मौक़ा फिर हाथ न आएगा। ऐसे मौक़े ज़िंदगी में बार-बार नहीं आते।

साद : नज़ात कैसे होगी ?

शिमर : खुदा रहीम है, क़रीम है, उसकी जात से कुछ बईद नहीं। गुनाह को माफ़ न करता, तो रहीम क्यों कहलाता ? हम गुनाह न करें, तो वह माफ़ क्या करेगा ?

साद : खुदा ऐसे बड़े गुनाह को माफ़ न करेगा।

शिमर : अगर खुदा की ज़ात से यह एतकाद उठ जाए, तो मैं आज मुसलमान न रहूं। यह रोज़ा और नमाज़ या ज़कात और खैरात, किस मर्ज की दवा है, अगर हमारे गुनाहों को भी माफ़

न करा सके।

साद : रसूले खुदा को क्या मुंह दिखाऊंगा ?

शिमर : साद, तुम समझते हो, हम अपनी मर्ज़ी के मुख्तार हैं, यह यक़ीदा बातिल है। सब-के-सब हुक्म के बंदे हैं। उसकी मर्ज़ी के बग़ैर हम अपनी उंगली को भी नहीं हिला सकते। सबाब और अज़ाब का यहां सवाल ही नहीं रहता। अक्लमंद आदमी उधार के लिए नक़द को नहीं छोड़ता। ताख़ीर मत करो, वरना फिर हाथ मलोगे।

शिमर चला जाता है।

साद : (दिल में) शिमर ने बहुत माकूल बातें कहीं। बेशक खुदा अपने बंदों के गुनाहों को माफ़ करेगा, वरना हिसाब के दिन दोज़ख में गुनहगारों के खड़े होने की जगह भी न मिलेगी। मैं ज़ाहिद न सही, लेकिन मुझे तो खुदा के सामने नदामत से गर्दन झुकाने की कोई वजह नहीं है। बेशक खुदा की यही मर्ज़ी है कि हुसैन के मुक़ाबले पर मैं जाऊं, वरना ज़ियाद यह तज़वीज़ ही क्यों करता। जब खुदा की यही मर्जी है, तो मुझे सिर झुकाने के सिवा और क्या चारा है। अब जो होना हो, सो हो ..आग में कूद पड़ा, जलूं या बचूं।

गुलाम को बुलाकर ज़ियाद के नाम अपनी मंजूरी का ख़त लिखता है।

गुलाम : शायद हुजूर ने 'रै' की निजामत क़बूल कर ली ?

साद : जा, तुझे इन बातों से क्या मतलब !

गुलाम : मैं पहले ही से जानता था कि आप यही फैसला करेंगे।

साद : तुझे क्योंकर इसका इल्म था ?

गुलाम : मैं खुद इस मंसब को न छोड़ता, चाहे इसके लिए कितना ही जुल्म करना पड़ता।

साद : (दिल में) ज़ालिम कैसी पते की बात कहता है!

गुलाम चला जाता है और साद गाने लगता है—

कोई तुमसे जुदा दर्दे-जुदाई लेके बैठा है,
वह अपने घर में अब अपनी कमाई लेके बैठा है।

खिगर, दिल, जान, ईमां अब कहां तक नाम ले कोई,
वह ज़ालिम सैकड़ों चीज़ें पराई लेके बैठा है।
खुदा ही है मेरी तोबा का, जब साक़ी कहे मुझसे—
अरे, पी भी, कहां की पारसाई लेके बैठा है।
तेरे काटे शबे-ग़म मेरी बरसों से नहीं कटती,
तो फिर तू ऐ खुदा, नाहक़ खुदाई लेके बैठा है।
कहूं कुछ मैं, तो मुंह फेरकर कहता है औरों से—
खुदा जाने, यह कब की आसनाई लेके बैठा है।
अमल कुछ चल गया है शौक़ पर ज़ाहिद का ऐ यारो,
कि मस्जिद में पुरानी एक चटाई लेके बैठा है।

तीसरा दृश्य

केरात-नदी के किनारे साद का लश्कर पड़ा हुआ है। केरात से दो मील के फ़ासले पर कर्बला के मैदान में हुसैन का लश्कर है। केरात और हुसैन के लश्कर के बीच में साद ने एक लश्कर को नदी के पानी को रोकने के लिए पहरा बैठा दिया है। प्रात:काल का समय। शिमर और साद खेमे में बैठे हुए हैं।

साद : मेरा दिल अभी तक हुसैन से जंग करने को तैयार नहीं होता। चाहता हूं, किसी तरीक़े से सुलह हो जाए, मगर तीन क़ासिदों में से एक भी मेरे ख़त का जवाब न ला सका। एक तो हजरत हुसैन के पास जा ही न सका, दूसरा शर्म के मारे रास्ते ही से किसी तरफ़ खिसक गया, और तीसरे ने जाकर हुसैन की बैयत अख्तियार कर ली। अब और क़ासिदों को भेजते हुए डरता हूं कि इनका भी वही हाल न हो।

शिमर : ज़ियाद को ये बातें मालूम होंगी, तो आपसे सख्त नाराज़ होगा।

साद : मुझे बार-बार यही ख़याल आता है कि हुसैन यहां जंग के इरादे से नहीं, महज़ हम लोगों के बुलाने से आए हैं। उन्हें बुलाकर उनसे दग़ा करना इंसानियत के ख़िलाफ़ मालूम होता है।

शिमर : मुझे ख़ौफ़ है कि आपके ताख़ीर से नाराज़ होकर ज़ियाद आपको वापस न बुला लें। फिर उनके गुस्से से खुदा हा बचाए। ज़ियाद ने कितनी सख्त ताक़ीद की थी कि हुसैन के लश्कर को पानी का एक बूंद भी न मिले। वहां उनके आदमी दरिया से पानी ले जाते

हैं, कुएं खोदते हैं। इधर से कोई रोक-टोक नहीं होती। क्या आप समझते हैं कि ज़ियाद से ये बातें छिपी होंगी।

साद : मालूम नहीं, कौन उसके पास ये सब ख़बरें भेजता रहता है ?

शिमर : उसने यहां अपने कितने गोइंदे बिठा रखे हैं, जो दम-दम की ख़बरें भेज देते हैं।

एक क़ासिद का प्रवेश।

क़ासिद : अस्सलामअलेक बिन साद। अमीर का हुक्मनामा लाया हूं।

साद को ज़ियाद का खत देता है।

साद : (**खत पढ़कर**) तुम बाहर बैठो, इसका जवाब दिया जाएगा। (**क़ासिद चला जाता है**) इसमें भी वही ताक़ीद है कि हुसैन को पानी मत लेने दो, ज़ंग करने में एक लमहे की देर न करो। देखिए, लिखते हैं—

"हुसैन से ज़ंग करने के लिए अब कोई बहाना नहीं रहा। फ़ौज की कमी की शिकायत थी, सो वह भी नहीं रही। अब मेरे पास बाईस हज़ार सवार और पैदल मौजूद हैं।"

शिमर : बेशक, उनका लिखना वाजिब है। मैं जाकर सख्त हुक्म देता हूं कि हुसैन के लश्कर की एक चिड़िया भी दरिया के किनारे न आने पाए। आप ज़ंग का हुक्म दे दें।

साद : आपको मालूम है, बाईस हज़ार आदमियों में कितने अज़ाब के ख़ौफ़ से भाग गए, और रोज़ भागते जाते हैं।

शिमर : इसीलिए तो और ज़रूरी है कि ज़ंग शुरू कर दी जाए, वरना रफ्ता-रफ्ता यह सारी फ़ौज बादलों की तरह ग़ायब हो जाएगी। पर मैंने सुना है, ज़ियाद ने उन सब आदमियों को गिरफ़्तार कर लिया है, और बहुत जल्द वे सब फ़ौज में आ जाएंगे। पर यह हुक्म भी ज़ारी कर दिया है जो आदमी फ़ौज से भागेगा, उसकी जायदाद छीन ली जाएगी, और उसे ख़ानदान के साथ जलावतन कर दिया जाएगा। इस हुक्म का लोगों पर अच्छा असर पड़ा है। अब उम्मीद नहीं है कि भागने की कोई हिम्मत करे। मुझे यह भी ख़बर मिली है कि ज़ियाद ने कई आदमियों का क़त्ल करा दिया है।

एक और क़ासिद का प्रवेश।

क़ासिद : अस्सलामअलेक बिन साद ! हज़रत हुसैन ने यह ख़त भेजा है, और उसका जवाब तलब किया है। (**साद को ख़त देता है।**)

साद : (**ख़त पढ़कर**) बाहर जाकर बैठो। अभी जवाब मिलेगा।

शिमर : (**ख़त पर झुककर**) इसमें क्या लिखा है ?

साद : (**ख़त को बंद करके**) कुछ नहीं, यही लिखा है कि मैं तुमसे मिलना चाहता हूं।

शिमर : यह उनकी नई चाल है। कलाम पाक की क़सम, आप उनकी दरख़्वास्त मानकर पछताएंगे। आपको फ़ौज में फिर आना नसीब न होगा।

साद : क्या तुम्हारा यह मतलब है कि हुसैन मुझसे दग़ा करेंगे ? अली का बेटा दग़ा नहीं कर सकता।

शिमर : यह मेरा मतलब नहीं। यहां से बच निकलने की कोई तज़वीज़ पेश करनी चाहते होंगे। उनकी ज़बान में जादू का असर है, ऐसा न हो कि वह आपको चकमा दें। क्या हर्ज है, अगर मैं भी आपके साथ चलूं ?

साद : मैं समझता हूं कि मैं अपने दीन और दुनिया की हिफ़ाजत खुद कर सकता हूं। मुझे तुम्हारी मदद की ज़रूरत नहीं।

शिमर : आपको अख़्तियार है। कम-से-कम मेरी इतनी सलाह तो मान ही लीजिएगा कि अपने थोड़े से चुने हुए आदमी लेते जाइएगा।

साद : यह मेरा ज़ाती मामला है, जैसा मुनासिब समझूंगा, करूंगा।

क़ासिद को बुलाकर ख़त का जवाब देता है।

शिमर : रात का वक़्त लिखा है न ?

साद : इतना तो तुम्हें खुद समझ लेना चाहिए था।

शिमर : (**जाने के लिए खड़ा होकर**) मेरी बात का ज़रूर ख़याल रखिएगा। (**दिल में**) इसके अंदाज से मालूम होता है कि हुसैन की बातों में आ जाएगा। ज़ियाद के पास खुद जाकर यह क़िस्सा कहूं।

साद : (**दिल में**)खुदा तुझसे समझे, ज़ालिम ! तू ज़ियाद से भी दो अंगुल बढ़ा हुआ है। शायद मेरा यह क़यास ग़लत नहीं है कि तू ही ज़ियाद को यहां के हालात की इत्तिला देता है। हुसैन दग़ा

करेंगे ! हुसैन दग़ा करने वालों में नहीं, दग़ा का शिकार होने वालों में हैं।

चौथा दृश्य

हुसैन के हरम की औरतें बैठी हुई बातें कर रही हैं। शाम का वक़्त।

सुगरा : अम्मां, बड़ी प्यास लगी है।

अली असग़र : पानी। बुआ, पानी।

हंफ़ा : क़ुर्बान गई, बेटे कितना पानी पियोगे ? अभी लाई। (**मशकों को जाकर देखती है, और छाती पीटती लौटती है।**) ऐ क़ुर्बान गई बीवी, कहीं एक बूंद पानी नहीं। बच्चों को क्या पिलाऊं?

जैनब : क्या बिल्कुल पानी ग़ायब हो गया ?

हंफ़ा : ऐ क़ुर्बान गई बीवी, सारे मटके और मशकें ख़ाली पड़ी हुई हैं।

जैनब : ग़ज़ब हो गया। नदी तो बंद ही थी, अब ज़ालिम कुएं भी नहीं खोदने देते।

अली असग़र : पानी ! बुआ, पानी !

शहरबानू : या खुदा ! किस अज़ाब में फंसे इन नन्हों को कैसे समझाऊं !

हंफ़ा : बीवी, क़ुर्बान जाऊं ! मैं जाकर दरिया से पानी लाती हूं ! कौन मुआ रोकेगा, मुंह झुलस दूं उसका। क्या मेरे लाल प्यासों तड़पेंगे, जब दरिया में पानी भरा हुआ है ?

जैनब : तू नहीं जानती, साढ़े छः हज़ार जवान दरिया का पानी रोकने के लिए तैनात हैं ?

हंफ़ा : ऐ क़ुर्बान जाऊं बीवी, कौन मुझसे बोलेगा; झाड़ न मारूंगी। रसूल के बेटे प्यासे रहेंगे ?

हंफ़ा एक मशक लेकर दरिया की तरफ़ जाती है, और थोड़ी देर बाद लौट आती है, सिर के बाल नुचे हुए, कपड़े फटे हुए, मशक नदारद। रोती हुई ज़मीन पर बैठ जाती है।

जैनब : क्या हुआ, हंफ़ा ? यह तेरी क्या हालत है ?

हंफ़ा : बीवी, खुदा का अज़ाब इन रूस्याहों पर नाज़िल हो। ज़ालिम ने मुझे रोक लिया, मेरी मशक छीन ली, और एक कुत्ते को मुझ पर छोड़ दिया ! भागते-भागते किसी तरह यहां पहुची हूं।

हाय ! इन मूजियों पर आसमान भी नहीं फट पड़ता। इतनी दुर्गति कभी न हुई थी।

रोती है।

हुसैन : **(अंदर जाकर)** हंफ़ा, क्यों रोती है, अरे, यह तेरे कपड़े किसने फाड़े ?

जैनब : बेचारी शामत की मारी पानी लेने गई थी। बच्चे प्यास से तड़प रहे थे। ज़ालिमों ने नोमजान कर दिया।

हुसैन : हंफ़ा, मत रोओ। रसूल के क़दमों की क़सम, अभी उन ज़ालिमों का सिर तेरे पैरों पर होगा, जिनके बेरहम हाथों ने तेरी बेहुरमती की, चाहे मेरे सारे रफ़ीक़, मेरे सारे अज़ीज़ और मैं ख़ुद क्यों न मर जाऊं। औरत की बेहुरमती का बदला ख़ून है, चाहे वह गुलाम और बेकस ही क्यों न हो। उन मलऊनों को दिखा दूंगा कि मुझे अपनी लौंडी की आबरू अपने हरम से कम प्यारी नहीं है।

तलवार हाथ में लेकर बाहर जाते हैं पर हंफ़ा उनके पैरों को पकड़ लेती है।

हंफ़ा : मेरे आक़ा, मेरी जान आप पर फ़िदा हो। मैं अपना बदला दुनिया में नहीं, अक़बे में लेना चाहती हूं, जहां की आग कहीं ज़्यादा तेज़, जहां की सज़ाएं यहां से कहीं ज़्यादा दिल हिलाने वाली होंगी। मैं नहीं चाहती कि आपकी तलवार से क़त्ल होकर वह अज़ाब से छूट जाए।

हुसैन : हंफ़ा यह सब उनके लिए है, जो दुनिया में अपना बदला न ले सके। अगर मेरे पास एक लाख आदमी होते, तो तेरी बेइज़्ज़ती का बदला लेने के लिए मैं उन्हें क़ुर्बान कर देता, इन बहत्तर आदमियों की हक़ीक़त ही क्या है ! मेरे पैरों को छोड़ दे, ऐसा न हो कि मेरा गुस्सा आग बनकर मुझको जलाकर खाक कर दे।

हंफ़ा : **(दिल में)** काश ! इस वक़्त वे ज़ालिम यहां होते और देखते कि जिसे उन्होंने कुत्तों से नुचवाया उसकी अली के बेटे की निगाहों में कितनी इज़्ज़त है। नहीं, मेरे मौला, मैं दुश्मनों को इतनी अच्छी मौत नहीं देना चाहती। मैं उन्हें जहन्नुम की

आग में जलाना चाहती....

अली अकबर का प्रवेश।

अली अकबर : अब्बाजान, साद अपनी फ़ौज से निकलकर आया है, और आपसे मिलना चाहता है।

हुसैन : हां, मैंने इसी वक़्त उसे बुलाया था। पहले उससे हंफ़ा को सताने वालों के ख़ून का मुआवज़ा लेना है।

हुसैन और अली अकबर बाहर जाते हैं।

अली अकबर : या हज़रत, मैं भी आपके साथ रहूंगा।

अब्बास : मैं भी।

हुसैन : नहीं, मैंने उनसे तनहा मिलने का वादा किया है। तुम्हारे साथ रहने से मेरी बात में फ़र्क आएगा।

अली अकबर : वह तो अपने साथ एक सौ ज़वानों से ज़्यादा लाया है, जो चंद क़दमों के फ़ासले पर खड़े हैं। हम आपको तनहा न जाने देंगे।

अब्बास : साद की शराफ़त पर मुझे भरोसा नहीं है।

हुसैन : मैं उसे इतना कमीना नहीं समझता कि मेरे साथ दग़ा करे। खैर, चलो, अगर उसे कोई एतराज़ न होगा, तो वहां मौजूद रहना। उसे भी अपने साथ दो आदमियों को रखने की आज़ादी होगी।

तीनों आदमी शस्त्र से सुसज्जित होकर चलते हैं। फिर दोनों फ़ौजों के बीच में हुसैन और साद खड़े हैं। हुसैन के साथ अकबर और अब्बास हैं, साद के साथ उसका बेटा और गुलाम।

साद : अस्सलामअलेक या फ़र्ज़ंदे-रसूल ! आपने मुझे अपनी ख़िदमत में हाज़िर होने का मौक़ा दिया, इसके लिए आपका मशकूर हूं। मुझे क्या इर्शाद है ?

हुसैन : मैंने तुम्हें यह तसफ़िया करने के लिए तकलीफ़ दी है कि आख़िर तुम मुझसे क्या चाहते हो ? तुम्हारे वालिद रसूल पाक के रफ़ीकों में थे, और अगर बाप की तबीयत का असर कुछ बेटे पर पड़ता है, तो मुझे उम्मीद है कि तुममें इंसानियत का जौहर मौजूद है। क्या नहीं जानते कि मैं कौन हूं। मैं तुम्हारे मुंह से सुनना चाहता हूं।

साद : आप रसूल पाक के नवासे हैं।

हुसैन : और यह जानकर भी तुम मुझसे जंग करने आए हो। क्या तुम्हें खुदा का ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं है ? तुममें ज़रा भी इंसाफ़ नहीं है कि तुम मुझ से जंग करने आए हो, जो तुम्हारे ही भाइयों की दग़ा का शिकार बनकर यहां आ फंसा है, और अब यहां से वापस जाना चाहता है। क्यों ऐसा काम करते हो, जिसके लिए तुम्हें दुनिया में रुसवाई और अकबा में रूस्याही हासिल हो ?

साद : या हज़रत, मैं क्या करूं ! खुदा जानता है कि मैं कितनी मजबूरी की हालत में यहां आया हूं।

हुसैन : साद, कोई इंसान आज तक वह काम करने पर मजबूर नहीं हुआ, जो उसे पसंद न आया हो। तुमको यक़ीन है कि मेरे क़त्ल के सिले में तुम्हारी बेढंगी 'रै' की हुकूमत हाथ आएगी, दौलत हासिल होगी। लेकिन साद, हराम की दौलत ने बहुत दिनों तक किसी के साथ दोस्ती नहीं की और न वह तुम्हारे लिए पुरानी आदत छोड़ेगी। हबिस को छोड़ो, और मुझे अपने घर जाने दो।

साद : फिर तो मेरी ज़िंदगी के दिन उंगलियों पर गिने जा सकते हैं।

हुसैन : अगर यह ख़ौफ़ है तो मैं तुझे अपने साथ ले जा सकता हूं।

साद : या हज़रत, ज़ालिम मेरे मकान बरबाद कर देंगे, जो शहर में अपना सानी नहीं रखते।

हुसैन : सुभानअल्लाह ! तुमने वह बात मुंह से निकाली जो तुम्हारी शान से बईद है। अगर हक़ पर क़ायम रहने की सज़ा में तुम्हारा मकान बरबाद किया जाए, तो ऐसा बड़ा नुकसान नहीं। हक़ के लिए लोगों ने इसमे कहीं बड़े नुकसान उठाए हैं, यहां तक कि जान से भी दरेग़ नहीं किया। मैं वादा करता हूं कि तुझे उससे अच्छा मकान बनवा दूंगा।

साद : या हज़रत, मेरे पास बड़ी जरख़ेज और आबाद जागीरें हैं, जो ज़ब्त कर ली जाएंगी, और मेरी औलाद उनसे महरूम रह जाएगी।

हुसैन : मैं हिजाज़ में तुम्हें उनसे ज़्यादा ज़रख़ेज और आबाद जागीरें दूंगा। इसका इत्मीनान रखो कि मेरी जात से तुम्हें कोई नुक़सान न पहुंचेगा।

साद : या हज़रत, आप पर मेरी जान निसार हो ! मेरे साथ बाईस हज़ार

सवार और पैदल हैं। ज़ियाद ने उनके सरदारों से बड़े-बड़े वादे कर रखे हैं, मैं अगर आपकी तरफ़ आ भी जाऊं, तो वे आपसे ज़रूर जंग करेंगे। इसीलिए मुनासिब यही है कि आप जो शर्तें पसंद फ़र्माएं, मैं ज़ियाद को लिख भेजूं। मैं अपने ख़त में सुलह पर जोर दूंगा, और मुझे यक़ीन है कि ज़ियाद मेरी तज़वीज़ मंजूर कर लेगा।

हुसैन : खुदा तुम्हें इसका सबाब आक़बत में देगा। मेरी पहली शर्त यह है कि मुझे मक्का लौटने दिया जाए; अगर यह न मंजूर हो, तो सरहदों की तरफ़ जाकर अमन से ज़िंदगी बसर करने को राज़ी हूं; अगर यह भी मंजूर न हो, तो मुझे यज़ीद ही के पास जाने दिया जाय; और सबसे बड़ी शर्त यह है कि जब तक मैं यहां हूं, मुझे दरिया से पानी लेने की पूरी आज़ादी हासिल हो। मैं यज़ीद की बैयत किसी हालत से न क़बूल करूंगा, और अगर तुमने मेरी वापसी की यह शर्त क़ायम न की तो हम यहां शहीद हो जाना ही पसंद करेंगे। लेकिन अगर यह मंशा है कि मुझे क़त्ल ही कर दिया जाय; तो मैं अपनी जान को गिरां-से-गिरां क़ीमत पर बेचूंगा।

साद : हज़रत, आपकी शर्तें बहुत माक़ूल हैं।

हुसैन : मैं तुम्हारे जवाब का कब तक इंतज़ार करूं?

साद : सुबह आफ़ताब की रोशनी के साथ मेरा क़ासिद आपकी ख़िदमत में हाज़िर होगा।

दोनों आदमी आपनी-अपनी फ़ौज की तरफ़ लौटते हैं।

पांचवां दृश्य

समय—आठ बजे रात ? ज़ियाद की ख़ास बैठक। शिमर और ज़ियाद बातें कर रहे हैं।

ज़ियाद : क्या कहते हो ? मैंने सख़्त ताक़ीद की थी कि दरिया पर हुसैन का कोई आदमी न आने पाए।

शिमर : बजा है। मगर मैं तो हुसैन के आदमियों को दरिया से पानी लाते बराबर देखता रहा हूं; और शायद मेरा, दरिया की हिफ़ाज़त के लिए अपनी ज़िम्मेदारी पर, हुक्म ज़ारी करना साद को बुरा लगा।

ज़ियाद : साद पर मुझे इत्मीनान है। मुमकिन है, उसे लोगों को प्यासों मरते देखकर रहम आ गया हो, और हक़ तो यह है कि शायद मैं भी मौक़े पर इतना बेरहम नहीं हो सकता। इससे यह नहीं साबित होता कि साद की नीयत डांवाडोल हो रही है।

शिमर : मैं साद की शिक़ायत करने के लिए आपकी ख़िदमत में नहीं हाज़िर हुआ हूं, सिर्फ़ वहां की हालत अर्ज़ करनी थी। हुसैन ने आज साद को मुलाक़ात करने को भी बुलाया है। देखिए,क्या बातें होती हैं।

ज़ियाद : क्या ? हुसैन से मुलाक़ातें भी कर रहा है ? तुम साबित कर सकते हो ?

शिमर : हुज़ूर, मेरे सबूत की ज़रूरत नहीं। उनका क़ासिद आता ही होगा।

ज़ियाद : क्या कई बार मुलाक़ातें हुई हैं ?

शिमर : आज की मुलाक़ात का तो इल्म है, पर शायद और भी मुलाक़ातें तनहाई में हुई हैं।

ज़ियाद : कोई और आदमी साथ नहीं रहा ?

शिमर : मैंने खुद साथ चलना चाहा था, पर मेरी अर्ज़ क़बूल न हुई।

ज़ियाद : कलाम पाक की क़सम, मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता। मैंने उसे हुसैन से जंग करने को भेजा है, मसालहत करने के लिए नहीं। मैं उससे इसका जवाब तलब करूंगा।

शिमर : हुज़ूर ने उनके साथ जो सलूक किए हैं और इस काम के लिए जो सिला तज़वीज़ किया है, वह तो किसी दुश्मन को भी आपका दोस्त बना देता। मगर अपना-अपना मिजाज़ ही तो है।

एक क़ासिद का प्रवेश।

क़ासिद : अस्सलामअलेक या अमीर ! उमर बिन साद का ख़त लाया हूं।

ज़ियाद को ख़त देता है और ज़ियाद उसे पढ़ने लगता है। क़ासिद बाहर चला जाता है।

ज़ियाद : इस मसालहत का नतीजा तो अच्छा निकला। हुसैन वापस जाने को रज़ामंद हैं, और साद ने इसकी ताईद करते हुए लिखा है कि उनकी जानिब से किसी ख़तरे का अंदेशा नहीं। ख़लीफ़ा

यज़ीद की मंशा भी यही है। साद ने ख़ूब किया कि बग़ैर जंग के फ़तह हासिल कर ली।

शिमर : बेशक, बड़ी शानदार फ़तह है।

ज़ियाद : क्यों, यह फ़तह नहीं है ? तंग क्यों करते हो ?

शिमर : जिसे आप फ़तह समझ रहे हैं, वह फ़तह नहीं, आपकी शिकस्त है। ऐसी शिकस्त, जो आपको फिर पनपने न देगी। आग फूस में पड़कर उतनी खौफ़नाक नहीं हो सकती, जितने मुहासिरे से निकलकर हुसैन हो जाएंगे। शेर किसी शिकार के पीछे दौड़ता हुआ बस्ती में आ गया है। उसे आप घेरकर मार सकते हैं, लेकिन एक बार वह फिर जंगल में पहुंच जाय, तो कौन है, जो उसके पंजों के सामने जाने की हिम्मत कर सके। कर्बला से निकलकर हुसैन वह दरिया होंगे, जो बांध को तोड़कर बाहर निकल आया हो,और आपकी हालत उसी टूटे हुए बांध की-सी होगी।

ज़ियाद : हां, इसमें तो कोई शक़ नहीं कि अगर वह निकलकर हिजाज़ और यमन चले जाएं, तो शायद ख़लीफ़ा यज़ीद की ख़िलाफ़त डगमगा जाय। मगर एक शर्त यह भी तो है कि उन्हें यज़ीद के पास जाने दिया जाय। इसमें हमें क्या उज्र हो सकता है ?

शिमर : अगर बाज कबूतर के क़रीब पहुंच जाय, तो दुनिया की कोई फ़ौज उसे बाज के चंगुल से नहीं बचा सकती। हुसैन अपने बाप के बेटे हैं। ख़लीफ़ा उनकी दलीलों से पेश नहीं पा सकते। कोई अजब नहीं कि अपनी अक्ल के ज़ोर से आज का क़ैदी कल का ख़लीफ़ा हो, और ख़लीफ़ा को उल्टे उसकी बैयत क़बूल करनी पड़े।

ज़ियाद : तुम्हारा यह ख़याल भी बहुत सही है। काश, मुझे तुम्हारी वफ़ादारी का इतना इल्म पहले होता तो, तुम्हीं फ़ौज के सिपहसालार होते।

शिमर : काश, साद ने मेरी बातें इतनी क़द्रदानी से सुनी होतीं, तो मुझे यहां आने और आपको तक़लीफ़ देने की ज़रूरत ही न पड़ती।

ज़ियाद : तुम सुबह चले जाओ, और साद से कहो कि फ़ौरन जंग शुरू करे।

शिमर : हुज़ूर को जो हुक्म देना हो, ख़त के ज़रिये दें। मातहत के ज़रिये उसके अफ़सर को हुक्म देना अफ़सर को मातहत के खून का

प्यासा बनाना

ज़ियाद : बेहतर, मैं ख़त ही लिख देता हूं।

ज़ियाद ख़त लिखकर शिमर को देता है।

शिमर : इसमें हुज़ूर ने ऐसा कोई क़लमा तो नहीं लिखा, जिसमें साद को शुबहा हो कि मेरे इशारे में लिखा गया है ?

ज़ियाद : मुतलक़ नहीं। हां, यह अलबत्ता लिख दिया है कि अगर तूने सिरताबी की, तो तेरी जगह शिमर लश्कर का सरदार होगा।

शिमर : हुज़ूर की क़द्रदानी की कहां तक तारीफ़ करूं।

ज़ियाद : इसकी ज़रूरत नहीं। अगर साद मेरे हुक्म की तामील करे, तो बेहतर, नहीं तो वह माज़ूल होगा, और तुम लश्कर के सरदार होंगे। पहला काम जो तुम करोगे, वह साद का सर क़लम करके मेरे पास भेजना होगा। यही तुम्हारी बहाली की बिस्मिल्लाह होगी।

शिमर : **(उठकर)** आदाब बजा लाता हूं।

शिमर बाहर चला जाता है, और ज़ियाद मकान में आराम करने जाता है।

छठा दृश्य

समय—प्रातःकाल। शाम का लश्कर। हुर और साद घोड़ों पर सवार फ़ौज का मुआयना कर रहे हैं।

हुर : अभी तक ज़ियाद ने आपके ख़त का जवाब नहीं दिया ?

साद : उसके इंतजार में रात-भर आंख नहीं लगी। जब किसी की आहट मिलती थी, तो गुमान होता था कि क़ासिद है। मुझे तो यक़ीन है कि अमीर ज़ियाद मेरी तजवीज़ मंजूर कर लेंगे।

हुर : काश, ऐसा होता ! अगर जंग की नौबत आई, तो फ़ौज के कितने ही सिपाही लड़ने से इनकार कर देंगे।

सामने से शिमर घोड़ा दौड़ाता हुआ आता है।

साद : लो, क़ासिद भी आ गया। खुदा करे, अच्छी ख़बर लाया हो। अरे, यह तो शिमर है।

हुर : हां, शिमर ही है। खुदा ख़ैर करे, जब यह खुद ज़ियाद के पास गया था, तो मुझे आपकी तज़बीज़ के मंजूर होने में बहुत शक़ है।

शिमर : **(क़रीब आकर)** अस्सलामअलेक ! मैं कल एक ज़रूरत से मकान चला गया। अमीर ज़ियाद को ख़बर हो गई। उसने मुझे बुलाया, और आपको यह ख़त दिया।

ख़त साद को देता है। साद पढ़कर जेब में रख लेता है, और एक लंबी सांस लेता है।

साद : शिमर, मैंने समझा था, तुम सुलह की ख़बर लाए होगे।

शिमर : आपकी समझ की ग़लती थी। आपको मालूम है कि अमीर ज़ियाद एक बार फ़ैसला करके फिर उसे नहीं बदलते। अब आपकी क्या मंशा है ?

साद : मजबूर हुक्म की तामील करूंगा।

शिमर : तो मैं फ़ौजों को तैयार होने का हुक्म देता हूं ?

साद : जैसा मुनासिब समझो।

शिमर फ़ौज की तरफ़ चला जाता है।

हुर : खुदा सब कुछ करे, इंसान को बातिन स्याह न बनाए।

साद : यह सब इन्हीं हज़रत की कारगुज़ारी है। ज़ियाद मेरी तरफ़ से कभी इतने बरगुमान न थे।

हुर : मुझे तो फ़र्ज़ंदे-रसूल से लड़ने के ख़याल ही से वहशत होती है।

साद : हुर, तुम सच कहते हो। मुझे यक़ीन है कि उनसे जो लड़ेगा, उसकी जगह जहन्नुम में है। मगर मजबूर हूं, 'रै' की परवा न करूं, तो भी घर की तरफ़ से बेफ़िक्र तो नहीं हो सकता। अफ़सोस, मैं हविस के हाथों तबाह हुआ। काश, मेरा दिल इतना मज़बूत होता कि 'रै' की निज़ामत पर लट्टू न हो जाता, तो आज मैं फ़र्ज़न्दे-रसूल के मुक़ाबले पर न खड़ा होता। हुर, क्या इस जंग के बाद किसी तरह मग़फ़िरत हो सकती है ?

हुर : फ़र्ज़न्दे-रसूल के खून का दाग़ कैसे धुलेगा?

साद : हुर, मैं इतने रोज़े रखूंगा कि मेरा जिस्म धुल जाय, इतनी नमाज़ें अदा करूंगा कि आज तक किसी ने न की होंगी। 'रै' की सारी

आमदनी खैरात कर दूंगा। पियादा का हज़ करूंगा और रसूल पाक की कब्र पर बैठकर रोऊंगा, गुनहगारों की ख़ताएं मुआफ़ करूंगा, और एक चींटी को भी ईजा न पहुंचाऊंगा। हाय ! ज़ालिम शिमर सोचने का मौक़ा भी नहीं देना चाहता। फ़ौजें तैयार हो रही हैं। क़ीस, हज्जाज, शीश, अशअस अपने-अपने आदमियों को सफ़ों में खड़े करने लगे। वह लो, नक्कारे पर चोट भी पड़ गई।

हुर : मैं भी जाता हूं, अपने आदमियों को संभालूं।

आहिस्ता-आहिस्ता जाता है।

साद : ऐ खुदा ! बहुत बेहतर होता कि तूने मुझे शिमर की तरह स्याह बातिन बनाया होता, या हानी और क़सीर का-सा दिल दिया होता कि अपने को ग़ैर पर क़ुर्बान कर देता। कमज़ोर इंसान भी जानता है कि मुझे क्या करना चाहिए, और क्या नहीं कर सकता। वह गुलाम से भी बदतर है, जिसका अपनी मर्ज़ी पर कोई अधिकार नहीं। मेरे क़बीले वालों ने भी सफ़बंदी शुरू कर दी। मुझे अब जाकर अपनी जगह पर सबसे आगे चलना चाहिए, और वही करना चाहिए, जो शिमर कराए, क्योंकि अब मैं फ़ौज का सरदार नहीं हूं, शिमर है।

आहिस्ता-आहिस्ता जाकर फ़ौज के सामने खड़ा हो जाता है।

शिमर : (**उच्च स्वर से**)ऐ ख़िलाफ़त को ज़िंदा रखने के लिए अपने तईं क़ुर्बान करने वाले बहादुरो, खुदा का नाम लेकर क़दम आगे बढ़ाओ, दुश्मन तुम्हारे सामने है। वह हमारे रसूल पाक का नवासा है, और उस रिश्ते से हम सब ताज़ीम से उसके आगे सिर झुकाते हैं। लेकिन जो आदमी हिर्स का इतना बंदा है कि रसूल पाक के हुक्म का, जो उन्होंने ख़िलाफ़त को अब तक क़ायम रखने के लिए दिया था, पैरों तले कुचलता है, और जो क़ौम की बैयत की परवा न करके अपनी विरासत के हक़ के लिए खिलाफ़त को ख़ाक में मिला दे॥ चाहे, वह रसूल का नवासा होते हुए भी मुसलमान नहीं है। हमारी निगाहों में रसूल के हुक्म की इज़्ज़त उसके नवासे की इज़्ज़त से कहीं ज़्यादा

है। हमारा फ़र्ज है कि हमने जिस ख़लीफ़ा की बैयत क़बूल की है, उसे ऐसे हमलों से बचाएं, जो हिर्स को पूरा करने के लिए दाद के नाम पर किए जाते हैं। चलो, फ़र्ज के मैदान में क़दम बढ़ाओ।

नक्कारे पर चोट पड़ती है, और पूरा लश्कर हुसैन के पड़ाव की तरफ़ बढ़ता है। साद आगे क़दम बढ़ाता हुआ हुसैन के खेमे के क़रीब पहुंच जाता है।

अब्बास : **(हुसैन के ख़ैमे से निकलकर)** साद ! यह दग़ा ! हम तुम्हारे जवाब का इंतज़ार कर रहे हैं, और तुम हमारे ऊपर हमला कर रहे हो ? क्या यही आईने-जंग है ?

साद : हज़रत, कलाम पाक की क़सम, मैं दग़ा के इरादे से नहीं आया। **(ज़ियाद का ख़त अब्बास के हाथ में देकर)** यह देखिए, और मेरे साथ इंसाफ़ कीजिए। मैं इस वक्त नाम के लिए फ़ौज का सरदार हूं, अख़्तियार शिमर के हाथों में है।

अब्बास : **(ख़त पढ़कर)** आखिर तुम दुनिया की तरफ़ झुके। याद रखो, खुदा की दरगाह में शिमर नहीं, तुम ख़तावार समझे जाओगे।

साद : या हज़रत, यह जानता हूं, पर ज़ियाद के गुस्से का मुक़ाबला नहीं कर सकता। वह बिल्ला है, मैं चूहा हूं, वह बाज़ है, मैं कबूतर हूं। वह एक इशारे से मेरे ख़ानदान का नाम मिटा सकता है। अपनी हिफ़ाजत की फ़िक्र ने मुझे मजबूर कर दिया है, मेरे दीन और ईमान को फ़ना कर दिया है।

अब्बास : खुलासा यह है कि तुम हमारा मुसाहिरा करना चाहते हो। ठहरो, मैं जाकर भाई साहब को इत्तिला दे दूं।

अब्बास हुसैन के खेमे की तरफ़ जाते हैं।

शिमर : **(साद के पास आकर)** क्या अब कोई दूसरी चाल चलने की सोच रहे हैं ?

साद : नहीं, हज़रत हुसैन को हमारी आमद और मंशा की इत्तिला देने गए हैं।

शिमर : यह मौक़े को हमारे हाथों से छीनने का हीला है। शायद क़बीलों से इमदाद तलब करने का क़स्द कर रहे हैं। एक दिन की देर भी उन्हें मौक़े का बादशाह बना सकती है।

अब्बास खेमे में वापस आते हैं।

अब्बास मैंने हज़रत हुसैन को तुम्हारा पैग़ाम दिया। हज़रत को इसका बेहद सदमा है कि उनकी कोई शर्त मंजूर नहीं की गई। सुलह की इससे ज़्यादा कोशिश उनके इमकान में न थी। गो हम सब ज़ंग के लिए तैयार हैं, लेकिन उन्होंने एक दिन की मुहलत मांगी है कि दुआ और नमाज़ में गुज़ारें। सुबह को हमें खुदा का जो हुक्म होगा, उसकी तामील करेंगे।

साद इसका जवाब मैं अपनी फ़ौज के दूसरे सरदारों से मशविरा करके दूंगा।

अब्बास अपने खेमों की तरफ़ जाते हैं, और हुर, हज्जाज, अशअस, क़ीस अब साद के पास आकर खड़े हो जाते हैं।

साद : शिमर, तुम्हारी इस मामले में क्या सलाह है ?

शिमर : यह उनकी हीलेबाजी है। आइंदा आप अमीर हैं, जो जी चाहे, करें।

साद : (**दूसरे सरदारों से मुख़ातिब होकर**) हज़रत हुसैन ने एक दिन की मुहलत की दरख़्वास्त की है, आप लोगों की क्या सलाह है ?

शिमर : इसका आप लोग ख़याल रखिएगा कि यह मुहलत आफ़त के मीज़ान को पलट सकती है।

हुर : मुहलत के मंजूर करने में पसोपेश का कोई मौक़ा नहीं।

हज्जाज : हुसैन अगर काफ़िर होते, और मुहलत की दरख़्वास्त करते तो भी उसको क़बूल करना वाज़िब था।

क़ीस : बहुत मुमकिन है, वह कल तक आपस में सलाह करके यज़ीद की बैयत क़बूल कर लें, तो नाहक खूंरेजी क्यों हो ?

शिमर : और अगर शाम तक बनी, असद और दूसरे क़बीले उनकी मदद के लिए आ जायं तो ?

क़ीस : हज़रत हुसैन ने अभी तक किसी क़बीले से इमदाद नहीं तलब की है, वरना हम इतने इत्मीनान से यहां न खड़े होते।

साद : बनी और असद ही नहीं, अगर इराक़ के सारे क़बीले आ जायं, तब भी हम आज उन्हें जंग के लिए मजबूर नहीं कर सकते।

यह इंसानियत के ख़िलाफ़ है। मेरा यही फ़ैसला है। आइंदा आप लोगों को अख़्तियार है।

साद गुस्से में भरा हुआ वहां से चला जाता है।

शिमर : क्या आप लोगों की यही मर्ज़ी है कि आज जंग मुल्तवी की जाय ?

हुर : यहां जितने असहाब मौजूद हैं,सब अपनी राएं दे चुके, अमीरे-लश्कर भी चला गया। ऐसी हालत में मुहलत के सिवा और हो ही क्या सकता है। अगर आप अपनी ज़िम्मेदारी पर जंग करना चाहते हैं तो शौक से कीजिए।

हुर, हज्जाज वग़ैरह भी चले जाते हैं।

शिमर : (**दिल में**) कौन कहता है कि हुसैन के साथ दग़ा की गई ? यहां सब-के-सब हुसैन के दोस्त हैं। इस फ़ौज में रहने से कहीं यह बेहतर था कि सब-के-सब हुसैन की फ़ौज में होते। तब भी उनकी इतनी मदद न कर सकते। मुझे ज़रा ताज्जुब न होगा, अगर कल सब लोग हथियार रखकर हुसैन के क़दमों पर गिर पड़ें। ज़ियाद को इस मुहलत की भी इत्तिला तो दे ही दूं।

साद का क़ासिद मुहलत का पैग़ाम लेकर हुसैन के लश्कर की तरफ़ आता है। शिमर अपने खेमे की तरफ़ जाता है।

सातवां दृश्य

समय—आठ बजे रात। हुसैन एक कुर्सी पर मैदान में बैठे हुए हैं। उनके दोस्त और अज़ीज़ सब फ़र्श पर बैठे हुए हैं। शमा जल रही है।

हुसैन : शुक्र है, खुदाए-पाक का, जिसने हमें ईमान की रोशनी अता की, ताकि हम नेक को क़बूल करें, और बद से बचें। मेरे सामने इस वक़्त मेरे बेटे और भतीजे, भाई और भांजे, दोस्त और रफ़ीक़ सब जमा हैं। मैं सबके लिए खुदा से दुआ करता हूं। मुझे इसका फ़ख्र है कि उसने मुझे ऐसे सआदतमंद अज़ीज़

और ऐसे जां निसार दोस्त अता किए। आपने दोस्ती का हक़ पूरी तरह अता कर दिया, आपने साबित कर दिया कि हक़ के सामने आप जान और माल की कोई हक़ीकत नहीं समझते। इस्लाम की तारीख में आपका नाम हमेशा रोशन रहेगा। मेरा दिल ख़याल से पाशपाश हुआ जाता है कि कल मेरे बायस वे लोग जिन्हें ज़िंदा हिम्मत चाहिए, जिनका हक़ है ज़िंदा रहना; जिनको अभी ज़िंदगी में बहुत कुछ करना बाक़ी है, शहीद हो जायंगे। मुझे सच्ची खुशी होगी, अगर तुम लोग मेरे दिल का यह बोझ हल्का कर दोगे। मैं बड़ी खुशी से हर एक को इजाज़त देता हूं कि उसका जहां जी चाहे, चला जाय। मेरा किसी पर कोई हक़ नहीं है। नहीं, मैं तुमसे इल्तमास करता हूं। इसे क़बूल करो। तुमसे किसी की दुश्मनी नहीं हुई है जहां जाओगे, लोग तुम्हारी इज्ज़त करेंगे। तुम ज़िंदा शहीद हो जाओगे, जो मरकर शहादत का दर्जा पाने से इज्ज़त की बात नहीं। दुश्मन को सिर्फ़ मेरे खून की प्यास है, मैं ही उसके रास्ते का पत्थर हूं। अगर हक़ और इंसाफ़ को सिर्फ़ मेरे ख़ून से आसूदगी हो जाय, तो उसके लिए और ख़ून क्यों बहाया जाय। साद से एक दिन की मुहलत मांगने में यही मेरा ख़याल था। यह देखो, मैं शमा ठंडी किए देता हूं, जिसमें किसी को हियाब न हो।

सब लोग रोने लगते हैं, और कोई अपनी जगह से नहीं हिलता।

अब्बास : या हज़रत, अगर आप हमें मारकर भगाएं, तो भी हम नहीं जा सकते। खुदा वह दिन न दिखाए कि हम आपसे जुदा हों। आपकी सफ़क़त के साए में पल-भर अब हम सोच हो नहीं सकते कि आपके बगैर हम क्या करेंगे।

अली अकबर : अब्बाजान, यह आप क्या फर्माते हैं ? हम आपके क़दमों पर निसार होने के लिए आए हैं। आपको यहां तनहा छोड़कर जाना तो क्या, महज़ उसके ख़याल से रूह को नफ़रत होती है।

हबीब : खुदा की क़सम, आपको उस वक़्त तक नहीं छोड़ सकते, जब तक दुश्मनों के सीने में अपनी तेज़ बर्छियां न चुभा लें। अगर मेरे पास तलवार भी न होती, तो मैं आपकी हिमायत पत्थरों से करता।

अब्दुल्लाह कलवी : अगर मुझे इसका यक़ीन हो जाय कि मैं आपकी हिमायत के लिए ज़िंदा जलाया जाऊंगा, और फिर ज़िंदा होकर जलाया जाऊंगा, और यह अमल सत्तर बार होता रहेगा, तो भी मैं आपसे जुदा नहीं हो सकता। आपके क़दमों पर निसार होने से जो रुतबा हासिल होगा, वह ऐसी-ऐसी बेशुमार ज़िंदगियों से भी नहीं हासिल हो सकता।

ज़हीर : हज़रत, आपने ज़बाने-मुबारक से ये बातें निकालकर मेरी जितनी दिलशिकनी की है, उसका काफ़ी इज़हार नहीं कर सकता। अगर हमारे दिल दुनिया की हबिस में मग़लूब भी हो जाएं, तो हमारे क़दम किसी दूसरी तरफ़ जाने से गुरेज़ करेंगे। क्या आप हमें दुनिया में रूहस्याह और बेग़ैरत बनाकर ज़िंदा रखना चाहते हैं ?

अली असग़र : आप तो मुझे शरीक किए बग़ैर कभी कोई चीज़ न खाते थे, क्या जन्नत के मज़े अकेले उठाइएगा ? शमा जलवा दीजिए, हमें इस तारीकी में आप नजर नहीं आते।

हुसैन : आह ! काश, रसूले-पाक आज ज़िंदा होते और देखते कि उनकी औलाद और उनकी उम्मत हक़ पर कितने शौक से फ़िदा होती है। खुदा से मेरी यही इल्तजा है कि इस्लाम में हक़ पर शहीद होने वालों की कभी कमी न रहे। असगर बेटा, आओ, तुम्हारे बाप की जान तुम पर फ़िदा हो, हम तुम साथ-साथ जन्नत में मेवे खाएंगे। दोस्तो, आओ, नमाज़ पढ़ लें। शायद यह हमारी आखिरी नमाज़ हो।

सब लोग नमाज़ पढ़ने लगते हैं।

आठवां दृश्य

समय—प्रातःकाल। हुसैन के लश्कर में जंग की तैयारियां हो रही हैं।

अब्बास : ख़ेमे एक-दूसरे से मिला दिए, और उनके चारों तरफ़ खंदकें खोद डाली गईं, उनमें लकड़ियां भर दी गईं। नक्कारा बजवा दूं ?

हुसैन : नहीं, अभी नहीं। मैं जंग में पहले क़दम नहीं बढ़ाना चाहता। मैं एक बार फिर सुलह की तहरीक करूंगा। अभी तक मैंने शाम

के लश्कर से कोई तक़रीर नहीं की, सरदारों ही से काम निकालने की कोशिश करता रहा। अब मैं जवानों से दूबदू बातें करना चाहता हूं। कह दो, सांड़नी तैयार करे।

अब्बास : जैसा इर्शाद।

बाहर जाते हैं।

हुसैन : **(दुआ करते हुए)** ऐ खुदा ! तू ही डूबती हुई किश्तियों को पार लगाने वाला है। मुझे तेरी ही पनाह है, तेरा ही भरोसा है; जिस रंज से दिल कमज़ोर हो, उसमें तेरी ही मदद मांगता हूं। जो आफ़त किसी तरह सिर से न टले, जिसमें दोस्तों से काम न निकले, जहां हीला न हो, वहां तू ही मेरा मददगार है।

खेमे से बाहर निकलते हैं। हबीब और ज़हीर आपस में नेजेबाज़ी का अभ्यास कर रहे हैं।

हबीब : या हज़रत, खुदा से मेरी यही दुआ है कि यह नेज़ा साद के जिगर में जाय और 'रै' सूबेदारी का अरमान उसके ख़ून के रास्ते निकल जाय।

ज़हीर : उसे सूबेदारी ज़रूर मिलेगी। जहन्नुम की या 'रै' की, इसका फ़ैसला मेरी तलवार करेगी।

हबीब : वाह ! वह मेरा शिकार है, उधर निगाहें न उठाइएगा। आपके लिए मैंने शिमर को छोड़ दिया।

ज़हीर : बखुदा, वह मेरे मुक़ाबिले आए, तो मैं उसकी नाक काटकर छोड़ दूं। ऐसे बदनीयत आदमी के लिए जहन्नुम से ज़्यादा तकलीफ़ दुनिया ही में है।

अब्बास : और मेरे लिए कौन-सा शिकार तज़वीज़ किया ?

ज़हीर : आपके लिए ज़ियाद हाजिर है।

हुसैन : और मेरे लिए ? क्या मैं ताकता ही रहूंगा ?

ज़हीर : आपको कोई शिकार न मिलेगा।

हुसैन : मेरे साथ यह ज़्यादती क्यों ?

ज़हीर : इसलिए कि आप भी शिकारियों की जैल में आ जायंगे, तो जन्नत की नियामतों में भी साझा बढ़ाएंगे। आपके लिए रसूल-पाक की कुर्बत काफ़ी है। जन्नत की नियामतों में हम आपको शरीक नहीं करना चाहते।

हुसैन : मैं ज़रा साद के लश्कर से बातें करके आ जाऊं, तो इसका फ़ैसला हो।

हबीब : उन गुमराहों से फ़र्माइश करना बेकार है। उनके दिल इतने सख़्त हो गए हैं कि उन पर कोई तक़रीर असर नहीं कर सकती।

हुसैन : ताहम कोशिश करना मेरा फ़र्ज़ है।

हुसैन अपनी सांड़नी पर साद की फ़ौज के सामने खड़े हैं।

हुसैन : ऐ लोग, कूफ़ा और शाम के दिलेर जवानो और सरदारो। मेरी बात सुनो, जल्दी न करो। मुसलमान अपने भाई की गर्दन पर तलवार चलाने में, जितनी देर करे, ऐन सवाब है। मैं उस वक़्त तक खूंरेजी नहीं करना चाहता जब तक तुम्हें इतना न समझा लूं, जितना मुझ पर वाजिब है। मैं खुदा और इंसान दोनों ही के नजदीक़ इस जंग की ज़िम्मेदारी से पाक रहना चाहता हूं, जहां भाई की तलवार भाई की गर्दन पर होगी। तुम्हें मालूम है, मैं यहां क्यों आया ? क्या मैंने इराक़ या शाम पर फ़ौजकसी की ? मेरे अजीज़ दोस्त और अहलेबैत अगर फ़ौज कहे जा सकते तो बेशक मैंने फ़ौजकसी की। सुनो और इंसाफ करो, अगर तुम्हें खुदा का खौफ़ और ईमान का लिहाज है कि मैं यहां तुम्हारे ही सरदारों के बुलाने से आया। मैंने अहद कर लिया था कि मैं दुनिया के झगड़ों से अलग रह कर खुदा की इबादत में अपनी ज़िंदगी के बचे हुए दिन गुज़ारूंगा। मगर तुम्हारी ही फ़रियाद ने मुझे अपने गोशे से निकाला, रसूल की उम्मत की फ़रियाद सुनकर मैं कानों में उंगली न डाल सका। अगर इस हिमायत की सजा क़त्ल है, तो यह सिर हाज़िर है, शौक़ से क़त्ल करो। मैं हज्जाज से पूछता हूं... क्या तुमने मुझे ख़त नहीं लिखे थे ?

हज्जाज : मैंने आपको कोई ख़त नहीं लिखा था।

हुसैन : क़ीस तुम्हें भी ख़त लिखने से इंकार है ?

क़ीस : मैंने कब आपसे फ़रियाद की थी ?

हुसैन : और शिमर, तुमने तो दस्तख़त किया था ?

शिमर : सरासर ग़लत है, झूठ है।

हुसैन : खुदा गवाह है कि मैं अपनी ज़िंदगी में कभी झूठ नहीं बोला, लेकिन आज यह दाग़ भी लगा।

क़ीस : आप यज़ीद की बैयत क्यों नहीं कर लेते कि इस्लाम हमेशा के लिए फ़ितना और फ़साद-पाक हो जाय ?

हुसैन : क्या इसके सिवा मस्लहत की और कोई सूरत नहीं है ?

शिमर : नहीं, और कोई दूसरी सूरत नहीं है।

हुसैन : तो इस शर्त पर सुलह करना मेरे लिए ग़ैरमुमकिन है। खुदा की क़सम मैं ज़लील होकर तुम्हारे सामने सिर न झुकाऊंगा और न ख़ौफ़ मुझे यज़ीद की बैयत क़बूल करने पर मजबूर कर सकता है। अब तुम्हें अख़्तियार है। हम भी जंग के लिए तैयार हैं।

शिमर : पहला तीर चलाने का सवाब मेरा है।

हुसैन पर तीर चलाता है।

किसी तरफ़ से आवाज़ आती है—''जहन्नुम में जाने का फ़ख्र भी पहले तुझी को होगा।''

हुसैन ऊंटनी को अपनी फ़ौज की तरफ़ फेर देते हैं। हुर अपनी फ़ौज से निकलकर आहिस्ता-आहिस्ता हुसैन के पीछे चलते हैं।

शिमर : वल्लाह, हुर तुम्हारा इस तरह आहिस्ता-आहिस्ता अपने तईं तौल-तौल कर चलना मेरे दिल में शुबहा पैदा कर रहा है मैंने तुमको कभी लड़ाई में इस तरह कांपते हुए चलते नहीं देखा।

हुर : अपने को जन्नत और जहन्नुम के लिए तौल रहा हूं, और हक़ यह है कि मैं जन्नत के मुक़ाबले में किसी चीज़ को नहीं समझता, चाहे कोई मार ही क्यों न डाले। (**घोड़े को एक एड़ लगाकर हुसैन के पास पहुंच जाते हैं।**) ऐ फ़र्जंदे-रसूल ! मैं भी आपके हमराह हूं। खुदावंत मुझे आप पर फ़िदा करे, मैं वही हूं, जिसने आपको रास्ते में वापस करने की कोशिश की थी। खुदा की क़सम, मुझे उम्मीद न थी कि ये लोग आपके साथ यह बर्ताव करेंगे, और सुलह की कोई शर्त न क़बूल करेंगे, वरना मैं आपको इधर आने ही न देता, जब तक आप मेरे सिर पर न आते। अब इधर से मायूस होकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर

हुआ हूं कि आपकी मदद करते हुए अपने तईं आपके कदमों पर निसार कर दूं। क्या आपके नज़दीक मेरी तौबा क़बूल होगी?

हुसैन : खुदा से मेरी दुआ है, तुम्हारी तौबा क़बूल करे।

हुर : अब मुझे मालूम हो गया कि मैं यज़ीद से अपनी बैयत वापस लेने में कोई गुनाह नहीं कर रहा हूं।

दोनों चले जाते हैं। तीरों की वर्षा होने लगती है।

नवां दृश्य

समय--रात का वक्त। कूफा का एक गांव। नसीमा ख़जूर के बाग़ में ज़मीन पर बैठी हुई गाती है।

गीत

दबे हुओं को दबाती ऐ ज़मीने-लहद,
यह जानती है कि दम जिस्म नातवां न नहीं।
क़फ़स में जी नहीं लगता है आह, फिर भी मेरा,
यह जानती हूं कि तिनका भी आशियां में नहीं।
उजाड़ दे कोई या फूंक दे उसे बिजली,
यह जानती हूं कि रहना अब आशियां में नहीं।
खुदा अपने दिल से मेरा हाल पूछ लो सारा,
मेरी ज़बां से मज़ा मेरी दास्तां में नहीं।
करेंगे आज से हम ज़ब्त, चाहे जो कुछ हो,
यह क्या कि लबपै फुगां और असर फुगां में नहीं।
ख़याल करके खुदा अपनी किए को रोती हूं,
तबाहियों के सिवा कुछ मेरे मकां में नहीं।

वहब का प्रवेश।

नसीमा : बड़ी देर की। अकेले बैठे-बैठे जी उकता गया। कुछ उन लोगों की ख़बर मिली ?

वहब : हां नसीमा, मिली। तभी तो देर हुई। तुम्हारा ख़याल सही निकला। हज़रत हुसैन के साथ हैं।

नसीमा : क्या हज़रत हुसैन की फ़ौज आ गई ?

वहब : कैसी फ़ौज ? कुल बूढ़े, जवान और बच्चे मिलाकर बहत्तर आदमी हैं। दस-पांच आदमी कूफ़ा से आ गए हैं। कर्बला के बेपनाह मैदान में उनके खेमे पड़े हुए हैं। ज़ालिम ज़ियाद ने बीस-पच्चीस हज़ार आदमियों से उन्हें घेर रखा है। न कहीं जाने देता है, न कोई बात मानता है, यहां तक कि दरिया से पानी भी नहीं लेने देता। पांच हज़ार जवान दरिया की हिफ़ाजत के लिए तैनात कर दिए हैं। शायद कल तक जंग शुरू हो जाए।

नसीमा : मुट्ठी-भर आदमियों के लिए बीस-पच्चीस हज़ार सिपाही ! कितना ग़ज़ब है ! ऐसा गुस्सा आता है, ज़ियाद को पाऊं, तो सिर कुचल दूं।

वहब : बस, उसकी यही ज़िद है कि यज़ीद की बैयत क़बूल करो। हज़रत हुसैन कहते हैं, यह मुझसे न होगा।

नसीमा : हज़रत हुसैन नबी के बेटे हैं, क़ौल पर जान देते हैं। मैं होती तो ज़ियाद को ऐसा जुल देती कि वह भी याद करता। कहती—हां, मुझे बैयत क़बूल है। वहां से आकर बड़ी फ़ौज जमा करती, और यज़ीद के दांत खट्टे कर देती। रसूल पाक को शरआ में ऐसी आफ़तों के मौक़े के लिए कुछ रिआयत रखनी चाहिए थी। तो हज़रत की फ़ौज में बड़ी घबराहट फैली होगी।

वहब : मुतलक़ नहीं, नसीमा ! सब लोग शहादत के शौक़ में मतवाले हो रहे हैं। सबसे ज़्यादा तकलीफ़ पानी की है। ज़रा-ज़रा-से बच्चे प्यासे तड़प रहे हैं।

नसीमा : आह ज़ालिम ! तुझसे खुदा समझे।

वहब : नसीमा, मुझे रुख़सत करो। अब दिल नहीं मानता। मैं भी हज़रत हुसैन के क़दमों पर निसार होने जाता हूं। आओ, गले मिल लें। शायद फिर मुलाक़ात न हो।

नसीमा : हाय, वहब ! क्या मुझे छोड़ जाओगे ? मैं भी चलूंगी।

वहब : नहीं, नसीमा, उस लू के झोंकों में यह फूल मुरझा जाएगा। (**नसीमा को गले लगाकर**) फिर दिल क़मज़ोर हुआ जाता है। सारी राह कम्बख्त को समझाता आया था। नसीमा, तुम मुझे दुत्कार दो। खुदा तूने मुहब्बत को [illegible] क पैदा किया।

नसीमा : (**रोकर**) वहब, यह फूल किस काम आएगा ? कौन इसको सूंघेगा, कौन इसे दिल से लगाएगा ? मैं भी हज़रत जैनब के

क़दमों पर निसार हूंगी।

वहब : वह प्यास की शिद्दत, वह गरमी की तकलीफ़, वह हंगामे, कैसे ले जाऊं !

नसीभा : जिन तकलीफ़ों को सैदानियां झेल सकती हैं, क्या मैं न झेल सकूंगी ? हीले मत करो वहब, मैं तुम्हें तनहा न जाने दूंगी।

वहब : नसीमा, तुम्हें निगाहों से देखते हुए मेरे क़दम मैदान की तरफ़ न उठेंगे।

नसीमा : (**वहब के कंधे पर सिर रखकर**) प्यारे ! क्यों किसी ऐसी जगह नहीं चलते, जहां एक गोशे में बैठकर इस ज़िंदगी का लुत्फ़ उठाएं। तुम चले जाओगे, खुदा न ख़्वास्ता दुश्मनों को कुछ हो गया, तो मेरी ज़िंदगी रोते ही गुज़रेगी। क्या हमारी ज़िंदगी रोने ही के लिए है ? मेरा दिल अभी दुनिया की लज़्ज़तों का भूखा है। जन्नत की खुशियों की उम्मीद पर इस ज़िंदगी को कुर्बान नहीं करते बनता। हज़रत हुसैन की फ़तह तो होने से रही। पच्चीस हज़ार के सामने जैसे सौ, वैसे ही एक सौ एक।

वहब : आह, नसीमा ! तुमने दिल के सबसे नाजुक हिस्से पर निशाना मारा। मेरी भी यही दिली तमन्ना है कि हम किसी आफ़ियत के गोशे में बैठकर ज़िंदगी की बहार लूटें। पर ज़ालिम की यह बेदर्दी देखकर खून में जोश आ जाता है, और दिल बेअख्तियार यही चाहता है कि चलकर हज़रत हुसैन की हिमायत में शहीद हो जाऊं। जो आदमी अपनी आंखों से जुल्म होते देखकर ज़ालिम का हाथ नहीं रोकता, वह भी खुदा की निगाहों में ज़ालिम का शरीक है।

नसीमा : मैं अपनी आंखें तुम पर सदके करूं, मुझे अज़ाब व सवाब के मुख़मसों में मत डालो। सोचो, क्या यह सितम नहीं है कि हमारी ज़िंदगी की बहार इतनी जल्द रुख़सत हो जाए ? अभी मेरे उरूसी कपड़े भी नहीं मैले हुए, हिना का रंग भी नहीं फीका पड़ा, तुम्हें मुझ पर ज़रा भी तरस नहीं आता ? क्या ये आंखें रोने के लिए बनाई गई हैं ? क्या ये हाथ दिल को दबाने के लिए बनाये गए हैं ? यही मेरी ज़िंदगी का अंजाम है ?

वहब के गले में हाथ डाल देती है।

वहब : (**स्वगत**) खुदा संभालियो, अब तेरा ही भरोसा है। यह आशिक़ की दिल बहलाने वाली इल्तजा नहीं, माशूक़ का ईमान ग़ारत करने वाला तक़ाज़ा है।

साहसराय की सेना सामने से चली आ रही है।

नसीमा : अरे ! यह फ़ौज कहां से आ रही है ? सिपाहियों का ऐसा अनोखा लिबास तो कहीं नहीं देखा। इनके माथों पर ये लाल-लाल बेल-बूटे कैसे बने हैं ! क़सम है इन आंखों की, ऐसे सजीले, ऐसे हसीन जवान आज तक मेरी नज़र से नहीं गुज़रे।

वहब : मैं जाकर पूछता हूं, कौन लोग हैं। (**आगे बढ़कर एक सिपाही से पूछता है**) ऐ जवानो ! तुम फ़रिश्ते हो या इंसान ? अरब में तो हमने ऐसे आदमी नहीं देखे। तुम्हारे चेहरों से जलाल बरस रहा है। इधर कहां जा रहे हो ?

सिपाही : तुमने सुल्तान साहसराय का नाम सुना है ? हम उन्हीं के सेवक हैं, और हज़रत हुसैन की सहायता करने जा रहे हैं, जो इस वक्त कर्बला के मैदान में घिरे हुए हैं। तुमने यज़ीद की बैयत ली है या नहीं ?

वहब : मैं उस ज़ालिम की बैयत क्यों क़बूल करने लगा।

सिपाही : तो आश्चर्य है कि हज़रत हुसैन की फ़ौज में क्यों नहीं हो। तुम सूरत से मनचले जवान मालूम होते हो, फिर यह कायरता कैसी ?

वहब : (**शरमाते हुए**) हम वहीं जा रहे हैं।

सिपाही : तो फिर आओ, साथ चलें।

वहब : मेरे साथ मस्तूरात भी हैं। तुम लोग बढ़ो, हम भी आते हैं।

फ़ौज चली जाती है।

नसीमा : यह साहसराय कौन है ?

वहब : यह तो नहीं कह सकता, पर इतना कह सकता हूं कि ऐसा हक़परस्त, दिलेर, इंसाफ़ पर निसार होने वाला आदमी दुनिया में न होगा। बेकसों की हिमायत में कभी उसे पीछे क़दम हटते नहीं देखा। मालूम नहीं, किस मज़हब का आदमी है, पर जिस मज़हब और जिस क़ौम में ऐसी पाक रूहें पैदा हों, वह दुनिया के लिए बरकत है।

नसीमा : इनके भी बाल-बच्चे होंगे।

वहब : बहुत बड़ा ख़ानदान है। सात तो भाई ही हैं।

नसीमा : और मुसलमान न होते हुए भी ये लोग हजरत हुसैन की इमदाद के लिए जा रहे हैं ?

वहब : हां, और क्या।

नसीमा : तो हमारे लिए कितनी शर्म की बात है कि हम यो पहलूतिही करें।

वहब . प्यारी नसीमा, चले चलेंगे। दो-चार दिन तो जिंदगी की बहार लूट लें।

नसीमा : नहीं यहब, एक लमहे की भी देर मत करो। खुदा हम जन्नत में फिर मिलाएगा, और तब हम अब्द तक जिन्दगी की बहार लूटेंगे।

वहब : नसीमा, आज और सब्र करो।

नसीमा : एक लमहा भी नहीं। वहब, मुझे अब इम्तहान में न डालो। सांड़नी लाओ। फ़ौरन चलो।

पांचवां अंक

पहला दृश्य

समय—नौ बजे दिन। दोनों फ़ौजें लड़ाई के लिए तैयार हैं।

हुर : या हज़रत, मुझे मैदान में जाने की इजाज़त मिले। अब शहादत का शौक़ रोके नहीं रुकता।

हुसैन : वाह, अभी आए हो और अभी चले जाओगे। यह मेहमाननवाज़ी का दस्तूर नहीं कि हम तुम्हें आते-ही-आते रुख़सत कर दें।

हुर : या फ़र्जन्दे-रसूल, मैं आपका मेहमान नहीं, गुलाम हूं। आपके क़दमों पर निसार होने के लिए आया हूं।

हुसैन : **(हुर के गले मिलकर आंखों में आंसू भरे हुए)** अगर तुम्हारी इसी में खुशी है तो जाओ खुदा को सौंपा—

दुनिया के शहीदों में तेरा नाम हो भाई,
उक़बा में तुझे राहतोआराम हो भाई।

हुर मैदान की तरफ़ चलते हैं, हुसैन खेमे के दरवाज़े तक उन्हें पहुंचाने आते हैं। खेमे से निकलते हुए हुर हुसैन के कदमों को बोसा देते हैं, और चले जाते हैं।

हुर **(मैदान में जाकर)**

गुलाम हज़रते शब्बीर रन में आता है,
वही जो दी का है बंदा, वह मेरा आक़ा है।
वह आए ठोंक के ख़म, जिसकी मौत आई है;
उसी का पीने को खूं मेरी तेग आई है।

सफ़वान उधर से झूमता हुआ आता है।

हुर सफ़वान कितनी शर्म की बात है कि तुम फ़र्जदे-रसूल से ज़ंग

करने आए हो ?

सफ़वान : हम सिपाहियों को माल, दौलत, जागीर और रुतबा चाहिए, हमें दीन और आक़बत से क्या काम ? संभल जाओ।

दोनों पहलवानों में चोटें चलने लगती हैं।

अब्बास : वह मारा। सफ़वान का सीना टूट गया, ज़मीन पर तड़पने लगा।

हबीब : सफ़वान के तीनों भाई दौड़े चले आते हैं।

अब्बास : वाह, मेरे शेर ! एक तलवार से लिया, दूसरा भी गिरा, तीसरा भागा जाता है।

हबीब : या खुदा, ख़ैर कर, हुर का घोड़ा गिर गया।

हुसैन : फ़ौरन एक घोड़ा भेजो।

एक आदमी हुर के पास घोड़ा लेकर जाता है।

अब्बास : यह पीरा नासाली और यह दिलेरी ! ऐसा बहादुर आज तक नज़र से नहीं गुज़रा। तलवार बिलजी की तरह कौंध रही है।

हुसैन : देखो, दुश्मन का लश्कर कैसा पीछे हटा जाता है। मरने वालों के सामने खड़ा होना आसान नहीं है। दिलेरी की इंतहा है।

अब्बास : अफ़सोस, अब हाथ नहीं उठते। तीरों से सारा बदन छलनी हो गया।

शिमर : तीरों की बारिश करो, मार लो। हैफ़ है तुम पर कि एक आदमी से इतने ख़ायाफ़ हो। वह गिरा, काट लो सिर और हुसैन की फ़ौज में फेंक दो।

कई आदमी हुर के सिर को काटने को चलते हैं कि हुसैन मैदान की तरफ़ दौड़ते हैं।

एक आदमी : वह हुसैन दौड़े चले आते हैं। भागो, नहीं तो जान न बचेगी।

हुसैन : **(हुर की लाश से लिपटकर)**

टुकड़े हैं बदन, जख्म बहुत खाए हैं भाई,
हो होश में आ लाश पै हम आए हैं भाई।

हुर आंखें खोलकर देखते हैं, और अपना सिर उनकी गोद में रख देते हैं।

हुर : या हज़रत, आपके क़दमों पर निसार हो गया, ज़िंदगी ठिकाने लगा।

तक़िया तेरे जानू का मयस्सर हुआ आक़ा,
ज़र्रा था यह अब महरे-मुनौवर हुआ आक़ा।

हुसैन : हाय ! मेरा जांबाज़ रफ़ीक़ दुनिया से रुख़सत हो गया। यह वह दिलावर था, जिसने हक़ पर अपने रुतबा और दौलत को निसार कर दिया, जिसने दीन के लिए दुनिया को लात मार दी। ये हक़ पर जान देने वाले हैं, जिन्होंने इस्लाम के नाम को रोशन किया है, और हमेशा रोशन रखेंगे। जा मुहम्मद के प्यारे, जन्नत तेरे लिए हाथ फैलाए हुए है। जा, और हयात अब्दी के लुत्फ़ उठा। मेरे नाना से कह देना कि हुसैन भी जल्द ही तुम्हारी ख़िदमत में हाज़िर होने वाला है, और तुम्हारे सारे कुनबे को साथ लिए। क़ाबिल ताज़ीम हैं वे माताएं, जो ऐसे बेटे पैदा करती हैं।

दूसरा दृश्य

स्थान—समर-भूमि। साद की तरफ से दो पहलवान आते हैं—यसार और सालिम।

यसार : **(ललकार कर)** कौन निकलता है, हुर का साथ देने के लिए। चला आए, जिसे मौत का मज़ा चखना हो। हम वह हैं, जिनकी तलवार से क़ज़ा की रूह भी क़ज़ा होती है।

अब्दुल्लाह कलबी हुसैन के लश्कर से निकलते हैं।

यसार : तू कौन है ?

अब्दुल्लाह : मैं अब्दुल्लाह बिन अमीर कलवी हूं, जिसकी तलवार हमेशा बेदीनों के ख़ून की प्यासी रहती है।

यसार : तेरे मुक़ाबले तलवार उठाते हमें शर्म आती है। जाकर हबीब या ज़हीर को भेज।

अब्दुल्लाह : तू उन सरदारने-फ़ौज से क्या लड़ेगा, जिनकी ज़िंदगी ज़ियाद की गुलामी में गुज़री। तुझे उन रईसों को ललकारते हुए शर्म भी नहीं आती। तुझ जैसों के लिए मैं ही काफ़ी हूं।

यसार तलवार लेकर झपटता है। अब्दुल्लाह एक ही वार में उसका काम तमाम कर देते हैं। तब सालिम उन पर टूट पड़ता है। अब्दुल्लाह की पांचों उंगलियां कट जाती हैं, तलवार ज़मीन पर गिर पड़ती है। वह बाएं हाथ में नेजा ले लेते हैं, और सालिम के सीने में नेजा चुभा देते

हैं। वह भी गिर पड़ता है। ज़ियाद की फ़ौज से निकलकर लोग अब्दुल्लाह को घेर लेते हैं। इधर से क़मर लकड़ी लेकर दौड़ती है।

कमर : मेरी जान तुम पर फ़िदा हो, रसूल के नवासे के लिए लड़ते-लड़ते जान दे दो। मैं भी तुम्हारी मदद को आई।

अब्दुल्लाह : नहीं, नहीं, क़मर! मेरे लिए तुम्हारी दुआ काफ़ी है, इधर मत आओ।

कमर : मैं इन शैतानों को लकड़ी से मार कर गिरा दूंगी। एक के लिए दो भेजे, जब दोनों जहन्नुम पहुंच गए, तो सारी फ़ौज निकल पड़ी। यह कौन-सी जंग है ?

अब्दुल्लाह : मैं एक हाथ से इन सबको मार गिराऊंगा। तुम खेमे में जाकर बैठो।

क़मर : मैं जब तक ज़िंदा हूं, तुम्हारा साथ न छोडूंगी, तुम्हारे साथ ही रसूल पाक की ख़िदमत में हाज़िर हूंगी।

हुसैन : **(क़मर से)** ऐ नेक ख़ातून, तुझ पर अल्लाहताला रहम करे। तुम वहां जाओगी, तो यहां मस्तूरात की ख़बर कौन लेगा? औरतों को ज़िहाद करना मना है। लौट जाओ, और देखो तुम्हारा जांबाज शौहर एक हाथ से कितने आदमियों का मुक़ाबला कर रहा है। आफ़री है तुम पर मेरे शेर ! तुमने अपने रसूल की जो ख़िदमत की है,उसे हम कभी न भूलेंगे। खुदा तुम्हें उसको सज़ा देगा। आह ! ज़ालिमों ने तीर मारकर ग़रीब को गिरा दिया ! खुदा उसे जन्नत दे।

क़मर : या हज़रत, इसका ग़म नहीं। वह आप पर निसार हो गए, इससे बेहतर और कौन-सी मौत हो सकती थी। काश ! मैं भी उनके साथ चली जाती। मेरे जांबाज़ ! सच्चे दिलवर, जा, और जन्नत में आराम कर। तू वह था, जिसने कभी सायल को नहीं फेरा, जिसकी नीयत कभी ख़राब और निगाह कभी बुरी नहीं हुई। जा, और जन्नत में आराम कर।

हुसैन : क़मर, सब्र करो। इसके सिवा कोई चारा नहीं है।

क़मर : मुझे उनके मरने का ग़म नहीं है। मैं तो खुश हूं कि उन्होंने हक़ पर जान दी। इस वक़्त अगर मेरे सौ बेटे होते, तो मैं इसी तरह उन्हें भी आपके क़दमों पर निसार देती। काश, वहब इतना जनपरस्त न होता ..

वहब का प्रवेश।

वहब : अस्सलामअलेक या हज़रत हुसैन !

क़मर : (**वहब को गले लगाकर**) ज़रा देर पहले ही क्यों न आ गए बेटा कि अपने बाप का आख़िरी दीदार कर लेते ! नसीमा कहां है ?

वहब : यहीं खेमों के पीछे खड़ी है।

क़मर : मैं अभी तुम्हारा ही ज़िक्र कर रही थी। क्यों बेटा, अपने बाप का नाम रोशन न करोगे ? मेरा तुम्हारे ऊपर बड़ा हक़ है। तुम मेरे जिगर का ख़ून पीकर पले हो। मेरा दूध हलाल न करोगे ? मेरी तमन्ना है कि हुसैन पर अपनी जान निसार करो, ताकि दुनिया में क़मर का नाम क़मर की तरह चमके, जिसका शौहर और बेटा, दोनों ही हक़ पर शहीद हुए।

वहब : अम्मां जान, मेरी भी दिली तमन्ना यह थी और है। मैं अपने बाप के नाम को दाग़ नहीं लगाना चाहता, मगर नसीमा को क्या करूं ? उसकी मुसीबतों का ख़याल हिम्मत को पस्त कर देता है। जाता हूं, अगर उसने इजाज़त दे दी तो मेरे लिए उससे बढ़कर खुशी नहीं हो सकती।

क़मर : बेटा, तुम उसकी आदत से वाक़िफ़ होकर फिर उसी से पूछने जाते हो। इसके मानी इसके सिवा और कुछ नहीं है कि तुम खुद मैदान में जाते हुए डरते हो।

वहब नसीमा के पास जाता है।

नसीमा : काश, ज़रा देर क़ब्ल आ जाते, तो अब्बाजान की आख़िरी दुआएं मिल जातीं।

वहब : हमारी बदनसीबी !

नसीमा : मैं जानती हूं, तुम हमेशा के लिए ख़ैरबाद कहने आए हो। जाओ प्यारे, और एक सपूत बेटे की तरह अपने वालिद का नाम रोशन करो। काश औरतों पर जिहाद हराम न होता, तो मैं भी तुम्हारे ही साथ अपने को हक़ की हिमायत में निसार कर देती। जब से मैने फ़र्ज़ंदे-रसूल की पाकसूरत देखी है, मुझे ऐसा मालूम हो रहा है कि मेरा दिल रोशन हो गया है, और उस रोशनी में ज़िंदगी की तमन्नाएं और ख्वाहिशें नज़र से मिटती जाती हैं। जाओ प्यारे, जाओ, और हक़ पर क़ुर्बान हो जाओ।

नसीमा जब तक जिएगी, तुम्हारी मज़ार पर फ़ातिहा और दरूद पढ़ेगी। जाओ, जन्नत में मुझे भूल न जाना। मैंने हवस के दाम में फंसकर तुम्हें फ़र्ज के रास्ते से हटा दिया था। रसूल पाक से कहना, मेरा गुनाह मुआफ़ करें। जाओ, इन आंसुओं का ख़याल न करो, वरना ये आंसू तुम्हारे जोश को बुझा देंगे। मैं अभी बहुत दिन तक रोऊंगी, तुम इसका ग़म न करना। जाओ, तुम्हें ख़ुदा को सौंपा....आह ! दिल फटा जाता है। कैसे सब्र करूं ?

वहब आंसू पोंछता हुआ बाहर जाता है।

क़मर : (**अंदर आकर**) बेटी, तुझे गले से लगा लूं, और तुझ पर अपनी जान फ़िदा, तूने ख़ानदान की आबरू रख ली।

नसीमा : अम्मांजान, रसूल पाक ने अगर कोइ बेइंसाफी की, तो वह यही है कि औरतों पर जिहाद हराम कर दिया, वरना इस वक़्त मैं वहब के पहलू में होती। देखिए, दुश्मन उन पर चारों तरफ़ से कितनी बेदर्दी से नेज़े और तीर फेंक रहे हैं। किसी की हिम्मत नहीं है कि उनके सामने ख़म ठोंककर आए। आह ! देखिए, उनके हाथ कितनी तेज़ी से चल रहे हैं। जिस पर उनका एक हाथ पड़ जाता है, वह फिर नहीं उठता। दुश्मन भागे जाते हैं। हा बुजदिलो, नामर्दो ! वह इधर चले आ रहे हैं, बदन खून से तर है, सिर पर भी ज़ख्म लगे हैं।

वहब आकर खेमे के सामने खड़ा हो जाता है।

वहब : अम्मांजान, मुझसे राज़ी हुईं ?

क़मर : बेटा, तुझ पर हज़ार जान से निसार हूं। तुमने बाप का नाम रोशन कर दिया, लेकिन मैं चाहती हूं कि जब तक तेरे हाथों में ताक़त है तब तक दुश्मनों को आराम न लेने दे !

वहब : (**स्वगत**) आह ! हक़ पर जान देना भी उतना आसान नहीं है, जितना लोग ख़याल करते हैं। (**प्रकट**) अम्मां, यही मेरा भी इरादा है, लेकिन नसीमा के आंसुओं की याद मुझे खींच लाई। (**क़मर चली जाती है।**) नसीमा, तुम्हें आख़िरी बार देखने की तमन्ना मैदान से खींच लाई। सनम का पुजारी सनम ही पर क़ुर्बान हो सकता है, दीन और इमान, हक़ और इंसाफ़, ये सब उसकी नज़रों में खिलौने की तरह लगते हैं। मुहब्बत दुनिया की सबसे मज़बूत बेड़ी

है, सबसे सख्त जंजीर। (**चौंककर**) कोई पहलवान मैदान में आकर ललकार रहा है। हाय ! लानत हो उन पर, जो हक़ को पामाल करके हज़ारों को नामुराद मरने पर मजबूर करते हैं। नसीमा, हमेशा के लिए रुख़सत ? मेरी तरफ़ एक बार मुहब्बत की निगाहों से देख लो, उनमें मुहब्बत का ऐसा जाम हो कि उसका नशा मेरे सिर से क़यामत तक न उतरे।

नसीमा : मेरी जान आह ! दिल निकला जाता है....

वहब मैदान की तरफ़ चला जाता है।

नसीमा : खुदा ! काश, मुझे मौत आ जाती कि यह दिलखराश नज़ारा आंखों से न दीख पड़ता। मेरा जवान दिलेर जांबाज शौह‹ मौत के मुंह में जा रहा है, और मैं बैठी देख रही हूं। ज़मीन, तू क्यों नहीं फट जाती कि मैं उसमें समा जाऊं, बिजली आसमान से गिरकर क्यों मेरा खात्मा नहीं कर देती ! वह देव उन पर तलवार लिए झपटा। या खुदा, मुझ नामुराद पर रहम कर। दूर हो ज़ालिम, सीधा जहन्नुम को चला जा। अब कोई आगे नहीं-आता है। वह मलऊन शिमर अपनी जमैयत लिये उनकी तरफ़ दौड़ा आता है। हाय ! ज़ालिमों ने घेर लिया। खुदा, तू यह बेइंसाफ़ी देख रहा है, और इन मूज़ियों पर अपना क़हर नहीं नाज़िल करता। एक के लिए एक फ़ौज भेज देना कौन-सा आईने-जंग है ! हाय ! हाय खुदा, गज़ब हो गया ! अब नहीं देखा जाता !

छाती पीटकर रोने लगती है। शिमर वहब का सिर काटकर फेंक देता है, क़मर दौड़कर सिर को गोद में उठा लेती है, और आंखों से लगाती है।

क़मर : मेरे सपूत बेटे, मुबारक है यह घड़ी कि मैं तुझे अपनी आंखों से हक़ पर शहीद होते देख रही हूं। आज तू मेरे क़र्ज से अदा हो गया, आज मेरी मुराद पूरी हुई, आज मेरी ज़िंदगी सफल हो गई, मैं अपनी सारी तकलीफ़ का सिला पा गई। खुदा तुझे शहीदों के पहलू में जगह दे। नसीमा, मेरी जान, आज तूने सच्चा सोहाग पाया है, जो क़यामत तक तुझे सुहागिन बनाए रखेगा। अब हूरें तेरे तलुओं-तले आंखें बिछाएंगी, और फ़रिश्ते तेरे क़दमों की ख़ाक़ का सुरमा बनाएंगे।

वहब का सिर नसीमा की गोद में रख देती है, नसीमा सिर को गोद में रखे हुए बैन करके रोती है।

काजल बना-बनाके तेरी ख़ाके-दर को मैं
रोशन करूंगी अपनी सवादे-नज़र को मैं।
आंसू भी खुश्क हो गए, अल्लाह रे सोज़े-ग़म,
क्योंकर बुझाऊं आतिशे-दाग़े-जिगर को मैं।
तेरे सिवा है कौन, जो बेकस की ले ख़बर,
आती न तेरे दर पर, तो जाती किधर को मैं।
तलवार कह रही है ज़वानाने-क़ौम से-
मुद्दत से ढूंढती हूं तुम्हारी क़मर को मैं।
बाज़ आई मैं दुआ ही से, यारब कि कब तलक,
करती फिरूं तलाश जहां में असर को मैं।
गर तेरी ख़ाके-दर से न मिलता यह इफ़्तख़ार
करती न यों बुलंद कभी अपने सिर को मैं।

हाय प्यारे ! तुम कितने बेवफ़ा हो, मुझे अकेले छोड़कर चले जाते हो ! लो, मैं भी आती हूं। इतनी जल्दी नहीं, जरा ठहरो।

साहसराय का प्रवेश।

साहसराय सती, तुम्हें नमस्कार करता हूं।

नसीमा साहब, आप खूब आए। आपका शुक्रिया, तहेदिल से शुक्रिया। आपने ही मुझे आज इस दरजे पर पहुंचाया। आपके वतन में औरतें अपने शौहरों के बाद ज़िंदा नहीं रहतीं। वे बड़ी खुशनसीब होती हैं।

साहसराय सती, हम लोगों को आशीर्वाद दो।

नसीमा (**हंसकर**) यह दरजा ! अल्लाह रे मैं, यह वहब की बदौलत, उसकी शहादत के तुफ़ैल। खुदा, तुझसे मेरी दुआ है, मेरी क़ौम में कभी शहीदों की कमी न रहे, कभी वह दिन न आए कि हक़ को जांबाज़ों की ज़रूरत हो, और उस पर सिर कटाने वाले न मिलें। इस्लाम मेरा प्यारा इस्लाम शहीदों से सदा मालामाल रहे !

अपने दामन से एक सलाई निकालकर वहब के ख़ून में डुबाती है।

क्यों साहसराय, तुम्हारे यहां सती के जिस्म से आग निकलती है, और वह उसमें जल जाती है। क्या बिला आग के जान नहीं

निकलती ?

साइसराय : नसीमा, तू देवी है। ऐसी देवियों के दर्शन दुर्लभ होते हैं। आकाश से देवता तुझ पर पुष्प-वर्षा कर रहे हैं।

नसीमा आंखों में सलाई फेर लेती है, और एक आह के साथ उसकी जान निकल जाती है।

तीसरा दृश्य

समय– दोपहर। हज़रत हुसैन अब्बास के साथ खेमे के दरवाज़े पर खड़े मैदाने-जंग की तरफ़ ताक रहे हैं।

हुसैन : कैसे-कैसे जांबाज़ दोस्त रुख़सत हो गए और होते जा रहे हैं। प्यास से कलेजे मुंह को आ रहे हैं, और ये ज़ालिम नमाज़ तक की मुहलत नहीं देते। आह ! ज़हीर का-सा दीनदार उठ गया, मुसलिम बिन ऊसजा इस आलमेज़ईफ़ी में भी कितने जोश से लड़े। किस-किसका नाम गिनाऊं ?

अब्बास : या हज़रत, मुझे अंदेशा हो रहा है कि शिमर कोई नया सितम ढाने की तैयारियां कर रहा है। यह देखिए, यह सिपाहियों की एक बड़ी जमैयत लिये इधर चला आता है।

हबीब : (**ज़ोर से**) शिमर ! ख़बरदार ! अगर इधर एक क़दम भी बढ़ाया तो तेरी लाश पर कुत्ते रोएंगे। तुझे शर्म नहीं आती ज़ालिम कि अहलेबैत के खेमे पर हमला करना चाहता है।

शिमर : हम इस हमले से जंग का फ़ैसला कर देना चाहते हैं। जवानो, तीर बरसाओ।

हुसैन : अफ़सोस, घोड़े मरे जा रहे हैं। घुटने टेककर बैठ जाओ, और तीरों का जवाब दो। खुदा ही हमारा बली और हाफ़िज़ है।

शिमर : बढ़ो-बढ़ो, एक आन में फ़ैसला हुआ जाता है।

सिपाही : देखते नहीं हो, हमारी सफ़ें ख़ाली होती जाती हैं ! यह तीर है या खुदा का ग़ज़ब। हम आदमियों से लड़ने आए हैं, देवों से नहीं।

शिमर : लकड़ियां जलाओ। फ़ौरन इन खेमों पर आग के अंगारे फेंको जलते हुए कुंदे फेंको, जलाकर ख़ाक स्याह कर दो।

आग की बारिश होने लगती है। औरतें खेमे से चिल्लाती हुई बाहर निकल आती हैं।

जैनब : तुफ़ है तुझ पर ज़ालिम, मर्दों से नहीं, औरतों पर अपनी दिलेरी दिखाता है।

हुसैन : साद ! यह क्या सितम है ? तुम लोगों का दुश्मन मैं हूं। मुझसे लड़ो। खेमों में औरतों और बच्चों के सिवा कोई मर्द नहीं है। वे ग़रीब निकलकर भाग न सकीं, तो हम उधर चले जायेंगे, तुमसे लड़ न सकेंगे। अफ़सोस है कि इतनी जमैयत के होते हुए भी तुम वह विदअतें कर रहे हो।

शिमर : फेंको अंगारे। मुझे दोज़ख़ में जलना नसीब हो, अगर मैं इन सब खेमों को जला न डालूं।

शीस : शिमर, यह तुम्हारी हरक़त आईने-जंग के ख़िलाफ़ है। हिसाब के दिन तुम्हीं इसके ज़िम्मेदार होगे।

क़ीस : रोको अपने आदमियों को।

शिमर : मैं अपने फ़ैल का मुख्तार हूं। आग बरसाओ, लगा दो आग।

क़ीस : साद, खुदा को क्या मुंह दिखाओगे ?

हबीब : दोस्त, टूट पड़ो शिमर पर, बाज़ की तरह टूट पड़ो। नामूसे-हुसैन पर निसार हो जाओ। एकबारगी नेज़ों का वार करो।

हबीब और उसके साथ दस आदमी नेज़े लेकर शिमर पर टूट पड़ते हैं। शिमर भागता है, और उसकी फ़ौज भी भाग जाती है।

हुसैन : हबीब, तुमने आज अहलेबैत की आबरू रख ली। खुदा तुम्हें इसकी जज़ा दे।

हबीब : या मौला, दुश्मन दो-चार लमहों के लिए हट गया है, नमाज़ का वक्त आ गया है, हमारी तमन्ना है कि आपके साथ आख़िरी नमाज़ पढ़ लें। शायद फिर यह मौक़ा न मिले।

हुसैन : खुदा तुम पर रहम करे। अजान दो। ऐ साद, क्या तू इस्लाम की शरियत को भी भूल गया ? क्या इतनी मुहलत न देगा कि नमाज़ पढ़कर जंग की जाय ?

शिमर : खुदा पाक की क़सम, हरगिज़ नहीं। तुम बेनमाज़ क़त्ल किए जाओगे। शरियत बाग़ियों के लिए नहीं है।

हबीब : या मौला, आप नमाज़ अदा फ़र्माएं। इस मूली को बकने दें। इसकी इतनी मजाल नहीं है कि नमाज़ में मुख़िल हो।

लोग नमाज़ पढ़ने लगते हैं। साहसराय और उनके सातों

भाई हुसैन की पुश्त पर खड़े शिमर के तीरों से उनको बचाते रहते हैं। नमाज़ ख़त्म हो जाती है।

हुसैन : दोस्तो ! मेरे प्यारे ग़मगुसारो ! यह नमाज़ इस्लाम की तारीख़ में यादगार रहेगी। अगर खुदा के इन दिलेर बंदों ने, हमारे पुश्त पर खड़े होकर, हमें दुश्मन के तीरों से न बचाया होता, तो हमारी नमाज़ हरगिज न पूरी होती। ऐ हक़परस्तो ! हम तुम्हें सलाम करते हैं। अगर्चे तुम मोमिन नहीं हो, लेकिन जिस मजहब के पैरो ऐसे हक़परवर, ऐसे इंसाफ़ पर जान देने वाले, ज़िंदगी को इस तरह नाचीज़ समझने वाले, मज़लूमों की हिमायत में सिर कटाने वाले हों, वह सच्चा और मिनजानिब खुदा है। वह मज़हब दुनिया में हमेशा क़ायम रहे, और नूरे-इस्लाम के साथ उसकी रोशनी भी चारों तरफ़ फैले।

साहसराय : भगवान् ! आपने हमारे प्रति जो शुभेच्छाएं प्रकट की हैं, उनके लिए हम आपके कृतज्ञ हैं। मेरी भी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि जब कभी इस्लाम को हमारे रक्त की आवश्यकता हो, तो हमारी जाति में अपना वक्ष खोल देने वालों की कमी न रहे। अब मुझे आज्ञा हो कि चलकर अपने प्रायश्चित की क्रिया पूरी करूं।

हुसैन : नहीं ! मेरे दोस्तो, जब तक हम बाक़ी हैं, अपने मेहमानों को मैदान में न जाने देंगे।

साहसराय : हज़रत, हम आपके मेहमान नहीं, सेवक हैं। सत्य और न्याय पर मरना ही हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य है। यह हमारा कर्तव्य मात्र है, किसी पर एहसान नहीं।

हुसैन : आह ! किस मुंह से कहूं कि जाइए। खुदा करे इस मैदान में हमारे और आपके ख़ून से जिस इमारत की बुनियाद पड़ी है, वह ज़माने की नज़र से हमेशा महफ़ूज रहे, वह कभी वीरान न हो, उसमें से हमेशा नग़मे की सदाएं बुलन्द हों, और आफताब की किरणें हमेशा उस पर चमकती रहें।

सातों भाई गाते हुए मैदान में जाते हैं—

जय भारत, जय भारत, जय मम प्राणपते !
भाल विशाल चमत्कृत सित हिमगिरि राजे,
परसत गाज प्रभाकर हेम-प्रभा भ्राजै।
जय भारत........

ऋषि-मुनि पुण्य तपोनिधि तेज-पुंजधारी
सब विधि अधम अविद्या भव-भय तमहारी।
जय भारत........
जय जय देव चतुर्मुख अखिल भेद ज्ञाता,
सुविमल शांति सुधा-निधि मुद-मंगलदाता।
जय भारत........
जय-जय विश्व-विदांवर जय विश्रुत नामी,
जय जय धर्म-धुरंधर जय श्रुति पथगामी।
जय भारत........
अजित अजेय अलौकिक अतुलित बलधामा,
पूरन प्रेम-पयोनिधि शुभ गुन-गन-ग्रामा।
जय भारत.......
हे प्रिय पूज्य परम मन नमो-नमो देवा,
विनयवत अधम-पापि जन ग्रहन करहु सेवा
जय भारत.......

अब्बास : ग़ज़ब के जांबाज़ हैं। अब मुझ पर यह हक़ीक़त खुली कि इस्लाम के दायरे के बाहर भी इस्लाम है। ये सचमुच मुसलमान हैं, और रसूल पाक ऐसे आदमियों की शफ़ाअत न करें, मुमकिन नहीं।

हुसैन : कितनी दिलेरी से लड़ रहे हैं !

अब्बास : फ़ौज में बेख़ौफ़ घुसे जाते हैं। ऐसी बेजिगरी से किसी को मौत के मुंह में जाते नहीं देखा।

अली अकबर : ऐसे पांच सौ आदमी भी हमारे साथ होते, तो मैदान हमारा था।

हुसैन : आह ! वह साहसराय घोड़े से गिरे। मक्कार शिमर ने पीछे से वार किया। इस्लाम को बदनाम करने वाला, मूज़ी !

अब्बास : वह दूसरा भाई भी गिरा।

हुसैन : इनके रिवाज़ के मुताबिक़ लाशों को जलाना होगा। चिता तैयार कराओ।

अली अकबर : तीसरा भाई भी मारा गया।

अब्बास : ज़ालिमों ने चारों तरफ़ से घेर लिया, मगर किस ग़ज़ब के तीरंदाज़ हैं। तीर से शोला-सा निकलता है।

अली अकबर : अल्लाह, उनके तीरों से आग निकल रही है। कोहराम मच गया, सारी जमैयत परेशान होकर भागी जा रही है।

अब्बास : चारों शूरमा दुश्मन के खेमों की तरफ़ जा रहे हैं। फ़ौज काई की तरह फटती जाती है। वह खेमों से शोला निकलने लगे।

अली अकबर : या खुदा, चारों देखते-देखते ग़ायब हो गए।

हुसैन : शायद उनके सामने कोई खंदक खोदी गई है।

अब्बास : जी हां, यही मेरा भी ख़याल है।

हुसैन : चिताएं तैयार कराओ। अगर फ़रेब न किया जाता, तो ये सारी फ़ौज को ख़ाक कर देते। तीर हैं या मौजज़ा।

अब्बास : खुदा के ऐसे बंदे भी हैं, जो बिला ग़रज़ हक़ पर सिर कटाते हैं।

हुसैन : ये उस पाक मुल्क के रहने वाले हैं, जहां सबसे पहले तौहीब की सदा उठी थी। खुदा से मेरी दुआ है कि इन्हें शहीदों में ऊंचा रुतबा दे। वह चिता में शोले उठे ! ऐ खुदा, यह सोज इस्लाम के दिल से कभी न मिटे, इस क़ौम के लिए हमारे दिलेर हमेशा अपना खून बहाते रहें। यह बीज, जो आज आग में बोया गया है, क़यामत तक फैलता रहे।

चौथा दृश्य

जैनब अपने खेमे में बैठी हुई हैं। शाम का वक्त।

जैनब : (**स्वगत**) अब्बास और अली अकबर के सिवा अब भैया के कोई रफ़ीक़ बाक़ी नहीं रहे। सब लोग उन पर निसार हो गए। हाय, क़ासिम-सा जवान, मुसलिम के बेटे, अब्बास के भाई, भैया इमाम हसन के चारों बेटे, सब दाग़ दिए गए। देखते-देखते हरा-भरा बाग़ वीरान हो गया; गुलज़ार बस्ती उजड़ गई। सभी माताओं के कलेजे ठंडे हुए। बापों के दिल बाग़-बाग़ हुए। एक मैं ही बदनसीब नामुराद रह गई। खुदा ने मुझे भी दो बेटे दिए हैं, पर जब वे काम ही न आएं, तो उनको देखकर ज़िगर क्या ठंडा हो। इससे तो यही बेहतर होता कि मैं बांझ ही रहती। तब यह बेवफ़ाई का दाग़ तो माथे पर न लगता हुसैन ने इन लड़कों को अपने लड़के की तरह समझा, लड़कों की तरह पाला; पर वे इस मुसीबत में, तारीकी में साए की तरह साथ छोड़ देते हैं, दग़ा नहीं तो और क्या है ? आखिर भैया अपने दिल में क्या समझ रहे होंगे ! कहीं यह ख़याल न करते हों कि मैंने ही उन्हें मैदान में जाने से मना कर दिया है। यह ख़याल न पैदा हो कि

मैं उनके साथ अपनी ग़रज़ निकालने के लिए ज़मानासाज़ी कर रही थी। आह ! उन्हें क्योंकर अपना दिल खोलकर दिखा दूं कि वह उनके लिए कितना बेक़रार है, पर अपने लड़कों पर क़ाबू नहीं। जाओ, जैसे तुमने मेरे मुंह में क़लिख लगाई है, मैं भी तुम्हें दूध न बख्शूंगी। ये इतने कम हिम्मत कैसे हो गये ? जिनका नाना रण में तूफ़ान पैदा कर देता था, जिनके बाप की ललकार सुनकर दुश्मनों के कलेजे दहल जाते थे, वे ही लड़के इतने बोदे, पस्तहिम्मत हों। यह मेरी तक़दीर की ख़राबी है, और क्या ! जब रण में जाना ही नहीं, तो वे हथियार सजाकर क्यों मुझे जलाते हैं ? भैया को कौन मुंह दिखाऊंगी, उनके सामने आंखें कैसे उठाऊंगी ?

दोनों लड़कों का प्रवेश।

औम : अम्मांजान, आप हमारा फ़ैसला कर दीजिए। मैं पहले रण में जाता हूं पर यह मुझे नहीं जाने देता, कहता है पहले मैं जाऊंगा। सुबह से यही बहस छिड़ी हुई है, किसी तरह छोड़ता ही नहीं। बताओ, बड़े भाई के होते हुए छोटा भाई शहीद हो, यह कहां का इंसाफ़ है ?

मुहम्मद : अम्मांजान, यह कहां का इंसाफ़ है कि बड़ा भाई तो मरने जाय, और छोटा भाई बैठे उसकी लाश पर मातम करे। अम्मां, आप चाहे खुश हों या नाराज, यह तो मुझसे न होगा। शायद इनका यह ख़याल हो कि मैं जंग के क़ाबिल नहीं हूं। छोटा हूं, क्या जवाब दूं, लेकिन खुदा चाहेगा, तो....

एक हमले में गर हम न उलट दें सफ़े-लश्कर,
फिर दूध न अपना हमें तुम बख्शियो मादर !
शह के क़दमे-पाक पै सिर देके फिरेंगे,
या रण से सिरे-शिम्रोउमर लेके फिरेंगे।

अम्मांजान, आप न मेरी ख़ातिर कीजिए न इनकी, इंसाफ़ से फ़र्माइए, पहले किसको जाने का हक़ है ?

जैनब : अच्छा, तुम लोगों के रण में जाने का यह मतलब था ! मैं कुछ और समझ रही थी। प्यारो, तुम्हारी मां ने तुम्हारी दिलेरी पर शक़ किया, इसे माफ़ करो। मालूम नहीं, मुझे क्या हो गया था कि मरे दिल में तुम्हारी तरफ़ से ऐसे बसबसे पैदा हुए। लो, मैं

झगड़ा चुकाए देती हूं। तुम दोनों खुदा का नाम लेकर साथ-साथ सिधारो, और दिखा दो कि तुम किसी से शब्बीर की उल्फ़त में कम नहीं हो। मेरी और मेरे ख़ानदान की आबरू तुम्हारे हाथ है।

शेरों के लिए नंग है तलवार से डरना,
मैदान में तन-तनके सिपर सीनों को करना।
हर जख्म पै दम उलफ़ते-शब्बीर का भरना।
क़ुर्बान गई जीने से, बेहतर है वह मरना।
दुनिया में भला इज्ज़ते-इस्लाम तो रह जाय,
तुम जीते रहो, या न रहो, नाम तो रह जाय।
नाना की तरह कौन बग़ा करता है देखूं ?
सिर कौन हज़ारों से जुदा करता है देखूं।
हक़ कौन बहुत मां का अदा करता है देखूं ?
एक-एक सफ़े-जंग में क्या करता है देखूं ?
दिखलाइयो हाथों से सफ़ाई का तमाशा।
मैं परदे से देखूंगी लड़ाई का तमाशा।

यह तो मैं जानती हूं कि तुम नाम करोगे पर कमसिन बहुत हो, इसलिए समझाती हूं। जाओ, तुम्हें खुदा को सौंपा।

दोनों मैदान की तरफ़ जाकर लड़ते हैं, और जैनब पर्दे की आड़ से देखती है। शहरबानू का प्रवेश।

शहरबानू : है-है, बहन, यह तुमने क्या सितम किया ? इन नन्हें-नन्हें बच्चों को रण में झोंक दिया। अभी तो अली अकबर बैठा ही हुआ है, अब्बास मौजूद ही है, ऐसी क्या जल्दी पड़ी थी ?

जैनब : वे किसी के रोके रुकते थे ? कल ही से हथियार-सजे मुंतजिर बैठे थे। रात भर तलवारें साफ़ की गई हैं। और, यहां आए किसलिए थे। ज़िंदगी बाकी है, तो दोनों फिर आएंगे, मर जाने का ग़म नहीं. आखिर किस दिन काम आते। ज़िहाद में छोटे-बड़े की तमीज़ नहीं रहती। मैं रसूल पाक को कौन मुंह दिखाती !

शहरबानू : देखो, हाय-हाय ! दोनों को दुश्मनों ने किस तरह घेर रखा है। कोई जाकर बेचारों को फेर भी नहा लेता। शब्बीर भी बैठे तमाशा देख रहे हैं, यह नहीं कि किसी को भेज दें। हैं तो ज़रा-ज़रा से, पर कैसे मछलियों की तरह चमकते फिरते हैं ! खैर,

अच्छा हुआ, अब्बास दौड़े जा रहे हैं।

अब्बास का मैदान की तरफ़ दौड़े हुए आना।

जैनब : (**खेमे से निकलकर**) अब्बास, तुम्हें रसूल पाक की क़सम है, जो उन्हें लौटाने जाओ। हां, उनका दिल बढ़ाते जाओ। क्या मुझे शहादत के सबाब में कुछ भी देने का इरादा नहीं है ? भैया तो इतने खुदग़रज कभी न थे।

दोनों भाई मारे जाते हैं। हुसैन और अब्बास उनकी लाश उठाने जाते हैं और जैनब एक आह भरकर बेहोश हो जाती है।

पांचवां दृश्य

समय—बारह बजे रात। लड़ाई ज़रा देर के लिए बंद है। दुश्मन की फ़ौज ग़ाफ़िल है। दरिया का किनारा। अब्बास हाथों में मशक लिए दरिया के किनारे खड़े हैं।

अब्बास : (**दिल में**) हम दरिया के इतने क़रीब हैं। इतनी ही दूर पर यह दरिया मौज़ें मार रहा है, पर हम पानी के एक-एक बूंद को तरसते हैं। दो दिन से किसी के मुंह में पानी का क़तरा नहीं गया। बच्चे वग़ैरह पाना के लिए बिलबिला रहे हैं। औरतों के लब खुश्क हुए जाते हैं। खुद हज़रत हुसैन का बुरा हाल हो रहा है। मगर कोई अपनी तकलीफ़ किसी से नहीं कहता। बेचारी सकीना तड़प रही थी। काश, ये ज़ालिम इसी तरह ग़ाफ़िल पड़े रहते, और मैं मशक लिये हुए बचकर निकल जाता ! जी चाहता है, दरिया-का-दरिया पी जाऊं, पर ग़ैरत गवारा नहीं करती कि घर के सब आदमी तो प्यासे मर रहे हों, और मैं यहां अपनी प्यास बुझाऊं। घोड़े ने भी पानी में मुंह नहीं डाला। वफ़ादार जानवर ! तू हैवान होकर इतना ग़ैरतमंद है, मैं इंसान होकर बेग़ैरत हो जाऊं !

दरिया से पानी लेकर घाट पर चढ़ते हैं।

एक सिपाही : यह कौन पानी लिये जाता है?

अब्बास ख़ामोश रहता है।

कई आदमी : क्या कोई पानी ले रहा है ? कौन है ? खड़ा रह।

कई सिपाही अब्बास को घेर लेते हैं।

एक सिपाही : यह तो हुसैन के लश्कर का आदमी है। क्यों जी, तुम्हारा क्या नाम है ?

अब्बास : मैं हज़रत हुसैन का भाई अब्बास हूं।

कई आदमी : छीन लो मशक।

अब्बास : इतना आसान न समझो। एक-एक बूंद पानी के लिए एक-एक सिर देना पड़ेगा। पानी इतना मंहगा कभी न बिका होगा।

अब्बास तलवार खींचकर दुश्मनों पर झपट पड़ते हैं, और उनके घेरे से निकल जाने की कोशिश करते हैं। शिमर दौड़ा हुआ आता है।

शिमर . ख़बरदार; ख़बरदार ! चारों तरफ़ से घेर लो। मशक में नेज़े मारो, मशक में।

अब्बास : ओ ज़ालिम बेदर्द ! तू मुसलमान होकर नबी की औलाद पर इतनी सख्तियां कर रहा है। बच्चे प्यासे तड़प रहे हैं, हज़रत हुसैन का बुरा हाल हो रहा है, और तुझे ज़रा भी दर्द नहीं आता।

शिमर : ख़लीफ़ा से बग़ावत करने वाला मुसलमान, मुसलमान नहीं, और न उसके साथ कोई रियायत की जा सकती है। दिलेरो ! बस ज़ंग का इसी दम ख़ातमा है। अब्बास को लिया, फिर वहां हुसैन के सिवा और कोई बाक़ी न रहेगा।

सिपाही अब्बास पर नेज़े चलाते हैं, और अब्बास नेजों को तलवार से काट देते हैं। साद का प्रवेश।

साद : ठहरो-ठहरो ! दुश्मन को दोस्त बना लेने में जितना फ़ायदा है, उतना क़त्ल करने में नहीं। अब्बास, मैं आपसे कुछ अर्ज़ करना चाहता हूं। एक दम के लिए तलवार रोक दीजिए। तनी हुई तलवार मसालहत की ज़बान बंद कर देती है।

अब्बास : मसालहत की गुफ़्तगू अगर करनी है, तो हज़रत हुसैन के पास क्यों नहीं जाते। हालांकि अब वह कुछ न सुनेंगे। दो भांजे, दो भतीजे मारे जा चुके, कितने ही अहबाब शहीद हो चुके, वह खुद ज़िंदगी से बेज़ार हैं, मरने पर कमर बांध चुके हैं।

साद : तो ऐसी हालत में आपको अपनी जान की और भी क़द्र करनी चाहिए। दुनिया में अली की कोई निशानी तो रहे। ख़ानदान का नाम तो न मिटे !

अब्बास : भाई के बाद जीना बेक़ार है।

साद : **माबैन लहद साथ बिरादर नहीं जाता,**
भाई कोई भाई के लिए मर नहीं जाता।

अब्बास : **भाई के लिए जी से गुज़र जाता है भाई**
जाता है बिरादर भी जिधर जाता है भाई
क्या भाई हो तेगों में तो डर जाता है भाई
आंच आती है भाई पै मर जाता है भाई।

साद : आपसे तो ख़लीफ़ा को कोई दुश्मनी नहीं, आप उनकी बैयत क़बूल कर लें तो अपनी हर तरह भलाई होगी। आप जो रुतबा चाहेंगे, वह आपको मिल जाएगा, और आप हज़रत अली के जांनशीन समझे जाएंगे।

अब्बास : जब हुसैन जैसे सुलहपसंद आदमी ने, जिसने कभी गुस्से को पास नहीं आने दिया, जिसने ज़ंग पर कभी सबकत नहीं की, जिसने आज भी मुझसे ताक़ीद कर दी कि राह न मिले, तो दरिया पर न जाना; तुम्हारी बात नहीं मानी, तो मैं, जो इन औसाफ़ में से एक भी नहीं रखता, क्योंकर तुम्हारी बातें मानूंगा !

साद : तुम्हें अख़्तियार है।

शिमर : टूट पड़ो, टूट पड़ो।

एक सिपाही पीछे से आकर एक तलवार मारता है जिससे अब्बास का दाहिना हाथ कट जाता है। अब्बास बाएं हाथ में तलवार ले लेते हैं।

शिमर : अभी एक हाथ बाक़ी है, जो उसे गिरा दे, उसे एक लाख दीनार इनाम मिलेगा।

चारों तरफ़ से ज़ख्मी सिपाहियों की आहें सुनाई दे रही हैं। अब्बास सफ़ों को चीरते, सिपाहियों को गिराते हुसैन के ख़ेमे के सामने पहुंच जाते हैं। इतने में एक सिपाही तलवार से बायां हाथ भी गिरा देता है। शिमर उनकी छाती में भाला चुभा देता है। अब्बास मशक को दांतों से

पकड़ लेते हैं। तब सिर पर गुर्ज़ पड़ता है, और अब्बास घोड़े से गिर पड़ते हैं।

अब्बास : **(चिल्लाकर)** भैया, तुम्हारा गुलाम अब जाता है, उसका आखिरी सलाम क़बूल करो।

हुसैन खे़मे से बाहर निकल दौड़ते हुए आते हैं और अब्बास के पास पहुंचकर उन्हें गोद में उठा लेते हैं।

हुसैन : आह ! मेरे प्यारे भाई, मेरे क़ूबते-बाजू, तुम्हारी मौत ने कमर तोड़ दी। हाय ! अब कोई सहारा न रहा। तुम्हें अपने पहलू में देखते हुए मुझे वह भरोसा होता था, जो बच्चे को अपनी मां की गोद में होता है। तुम मेरे पुश्तेपनाह थे। हाय ! अब किस देखकर दिल को ढाढ़स होगा। आह ! अगर तुम्हें इतनी जल्द रुख़सत होना था, तो पहले मुझी को क्यों न मर जाने दिया ? आह ! अब तक मैंने तुम्हें इस तरह बचाया था, जैसे कोई आंधी में चिराग को बचाता है, पर क़ज़ा से कुछ बस न चला। हाय ! मैं खुद क्यों न पानी लेने गया। हाय ! अब ख़ैर, भैया इतनी तस्क़ीन है कि फिर हमसे तुमसे ज़ल्द मुलाक़ात होगी, और फिर हम क़यामत तक न जुदा होंगे।

छठा दृश्य

समय—दोपहर का। हुसैन अपने ख़ेमे में खड़े हैं। ज़ैनब, कुलसूम, सकीना, शहरबानू, सब उन्हें घेरे हुए हैं।

हुसैन : जैनब, अब्बास के बाद अली अकबर दिल को तस्कीन देता था। अब किसे देखकर दिल को ढाढ़स दूं ? हाय ! मेरा जवान बेटा प्यासों तड़प-तड़पकर मर गया ! किस शान से मैदान की तरफ़ गया था। कितना हंसमुख, कितना हिम्मत का धनी ! जैनब, मैंने उसे कभी उदास नहीं देखा, हमेशा मुस्कराता रहता था। ऐ आंखो ! अगर रोईं तो तुम्हें निकालकर फेंक दूंगा। खुदा की मर्जी में रोना कैसा ! मालूम होता है, सारी क़ुदरत मुझे तबाह करने पर तुली हुई है। यह धूप कि उसकी तरफ़ ताकने ही से आंखें जलने लगती हैं ! यह जलता हुआ बालू, ये लू के

झुलसाने वाले झोंके, और यह प्यास ! यों ज़िंदा जलना तीरों और भालों के जख़्मों से कहीं ज़्यादा सख़्त है।

अली असग़र आता है,और बेहोश होक़र गिर पड़ता है।

शहरबानू : हाय, मेरे बच्चे को क्या हुआ !

हुसैन : **(असग़र को गोद में उठाकर)** आह ! यह फूल पानी के बग़ैर मुरझाया जा रहा है। खुदा, इस रंज में अगर मेरी ज़बान से तेरी शान में कोई बेअदबी हो जाए तो माफ़ कीजिए, मैं अपने होश में नहीं हूं। एक कटोरे पानी के लिए इस वक़्त मैं जन्नत से हाथ धोने को तैयार हूं।

असग़र को गोद में लिये खेमे से बाहर आकर।

ऐ ज़ालिम क़ौम,अगर तुम्हारे ख़याल में मैं गुनहगार हूं,तो इस बच्चे ने तो कोई ख़ता नहीं की है। इसे एक घूंट पानी पिला दो। मैं तुम्हारे नबी का नवासा हूं, अगर इसमें तुम्हें शक़ है, तो काबा का बेकस मुसाफ़िर तो हूं। उसमें भी अगर तुम्हें ताम्मुल हो, तो मुसलमान तो हूं। यह भी नहीं, तो अल्लाह का एक नाचीज़ बंदा तो हूं। क्या मेरे मरते हुए बच्चे पर तुम्हें इतना रहम भी नहीं आता ?

मैं यह नहीं. कहता हूं कि पानी मुझे ला दो,
तुम आन के चिल्लू से इसे आब पिला दो।
मरता है यह, मरते हुए बच्चे को जिला दो,
लिल्लाह, कलेजे की मेरी आग बुझा दो।
जब मुंह मेरा ताकता है यह हसरत की नज़र से,
ऐ ज़ालिमो, उठता है धुआं मेरे जिगर से।

शिमर एक तीर मारता है, जो असग़र के गले को छेदता हुआ हुसैन के बाजू में चुभ जाता है। हुसैन जल्दी से तीर को निकालते हैं, और तीर निकलते ही असग़र की जान निकल जाती है। हुसैन असग़र को लिये फिर ख़ेमे में आते हैं।

शहरबानू : हाय; मेरा फूल-सा बच्चा !

हुसैन : हमेशा के लिए इसकी प्यास बुझ गई। **(ख़ून से चिल्लू भरकर आसमान की तरफ़ उछालते हुए)** इन सब आफ़तों का

गवाह खुदा है। अब कौन है, जो ज़ालिमों से इस ख़ून का बदला ले।

सज्जाद चारपाई से उठकर लड़खड़ाते हुए मैदान की तरफ़ चलते हैं।

जैनब : अरे बेटा, तुममें तो खड़े होने की भी ताब नहीं, महीनों से आंखें नहीं खोलीं, तुम कहां जाते हो ?

सज्जाद : बिस्तर पर मरने से मैदान में मरना अच्छा है। जब सब जन्नत पहुंच चुके, तो मैं यहां क्यों पड़ा रहूं ?

हुसैन : बेटा, खुदा के लिए बाप के ऊपर रहम करो, वापस आओ। रसूल की तुम्हीं एक निशानी हो। तुम्हारे ही ऊपर औरतों की हिफ़ाज़त का भार है। आह ! और कौन है, जो इस फ़र्ज को अदा करे। तुम्हीं मेरे जांनसीन हो, इन सबको तुम्हारे हवाले करता हू। खुदा हाफ़िज ! ऐ जैनब, ऐ कुलसूम, ऐ सकीना, तुम लोगों पर मेरा सलाम हो कि यह आख़िरी मुलाक़ात है।

जैनब रोती हुई हुसैन से लिपट जाती है।

सकीना : अब किसका मुंह देखकर जिऊंगी।

हुसैन : जैनब !

मरकर भी न भूलूंगा मैं एहसान तुम्हारे
बेटों को भला कौन बहन भाई पै वारे।
प्यार न किया उनको, जो थे जान से प्यारे
बस, मां की मुहब्बत के ये अंदाज हैं सारे।
फ़ाके में हमें बर्छियां खाने की रज़ा दो
बस, अब यही उल्फ़त है कि जाने की रज़ा दो।
हमशीर का ग़म है किसी भाई को गवारा
मजबूर है लेकिन असद अल्लाह का प्यारा।
रंज और मुसीबत से कलेजा है दो पारा
किससे कहूं, जैसा मुझे सदमा है तुम्हारा।
इस घर की तबाही के लिए रोता है शब्बीर
तुम छूटती नहीं मां से जुदा होता है शब्बीर
हाथ उठाकर दुआ करते हैं।
या रब, है यह सादात का घर तेरे हवाले

रांड हैं कई ख़स्ता जिगर तेरे हवाले।
बेकस का है बीमार पिसर तेरे हवाले।
सब हैं मेरे दरिया के गुहर तेरे हवाले।

मैदान की तरफ़ जाते हैं।

शिमर : (फ़ौज से) ख़बरदार ! ख़बरदार ! हुसैन आए। सब-के-सब संभल जाओ। समझ लो,अब मैदान तुम्हारा है।

हुसैन : फ़ौज के सामने खड़े होकर—

बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
मां ऐसी कि सब जिसकी शफ़ाअत के हैं मुहताज,
बाप ऐसा, सनमखानों को जिसने किया ताराज,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
लड़ने को अगर हैदर सफ़दर न निकलते,
बुत घर से खुदा के कभी बाहर न निकलते,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
किस जंग में सीने को सिपर करके न आए,
किस फ़ौज की सफ़ जेर व जबर करके न आए,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
हम पाक न करते तो जहां पाक न होता,
कुछ ख़ाक की दुनिया में सिवा ख़ाक न होता,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
यह शोर अजां का सहरोशाम कहां था,
हम अर्श पै जब थे तो यह इस्लाम कहां था,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।
लाजिम है कि सादात की इमदाद करो तुम,
ऐ जालिमो ! इस घर को न बरबाद करो तुम,
बेटा हूं अली का व नेवासा रसूल का।

फ़ौज पर टूट पड़ते हैं।

शिमर : अरे नामर्दो, क्यों भागे जाते हो। कोई शेर नहीं जो सबको खा जाएगा।

एक सिपाही : ज़रा सामने आकर देखो तो मालूम हो। पीछे खड़े-खड़े मुंह के आगे खंदक क्या है।

दूसरा : अरे, फिर इधर आ रहे हैं ! खुदा बचाना !

तीसरा : उन पर तलवार चलाने को तो हाथ ही नहीं उठते। उनकी सूरत देखते ही कलेजा थर्रा जाता है।

चौथा : मैं तो हवा में तीर छोड़ता हूं। कौन जाने कहीं मेरे ही तीर से शहीद हो जाएं, तो आक़बत में कौन मुंह दिखाऊंगा।

पांचवां : मैं भी हवा ही में छोड़ता हूं।

शिमर : तुफ़् है तुम पर डूब मरो नामर्दो। घेर कर नेज़ों से क्यों नहीं वार करते ?

साद : **(शिमर से)** हमारे लिए उन्हें घेरना उतना ही मुश्किल है, जितना चूहों के लिए बिल्ली का। उनके सामने कौन है, जिसके क़दम रुकें ? वह यों ही क़त्ल करते-करते खुद प्यास और थकान से बेदम हो जाएंगे।

शिमर : **(तीर चलाकर)** क्यों भागते हो ? क्यों अपने मुंह में क़ालिख लगाते हो ? दुनिया क्या कहेगी, इसकी भी तुम्हें शर्म नहीं ?

क़ीस : सारा फ़ौज दहल गई, उसको खड़ा रखना मुश्किल है।

शीस : अली के सिवा और किसी का यह दम-ख़म नहीं देखा।

शिमर : **(तीर चलाकर)** सफ़ों को ख़ूब फैला दो ताकि दौड़ते-दौड़ते गिर पड़ें।

हुसैन : साद और शिमर, मैं तुम्हें फिर मौक़ा देता हूं, मुझे लौट जाने दो। क्यों इन ग़रीबों की जान के दुश्मन हो रहे हो ? तुम्हारा मैदान ख़ाली हो गया। तुम्हीं सामने आ जाओ, जंग का फ़ैसला हो जाए।

साद : शिमर, जाते हो ?

शिमर : क्यों न जाऊंगा, यहां जान देने नहीं आया हूं !

साद : मैं जाऊं भी, तो लड़ नहीं सकता।

हुसैन दरिया की तरफ़ जाते हैं।

शिमर : अब और भी ग़ज़ब हो गया। पानी पीकर लौटे, तो खुदा जाने क्या करेंगे। हज्जाज़ को ताक़ीद करनी चाहिए कि दरिया का रास्ता न दे।

हज्जाज़ को बुलाकर।

शिमर : हज्जाज़, हुसैन को हरगिज़ दरिया की तरफ़ न जाने देना।

हज्जाज़ : **(स्वगत)** यह अज़ाब क्यों अपने सिर लूं। मुझे भी तो रसूल से

क़यामत में काम पड़ेगा। (**प्रकट**) जी हां, आदमियों को जमा कर रहा हूं।

हुसैन घोड़े की बाग ढीली कर देते हैं, पर वह पानी की तरफ़ गर्दन नहीं बढ़ाता, मुंह फेरकर हुसैन की रकाब को खींचता है।

हुसैन : आह ! मेरे प्यारे बेज़बान दोस्त ! तू हैवान होकर आक़ा का इतना लिहाज करता है,ये इंसान होकर अपने रसूल के बेटे के ख़ून के प्यासे हो रहे हैं। मैं तब तक पानी न पीऊंगा, जब तक तू न पिएगा। (**पानी पीना चाहते हैं।**)

हज्जाज : हुसैन, तुम यहां पानी पी रहे हो, और लश्कर खेमों में घुसा जाता है।

हुसैन : तू सच कहता है ?

हज्जाज ; यक़ीन न आए तो जाकर देख आओ।

हुसैन : (**स्वगत**) इस बेकली की हालत में कोई मुझसे दग़ा नहीं कर सकता ! मरते हुए आदमी से दग़ा करके कोई क्यों अपनी इज्ज़त से हाथ धोएगा !

घोड़े को फेर देते हैं और दौड़ते हुए खेमे की तरफ़ आते हैं।

आह ! इंसान उससे कहीं ज़्यादा कमीना और कोरबातिन है, जितना मैं समझता था। इस आख़िरी वक्त में मुझसे दग़ा की, और महज इसलिए कि मैं पानी न पी सकूं।

फिर मैदान में आकर लश्कर पर टूट पड़ते हैं, सिपाही इधर-उधर भागने लगते हैं।

शिमर : (**तीर चलाकर**) तुम मेरे ही हाथों मरोगे।

तीर हुसैन के मुंह में लगता है, और वह घोड़े से गिर पड़ते हैं। फिर संभल कर उठते हैं, और तलवार चलाने लगते हैं।

साद : शिमर, तुम्हारे सिपाही हुसैन के खेमों की तरफ़ जा रहे हैं, यह मुनासिब नहीं।

शिमर : औरतों की हिफ़ाज़त करना हमारा काम नहीं है।

हुसैन : (**दाढ़ी से ख़ून पोंछते हुए**) साद, अगर तुम्हें दीन का ख़ौफ़ नहीं है, तो इंसान तो हो, तुम्हारे भी तो बाल-बच्चे हैं। इन बदमाशों

को मेरे खेमों में आने से क्यों नहीं रोकते ?

साद : आपके खेमों में कोई न जा सकेगा, जब तक मैं जिंदा हूं।

खेमों के सामने आकर खड़ा हो जाता है।

जैनब : **(बाहर निकलकर)** क्यों साद ! हुसैन इस बेकसी से मारे जायं, और तुम खड़े देखते रहो ? माल और दुनिया तुम्हें इतनी प्यारी है !

साद मुंह फेरकर रोने लगता है।

शिमर : तुफ़् है तुम पर, ऐ जवानो ! एक प्यादा भी तुमसे नहीं मारा जाता ! तुम अब नाहक डरते हो। हुसैन में अब जान नहीं है, उनके हाथ नहीं उठते, पैर थर्रा रहे हैं, आंखें झपकी जाती हैं, फिर भी तुम उनको शेर समझ रहे हो।

हुसैन : **(दिल में)** मालूम नहीं, मैंने कितने आदमियों को मारा और अब भी मार सकता हूं, पर हैं तो ये मेरे नाना ही की उम्मत। हैं तो सब मुसलमान, फिर इन्हें मारूं, तो किसलिए ? अब कौन है, जिसके लिए ज़िंदा रहूं ? हाय, अकबर ! किससे कहें, जो खूने-जिगर हमने पिया है, बाद ऐसे पिसर के भी कहीं बाप जिया है। हाय अब्बास !

ग़श आता है हमें प्यास के मारे,
उलफ़त हमें ले आई है फिर पास तुम्हारे।
इन सूखे हुए होंठों से होंठों को मिला के,
कुछ मशक में पानी हो तो भाई पिला दे ?
लेटे हुए हो रेत में क्यों मुंह को छिपाए ?
ग़ाफ़िल हो बिरादर तुम्हें किस तरह जगाएं।
खुश हूंगा मैं आगे जो अलम लेके बढ़ोगे,
क्या भाई के पीछे न नमाज़ आज पढ़ोगे।

लड़ते-लड़ते शाम हो गई, हाथ नहीं उठते। आखिरी नमाज़ पढ़ लूं। काश, नमाज़ पढ़ते हुए सिर कट जाता तो कितना अच्छा होता। हुसैन नमाज़ में झुक जाते हैं, अशअस पीछे से आकर उनके कंधे पर तलवार मारता है। क़ीस दूसरे कंधे पर तलवार चलाता है। हुसैन उठते हैं, फिर गिर पड़ते हैं, फ़ौज में सन्नाटा छा जाता है।

सब-के-सब आकर उन्हें घेर लेते हैं।

शिमर : ख़लीफ़ा यज़ीद ने हुसैन का सिर मांगा था। कौन यह फ़ख़्र हासिल करना चाहता है ?

एक सिपाही आगे बढ़कर तलवार चलाता है। मुसलिम की छोटी लड़की दौड़ी हुई खेमे से आती है, और हुसैन की पीठ पर हाथ रख देती है।

नसीमा : ओ ख़बीस, क्या तू मेरे चाचा को क़त्ल करेगा ?

तलवार नसीमा के दोनों हाथों पर पड़ती है, और हाथ कट जाते हैं। शीस तलवार लेकर आगे बढ़ता है, हुसैन का मुंह देखते ही तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती है।

शिमर : क्यों, तलवार क्यों डाल दी ?

शीस : उन्होंने जब आंखें खोलकर मुझे देखा, तो मालूम हुआ कि रसूल की आंखें हैं। मेरे होश उड़ गए।

क़ीस : मैं जाता हूं।

तलवार लेकर जाता है, तलवार हाथ से गिर पड़ती है, और उल्टे क़दम कांपता हुआ लौट आता है।

शिमर : क्यों तुम्हें क्या हो गया ?

क़ीस : यह हुसैन नहीं, खुद रसूल पाक हैं। रोब से मरे होश गायब हो गए। या खुदा, जहन्नुम की आग में न डालियो।

शिमर : इनकी मौत मेरे हाथों लिखी हुई है। तुम सब दिल के कच्चे हो।

तलवार लेकर हुसैन के सीने पर चढ़ बैठता है। हुसैन आंखें खोलते हैं और उसकी तरफ़ ताकते हैं।

शिमर : मैं उन बुज़दिलों में नहीं हूं, जो तुम्हारी निग़ाहों से दहल उठे थे।

हुसैन : तू कौन है ?

शिमर : मेरा नाम शिमर है।

हुसैन : मुझे पहचानता है ?

शिमर : ख़ूब पहचानता हूं। तुम अली और फ़ातिमा के बेटे और मुहम्मद के नवासे हो।

हुसैन : यह जानकर भी तू क़त्ल करता है ?

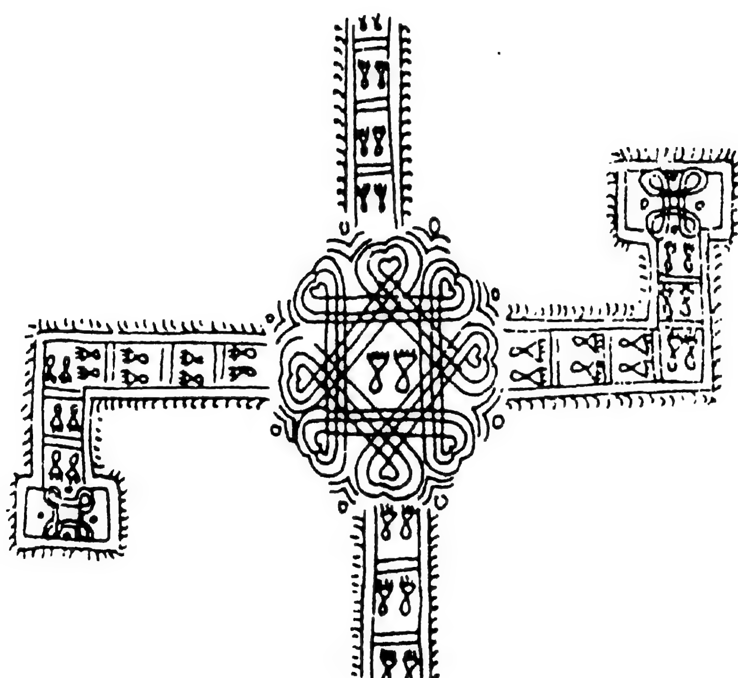
शिमर : मुझे जन्नत से जाग़ीरें ज़्यादा प्यारी हैं।

तलवार मारता है, हुसैन का सिर जुदा हो जाता है।

साद : **(रोता हुआ)** शिमर, ज़ियाद से कह देना, मुझे 'रै' की जागीर से माफ़ करें। शायद अब भी नजात हो जाए।

अपने सीने में नेज़ा चुभा लेता है, और बेजान होकर गिर पड़ता है। फ़ौज के कितने ही सिपाही हाथों से मुंह छिपाकर रोने लगते हैं। ख़ेमों से रोने की आवाज़ें आने लगती हैं।

●●●



प्रेम की वेदी

प्रकाशनकाल : 1933

प्रेम की वेदी

लेखक

श्री प्रेमचन्द

प्रकाशक

सरस्वती-प्रेस, बनारस सिटी

मूल्य बारह आने

प्रथम संस्करण का मुख पृष्ठ

प्रथम दृश्य

एक बंगलानुमा मकान-सामने बरांडा है, जिसमें ईंटों के गोल खंबे हैं। बरांडे में दो-तीन मोढ़े बेढंगेपन के साथ रखे हुए हैं। बरामदे के पीछे तीन दरवाजों का एक कमरा है। कमरे के दोनों तरफ दो कोठरियां है। कमरे में दरी का फर्श है जो कई जगह फटा हुआ है। बीच में एक गोल मेज है, जिस पर मेजपोश पड़ा हुआ है और एक गुलदस्ता पड़ा हुआ है, जिसके फूल सूख गए हैं। पांच बेंत की कुर्सियां हैं, जिन पर गर्द पड़ी हुई है; पर मैली और फटी हुई दीवारों पर कई ईसाई धर्म-विषय के पुराने चित्र हैं, जिन पर गर्द पड़ी है। एक कैलेंडर है और एक तरफ एक बड़ा शीशा दाहिनी तरफ वाली कोठरी में दो कोच हैं, बेंत के; मगर टूटे हुए। बायीं तरफ वाली कोठरी में एक कुर्सी और प्यानो है। कमरे के पीछे वाली दीवार में एक दरवाजा है, जो अंदर जाता है। भीतर एक छोटा-सा आंगन है; आंगन में पानी का नल और मुर्गियों का दरबा है एक कोने में बावर्चीखाना है। सभी दरवाजों पर मैले परदे पड़े हुए हैं।

मिस जेनी बायीं तरफ वाली कोठरी में प्यानो पर बैठी गा रही है। उसकी उम्र 18-20 साल की होगी, सांवला रंग बड़ी-बड़ी आंखें, हल्के गुलाबी रंग की साड़ी पारसी फैशन से पहने हुए रहन-सहन से ऐसा मालूम होता है, औसत दरजे का ईसाई परिवार है। फर्नीचर, फर्श सब कुछ उसी तरह का है, जैसा गुदड़ी बाजार में मिला करता है। मिस जेनी गाती है-"कभी हमसे तुमसे भी प्यार था, तुम्हें याद हो कि न याद हो।"

मिसेज गार्डन अंदर से आंखें मलती आती है। वह अधेड़ स्त्री है, गोरी, सिर के बाल खिचड़ी, मुख से चिंता झलक रही है। वह स्कर्ट पहने हुए है। स्कर्ट मैला हो

गया है, जो उसके निर्बल शरीर पर खिलता नहीं।

मिसेज गार्डन : आज विलियम आता होगा। तू अभी तक यूं ही बैठी हुई है?

जेनी : तो क्या करूं, नाचूं या ढोल बजाऊं?

मिसेज गार्डन : इसी तरह मेहमानों का स्वागत किया जाता है? अभी तक न मुंह धोया, न कुछ मेक-अप किया।

जेनी : मैंने कह दिया, मेरी तबीयत उनसे नहीं मिलती। आप बरबस उनके पीछे पड़ी हुई हैं।

मिसेज गार्डन : तुम तो बेटी, कभी-कभी ऐसी बातें करने लगती हो, जैसे घर का हाल कुछ जानती ही न हो। विलियम में क्या बुराई है, जरा सुनूं? या यह भी कोई जिद्द है कि मेरी तबीयत उससे नहीं मिलती। अच्छा-खासा जवान है। शक्ल-सूरत भी बुरी नहीं, बड़ा ही हंस-मुख, बड़ा नेक चलन, बड़ा चरित्रवान्, न शराब से मतलब, न किसी और शौक से और तुझे कैसा आदमी चाहिए? चार पैसे कमाता है, घर में भी कुछ जायदाद है, और आदमी में क्या चाहिए? फैशनेबिल नहीं है, यही ऐब है। मगर तू इसे ऐब समझ, मैं तो हुनर समझती हूं। मैं सच कहती हूं। बूढ़ी न होती, तो उससे जरूर शादी कर लेती। तुम्हारे पापा को गुजरे आज पांचवां साल है। हाथ में जो कुछ था, वह सब निकल गया। अब काम कैसे चले? माना अब तू ग्रेजुएट हो गई; लेकिन ऐसी कौन-सी बड़ी नौकरी तुझे मिली जाती है। ज्यादा से ज्यादा सौ की। तेरे पापा पांच सौ लाते थे, तब गुजर होता था, और चार पैसे हाथ में रह गये। विलियम की आमदनी चार-पांच सौ से कम नहीं है। फिर यह अच्छा भी तो नहीं लगता, कि औरत अपनी गुजर के लिए नौकरी करे। मैं इसे पसंद नहीं करती। मुझे सौ रुपये की जगह मिलती थी; लेकिन तेरे पापा कभी राजी न हुए।

जेनी : मैं तो आपसे कह चुकी, मैं शादी नहीं करना चाहती।

मिसेज गार्डन : आखिर क्यों, वही तो पूछती हूं?

जेनी : इसलिए कि मैं किसी मर्द की गुलामी पसंद नहीं करती।

मिसेज गार्डन : शादी करना गुलामी है ? वे सभी औरतें जो शादी करती हैं, गुलाम हैं?

जेनी : गुलाम नहीं तो और क्या हैं। रानियां हैं, वह भी गुलाम हैं।

मजदूरिनें हैं, वह भी गुलाम हैं। मर्द की दुनिया वह है, जहां नाम है, धन है, सम्मान है। स्त्री की दुनिया वह है, जहां पिसना, घुलना और कुढ़ना है। हर काम में औरत को मर्द की जवाबदेही करनी पड़ती है। अफर उसने चार पैसे ज्यादा खर्च कर दिए, मर्द की त्यौरियां चढ़ गईं। मर्द के नाश्ते में जरा देर हो गई, तो औरत के सिर आफत आ गई। अगर वह बगैर मर्द से पूछे कहीं चली गई, तो मर्द उसके खून का प्यासा हो गया। अगर किसी मर्द से हंसकर बोली, तो फिर समझ लो कि उसकी कुशला नहीं। दिखाने को तो मर्द स्त्री की बड़ी इज्जत करता है, मोटर पर अच्छी जगह स्त्री की है, सलाम पहले मर्द करता है, स्त्री का ओवरकोट पुरुष संभालता है, स्त्री का हाथ पकड़कर गाड़ी से उतारता है, पहले स्त्री को बिठाकर आप बैठता है; लेकिन यह सब दिखावे का शिष्टाचार है। पुरुष दिल में खूब समझता है कि उसने स्त्री की वह चीज छीन ली जिसकी पूर्ति में वह जितनी खातिरदारी करे, वह थोड़ी है। वह चीज स्त्री की आजादी है।

मिसेज गार्डन : तेरे विचार बड़े विचित्र हैं जेनी !

जेनी : विचित्र नहीं, यथार्थ हैं। हम अपने टॉमी की कितनी खातिर करते हैं। उसे तांगे पर साथ बैठाते हैं, गोद में उठाते हैं, उसका मुंह चूमते हैं, गले से लगाते हैं, उसे साबुन से नहलाते हैं; लेकिन क्या बराबर हमारे मन में यह भाव नहीं रहता, कि यह हमारा कुत्ता है? उसने जरा भी कोई काम हमारी इच्छा के विरुद्ध किया और हमने उसे हंटर जमाया। पुरुष विवाह करके स्त्री का स्वामी हो जाता है। स्त्री विवाह करके पुरुष की लौंडी हो जाती है। अगर वह पुरुष की खुशामद करती रहे, उसके इशारों पर नाचती रहे, तो उसके लिए रुपये हैं, गहने हैं, रेशमी कपड़े हैं, उस पर जान छिड़की जाती है, हृदय न्यौछावर किया जाता है; लेकिन स्त्री जरा भी स्वेच्छा का परिचय दिया, जरा भी आत्म-सम्मान प्रकट किया, फिर वह त्याज्य है, कुलटा है। पुरुष उसे क्षमा नहीं कर सकता। पुरुष कितना ही दुराचारी हो, स्त्री जबान नहीं हिला सकती। उसका धर्म है, पुरुष को अपना खुदा समझे। मैं यह नहीं बरदाश्त कर सकती।

मिसेज गार्डन : मैं मानती हूं, तेरी बातों में बहुत कुछ सच्चाई है; लेकिन गुजारे की तो कोई फिक्र करनी ही पड़ेगी।

जेनी : तो क्या तुम समझती हो, मैं निश्चिंत हूं, पर यह न समझना मैं सौ-पचास की टीचरी करके लड़कियों को ग्रामर रटाऊंगी। अगर तकदीर ने मदद की, तो मैं दिखा दूंगी कि मैं कितना कमा सकती हूं; विलियम कभी उसका स्वप्न भी नहीं देख सकता।

मिस उमा आती है। बड़ी रूपवती मांग का सिंदूर और भाल-तिलक बतला रहा है कि वह विवाहिता है। उनकी गोल कलाई पर जड़ाऊ कंगन हैं, गले में जड़ाऊ हार, मूल्यवान बनारसी साड़ी पहने हुए, बहुत प्रसन्नवदन, मानो संसार में बसंत, ही बसन्त, फूल ही फूल हैं !

जेनी : **(कुर्सी पर बैठे-बैठे)** मैं पहले कुर्सी से उठकर तुम्हारा सत्कार करती थी; लेकिन आज न उठूंगी। इसलिए कि तुम मेरी निगाह में वह नहीं रहीं, जो पहले थीं।

उमा : क्यों? क्या मैं कुछ और हो गई हूं?

जेनी : बेशक ! पहले तुम स्वतन्त्र कुमारी थीं। अब तुम एक पुरुष की दासी हो।

उमा : **(मुस्कराकर)** लेकिन तुम्हारी सहेली तो हूं। तुम्हारे साथ पढ़ी तो हूं, तुम्हारे साथ खेली तो हूं। यदि मैं अपने पद से गिर गई हूं, तब तो तुम्हें मेरा और सत्कार करना चाहिए जिसमें मुझे दुःख न हो।

जेनी : अगर तुम्हारे ऊपर कोई विपत्ति आ गई होती—ईश्वर न करे—तो मैं तुम्हारे पैरों-तले आंखें बिछाती; लेकिन तुमने जान-बूझकर अपने पैरों में बेड़ियां डाली हैं, अपनी स्वाधीनता को, अपनी आत्मा को, सोने और रेशम पर बेचा है।

उमा : **(हंसकर)** अच्छा, ईमान से कहना, मैं पहले से ज्यादा खूबसूरत नहीं मालूम हो रही हूं?

जेनी : अपने स्वामी की आंखों में मालूम होती होगी। मेरी आंखों में तो तुम्हारा रूप-लावण्य इस सोने और रेशम के नीचे दबा-सा मालूम होता है।

उमा : देखो यह कंगन, कितना बारीक काम है !

जेनी : **(मुंह फेरकर)** गुलामी की हथकड़ी है।

उमा : यह हार देखो, हीरे जड़े हैं।

जेनी : गुलामी की तौक है।

उमा : **(कुछ चिढ़कर)** जिसे तुम गुलामी की हथकड़ी और गुलामी का तौक कहती हो, उसे मैं व्रत, कर्त्तव्य और आत्म-समर्पण का चिह्न समझती हूं।

जेनी : यह व्रत, यह कर्त्तव्य और यह आत्म-समर्पण एक-तरफा क्यों है? तुम्हारे ही लिए क्यों इन चिह्नों की जरूरत है? तुम्हारे पति के लिए क्यों जरूरी नहीं? जहां तक मेरा अनुभव है, उसके हाथों में न चूड़ियां हैं, न कंगन हैं, न गले में हार है, न माथे पर सिंदूर का टीका है। यह क्यों? तुम्हें अपने व्रत पर स्थिर रखने के लिए बंधन चाहिए, उसे बंधन की जरूरत नहीं?

उमा निरुत्तर हो जाती है और उपालंभ की दृष्टि से मिसेज गार्डन की ओर देखती है।

उमा : सुनाती है मामा आप इनकी बातें?

मिसेज गार्डन : मैं इसे कुबुद्धि कहती हूं। निरी मूर्खता !

जेनी : **(विजय भाव से)** जवाब दो न ! क्यों तुम्हारे पति ने इन बंधनों को स्वीकार नहीं किया? क्यों तुम्हारे लिए इन बंधनों को लाज़िम समझा गया? कर्त्तव्य और प्रेम उसके लिए भी उतना ही आवश्यक है जितना तुम्हारे लिए। तुम्हें अपने कर्त्तव्य की याद दिलाते रहने के लिए निशानियों की जरूरत है, उसे क्यों नहीं ? इसका कारण इसके सिवा क्या हो सकता है, कि तुम गुलाम हो, वह आजाद है।

उमा : **(एक जवाब सूझता है)** पुरुष अपने कर्त्तव्य की ओर से आंखें बंद कर ले, तो क्या स्त्री भी बंद कर ले? अगर पुरुष अपने व्रत का पालन न करे, अपनी आत्मा को भूल जाय तो क्या स्त्री भी भूल जाय? मेरा विचार है कि स्त्री परिवार का मुख्य अंग है; इसलिए उसे बंधनों की ज्यादा जरूरत है। उसी तरह जैसे शूद्रों के लिए निशानी की जरूरत नहीं, पर द्विजों के लिए यज्ञोपवीत अनिवार्य है।

जेनी : लचर दलील है। असली बात यह है कि आदि में स्त्री पुरुष की सम्पत्ति समझी जाती थी, उसी तरह जैसे पशु, अनाज या घर। जैसे आज जायदाद के डाके पड़ते हैं, चोरियां होती हैं, उसी तरह उस समय भी होता था। लड़की बहुधा सबसे बहुमूल्य सम्पत्ति समझी जाती थी। इसलिए ज्योंही वह सयानी हो जाती थी, उस पर डाके पड़ने लगते थे। पुरुष अपने सूरमाओं को लेकर अस्त्र-शस्त्र के साथ, लड़की के ऊपर छापा मारता था। दोनों दलों में खूब लड़ाई होती थी, खूब रक्तचाप होता था। लुटेरे विजय पाते, तो लड़की को ले भागते और उसके साथ घर में जो चल सम्पत्ति मिल जाती, उसे भी उठा ले जाते। लड़की वाले रो-पीटकर रह जाते थे। कन्या विजेताओं के घर में कैद कर दी जाती थी। उसके हाथों में हथकड़ियां डाल दी जाती थीं, पैरों में बेड़ियां, गले में तौक और उस संग्राम के स्मृति-स्वरूप उसके माथे पर रक्त का टीका लगा दिया जाता होगा, जिससे कन्या समझती रहे कि उसने कभी भागने का प्रयत्न किया, तो उसकी भी वही दशा होगी जो उसके घर वालों की हुई है। कन्या को कभी घर वालों की याद न आए, वह इन नये स्वामियों को ही अपना सर्वस्व समझने लगे, इसलिए कन्या को उपदेश दिया जाता था कि प्रति ही तेरा स्वामी है, तेरा देवता है, उसको प्रसन्न रखकर ही तू स्वर्ग में जाएगी। यह है इन निशानियों का तथ्य। आज उन पाशविक प्रथाओं का रूप कुछ बदल गया है अवश्य; किन्तु मूलाधार वही है। नई संस्कृति ने कुछ लेप-थोप की है; लेकिन पुरुषों की मनोवृत्ति अब भी वही है और समाज-संस्था का आचार भी वही है बिल्कुल वही।

मिसेज गार्डन : यह तुम्हारे मस्तिष्क की उपज है या तुमने कहीं पढ़ा है?

जेनी : यह एक बड़े फ्रांसीसी तत्ववेत्ता के विचार हैं।

मिसेज गार्डन : तो उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई होगी। स्त्री-पुरुष दोनों अपनी रुचि के अनुसार अपना-अपना बनाव-सिंगार करते हैं। स्त्री पुरुष को आकर्षित करना चाहती है, पुरुष स्त्री को। पुरुष में पशुबल अधिक है, स्त्री में बुद्धिबल अधिक है, इसलिए बाहर की कड़ी मेहनत-मजूरी, लड़ाई-दंगा मर्द के हिस्से पड़ा, भीतर का काम औरत के हिस्से आया। मैंने तो बैड़-बड़े

राजाओं को हीरों के हार और मोतियों के कंगन पहने देखा है। फिर देश-देश का रिवाज अलग-अलग है। भूटान में तो स्त्री-पुरुष एक-से जान पड़ते हैं। पता ही नहीं चलता कौन स्त्री है, कौन पुरुष। मजदूर औरतें भी बहुत कम गहने पहनती हैं। यूरोप में साधारणत: स्त्रियां गहने पहनती ही नहीं हैं। भारत में पोर-पोर गहनों से लदा होता है। अपने-अपने देश की प्रथा है।

जेनी : आप इसे स्वीकार नहीं करतीं कि पुरुष स्त्री पर शासन करता है?

मिसेज गार्डन : नहीं। अगर ऐसे पुरुष हैं, जो स्त्री पर शासन करते हैं, तो ऐसी स्त्रियां भी हैं, जो पुरुष पर शासन करती हैं। मैं खुद तुम्हारे पापा पर शासन करती थी। वह मुझसे पूछे बिना किसी से मिलने भी न जाते थे। उन्हें लौटने में एक मिनिट की भी देर हो जाती थी, तो मैं उनकी बुरी तरह खबर लेती थी। यह मैं मान लूंगी कि पुरुष में यह प्रवृत्ति अधिक होती है; लेकिन इसका कारण यही है कि पुरुष ने पशुबल के साथ बुद्धिबल में भी उन्नति की, हमने आलस्य और विलास में पड़कर हर तरह से अपनी मिट्टी खराब कर ली। समाज की यह तो वर्तमान अधो:गति है, इसकी जिम्मेदारी स्त्री-पुरुष दोनों ही पर आती है। केवल पुरुषों को इल्जाम देना अन्याय है।

जेनी : यह तो आप मानेंगी ही कि निन्यानवें फीसदी पुरुष व्यभिचारी होते हैं। ऐसा कोई विरला ही पुरुष संसार में होगा, जिसने स्त्री पर निगाह न डाली हो।

मिसेज गार्डन : अगर ऐसे दगाबाज मर्द हैं, तो ऐसी दगाबाज औरतें भी कम नहीं हैं। हो सकता है, मर्दों की संख्या अधिक हो; लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि औरत स्वभावत: विदुषी होती है; बल्कि उसे प्रकृति ने जकड़ रखा है। मैं तो मोटी बात यह जानती हूं कि जो स्त्री-पुरुष, सुख-शांति से जिंदगी बसर करना चाहते हैं, वह जानते हैं कि पूर्ण विश्वास और प्रेम से ही यह सिद्धि हाथ आ सकती है। जो स्त्री-पुरुष वासना-तृप्ति के उपासक हैं, वही दोनों रोकर और झींककर जिंदगी के दिन काटते हैं।

जेनी : आप जो मामा आज मर्दों की वकालत करने पर तुली हुई

हैं। आपका यही निर्णय है कि पुरुष स्त्री को अपने बराबर समझता है और उस पर किसी तरह का दबाव नहीं डालता?

मिसेज गार्डन : हां, जो पुरुष जीवन का सच्चा अर्थ समझता है, उसका यही व्यवहार होता है। सुशिक्षित जोड़ों में इसका विचार ही नहीं आने पाता कि कौन छोटा है, कौन बड़ा। स्त्री से कोई भूल हुई, पुरुष ने डांटा। पुरुष से कोई गलती हुई, स्त्री ने गर्दन नापी। दोनों हर हालत में संतुष्ट रहते हैं। मैं यह नहीं कहती कि ऐसा पुरुष सच्चा साधु हो जाता है। और उसका मन किसी स्त्री पर चंचल नहीं होता, अथवा हरेक विवाहित स्त्री देवी होती है, लेकिन उन्हें अपने ऊपर निग्रह करना होता है, और कभी-कभी गुप्त प्रेम की आंच में जलकर मर जाना होता है। यदि मुझे अपने पति से अधिक रूपवान पुरुष को देखकर दिल पर हाथ रखने का अधिकार है, तो मेरे पति को भी मुझसे अधिक रूपवती स्त्री को देखकर यह अधिकार समान रूप से प्राप्त है; लेकिन हम दोनों समझते हैं कि इस विश्वासघात से हमारी सुख-शांति में बाधा पड़ेगी। इसलिए जब्त करते हैं। कुलीन और विचारशील स्त्री-पुरुषों में तो यह भावना आने ही नहीं पाती।

उमा : **(प्रसन्न होकर)** अब कह जेनी, मामा ने तुम्हारी जबान बंद कर दी या नहीं?

जेनी : वाह ! इन पुराने विचारों से मेरी जबान बंद हो जाती, तो अब तक मेरी शादी विलियम से हो गई होती। मेरा तो विचार है, जिन स्त्रियों में कोई व्यक्तित्व नहीं है, कोई उत्साह नहीं है, आदर्श नहीं है, उन्हें विवाह कर लेना चाहिए; लेकिन जिनमें अपने विचार हैं, अपना व्यक्तित्व है, अपनी इच्छा है, जिन्हें कीर्ति और ख्याति की लालसा है, उन्हें अविवाहित रहना चाहिए। अपनी हस्ती को पति की हस्ती में डुबा देना, इतना बड़ा त्याग है, जो मैं नहीं कर सकती।

मोटर का हार्न सुनाई देता है।

उमा : लो, वह महाशय आ पहुंचे। इनके मारे घर से निकलना मुश्किल है।

मोटर द्वार पर आकर रुकती है और उमा की पति योगराज उतर कर अंदर आता है। उमा दोनों महिलाओं का अपने पति से परिचय कराती है।

योगराज : तुमने मुझसे क्यों न कहा, मिस गार्डन के पास जा रही हूं, मैं भी तुम्हारे साथ आता।

उमा : तुमने भी तो अपने मित्रों से मेरा परिचय नहीं कराया। मैं क्यों कराती?

योगराज : मेरे मित्रों में शायद ही कोई ऐसा हो, जो तुम्हें देखकर मेरा शत्रु न हो जाता। मेरे विचार में तुम्हें अपनी सहेलियों से यह शिकायत न होगी।

उमा : आप अपने मित्रों की जिस चंचलता से डरते हैं, क्या आप उससे मुस्तसना हैं?

योगराज : था तो नहीं, लेकिन तुमने कर दिया **(मुस्कराता है)**।

उमा : मेरी यह बहन कहती हैं, स्त्री विवाह करके पुरुष की गुलाम हो जाती है। क्या तुम मुझे अपना गुलाम समझते हो?

जेनी : **(झेंपकर)** यह इस बहस का अवसर नहीं उमा, आप हमारे मेहमान हैं। हमें आपका कुछ स्वागत करने दो। आपके लिए चाय बनाऊं?

जेनी योगराज को सिर से पांव तक अनुरक्त नेत्रों से देखकर आंखें झुका लेती है।

योगराज : जी नहीं, मैं चाय पी चुका हूं, आप कष्ट न करें।

जेनी : उमा शायद डर रही है कि मैं चाय में कोई जादू कर दूंगी।

योगराज : मैं तो चाहता हूं, आप मुझ पर जादू करें, उमा ने मुझ पर जो वशीकरन डाल रखा है, उससे जरा छुटकारा तो मिले।

जेनी : आप हैं बड़े भाग्यवान कि उमा जैसी स्त्री पाई।

योगराज : मैंने उस जन्म में कोई बड़ी तपस्या की थी।

उमा : तुम दोनों मिलकर मुझे बनाओगे तो मैं चली जाऊंगी।

जेनी की आंखें फिर योगराज से मिलती हैं। वह आंखें झुका लेता है। उमा जनी को तीव्र नेत्रों से देखती है।

योगराज : **(प्यानो देखकर)** अच्छा, आपको प्यानो का भी शौक है? फिर

तो मेरा जी चाहता है, यहां कुछ देर बैठकर संगीत का आनंद उठाऊं। क्यों मिस गार्डन, आप हमें निराश तो न करेंगी?

जेनी : आप तो तकल्लुफ की बातें करते हैं, बाबूजी, आइए जो कुछ कहिए सुनाऊं।

दोनों प्यानों वाली कोठरी में जाते हैं।

उमा : **(अधीर होकर)** भाई गाना-वाना सुनाने लगेगी, तो देर होगी। मैंने अम्मां से कहा भी नहीं, चली आई। वह मुझ पर नाराज होने लगेंगी।

जेनी : **(मुस्कराकर)** तो तुम जाओ न। बाबूजी मेरी एक चीज सुनकर जायेंगे।

उमा : **(खिसियाकर)** मुझे ड्राइव करना नहीं आता।

जेनी : तो जरा देर बैठ जाओ न, अम्मां मार न डालेंगी।

योगराज : नहीं मिस गार्डन, इस वक्त क्षमा कीजिए। यह दोष मुझ पर आ जायगा। फिर कभी।

वह जेनी और मिसेज गार्डन से हाथ मिलाता है। उमा भी दोनों से हाथ मिलाती है।

जेनी : कल आना उमा, और बाबूजी को लाना।

उमा कोई जवाब नहीं देती। दोनों चले जाते हैं।

मिसेज गार्डन : बड़ा सुशील लड़का है।

जेनी : एक यह आदमी है एक आपका विलियम। सूरत से उजड्डुपन बरसता है। चेहरे पर सौम्यता की परछाईं तक नहीं।

मिसेज गार्डन : बेटी सभी आदमी एक-से नहीं होते। यह लोग कुलीन हैं। विलियम का बाप रेलवे गार्ड था। हां, उसने बेटे को अच्छी शिक्षा दिलाई।

जेनी : और आप चाहती हैं कि मैं उस गंवार से विवाह कर लूं।

मिसेज गार्डन : मेरे पास भी दस हजार देने को होते, तो मैं भी कोई ऐसा ही वार खोजती। जितना गुड़ डालोगी, उतना ही मीठा तो होगा।

जेनी : इसीलिए तो मैंने निश्चय कर लिया है, विवाह न करूंगी। तुमने देखा मामा उमा कितनी जली जाती थी।

मिसेज गार्डन : अभी नई मुहब्बत है न ?

जेनी : देख लेना इन दोनों में बहुत दिन पटेगी नहीं। उमा अल्हड़ छोकरी है। योगराज रसिया है। महीने-दो महीने में वह उसकी तरफ से ऊब उठेगी।

मिसेज गार्डन : नहीं जेनी, देख लेना दोनों जीवनपर्यंत सुखी रहेंगे।

जेनी : मैं तो कभी पसंद न करूं कि कोई मेरे गले में रस्सी डाले फिराया करे।

मिसेज गार्डन चली जाती हैं। जेनी प्यानो पर बैठकर गाने लगती है—कभी हमसे तुमसे भी प्यार था !

पटाक्षेप

दूसरा दृश्य

वही मकान, अंदर का बावर्चीखाना। विलियम एक बेंत के मोढ़े पर बावर्चीखाने के द्वार पर बैठा हुआ है। मिसेज गार्डन पतीली में कुछ पका रही है। विलियम बड़ा भीमकाय, गठीला, पक्के रंग का आदमी है, बड़ी मूंछें, चौड़ी छाती, फौजी जवान-सा मालूम होता है।

मिसेज गार्डन : तुमने कभी प्रोपोज भी किया, या यों ही समझ लिया, कि वह इंकार कर देगी?

विलियम : मेरी हिम्मत ही जवाब दे देती है। औरतों के सम्मुख मर्द इतना मूक हो जाता है, इसका अनुभव मुझे अब हुआ।

मिसेज गार्डन : कायर कहो। ऐसे कायर प्राणी कभी फलीभूत नहीं हो सकते। तुम ताकते ही रह जाओगे और कोई दूसरा आदमी आ कूदेगा।

विलियम : इसकी तो मुझे चिंता नहीं है मिसेज गार्डन, उसका और अपना खून एक कर दूंगा। मैं चाहे जेनी को न पा सकूं (पर कोई दूसरा भी उसे मेरे जीते-जी नहीं पा सकता।

मिसेज गार्डन : फिर वही उजड्डपन की बात ! अरे तू प्रोपोज क्यों नहीं करता भई ?

विलियम : कैसे प्रोपोज करूं, यही तो मुझे नहीं आता। कई किताबें देखीं,

मगर कुछ साफ न खुला।

मिसेज गार्डन : उसे कभी पार्क-वार्क में ले जाओ और वहां एकांत में प्रोपोज करो। और मैं क्या बताऊं?

विलियम : वह जब मेरे साथ कहीं जाय भी। मुझे देखते ही तो उसके चेहरे पर उदासी छा जाती है। चाहती है मैं उठकर चला जाऊं। कभी खातिर से बैठाए, कुछ बातचीत करे, तब तो मेरा दिल बढ़े।

मिसेज गार्डन : तो क्या तुम सालभर से यों ही रास्ता नापने आते हो?

विलियम : मेरी पहुंच तो आप ही तक है।

मिसेज गार्डन : तो क्या मुझसे शादी करेगा? कैसा युवक है ! होशियार मर्द एक घंटे में औरत को रास कर लेता है, तुम्हें सालभर दौड़ते हो गया और अभी 'क' 'ख' की नौबत भी नहीं आई। कुछ तुममें बूता हो तो मैं भी जोर लगाऊं। बछड़ा तो खूंटे ही के बल पर कूदेगा। आखिर तुमने उसे अपनी ओर आकर्षित करने के लिए अब तक क्या-क्या कार्रवाई की?

विलियम : मैंने अंग्रेजी बोलने का अच्छा अभ्यास कर लिया है।

मिसेज गार्डन : खूब ! तो क्या आप अंग्रेजी में प्रोपोज करेंगे, या वह तुम्हारे अंग्रेजी भाषण का प्रवाह देखकर तुम्हारे ऊपर लट्टू हो जायगी?

विलियम : मैंने गाना भी सीख लिया है।

मिसेज गार्डन : यह तुमने बहुत अच्छा किया। वह गाने में कुशल है। संभव है रुचि की समानता आगे चलकर मैत्री का रूप धारण कर ले। प्यानो बजा लेते हो?

विलियम : जी हां, अच्छी तरह।

मिसेज गार्डन : अभी तो जेनी के आने में देर है। अपनी सहेली से मिलने गई है। चलो देखूं तुम कैसी प्यानो बजा लेते हो?

दोनों प्यानो वाली कोठरी में जाते हैं। विलियम प्यानो पर एक बेसुरा राग अलापता है।

मिसेज गार्डन : लाहौल-विला-कूवत ! यही आपका गाना है ! खुदा के लिए कहीं उसके सामने न बजाने लगना, नहीं उसे तुम्हारी सूरत से घृणा हो जाएगी।

विलियम : अभी तो सीख रहा हूं मिसेज गार्डन, कुछ दिनों में देखिएगा !

मिसेज गार्डन : जाओ भी, चले हो गाना सीखने। अच्छा और क्या सीखा?

विलियम : टेनिस खेलने लगा हूं।

मिसेज गार्डन : हां, इसकी बड़ी जरूरत थी। खूब अच्छी तरह खेल लेते हो?

विलियम : जी हां, कहिए तो दिखाऊं?

मिसेज गार्डन : टेनिस भी तो प्यानो ही की तरह नहीं सीखा है?

विलियम : नहीं जी, खूब खेलता हूं। अच्छे-अच्छों के छक्के छुड़ा दिये हैं।

मिसेज गार्डन : सच ! अच्छा कमरे में चलकर दिखाओ तो जरा अपना खेल। दोनों कमरे में आते हैं। मिसेज गार्डन खूंटी पर से दोनों रैकेट उतार लेती है। दोनों एक-एक रैकेट लेकर आमने-सामने खड़े हो जाते हैं। विलियम गेंद सर्व करता है। मिसेज गार्डन गेंद को उसकी तरफ लौटाती है। वह गेंद की तरफ लपकता है और जोर से आकर लुढ़क जाता है। फिर संभलकर खड़ा होता है।

मिसेज गार्डन : यही आपका खेल है ! तुम इसमें भी फेल हो गए। खुदा के लिए कहीं जेनी के सामने न खेलना, नहीं मुफ्त की भद हो।

विलियम : मैं गिरा थोड़े ही था। जोर से दौड़ा तो जरा पांव फिसल गया।

मिसेज गार्डन : अच्छा टेनिस-सूट तो बनवा लिया है?

विलियम : यह तो मुझसे किसी ने बताया ही नहीं!

मिसेज गार्डन : शाबाश ! तो यही लांग बूट पहनकर टेनिस खेलते हो?

विलियम : बूट पहनकर खूब दौड़ते बनता है।

मिसेज गार्डन : वही हो और क्या। मैं पूछती हूं, आखिर तुम किस दुनिया में रहते हो? पहले टेनिस सूट बनवाओ, तब टेनिस खेलो। यह नहीं कि यह लक्कड़तोड़ जूते और यह नीचा कोट पहनकर टेनिस खेलने लगे। तुम्हारी हंसी उड़ती होगी और क्या?

विलियम : मुझसे तो लेडी डगलस ने यही कहा कि फौजी आदमियों के लिए टेनिस सूट की जरूरत नहीं।

मिसेज गार्डन : अच्छा, अब आदमी बनना सीखो। यह जंगल-सी मूंछें साफ कराओ। वह जमाना दूसरा था, जब औरत मर्द की मूंछें देखकर खुश होती थी। मुझे ही ले लो। मुंड़ी हुई मूंछें मुझे एक आंख नहीं भातीं; लेकिन अब जमाना बदल गया है। अब स्त्री चाहती है कि मर्द का चेहरा साफ हो। बालों का चिह्न तक न हो।

विलियम : तो कल ही लीजिए। इसमें कौन छप्पन टके का खर्च है।

मिसेज गार्डन : अच्छा कुछ नाचना-वाचना भी सीखा है? जेनी बहुत अच्छा नाचती है।

विलियम : जी हां, नाचना तो पहले ही से आता है।

मिसेज गार्डन : अच्छा जरा दिखाओ।

विलियम वहीं बंदरों की भांति उचकने लगता है। नाचते समय अपने स्थूल शरीर को संभालने में उसकी मुखाकृति विकृत हो जाती है कि मि० गार्डन हंसते-हंसते लोट जाती है।

मिसेज गार्डन : रहने भी दो। यह आपका नाच है, जैसे बनैला सुअर किलोल करे। भई यह बेल मुंढ़े चढ़ने की नहीं। अभी तुममें बड़ी-बड़ी त्रुटियां हैं। पहले इनको दूर करो ! तब हिम्मत करके एक दिन प्रोपोज करो।

विलियम : त्रुटियां तो मैं पूरी कर लूंगा, लेकिन प्रोपोज करना टेढ़ी खीर है।

मिसेज गार्डन : मैं एक बात कहूं—जरा-सी शराब पी लेना।

विलियम : ऐसा न हो, बहकने लगूं?

मिसेज गार्डन : अजी नहीं, थोड़ी-सी पीना और बढ़िया किस्म की, जिसमें मुंह से सुगंध आवे ! और देखो, गंवारों की तरह बातचीत न किया करो। शिष्टाचार सीखो। पहनावा भी भले आदमियों-सा रखो। टाई और कॉलर रेशमी लो। कोट के बटन में एकाध गुलाब लगा लिया करो। यह मोटा-सोटा लेडियों के पसंद की चीज नहीं। हलकी-सी सोफियानी छड़ी लो। यह तुमने डिबिया-सी घड़ी और जंजीर लगा रखी है, इसे धता बताओ और सुनहरी घड़ी कलाई पर बांधो। तुम्हारे घर में कितने नौकर हैं?

विलियम : नौकर ! नौकरों की क्या जरूरत है? एक बूढ़ी दाई है, वह रोटी और गोश्त पका देती है—दोनों वक्त। सुबह को दो सेर दूध खुद दुहा लाता हूं। कच्चा ही पी जाता हूं। बुढ़िया बिस्तर डाल देती है। दफ्तर से आकर दो ढाई सौ हाथ लेजिम के फेर लेता हूं। खाना खाकर सो जाता हूं।

मिसेज गार्डन : अगर तुम्हारी यह रहन-सहन है तो जेनी से हाथ धो रखो। वह

मजदूर पति नहीं, जेंटिलमैन पति चाहती हैं।

विलियम : अब तक तो मुझे किसी ने कुछ बताया ही नहीं। अब आपने सलाह दी है, देखिए कितनी जल्द जेंटिलमैन बन जाता हूं।

मिसेज गार्डन : कुछ न हो तो एक बेयरा, एक खानसामां और एक अर्दली तो होना ही चाहिए। बावरची अलग। एक मेहतर, एक धोबी और एक बागवान भी रखो। और कैसे मालूम होगा कि तुम साहब हो। अभी मोटर न हो तो कोई हरज नहीं; लेकिन साल-दो साल में उसका प्रबंध भी करना पड़ेगा। घर में कुछ तस्वीरें हैं?

विलियम : जी हां, अखबारों में जो अच्छी तस्वीर नजर आ जाती है। फ्रेम करा लेता हूं।

मिसेज गार्डन : शाबाश? तब तो तुम आर्ट के बड़े रसिक हो। अच्छा कभी सिनेमा देखने जाते हो?

विलियम : वहां जाकर नींद कौन खराब करे मिसेज गार्डन? मुझे तो उसमें कुछ मजा नहीं आता।

मिसेज गार्डन : तो तुम निरे गंवार हो। खाना, काम करना और सोना जानते हो। सभ्यता तो तुम्हें छू नहीं गई....।

जेनी की आहट मिलती है। विलियम पिछवाड़े के द्वार से बदहवास भागता है !

जेनी : आज उमा और उसका पति विदा हो गये मामा ! उमा बहुत रोती थी। मेरे गले लिपटकर रोने लगी। मुझे भी रोना आ गया। अब बेचारी न जाने कब आएगी !

मिसेज गार्डन : इन लोगों में विदाई के समय रोने का बुरा रिवाज है।

जेनी : क्या जाने मामा ! मुझे तो खुद रोना आ गया था। मैं तो तुम्हारे पास से जाने लगूं, तो मुझे जरूर रोना आये। योगराज एक सिनेमा कम्पनी का डाइरेक्टर है, मामा ! पंद्रह सौ वेतन पाता है।

मिसेज गार्डन : अच्छा ! मगर अभी उम्र तो कुछ नहीं है। अपनी-अपनी तकदीर है।

जेनी : अमेरिका और इग्लैण्ड हो आये हैं मामा! अमेरिका में एक कम्पनी के डाइरेक्टर रहे। कितनी ही युवतियां वहां उनसे शादी करने पर तुली हुई थीं। कितनी ही तो लाखों की सम्पत्ति उन्हें

दे रही थीं; लेकिन उनकी मंगनी पहले ही उमा से हो गई थी। सबको सूखा जवाब दिया। वहां होते तो अब तक उन्हें चार-पांच हजार मिलते होते। इन फन में उन्हें कमाल है। उमा है बड़ी नसीबों वाली। मुझे उन्होंने अपनी कम्पनी में बुलाया है। पहले एक हजार देंगे।

मिसेज गार्डन : **(बेटी को गले लगाकर)** सच !

जेनी : हां मामा ! वह तो मुझे अपने साथ ले चलने पर जोर दे रहे थे। मैंने कहा—अभी मुझे कुछ तैयारी करनी है। मुझे पांच सौ का चैक तैयारियों के लिए दे गए।

मिसेज गार्डन : खुदा का लाख-लाख शुक्र है कि उसने आड़े वक्त में हमारी मदद की। बड़ा शरीफ आदमी मालूम होता है।

जेनी : **(कुछ शरमाते हुए)** अगर उमा मेरी सहेली न होती और मुझसे इतना प्रेम न करती होती, तो एक बार मैं अपने भाग्य की परीक्षा करती।

मिसेज गार्डन : क्या कहती है जेनी ! विवाहित पुरुष के साथ?

जेनी : शादी-विवाह बच्चों का खेल है, मामा! यह केवल स्त्री और पुरुष के मन का समझौता है। इसमें धर्म को घसीटना मूर्खता है। मैं रूप-रंग में उमा जैसी नहीं ! लेकिन उन्हें मैं जितना आकर्षित करती हूं, उमा नहीं कर सकती। काश विवाह के पहले इनसे मेरा परिचय हो गया होता ! मेरा गाना सुनकर मस्त हो गए। और तुमसे क्या कहूं? खेद यही है, कि वह उमा के पति हैं और उमा इतनी निष्कपट और सरल है कि मुझे उस पर दया आती है। वह तो चाहती है कि उन्हें किसी औरत की हवा भी न लगे।

मिसेज गार्डन : **(चिंता-भाव से)** अब तेरे मन की यह दशा है जेनी, तो मैं तेरा उस कम्पनी में जाना उचित नहीं समझती।

जेनी : तुम भी मामा, मुझे छोकरी समझती हो। मैं योगराज को दिल से चाहती हूं; लेकिन क्या मजाल कि मेरे मुंह से एक शब्द भी निकले, या इशारों से भी इसका आभास मिले। मैं न इतनी कृतघ्न हूं और न इतनी मदमाती।

मिसेज गार्डन : खुदा तेरे इरादों को पाक रखे बेटी ! यही सज्जनों का धन है। खुदा ने चाहा, तो तुझे इससे अच्छा आदमी मिल जाएगा।

चलो खाना तैयार है।

दोनों खाना खाने जाती हैं।

पटाक्षेप

तृतीय दृश्य

वर्षा काल का एक प्रभात। बादल घिरे हुए हैं। एक शानदार बंगला ! दरवाजों पर जाली लोट के परदे पड़े हुए हैं! उमा एक कमरे में पलंग पर पड़ी हुई है। एक औरत उसके सिर में तेल डाल रही है। उमा का मुख पीला पड़ गया है। देह सूख गई है। कमरे के पीछे की तरफ दो खिड़कियां हैं जो बाग में खुलती हैं।

उमा : **(आईने की ओर देखकर)** यौवन इतना अस्थिर है, इसकी मैंने कल्पना भी न की थी। मानो एक स्वप्न था कि आंख खुलते ही गायब हो गया ! मगर कितना मधुर स्वप्न था ! मैं स्वर्ग की अप्सरा की भाँति विमान पर बैठी आकाश में विहार करती थी। अब न वह विमान है, न स्वर्ग। मैं अपनी सारी निधि खोकर दया की भिक्षा पर पड़ी हुई हूं। क्यों चम्पा, तू भी कुछ देखती है बाबूजी के स्वभाव में कितना परिवर्तन हो गया है। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अब उन्हें मेरे समीप बैठने में आनंद नहीं आता।

चम्पा : नहीं बहूजी, ऐसा न कहें। बाबूजी को मैंने कई बार आपके सिरहाने खड़े रोते देखा है। मुझे देखते ही उन्होंने रूमाल से आंखें छिपा लीं और बाहर चले गए। आप वहां लेटी रहती हैं और वह दबे पांव कमरे के द्वार पर टहलते रहते हैं। शायद उन्हें शंका होती है कि उनके आने से आपको कष्ट होगा।

उमा : **(अविश्वास से देखकर)** मुझे उनके आने से कष्ट होगा ! यह उनका प्रेम है, जो मुझे जिंदा रखे हुए है, चम्पा ! वही ज्योति मुझे जीवन प्रदान कर रही है। नहीं अब तक यह दीपक कब का बुझ गया होता।

लेडी डॉक्टर के साथ योगराज कमरे में आता है और

उसे कुर्सी पर बैठाकर बाहर चला जाता है।

लेडी डॉ॰ : आज तो आपकी तबियत अच्छी मालूम होती है।

उमा : होगी ! मुझे तो कोई फर्क नहीं मालूम होता।

लेडी डॉ॰ : रात को नींद नहीं आई·थी?

उमा : जी नहीं। पलक तक नहीं झपकी।

लेडी डॉ॰ : मैंने तो आपसे पहले ही कहा था, कुछ दिनों के लिये पहाड़ पर चली जाइए। आप राजी न हुईं। कम-से-कम सुबह को हवा खाने तो चली जाया करो।

उमा : इच्छा ही नहीं होती, मेम साहब ! सोचती हूं, जब मरना ही है, तो क्या छः महीने पहले और क्या छः महीने पीछे।

लेडी डॉ॰ : नहीं-नहीं, तुम बहुत जल्दी अच्छी हो जाओगी, उमा देवी ! अगर तुम पहाड़ों पर चली जाओ, तो एक महीने में चंगी हो जाओगी। मैं आज बाबूजी से कहती हूं, तुम्हें कल ही भेज दें।

उमा : आप मुझे अकेले जाने को कहती हैं। मैं अकेली नहीं रह सकती।

लेडी डॉ॰ : नहीं, अब मैं अकेली जाने को न कहूंगी। बाबूजी तुम्हारे साथ जाएंगे।

उमा : **(प्रसन्न होकर)** हां ! तब मुझे जाने में कोई इंकार नहीं है।

लेडी डॉक्टर थर्मामीटर लगाकर ज्वर देखती है और नुस्खा लिखकर चली जाती है। द्वार पर योगराज खड़े हैं।

लेडी डॉ॰ : इनकी हालत खराब होती जाती है। आप इन्हें पहाड़ पर ले जाएं। मैंने पहले इस पर ज्यादा जोर न दिया था। मैंने समझा था, दवाओं से काम चल जायगा ! लेकिन अब मालूम होता है, पहाड़ों पर जरूर ले जाना पड़ेगा।

योगराज : मैं कल ही चला जाऊंगा।

दोनों योगराज के कमरे में आकर बैठते हैं।

लेडी डॉ॰ : हां जाइए ! मगर आपने किसी तरह का कुपथ्य किया, तो आपको इनसे हाथ धोना पड़ेगा। अब मैं साफ-साफ कहती हूं, आपके ही कारण इनकी यह दशा हुई। सालभर में दो गर्भ-पात और तीसरा गर्भ ! एक कमसिन, कोमल प्रकृति की बालिका

कितना अत्याचार सह सकती ! आप शिक्षित हैं, दुनिया देख चुके हैं, आपको विवाह करने के पहले इस विषय का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए था। पहले गर्भपात के बाद आपको कम-से-कम सालभर के लिए उन्हें मैके भेज देना चाहिए था। इनसे पृथक् रहना जरूरी था, पर आपने जरा भी परवाह न की। जिस वक्त उमादेवी आई थीं, मैंने उन्हें देखा था। खिले हुए गुलाब का-सा चेहरा था। एक साल के अंदर उनकी यह दशा हो गई, कि देह में रुधिर का नाम नहीं। इसके जिम्मेदार आप हैं।

योगराज : लेडी विलसन, ईश्वर के लिए मुझे क्षमा कीजिए। मैं आपसे कसम खाकर कहता हूं, कि मुझे कुछ न मालूम था।

लेडी डॉ० : तो यह किसका दोष है? अगर कोई आदमी तैरना न जानने पर भी दरिया में कूदे, तो यह किसका दोष है? जिसने घोड़े पर सवारी करना न सीखा हो, उसे क्या अधिकार है कि वह घोड़े दौड़ावे? उमादेवी बालिका थी। अपने कर्त्तव्य का उसे ज्ञान न था। इस विषय में न उसने कुछ पढ़ा, न किसी से बात-चीत की। वह तो इतना ही जानती थी कि आप उसके स्वामी हैं, आपकी इच्छाओं के आगे सिर झुकाना उसका कर्त्तव्य है। उसे क्या मालूम था कि वह आपकी कामुकता के सामने सिर झुकाकर अपने लिए विष बो रही है। आपको भी चाहे अभी कुछ न मालूम होता हो, पर जल्द या देर में इसका असर अवश्य होगा। प्रकृति उन लोगों को कभी क्षमा नहीं करती जो उसके नियमों को तोड़ते हैं।

योगराज निस्पंद बैठा रहता है, मानो निष्प्राण हो। जब लेडी विलसन टोपी उठाकर जाने लगती हैं, तो वह चौंककर खड़ा हो जाता है।

योगराज : लेडी विलसन, ईश्वर के लिए इन्हें किसी तरह बचा लीजिए। मैं उम्र भर आपकी गुलामी करूंगा। आप मुझसे मेरा सब कुछ ले लें, केवल इन्हें बच्चा लें, मुझ पर दया कीजिए।

लेडी डॉ० : लाला योगराज बच्चों की-सी बाते न करो। बचाना मेरे वश की बात नहीं है। मैं यथाशक्ति यत्न करूंगी, यह मेरा धर्म है। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकती। आपने भी वही

नादानी की जो आपके दूसरे भाई किया करते हैं। स्त्री उनके लिए केवल विषय-भोग का यंत्र है। वह स्त्री पर जितना अत्याचार चाहें कर सकते हैं। अगर स्त्री की ओर से कुछ अरुचि हो, तो उसके शत्रु हो जायंगे। वह बेचारी पति को प्रसन्न रखने के लिए सब कुछ झेलने को तैयार रहती है। सभी घरों में यही तमाशा देखती हूं। अगर क्षय रोग न फैले, तो क्या हो; लेकिन अब भी घबराने की कोई बात नहीं। कल आप इन्हें पहाड़ पर ले जाइए और पूरा विश्राम दीजिए। नहीं तो आपको पछताना पड़ेगा।

लेडी विलसन चली जाती है। योगराज फिर उमा के पास आता है।

उमा : क्या कहती थीं लेडी विलसन? तुमसे अलग-अलग बातें कर रही थीं?

योगराज : कुछ नहीं, वही पहाड़ पर जाने की बातचीत थी। मैंने निश्चय किया है, कल हम लोग चल दें।

उमा : तो मेरे घर एक खत लिख दो। अम्मां और दादा से मुलाकात तो कर लूं। जेनी से भी मिलने को जी चाहता है। उसे भी एक खत लिख दो।

योगराज : इसमें कई दिन लग जायेंगे, उमा !

उमा : जैसी तुम्हारी इच्छा। कहीं मर गई तो उन लोगों को देख भी न सकूंगी !

उसकी आंखों से आंसू की दो बूंदें गिर पड़ती हैं। योगराज झुककर उसके माथे का चुम्बन लेता है।

योगराज : **(भर्राई हुई आवाज में)** नहीं, नहीं, उमा ! ईश्वर ने चाहा, तो तुम वहां से स्वस्थ होकर आओगी। वहां के जलवायु का जरूर असर होगा।

उमा : **(चम्पा से)** अब रहने दे चम्पा ! बाहर जा, फिर बुलाऊं तो आ जाना।

चम्पा चली जाती है।

मेरे पास आ जाओ राजा। कुछ याद है तुम्हें, आज हमारे विवाह की पहली वर्ष-गांठ है। आज ही के दिन तुम मेरे घर गए थे।

ज्योंही मुझे बरात आने की खबर मिली, मैं कोठे पर चढ़कर तुम्हें देखने गई थी। तुम नहीं देख सकते थे ! पर मैंने तुम्हें खूब देखा था। कितनी जल्द एक पूरा साल बीत गया ! आज उसका उत्सव मनाऊंगी। तुम भी दफ्तर न जाना। आज मेरा जी कुछ हलका मालूम होता है। तुम्हारे साथ खूब बातें करूंगी। तुम चले जाते हो, तो घर फाड़ खाने लगता है। एक छन भी तुम्हें नहीं देखती तो जी घबरा उठता है। आज मैं अपना कमरा फूलों से सजाऊंगी, लेकिन नहीं। फूलों को न तोड़ना। **(बाग की ओर देखकर)** अपनी डालियों पर कितने सुंदर लगते हैं। तोड़ने से मुरझा जाएंगें।

चम्पा को बुलाती है, वह आकर खड़ी हो जाती है।

देख चम्पा, जरा मेरी वह साड़ी निकाल ला, जो कई महीने हुए कश्मीर से मंगवाई थी। एक बार भी नहीं पहन सकी। आज उसे पहनूंगी, देख और कपड़ों की तह न बिगड़ें। साड़ी में थोड़ा अगर मल देना। आज इनसे इनाम लूंगी।

चम्पा चली जाती है।

बताओ आज मुझे क्या सौगात दोगे? कोई अच्छी-सी चीज देना।

योगराज : **(कांपते हुए स्वर में)** क्या लोगी उमा? मेरे पास जो कुछ है वह तुम्हारा है।

उमा : **(मुस्कराकर उसके गले में हाथ डाल देती है)** जी नहीं, इन बातों में मैं नहीं आती। मैं जो कुछ मांगूगी वह तुम्हें देना होगा।

योगराज : तुम्हारे लिए मेरी जान हाजिर है उमा !

उमा : मैं तुमसे एक वचन मांगती हूं।

योगराज : यह तो तुमने कुछ न मांगा।

उमा : नहीं मैं वही वचन लूंगी। उसमें मुझे जितना आनंद मिलेगा उतना और किसी चीज से न मिलेगा। वचन दो कि मैं मर जाऊंगी, तो मेरी सोहाग-सिंदूर की डिबिया पर रोज दो फूल चढ़ाओगे। उसी सिंदूर ने तो मुझे तुम्हारा प्रेमदान दिया था। तुम्हें छोड़कर मुझे संसार में उससे प्रिय और कोई वस्तु नहीं है।

उसकी याद बनाए रखना।

योगराज मुंह फेरकर रुमाल आंखों पर रख लेता है और आंसुओं को रोकता हुआ कमरे के बाहर चला जाता है एक मिनट तक वह सामने के अशोक-वृक्ष के नीचे खड़ा फूट-फूटकर रोता है। फिर उमा की पुकारना सुनकर द्वार की ओर चलता है ! पर अश्रु-विह्वल हो जाने के कारण द्वार पर रुक जाता है।

परदा

चौथा दृश्य

जेनी का मकान, संध्या का समय, विलियम टेनिस सूट पहने, मूंछें मुंडाए, एक रैकेट हाथ में लिए, नशे में चूर आता है।

जेनी : आज तो तुमने नया रूप भरा है विलियम। यह किस गधे ने तुमसे कहा कि मूंछें मुंड़ा लो ! बिल्कुल हीजड़ों से लगते हो। अपने सिर की कसम ! यह तुम्हें क्या सनक सवार हुई। अच्छी खासी मूंछें थीं, मुंडाकर सफाया कर दिया। जरा जाकर आईने में अपनी सूरत देखो। एक तो माशा अल्लाह आप यों ही बड़े रूपवान हैं, उस पर मूंछें मुंड़ा लीं। हो निरे गावदी !

विलियम : **(कुर्सी जेनी के पास खींचकर)** आज का दिन बड़ा मुबारक है जेनी !

जेनी : **(मुंह फेरकर)** अरे तुमने तो शराब पी है। **(नाक बंद करके)** नाक फटी जाती है। अलग बैठिए आप। आज तुम्हें हो क्या गया है?

विलियम : **(जेनी की तरफ झुककर)** आज मेरा दिमाग सातवें आसमान पर है जेनी। मैं वह विलियम नहीं हूं अब। आज मैं उस जीवन का स्वप्न देख रहा हूं, जिस पर फरिश्ते भी लट्टू होते हैं। आज मुझे वह वरदान मिलने वाला है। जिस पर तीनों लोक की निधि कुरबान है, आज मैं तुम्हें अपनी जीवन-सहचरी बनने की दावत देने आया हूं। आज मैं प्रोपोज कर रहा हूं। **(कुर्सी से उतरकर जेनी के पैरों पर सिर रख देता है)** देखो जेनी, खुदा के

लिए इंकार मत करना। बोलो, मेरी प्रार्थना स्वीकार करती हो? तुम्हारे मुख के एक शब्द पर मेरे भाग्य का दारमदार है। अगर 'हां', कहती हो तो मुझसे बड़ा भाग्यशाली संसार में नहीं। 'न' कहती हो, तो मुझसे बड़ा अभागा संसार में न होगा। यदि तुम्हें मुड़ी हुई मूंछें पसंद नहीं हैं, तो मैं फिर रख लूंगा। देखो मैंने इसी दिन के लिए यह सूट बनवाया है, और मुझे यकीन है कि यह मुझे बुरा नहीं लगता।

जेनी : बिल्कुल नहीं, खुदा बुरी नजर से बचाए।

विलियम : **(अकड़कर)** मैं टेनिस बहुत अच्छा खेलने लगा हूं।

जेनी : सच?

विलियम : अपने सिर की कसम ! और प्यानो भी खूब बजा लेता हूं।

जेनी : ओहो ! अब तुम पूरे उस्ताद हो गए।

विलियम : नाचता ऐसा हूं, कि तुम देखो तो खुद नाचने लगो।

जेनी : वाह ! अब तो कोई वजह नहीं है कि मैं तुमसे शादी न करूं।

विलियम : वह मेरी जिंदगी का सबसे मुबारक दिन होगा।

जेनी : अच्छा तो आओ हमारी-तुम्हारी शर्तें तै हो जायं।

विलियम : सब कुछ गिरजे में हो जायेगा, जेनी ! ओ हो ! जिस वक्त मैं तुम्हें आलटर की तरफ ले चलूंगा, तुम रेशमी गाउन पहने, हाथ में गुलदस्ता लिये मेरे कंधे पर सिर रखे चलोगी, वह कितनी मुबारक घड़ी होगी।

जेनी : मुझे उस स्वांग से नफरत है।

विलियम : **(ताज्जुब से)** तो फिर और कैसे शादी होगी जेनी !

जेनी : तुम मेरी शर्तें मान लो, बस शादी हो गई। इसकी क्या जरूरत कि गिरजे चलें, पादरी आए, मेहमान जमा हों, बाजे बजे, रस्में अदा हों। मुझे वह तमाशा पसंद नहीं। बोलो, मेरी शर्तें मंजूर करोगे।

विलियम : **(निराश होकर)** क्या शर्तें हैं जेनी?

जेनी : मेरी पहली शर्त यह होगी कि जिस दिन तुम्हें किसी दूसरी औरत से बातें करते देखूं, उसी दिन तुम्हें घर से निकाल दूं।

विलियम : **(प्रसन्न होकर)** हां, मंजूर है जेनी !

जेनी : मेरी दूसरी शर्त यह होगी कि शादी के बाद भी मुझे अख्तियार होगा, जिससे चाहूं हंसू-बोलूं, जहां चाहूं आऊं-जाऊं, जिससे

चाहूं प्रेम करूं। बोलो मानते हो?

विलियम : यह कैसे मुमकिन है, जेनी ! तुम हंसी करती हो। उस वक्त अगर कोई मर्द तुम्हारी तरफ आंखें भी उठाये, तो उसका खून पी जाऊं, खोदकर जमीन में गाड दूं, जीता निगल जाऊं।

जेनी : तो फिर हमारी-तुम्हारी विधि नहीं मिलती।

विलियम : देखो जेनी, मेरी अभिलाषाओं का खून न करो। मेरी जिंदगी बरबाद हो जाएगी।

जेनी : अच्छा बस, अब हंसी हो चुकी विलियम ! तुमने कभी सोचा है, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

विलियम : **(हक्का-बक्का होकर)** आखिर और सब लोग क्यों शादी करते हैं?

जेनी : और सब लोग झक मारते हैं। मैं तुमसे पूछती हूं, तुम क्यों शादी करना चाहते हो?

विलियम सिर खुजलाता है और बगलें झांकता है।

जेनी : तुम्हें नहीं मालूम। अच्छा मुझसे सुनो। तुम केवल इसलिए विवाह करना चाहते हो, कि तुम्हारा चित्त प्रसन्न करने के लिए तुम्हारे घर में एक खिलौना आ जाय।

विलियम : बस-बस यही बात है, जेनी ! तुम कितनी बुद्धिमती हो।

जेनी : तुम इसलिए विवाह करना चाहते हो कि जब मैं बढ़िया सूफियाना साड़ी पहनकर तुम्हारी मोटर साइकिल पर तुम्हारे साथ निकलूं, तो लोग हंस-हंसकर कहें 'वह जा रहा भाग्य का धनी विलियम !'

विलियम : बस-बस यही बात है, जेनी ! सचमुच तुम बड़ी बुद्धिमती हो।

जेनी : इसलिए कि जब तुम अपने अफसरों की दावत करो, तो मैं उनसे मीठी-मीठी बातें करके उनका दिल खुश करूं और अफसर खुश होकर तुम्हारी तरक्की करें।

विलियम : बस-बस यही बात है जेनी।

जेनी : इसलिए कि तुम्हारे बच्चे हो जायं और तुमने जो थोड़ी-सी चांदी जमा कर रखी है, उसके वारिस पैदा हो जायं।

विलियम : बस-बस जेनी ! सुभान अल्लाह !

जेनी : तो मैंने इसके लिए एक बहुत अच्छी औरत तलाश कर रखी है। वह मुझसे कहीं अच्छी बीवी होगी तुम्हारी। तुम जैसे

रखोगे वैसे रहेगी। जो चाहोगे वह करेगी। तुम्हारे घर में झाड़ू लगाएगी, तुम्हारा खाना बनाएगी, तुम्हारा बिस्तर लगाएगी।

विलियम : **(प्रसन्न होकर)** वह कौन है जेनी।

जेनी : मेरी मेहतरानी। गोरी, हंस-मुख, चंचल, बांकी औरत है।

विलियम : तुम मेरा अपमान कर रही हो जेनी ! मैं मेहतरानी से विवाह करूंगा? मैं भी खानदान का शरीफ हूं।

जेनी : अच्छा ! तो तुम ऐसी बीवी चाहते हो, जिससे तुम्हारे खानदान की इज्जत में बट्टा न लगे?

विलियम : और क्या?

जेनी : तो तुम अभी शादी का अर्थ नहीं समझे।

विलियम : तो क्या मैं नालायक हूं? मेरे पास ऐसे-ऐसे सर्टिफिकेट हैं कि देखो तो दंग रह जाओ।

जेनी : अच्छा ! यह नई बात सुनी।

विलियम : मैं जो जरा चुपचाप रहता हूं, तो तुमने समझ लिया बस यूं ही है। अपने मुंह अपनी तारीफ नहीं करना चाहता। इसे मैं ओछापन समझता हूं ! लेकिन अब ऐसा अवसर आ पड़ा है, तो मुझे उन सनदों को पेश करना पड़ेगा। देखो। **(जेब से कई चिट्ठियों का पुलिंदा निकालकर)** यह मिसेज डगलस का खत है। उन्होंने मेरे टेनिस खेलने की तारीफ की है।

(जेनी खत पढ़ती है—It is hereby certified that Doby William handles his tennis ball just as a skilful wife handles her husband and consequently he should not be disqualified in matrimonial game on this account.)

जैनी : इस सनद ने तो मेरी जबान बंद कर दी। तुम्हारे पेट में ऐसे-ऐसे गुण भरे हैं?

विलियम : जी हां, और आप क्या समझती हैं। देखती जाइए। यह मिस डासन का खत है।

(जेनी दूसरा खत पढ़ती है—It is hereby certified that Doby William has invented an altogether new dance, never heard of before, and nobody else can compete him there. It is an extra qualification in his favour for a matrimonial job.)

जैनी : तुमने ऐसे-ऐसे लाजवाब सर्टिफिकेट छिपा रखे हैं ! तुम तो छिपे रुस्तम निकले।

विलियम : देखती जाइए। इस चिट्ठी में हेडमास्टर साहब ने मेरे चाल-चलन की प्रशंसा की है और यह सनद दिखाना तो मैं भूल ही गया। यह हिज हाइनेस गवर्नर ने मेरे फादर को दिया था। मुझे कोई मामूली आदमी न समझिए।

मिसेज डगलस और मिस डासन दो औरतों के साथ आती नजर आती हैं। विलियम फौरन भाग खड़ा होता है।

मिस डासन : मैंने कहा चलूं विलियम का तमाशा देखती जाऊं। आज तुम्हें प्रोपोज करने आया था। मेरे सिर हो गया कि मुझे एक सर्टिफिकेट लिख दो। बताओ क्या लिखती।

मिसेज डगलस : निरा अहमक है। मुझसे जिद करने लगा कि टेनिस का सर्टिफिकेट दे दीजिए। रैकेट पकड़ने का तो शऊर नहीं। भला मैं क्या लिखती।

मिस डासन : क्या हुआ, उसने प्रोपोज किया? जरा उसका किस्सा कहो।

मिसेज डगलस : यही सुनने के लिए तो भागी आ रही हूं।

जेनी : तुम्हें देखते ही भाग खड़ा हुआ। मगर तुमने बड़े मजे का सर्टिफिकेट दिया। फूला न समाता था। जेब में लिए फिरता है।

दोनों लेडियां : क्या-क्या ! हमने कब कोई चिट्ठी दी !

जेनी : दिखाता तो था !

मिस डासन : तो कमबख्त ने अपने हाथ से लिख ली होगी। जभी भागा। कहां हैं दोनों चिट्ठयां?

जेनी : चिट्ठियां तो लेता गया ! पर उसका मजमून मुझे याद है। हजरत ने अपनी दानिस्त में अपनी तारीफ लिखी थी।

जेनी एक कागज पर दोनों खतों को याद से लिखती है और तीनों हंसते-हंसतें लोट जाती हैं।

परदा

पांचवां दृश्य

योगराज का बंगला। प्रातःकाल। योगराज और जेनी एक कमरे में बैठे बातें कर रहे हैं। योगराज के मुख पर शोक का गाढ़ा रंग झलक रहा है ! आंख सूजी हुई, नाक का सिरा लाल, कण्ठ स्वर भारी। जेनी सफरी कपड़े पहने हुए है। मालूम होता है, अभी बाहर से आई है।

जेनी : मुझे यही पछतावा हो रहा है कि एक दिन पहले क्यों न आई। जिस समय मुझे तार मिला, अम्मां कुछ अस्वस्थ थीं। मैंने समझा जरा इनकी तबियत संभल जाए, तो चलूं ! अगर जानती यह आफत आने वाली है, तो तुरंत भागती। देखने भी न पाई।

योगराज : आपका नाम अंत समय तक उनकी जबान पर था। बार-बार आपको पूछती थीं। **(लम्बी सांस खींचकर)** मैं तो कहीं का न रहा, मिस जेनी ! मुझे जीवन में वह विभूति मिल गई थी कि उसे खोकर अब संसार मेरी आंखों में सूना हो गया। और यह सब मेरे ही कर्मों का फल है। मैं ही उनका घातक हूं। मेरी ही भोग-लिप्सा ने उस कच्चे फल को तोड़कर जमीन पर गिरा दिया। उन्हें दो-बार गर्भ-पात हुआ; पर मेरी अंधी आंखों को कुछ न सूझता था। जिस फूल को सिर और आंखों और हृदय से लगाना चाहिए था, जिसकी सुगन्ध से मुझे अपना जीवन को बसाना चाहिए था, उसे मैंने पैरों से कुचला। कभी-कभी जी में ऐसा उबाल आता है कि दीवार से सिर पटक दूं; यह दाग दिल से कभी न मिटेगा, यह घाव कभी न भरेगा !

रोता है।

जेनी : यों अधीर होने से कैसे काम चलेगा बाबूजी ! मैं तो उसकी सहेली थी, लेकिन मुझे उससे जितना प्रेम था, उतना अपनी सगी बहन से भी न होता। फिर आपके शोक का अनुमान कौन कर सकता है। उसका शील-स्वभाव ही ऐसा था कि बेअख्तियार दिल को खींच लेता था; किंतु अब धैर्य के सिवा और क्या कीजिएगा ! खुदा की यही मर्जी थी, आदमी की उसमें क्या दखल ! अब इसी विचार से दिल को तसल्ली दीजिए कि यह

संसार उसके लिए उपयुक्त स्थान था। वह स्वर्ग के योग्य थी और स्वर्ग ने उसे ले लिया।

योगराज : हाय ! किसी तरह दिल को तसल्ली नहीं होती, मिस जेनी ! यों अपनी मृत्यु से वह मर जातीं, तो मैं सब्र कर लेता; लेकिन यह कैसे भूल जाऊं कि मैंने ही उनकी हत्या की, मेरी ही विषयाशक्ति ने उनकी जान ली। मैंने अमृत को इस तरह खाया, जैसे पशु घास खाता है। वह देवी मुझ पर कुरबान हो गई। मुझे प्रसन्न रखना उसके जीवन का एकमात्र उद्देश्य था। मेरी इच्छा के विरुद्ध कभी एक शब्द भी मुंह से न निकाला। प्रातःकाल नींद खुलती, तो उनकी सहास मूर्ति सामने आमोद की वर्षा-सी करती हुई दिखाई देती थी। दिन-दिन दुर्बल होती जाती थी; लेकिन मेरी खातिरदारी में अणुमात्र भी कमी न करती थी। इस घर की एक-एक वस्तु पर उनका प्रेम अंकित है। वह खुद फूलों की तरह कोमल थीं। और फूलों से उन्हें असीम प्रेम था। यह गमले जो सामने रखे हुए हैं, उन्हीं के लगाए हुए हैं। खाने को जिस वस्तु में मेरी रुचि देखती, उसे अपने हाथों से पकातीं। कुर्सियों पर जो यह फूलदार गद्दे हैं, उन्हीं के काढ़े हुए हैं। मेज पर जो मेजपोश है, उन्हीं का काढ़ा हुआ है। तकियों के गिलाफ उन्हीं के बनाएं हुए हैं, किस-किस बात को रोऊं। उन्होंने अपने को मुझ पर अर्पित कर दिया। मुझ जैसा अनाचारी, व्यसनी, अधम व्यक्ति इस योग्य न था कि उसे ऐसी देवी मिलती। ईश्वर ने सुअर के गले में मोतियों की माला डाल दी?

वह चुप हो जाता है और कई मिनट तक आंख बंद किए बैठा रहता है। सहसा सिर पर जोर से हाथ मारकर कमरे से निकलता है और बगीचे की ओर भागता है। जेनी उसके पीछे-पीछे जाती है। वह बगीचे में खड़ा होकर फूलों की क्यारियों की ओर ध्यान से देखता है, जैसे किसी को खोज रहा हो। फिर वहीं से लपका हुआ आता है और उमा के कमरे का परदा हटाकर धीरे से अन्दर जाता है और कमरे को खाली पाकर जोर से छाती पीटकर जमीन पर गिर पड़ता है। जेनी की आंख से आंसू बहने लगते हैं। दौड़कर पानी लाती है और उसके

मुंह पर पानी के छींटे देती है। एक मिनट में योगराज चौंककर उठ बैठता है।

जेनी बाबूजी, आप बुद्धिमान होकर नादान बनते हैं। इस तरह होश-हवास खो देने से क्या फायदा होगा।

योगराज कह नहीं सकता मुझे क्या हो जाता है, मिस गार्डन ! मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे उमा अपने कमरे में बैठी हुई है, जैसे बगीचे में घूम रही है ! जानता हूं, अब इस जीवन में उनके दर्शन न होंगे, लेकिन न जाने क्यों यह भ्रम हो जाता है ! मन किसी के मुंह से यह सुनने को लालायित रहता है कि वह दस-पांच दिन के लिए कहीं चली गई हैं। कभी न मिलेंगी, सदा के लिए चली गई, यह असह्य है, मैं इसे बरदाश्त नहीं कर सकता....! **(एक क्षण के बाद सिर पर हाथ मार कर)** मुझे इसका ध्यान ही न रहा कि आप सफर करके आ रही हैं ! हाय ! आज वह होतीं, तो आपको देखकर कितनी खुश होतीं। मैं आपकी क्या खातिर कर सकता हूं, खातिर करने वाली तो चली गई !

(महाराज को पुकारता है।) देखो, मिस साहब के लिए नाश्ता लाओ, बहुत जल्द और महरी को भेजो, आपका हाथ-मुंह धुलाए।

जेनी : आप जरा भी तकल्लुफ न करें बाबूजी ! अभी नाश्ता करने की जरा भी इच्छा नहीं। जी नहीं चाहता।

योगराज : तो फिर आपकी खातिर क्या करूं। आइए आपको उमा का कमरा दिखाऊं। देखिए उन्होंने कैसी-कैसी साहित्य की पुस्तकें जमा कर रखी थीं। उनकी कविताएं आपको सुनाऊं।

दोनों उमा के कमरे में जाते हैं जो कालीन और गद्देदार कोचों और शीशे के सामानों से सजा हुआ है। योगराज एक आल्मारी खोलता है। उसमें उमा के आभूषणों की संदूकची निकल आती है। योगराज तुरंत उसे निकाल लेता है और उसे खोलकर एक-एक आभूषण लेकर जेनी को दिखाता है।

योगराज : यह उनके आभूषण हैं। इन्हें पहनकर वह कितनी प्रसन्न होती

थीं। इनके एक-एक अणु में उनके स्पर्श का सौरभ है। इन्होंने अपनी सुनहरी आंखों से उनके रूप की छटा देखी है। यह उनके आदर और प्रेम के पात्र रह चुके हैं। यह इस दुरवस्था में पड़े रहें, यह मैं नहीं देख सकता। उन्हें अपने आभूषणों की यह दशा देखकर स्वर्ग में भी कितना दुःख होता होगा। मैं आपके मनोभावों पर आघात नहीं करना चाहता, मिस गार्डन। क्षमा कीजिएगा, लेकिन आप इन चीजों को स्वीकार कर लें, तो उनकी आत्मा को कितनी शांति होगी ! इनका कोई दूसरा उपयोग ऐसा नहीं है, जिससे उन्हें इतना आनंद हो। आपको वह अपनी बहन समझती थीं और इस नाते से मैं आपको इन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सकता हूं।

विक्षिप्तों की तरह मुस्कराता है।

जेनी : **(सजल नेत्रों से)** आपने तो मेरे लिए कुछ कहने की गुंजाइश नहीं रखी, बाबूजी ! लेकिन मैं अपने को इस योग्य नहीं समझती, आप इन्हें उनकी स्मृति-स्वरूप अपने पास सुरक्षित रखें। शायद कोई ऐसा समय आवे, जब इनका दावेदार घर में आ जाय। इन्हें मेरी ओर से उसकी भेंट कीजिएगा।

योगराज : **(ठट्ठा मारता है)** वह समय कभी न आएगा—जेनी। उमा ने जो स्थान खाली कर दिया है, वह हमेशा खाली रहेगा—हमेशा ! आप मेरी इस याचना को अस्वीकार करके मुझे बड़ा सदमा पहुंचा रही हैं और उनकी आत्मा को भी; लेकिन मैं जिद्दी आदमी हूं, जेनी। कभी-कभी पागलों के-से काम करने लगता हूं। आइए, मैं आपको एक चीज पहनाऊं। चोट खाए हुए दिल की गुस्ताखियों को क्षमा कीजिएगा।

वह उस हार को जेनी के गले में डाल देता है। जेनी सिर झुकाए सजल नेत्र शोकातुर बैठी हुई है। योगराज उसकी कलाइयों पर कंगन शेरदहां, ब्रेसलेट पहनाता है, गले में नेकलेस डाल देता है। पैरों में पाजेब डालने के लिए झुकता है। जेनी जल्दी से पांव हटा लेती है और उसके हाथ से पाजेब लेकर पहन लेती है। सामने आईना रखा हुआ है। जेनी की उस पर नजर पड़ जाती है वह उसमें

अपनी सूरत देखती है और खिलखिलाकर हंस पड़ती है।

जेनी आपने तो मुझे गुड़िया बना दिया। मुझे तो यह चीज बिल्कुल शोभा नहीं देती।

योगराज आप मेरी आंखों से नहीं देख रही हैं, मिस जेनी ! मुझे तो ऐसा मालूम हो रहा है कि उमा मेरे ऊपर तरस खाकर आकाश से उतर आई है। आपमें और उसमें इतना सादृश्य है, इसका अब तक मुझे अनुमान न था। तुम मेरी उमा हो, जेनी ! तुममें उसी आत्मा का आभास है, वही रूप-माधुर्य है, वही कोमलता है। तुम वही हो, मेरी प्यारी उमा ! तुम मुझसे क्यों रूठ गई थीं? बोलो, मैंने क्या अपराध किया था? इस तरह कोइ अपने प्रेमी से आंखें फेर लेता है !

वह फूट-फूटकर रोने लगता है।

जेनी **(घबराकर)** बाबूजी ! होश में आइए। यह आपकी क्या दशा है !

आदमियों को पुकारती है।

पटाक्षेप

छटा दृश्य

योगराज का बंगला। जेनी और योगराज बैठे बातें कर रहे हैं।

जेनी : आई थी दो दिन के लिए और रह गई तीन महीने ! अम्मां मुझे रोज कोसती होंगी। मैंने कितनी ही बार लिखा कि यहीं आ जाओ, पर आती ही नहीं। मैं सोचती हूं, दो-चार दिन के लिए घर हो आऊं।

योगराज : अजीब स्वभाव है उनका। रुपये भी वापस कर देती हैं, घर से आती भी नहीं। आखिर चाहती क्या हैं?

जेनी : बस यही कि मैं शादी कर लूं और उनके पास रहूं। शायद उन्हें यह खौफ भी हो, कि कहीं तुम मुझे लेकर भाग न जाओ।

योगराज **(हंसकर)** तुम जाओगी, तो फिर लौटकर न आने पाओगी। मेरी फिल्म अधूरी रह जायगी। जब तक ड्रामा पूरा न हो जाय, मैं तुम्हें एक दिन के लिए भी नहीं छोड़ सकता। और अब तुमसे क्यों छिपाऊं जेनी ! छिपाना व्यर्थ है। शायद तुमने पहले ही भांप लिया है। अब मैं तुम्हारे बगैर जिंदा नहीं रह सकता। मैंने तुममें अपनी उमा को फिर से पाया ! अगर उस वक्त तुम न आ जातीं तो मालूम नहीं मेरी क्या हालत होती। शायद दीवाना हो जाता, या कहीं डूब मरा होता। तुमने आकर मेरे तड़पते हुए हृदय पर मरहम रखा और मुझे जिला लिया।

जेनी इसीलिए अब मेरा यहां से जाना जरूरी है। मैं जाना नहीं चाहती। शायद इतना तुम भी समझ गए होंगे, क्यों नहीं जाना चाहती। लेकिन इसका नतीजा क्या है? खुद रो-रोकर मरूं और तुम्हें भी हैरान करूं। मैं तो रोने की आदी हूं। लेकिन तुम्हारे रास्ते का कांटा क्यों बनूं? तुम्हारा जी थोड़े दिनों में बदल जायगा। जीवन के आमोद-प्रमोद तुम्हें फिर अपनी ओर खींच लेंगे और जीवन की अभिलाषाएं फिर जाग उठेंगी। तुम इतने उदार, इतने सज्जन, इतने उन्नतात्मा हो कि जिस किसी से भी तुम्हारा सम्पर्क हो जाएगा, उसमें तुम अपना आदर्श आरोपित कर दोगे। जब मुझ जैसी औरत में तुमने गुण देख लिए, तो मुझे मालूम हो गया कि तुम अपना स्वर्ग आप बना सकते हो। मिट्टी को भी सोना बनाने का मंत्र तुम्हें आता है। मैं कभी किसी से प्रेम कर सकूंगी, इसकी मैंने कल्पना तक न की थी। प्रेम मेरे लिए विनोद और परिहास की वस्तु थी। तुमने मेरे हृदय में प्रेम की ज्योति जलाई और अब उस पिछले जीवन की याद करती हूं, तो मालूम होता है कितना नीरस, कितना अस्वाभाविक था, लेकिन इसका कोई इलाज नहीं। विधि हमारे और तुम्हारे बीच में खड़ी है और....!

योगराज क्या उस विधि पर हम विजय नहीं पा सकते जेनी?

जेनी कैसे?

योगराज हमारी शादी नहीं हो सकती?

जेनी धर्म के बंधन का क्या करोगे !

योगराज मैं धर्म के बंधन को तोड़ दूंगा?

जेनी **(हाथ से मना करके)** नहीं-नहीं, मैं तुम्हें समाज में अछूत

नहीं बनाना चाहती। तुम्हारा समाज से निकाल दिया जाना, मेरे लिए असह्य है। मैं तुम्हें इतने घोर धर्म-संकट में नहीं डाल सकती। मेरे प्रति तुम्हारा जो सद्‌भाव है, उस पर इतना भारी बोझ लादना कि कुछ दिनों में वह दब जाय, न मेरे लिए अच्छा है, न तुम्हारे लिए मैं मानती हूं, तुम मेरी खातिर से वह अपमान और उपहास बर्दाश्त करोगे ! लेकिन मैं इतनी स्वार्थिन नहीं हूं।

योगराज : मैं समाज और उसके बंधनों की परवा नहीं करता, जेनी ! अगर मैं कोई ऐसा काम करूं, जिससे समाज का अहित होता हो, तो बेशक समाज मेरा बहिष्कार कर सकता है, लेकिन मैं अपने व्यक्तिगत अधिकार को समाज के भय से नहीं छोड़ना चाहता।

जेनी : **(सोचकर)** नहीं, ऐसे मामलों में तर्क से काम नहीं चल सकता। मुझे जाने दो। मैं जानती हूं, तुमसे अलग रहकर संसार मेरे लिए सूना है, लेकिन मुझे इस विचार से संतोष होता रहेगा कि मैंने संसार के निर्दय आघातों से तुम्हारी रक्षा की।

योगराज : यह संतोष बहुत थोड़े दिन रहेगा, जेनी ! अगर तुम्हारा खयाल है कि तुम्हारे जाने के बाद मैं यह सब कुछ भूल जाऊंगा और फिर किसी रूपमती रमणी से विवाह करके आनंद से रहूंगा, तो वह गलत है। तुमने सोचा है, मैं अपना स्वर्ग आप बना सकता हूं। तुमसे मुझे जो प्रेम है, उसे तुम मेरी इस शक्ति का प्रमाण समझ रही हो। वास्तव में तुम अपना मूल्य बहुत कम समझ रही हो। मैंने तुम में जो कुछ पाया, जो कुछ देखा, वह फिर कहीं और देख सकूंगा, यह असंभव है। इसका प्रमाण शायद तुम्हें जल्द मिल जाय। निःस्वार्थ प्रेम ऐसी सस्ती चीज नहीं है जो बाजार में मिलती हो।

दोनों कुछ देर तक सिर झुकाए विचारों में डूबे बैठे रहते हैं।

योगराज : अगर यही समाज का भय है, तो क्यों न हम किसी दूसरी जगह चलें, जहां कोई हमें जानता ही न हो?

जेनी : **(मुस्कराकर)** किसान की खेती उसकी आंखों के सामने चरी जाय, क्या तभी उसे दुःख होगा? बिना कोई अपराध किए

चोरों की तरह रहना बहुत सुखी जीवन नहीं हो सकता। हम जिनसे आदर और सम्मान चाहते हैं, उन्हीं से निंदा पाकर दुखी होते हैं। और लोग क्या कहते हैं, इसकी हमें परवा नहीं होती? मामा तो जहर ही खा लेंगी और शायद तुम्हारे घर वाले भी प्रसन्न न होंगे।

योगराज : तुम तो किसी बात पर राजी नहीं हो जेनी !

जेनी : जिन हालातों में ईश्वर ने हम दोनों को पैदा किया है, उसका एक ही इलाज है कि हम दोनों एक-दूसरे से अलग हो जायं। मैं तुम्हारे लिए सब कुछ झेलने को तैयार हूं, लेकिन तुम्हें उस संकट में नहीं डाल सकती। तुम्हारे ऊपर यह आक्षेप मैं नहीं सुन सकती कि औरत के पीछे ईसाई हो गया और न शायद तुम मेरे ऊपर यह आक्षेप सुनना पसंद करोगे कि दौलत के पीछे एक आदमी के साथ चली गई। मैं आज-कल की प्रथानुसार शुद्ध होकर तुम्हें उस आक्षेप से बचा सकती हूं, लेकिन शुद्ध को मैं बिल्कुल ढोंग समझती हूं। मैं अपने स्वभाव से, अपने संस्कारों से, जो कुछ हूं, वही रहूंगी। हवन कर लेने या दो-चार मंत्र पढ़ लेने से मेरे संस्कार नहीं बदल सकते। ईसाई-धर्म में कम-से-कम एक तत्त्व अब भी है, और वह सेवा है। हिन्दू-धर्म में तो वह चीज भी नहीं। यहां तो केवल रूढ़ियां हैं, केवल पुरानी लकीरों को पीटना है। इसके लिए मेरी आत्मा तैयार नहीं। मुझे हंसकर विदा कर दो ! मगर देखना यह विच्छेद हमारे आत्मिक ऐक्य को शिथिल न कर दे। मुझसे नाराज न होना, मेरी तरफ से आंखें न फेरना। जेनी तुम्हारी है, और तुम्हारी रहेगी, संसार की आंखों में नहीं—ईश्वर की आंखों में, जो संसार की सृष्टि करता है।

योगराज : **(कम्पित स्वर में)** तो यह तुम्हारा अंतिम फैसला है, जेनी?

जेनी : हां प्यारे, यही मेरा अंतिम फैसला है। तुम थोड़े दिनों में मुझे भूल जाओगे। ईश्वर से मेरी यही दुआ होगी कि तुम मुझे जल्द-से-जल्द भूल जाओ ! लेकिन भूलकर भी कभी-कभी याद कर लिया करना। **(रोकर)** ये दिन कितनी जल्द गुजर जाएंगे, यह मैंने न सोचा था ! लेकिन जीवन के लिए जिस प्रेमाधार की जरूरत है वह तुमने मुझे दे दिया और वह मेरी उम्र भर के लिए काफी है। विवाह मेरी दृष्टि में आत्मिक संबंध है।

उसे रस्म के बंधनों से जकड़ना मैं अनावश्यक ही नहीं, पाप समझती हूं। दिल का मिलना ही विवाह है। रस्म के बंधन से स्त्री-पुरुष को बांध देना तो वैसा ही है, जैसे दो पशु एक रस्सी में जोत दिए गए हों। जिस बंधन का आधार समाज या धर्म का भय है, वह कभी सुखकर नहीं हो सकता। सुख का मूल स्वच्छंदता है, बंधन नहीं। प्रेम भी जल-प्रवाह की भांति मुक्त रहना चाहता है। अवरोध से उसमें कीट पैदा हो जाते हैं, दुर्गंध आने लगती है। मेरा तो विचार है कि प्रेम बंधनों में पड़कर उस प्रकार निष्प्राण हो जाता है जैसे कोई पौधा प्रकाश न पाकर निर्जीव हो जाता है। मैं स्वेच्छा से यहां रात भर बैठी रह सकती हूं, लेकिन कोई यह द्वार बंद कर दे तो मैं इसी क्षण यहां से निकल भागने के लिए विकल हो जाऊंगी।

योगराज : मैं तो इसके लिए तैयार हूं, जेनी !

जेनी : लेकिन मैं तो तुम्हें कांटों में नहीं उलझाना चाहती। समाज में तुम्हारा जो स्थान है, उसकी रक्षा करना भी मेरे प्रेम का अंग हो गया है। यह मेरे जीवन का नया अनुभव है। मुझे विश्वास है तुम अपने ऊपर इस निंदा और अपमान का कोई असर न होने दोगे ! लेकिन मनुष्य तो प्रकृति के नियमों में जकड़ा हुआ है। उससे तुम कैसे बच सकते हो। इस ग्लानि और संकट के वातावरण में तुम बहुत दिन अपने को न संभाल सकोगे। मैं तुम्हारे ऊपर संदेह नहीं कर रही हूं, लेकिन टॉल्स्टॉय की अन्नाकारेनिना का अंत मेरी आंखों के सामने फिरा करता है। मैं उसे भूलना चाहती हूं पर असफल होती हूं।

योगराज : **(निराश होकर)** तुम्हारी जैसी इच्छा हो जेनी ! मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता। जाओ ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे। कभी-कभी मेरी खोज-खबर लेती रहना—! आज मुझे मालूम हुआ कि उमा मर गई और अब फिर नहीं आ सकती !

रोने लगता है। फिर अपने को संभालकर।

यह सदमा शायद मैं बर्दाश्त न कर सकूं, जेनी, लेकिन जाओ जहां रहो सुखी रहो।

जेनी : अपनी शादी में मुझे जरूर बुलाना।

योगराज : जल्द ही होगी, जेनी ! सुनकर तुम खुद आओगी।

जेनी : हां, मैं खुद आऊंगी, कम-से-कम इत्तला तो देना।

आभूषणों की संदूकची उठाकर।

और यह आभूषण उस सौभाग्यवती को मेरी ओर से भेंट कर देना।

योगराज : **(संदूकची लेकर)** धन्यवाद !

उठाकर सिर झुकाए आहिस्ता कमरे के बाहर चला जाता है। जेनी एक क्षण तक उसे देखती रहती है, फिर आंखों में आंसू भरे अपना सामान बंधवाने लगती है।

पटाक्षेप

सातवां दृश्य

जेनी का मकान। मिसेज गार्डन मुर्गियों को दाना चुगा रही है।

विलियम : मिस गार्डन का कोई पत्र आया था?

मिसेज गार्डन : हां, वह खुद दो-एक दिन में आ रही है।

विलियम : मैं तो उसकी ओर से अब निराश हो गया हूं, मिसेज़ गार्डन ! मैं जो कुछ हूं, वही रहूंगा। मैंने सब कुछ करके देख लिया। वह मेरे वश की नहीं। फिर अब वह खुद एक हजार महीना कमाती है। मेरे तीन सौ उसकी नजरों में क्या जंचेंगे। अब तो वह मुझसे विवाह भी करना चाहे तो न करूं।

मिसेज गार्डन : सच ! आखिर क्यों उससे नाराज हो गए? उसके एक हजार के साथ तुम्हारे तीन सौ मिलाकर तेरह सौ हो जाएंगे। इतना हिसाब भी नहीं जानते?

विलियम : लेकिन घर में मेरा पोजीशन क्या होगा, इसका भी आप खयाल करती हैं? मैं अपनी बीवी की नजरों में गिरना नहीं चाहता। आखिर वह किसलिए मेरा दबाव मानेगी, मेरा लिहाज करेगी। सब लोग यही कहेंगे कि अपनी बीबी की रोटियां खाता है, बीबी की कमाई पर शान जमाता है।

मिसेज गार्डन : **(मुस्कराकर)** तो इसमें क्या बुराई है? औरत अपने मर्द की कमाई खाती है, उस पर शान जमाती है, तब तो उसे जरा भी शर्म नहीं आती।

विलियम : अब मैं आपको कैसे समझाऊं। मर्द मर्द है, औरत औरत है।

मिसेज गार्डन : अच्छा? आज मुझे यह नई बात मालूम हुई। मैं तो समझती थी, मर्द औरत है, औरत मर्द है।

विलियम : आप तो मजाक करती हैं। मेरे दिल में जो भाव है उसे कहने के लिए मेरे पास शब्द नहीं। मर्द चाहता है कि स्त्री उसका मुंह ताके, जिस चीज की जरूरत हो उससे कहे, उसका अदब और लिहाज करे। इसीलिए वह रात-दिन जी तोड़कर परिश्रम करता है, दगा-फरेब, छल-कपट सब कुछ केवल इसीलिए करता है कि स्त्री की निगाहों में उसकी साख हो। उसकी सबसे बड़ी अभिलाषा यही होती है कि स्त्री ज्यादा-से-ज्यादा खातिर कर सके, ज्यादा-से-ज्यादा आराम दे सके। वह स्त्री ही के लिए जीता है। और स्त्री ही के लिए मरता है। वह उस पर न्यौछावर हो जाना चाहता है। लेकिन जब स्त्री खुद पुरुष से ज्यादा कमाती हो तो उसकी नजर में पुरुष का महत्त्व होगा?

मिसेज गार्डन : अच्छा, तुम्हारा यह मतलब है ! लेकिन मैंने तो देखा है कि अक्सर पुरुषों को मालदार स्त्रियों की तलाश रहती है।

विलियम : ऐसे पुरुष बेहया हैं, मिसेज गार्डन ! मैं उन्हें निर्लज्ज समझता हूं। वह हमेशा स्त्री के मोहताज रहते हैं, उसकी खुशामद करते हैं, उसके इशारे पर चलते हैं। स्त्री उन पर शासन करती है, उनके कान पकड़कर जिस तरह चाहती है, उठाती और बैठाती है। मैं तो यह जिल्लत नहीं सह सकता।

मिसेज गार्डन : मैंने तो ऐसे मर्द भी देखे हैं, जो स्त्री के धन पर मजे उड़ाते हैं और उस पर रोब भी जमाते हैं।

विलियम : उन लोगों को मैं भाग्यवान् समझता हूं। मैं अपना शुमार उन भाग्यवानों में नहीं कर सकता। उनमें कुल-प्रतिष्ठा होगी, रूप-आर्कषण होगा, विद्या-गौरव होगा। मुझमें तो इनमें से एक गुण भी नहीं। मैं तो सीधा-सादा गरीब मजदूर हूं। मेरी हिमाकत थी कि मैंने जेनी का रोग पाला। वास्तव में मैं उसके योग्य नहीं हूं।

मिसेज गार्डन : इसीलिए कि वह तुमसे ज्यादा कमाती है?

विलियम : हां प्यारी मिसेज गार्डन ! मैंने अपनी गलती मालूम कर ली। इस बीच में मैंने एक बात और मालूम कर ली। देखिए, मेरी हंसी न

उड़ाइएगा। मुझे मालूम हुआ है, कि जीवन में मुझे ऐसी सहचरी की जरूरत है, जो मुझसे ज्यादा अनुभव, ज्यादा बुद्धि, ज्यादा धैर्य रखती हो, जो अपनी सलाहों से मेरी सहायता करती रहे, जिस पर मैं विश्वास कर सकूं ! मैं तुममें ये सभी गुण पाता हूं। **(जमीन पर घुटने टेकता है)** मैं आपसे प्रोपोज करता हूं, मिसेज गार्डन ! देखिए खुदा के लिए इंकार न कीजिएगा। मुझे अब ज्ञात हुआ कि जीवन के आनंद के लिये रूप और यौवन की इतनी जरूरत नहीं है, जितनी अनुभव और सेवाभाव की। रूपवती युवती मुझमें हजारों त्रुटियां पाएगी। वह अपने साथ संदेह और ईर्ष्या लाती है। मुझे उसकी जासूसी करनी पड़ेगी। वह किससे बोलती है, किससे हंसती है, कहां जाती है, मुझे उसकी एक-एक गति पर निगाह रखनी पड़ेगी। यह झंझट मेरे मान का नहीं। आपके ऊपर मैं पूर्ण विश्वास कर सकता हूं। आप मुझसे कपट नहीं कर सकतीं।

मिसेज गार्डन : **(हर्षोन्मत्त होकर)** भला सोचो तो विलियम, दुनिया क्या कहेगी, कि इस औरत को बुढ़ापे में यह हवस पैदा हुई है। यही करना था तो आज से तीन साल पहले क्यों न किया। तब तो मैं इतनी बूढ़ी न थी। तब शायद तुम्हें कुछ अधिक संतुष्ट कर सकती।

विलियम : इसका तो मुझे भी खेद है।

मिसेज गार्डन : अच्छा बतलाओ, मुझ पर रोब तो न जमाओगे?

विलियम : नहीं, खुदा की कसम ! मैं आपके हुक्म के बगैर एक कदम भी न चलूंगा।

मिसेज गार्डन विलियम को छाती से लगाती है।

मिसेज गार्डन : मैं तुम्हारी ओर से बहुत आशंकित थी विलियम, कि कहीं तुम किसी मायाविनी के जाल में फंस न जाओ। तुम इतने सरल, इतने निष्कपट, इतने भोले-भोले हो कि मुझे तुम्हारी ओर से बराबर यही खटका लगा रहता था। इसीलिए मैं तुम्हें जेनी से मिलाती रहती थी। जेनी में और चाहे कितनी बुराइयां हों, चंचलता नहीं है। तुम्हें याद है प्यारे विलियम, मेरी तुमसे पहली मुलाकात पार्क में हुई थी। मैं गिरजे से लौट रही थी। उसी दिन तुमने मेरे हृदय में स्थान पा लिया था। मेरे दिल ने

उसी दिन कहा था कि वह चिड़िया एक दिन तेरे पिंजरे में आएगी। आज वह सौभाग्य मुझे प्राप्त हो गया। चलो हम दोनों गिरजा में खुदा का शुक्र करें।

पटाक्षेप

आठवां दृश्य

जेनी का विशाल भवन। जेनी एक सायेदार वृक्ष के नीचे एक चेयर पर विचारमग्न बैठी है।

जेनी : **(स्वगत)** मन को विद्वानों ने हमेशा चंचल कहा है। लेकिन मैं देखती हूं कि इसके ज्यादा स्थिर वस्तु संसार में न होगी। कितना प्रयत्न किया कि रज्जन को भूल जाऊं; लेकिन जितना ही उससे दूर भागती हूं उतना फंदा और कठोर होता जाता है। महीनों से प्यानो पर नहीं बैठी। दिल जैसे मर गया है। वही सूरत आंखों में फिरती है, वही बातें कानों में गूंजती हैं। यहीं रज्जन से रूपवान पुरुष पड़े हुए हैं, उनसे कहीं विद्वान्, पर किसी से बोलने की इच्छा नहीं होती। मैं जानती हूं मैं जरा भी हिम्मत दिलाऊं तो वे मुझ पर प्राण देने लगेंगे। कितने आसक्त, लुब्ध नेत्रों से मेरी ओर देखते हैं। किसी से दो एक बात कर लेती हूं तो कितने निहाल हो जाते हैं; पर उस देवता के सामने सब ये खिलौने हैं। खिलौने में रंग है, रूप है कला है, उस देवता से कहीं ज्यादा; पर कुछ बात है जो देवता में श्रद्धा और प्रेम उत्पन्न करती है; खिलौनों के प्रति केवल विनोद का भाव। वह क्या बात है? प्यारे रज्जन; तुमने मुझ पर क्या जादू कर दिया?

मिसेज विलियम आती है।

मि० विलियम : तू यहां कब तक बैठी रहेगी, जेनी ! अब तो शबनम पड़ने लगी?

जेनी : कमरे में तो मेरा दम घुटता है मामा !

मि० विलियम : मैंने बहुत अच्छा पुडिंग बनाया है। चल थोड़ा-सा खा ले। तूने

दिन-भर कुछ नहीं लिया। जरा आईने में अपनी सूरत देख। जैसे छः महीने की रोगिनी हो।

जेनी : मेरी अभी कुछ खाने की इच्छा नहीं है, मामा ! क्षमा करो। इधर कई दिन से रज्जन का कोई खत नहीं आया। मेरा दिल धड़क रहा है। कहीं दुश्मनों की तबियत खराब न हो।

मि० विलियम : जब तेरी तबियत का यह हाल है तो क्यों रज्जन से विवाह नहीं कर लेती? वह बेचारा हर तरह राजी है पर तुझे न जाने क्या खब्त हो गया है। खुद भी मरती है और उसे बेचारे को भी रुलाती है। जब वह धर्म की ओर संबंधियों की परवाह नहीं करता तो उससे क्यों नहीं कहतीं—प्रभु मसीह पर ईमान लाए। प्रेम का उद्देश्य जीवन का सुख है, या सारी उम्र रोते रहना?

जेनी : यही तो मैं भी सोचती हूं, मामा ! क्या हरज था अगर मैं अपनी शुद्धि करा लेती। मुझमें तो कोई तब्दीली हो न जाती, हां उनके समाज को संतोष हो जाता। अगर मैं जानती, उनका हृदय इतना कोमल है तो उन्हें छोड़कर न आती। मुझे तो अब अपनी जिद्द पर पछतावा हो रहा है। धर्म और सिद्धांत आदमी के लिए हैं। आदमी उनके लिए नहीं है। मामा, मैं तुमसे अपनी विकलता क्या कहूं। ऐसा मन होता है कि पर होते तो इसी वक्त उड़कर पहुंच जाती और कहती—डार्लिंग, मुझे क्षमा करो। यह तीन महीने मैंने जिस तरह काटे हैं, वह तुमने देखा है, पर मेरे दिल पर जो कुछ गुजरी है वह कौन जान सकता है? एक क्षण के लिए भी उनकी सूरत आंखों से नहीं उतरी। ऐसे प्रेम पर अपना सर्वस्व अर्पण कर देने वाले प्राणी भी संसार में हैं, वह मैंने उन्हीं को देखा। मुझे स्वर्ग की विभूति मिल रही थी, मामा ! मैंने समाज के भय से उसे ठुकरा दिया। मैंने समझा था मामा, मेरे चले जाने के बाद भोग-विलास में उनका जी बहल जाएगा, फिर किसी युवती से विवाह करके इनका जीवन सुखी हो जाएगा। क्या जानती थी वह मेरे वियोग में अपने को घुला डालेंगे। कल अगर उनका पत्र न आएगा तो मैं चली जाऊंगी मामा! तब मुझे तुम्हारी बड़ी चिंता थी, मामा? मैं डरती थी कहीं मैं उनसे विवाह कर लूं तो तुम जहर न खा लो। अब मैं तुम्हारी ओर से भी निश्चिंत हूं।

मि० विलियम : क्या तू समझती है विलियम से शादी कर लेने से मेरे दिल में तेरी मुहब्बत नहीं रही?

जेनी : यह बात नहीं है, मामा ! कम-से-कम तुम्हारे साथ एक आदमी तो है, जो तुम्हारी रक्षा करता रहेगा।

मि० विलियम : विलियम मेरे पीछे पड़ गया, प्राण दिए देता था; नहीं, इस उम्र में मुझे शौहर की हवस नहीं थी।

जेनी : तो मैं तुम्हें कुछ कहती थोड़े ही हूं, मामा ! विलियम में अगर दो-एक बुराइयां हैं तो हजारों खूबियां भी है। मैं तो ज्यों-ज्यों उनका परिचय पाती हूं; उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती है। वह सचमुच ही तुम्हारे योग्य थे, मामा ! **(तार का चपरासी तार लाता है। जेनी का रंग उड़ जाता है। कांपते हुए हाथों से लेती है और पढ़ते ही मूर्छित होकर गिर पड़ती है।)**

Yograj breathed his last with Jenny's name on his lips to the last moment.

मि० विलियम : या खुदा, या मेरे परवरदिगार, यह क्या गजब हुआ।

जेनी के हृदयस्थल पर हाथ रखती है। फिर बदहवास दौड़ी अंदर जाती है और गुलाबजल लाकर जेनी के मुख पर छिड़कती है। समीप कोई पंखा न होने के कारण उस समाचार-पत्र से हवा करती है जो जेनी ने पढ़कर कुर्सी के नीचे रख दिया था। बीच-बीच-में खुदा का नाम लेती जाती है और इंतजार भरी आंखों से फाटक की ओर देखती है कि विलियम आता होगा। एक मिनिट के बाद जेनी सचेत हो जाती है।

जेनी : मैं बिल्कुल अच्छी हूं मामा, तुम जरा न घबराओ। न जाने कैसा जी हो गया था, जैसे दिल बैठ गया हो। अब बिल्कुल अच्छी हूं। इसका भय तो मुझे पहले से था। जिस वक्त मैं वहां से चली उसी वक्त उनकी हालत देखकर मुझे वह शंका हुई थी; लेकिन मैंने सोचा मर्द हैं दस-पांच दिन में इनका जी बहाल हो जायगा। क्या जानती थी यह दिन देखना पड़ेगा।

एक क्षण में उसकी आंखें फिर चंचल हो जाती हैं। हिस्टीरिया की-सी दशा हो जाती है।

कौन कहता है वह मर गए? बिल्कुल झूठ है। वह मेरे सामने हैं,

मेरी आंखों में हैं, मेरे हृदय में हैं। हां, उसी तरह खड़े मुझे प्रेमातुर नेत्रों से देख रहे हैं। जरा उनकी नटखटी तो देखो मामा, परदे की आड़ में छिप-छिपकर मुझे धोखा देते हैं। मुंह धो रखिए, मैं ऐसे धोखों में नहीं आने की।

यकायक उठकर कमरे की तरफ चलती है। उसकी मां भी पीछे-पीछे आती है। जेनी अपनी मेज पर ये योगराज का चित्र उठाकर उसे हृदय से लगाती है और उसका चुम्बन लेती है!

मि० विलियम : जेनी खुदा के लिए दिल को समझाओ।

जेनी : दिल को समझाकर क्या होगा, मामा। अब वह किसके काम का है। फिर जब वह मेरे पास भी हो ! वह तो रज्जन के साथ गया; नहीं मैं इस तरह बैठी रहती? रज्जन मर जाते और मैं इस तरह बैठी रहती? ऐं ! मैं इस तरह बैठी रहती ! आंखों से खून निकल पड़ता, मेरी लाश जमीन पर पड़ी होती। लेकिन मैं यहीं बैठी हूं जैसे मुझे कुछ हुआ ही नहीं है।

वह तस्वीर को मेज पर रख देती है और योगराज के पत्रों को निकालती है जो एक मखमली केस में रखे हुए हैं।

मेरी अच्छी मामा, जरा बैठ जाओ, मैं तुम्हें उनके पत्र सुनाऊं- 'मेरी बेवफा जेनी' ! मैं उस वक्त उनसे रूठ गई थी कि मुझे बेवफा क्यों कहा; लेकिन अब मालूम हुआ उन्होंने मुझे खूब पहचान लिया था। बेवफा तो मैं हूं ही; नहीं उन्हें वहां छोड़कर चली आती। मैं बेवफा हूं, बेदर्द हूं, मायाविनी हूं ! हाय ! ये गालियां कितनी प्यारी लगती हैं। तब मैंने उन्हें डांट बताई थी ! इस आक्षेप को स्वीकार न करती थी। आज रज्जन के ये शब्द कितने मीठे, कितने मर्मस्पर्शी हैं। अब मुझे कौन बेवफा कहेगा? कौन बेदर्द कहेगा ! कौन मायाविनी कहेगा? अब किसके साथ बेवफाई करूंगी? मामा, बताओ कैसे दिल को समझाऊं? कैसे इस अभागे को समझाऊं?

सिर के बाल नोचती है। मिसेज विलियम उसे छाती से लगाती हैं।

मि० विलियम : बेटा, जेनी, मेरा कलेजा!

जेनी : मामा मैं भूली जाती हूं; उन्हें छोड़कर यहां क्या करने आई थी। बिल्कुल याद नहीं आता। बताओ मैं यहां क्या करने आई थी? मैंने क्यों उन्हें कत्ल किया? हां, याद आ गया! उनके कुल-मर्यादा और धर्म की रक्षा करने के लिए! अपने धर्म की रक्षा करने के लिए! सोचो इस अनर्थ को? जिसके चरणों पर अपने प्राणों को अर्पित कर देना मेरे जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा थी, उसे मैंने इन्हीं हाथों से कत्ल कर दिया। मैंने नहीं, मेरे धर्म ने कत्ल कर दिया। धर्म ने भी नहीं, मेरी अभिलाषा ने कत्ल किया। लोगों ने यह तरह-तरह के मत बनाकर संसार में कितना विष बोया है, कितनी आग लगाई है, कितना द्वेष फैलाया है। क्या धर्म इसीलिए आया है कि आदमियों की अलग-अलग टोलियां बनाकर उनमें भेद-भाव भर दे? ऐसा धर्म लुटेरों का हो सकता है, स्वार्थियों का हो सकता है, मूर्खों का हो सकता है, ईश्वर का नहीं हो सकता।

मि० विलियम : बेटा, धर्म खुदा ने न भेजा होता, तो दुनिया अब तक तबाह हो गई होती। आदमी-आदमी को खा गया होता। बाइबिल तो खुदा का कलामे पाक है।

जेनी : खुदा के तो सभी कलामे पाक हैं; लेकिन उन पाककलामों ने संसार का क्या उपकार किया, इंसान की इंसानियत को कितना सुधार? आज दौलत जिस तरह आदमियों का खून बहा रही है, उसी तरह, उससे ज्यादा बेदर्दी से, धर्म ने आदमियों का खून बहाया है। दौलत कम-से-कम इतनी निर्दय, कठोर नहीं होती! लेकिन दौलत वही कर रही है जिसकी उससे आशा थी, धर्म तो प्रेम का संदेश लेकर आता है और काटता है—आदमियों का गला! वह मनुष्य के बीच ऐसी दीवार खड़ी कर देता है जिसे पार नहीं किया जा सकता। आखिर सम्पूर्ण जगत की एक ही आत्मा तो है। धर्म का यह भेद क्या आत्मा की एकता को मिटा सकता है? वह खुदा जो एक-एक अणु में मौजूद है, उसे हम गिरजे और मसजिद और मंदिर में बंद कर देते हैं और एक-दूसरे को काफिर और म्लेच्छ कहते हैं। पूछो, उन विश्वात्मा को तुम्हारे इन झगड़ों से क्या मतलब? उसे इसकी क्या परवाह कि तुम गिरजे में जाते हो या मसजिद में। वह तो केवल इतना

देखती है, कि तुम प्रेम से रहते हो या नहीं ! उसके मुक्त प्रवाह में जो कोई भी मेंड़ बांधेगा, वह प्रकृति के नियम को तोड़ेगा और उसे इसकी सजा जरूर मिलेगी। हम आए दिन वह सजा पा रहे हैं, फिर भी हमारी आंखें नहीं खुलतीं, आदमी की शक्ति है कि उस जगदात्मा को टुकड़ों में बांट सके? उस व्यापक चेतना को ! कभी नहीं। यह तो कोई धर्म नहीं।

मि० विलियम : खुदा ने तो केवल हमारे नबी को भेजा था।

जेनी : खुदा ने किसी नबी को नहीं भेजा, मामा। हमारे जितने धर्म हैं सभी बिगड़े हुए समाज को सुधारने की तदबीरें हैं, लेकिन धर्मों पर खुदा की कुछ ऐसी मार है, कि वह आते तो हैं सुधार के लिए; लेकिन उल्टे और बिगड़कर जाते हैं। यह वही पुराने जमाने की गिरोहबंदी है, जब गुफाओं में बसने वाला आदमी हिंसक पशुओं या अपनी ही जाति की दूसरी टोलियों में अपनी रक्षा करने के लिए गिरोह बनाकर रहता था। नबी आए, वली आए, अवतार हुए, खुदा खुद आया। बार-बार आया। नतीजा क्या हुआ? लड़ाई और कत्ल ! रंग का भेद, नस्ल का भेद, इन सब भेदों को मिटाने का ठेका लिया था धर्म ने ! लेकिन वह स्वयं भेद का कारण बन गया—ऐसे भेद का—जो सब भेदों से कठोर है। मैं तुम्हारी लड़की हूं, मुझे तुमने अपने प्राणों का रक्त पिलाकर पाला है। मैं जानती हूं तुम्हें संसार में मुझसे न्यारी कोई वस्तु नहीं है; लेकिन आज मैं गिरजे में न जाकर मस्जिद में प्रार्थना करने जाऊं तो तुम मेरी सूरत से नफरत करोगी। संभव है, अपने हाथों से मेरी हत्या कर डालो। मैं भी वहां हूं, तुम भी वही हो, फिर यह द्वेष कहां से आ गया। मैं कहती हूं यह धर्म का प्रसाद है जिसने हमारे मन को संकीर्ण बना डाला है।

मि० विलियम : तू मुझे इतनी धर्मान्ध समझती है, बेटी ! मुझे अफसोस जरूर होगा, मैं खुदा से तेरी मुक्ति के लिए दुआ करूंगी, लेकिन तेरा अहित नहीं कर सकती, कभी नहीं !

जेनी : मामा, खुदा तुझे जन्नत में जगह दे, तुमने मेरे हृदय का बोझ उतार दिया। अब मुझे कोई शंका नहीं, कोई बाधा नहीं। आज मैं इन सारे ढकोसलों को, इन सारे बनावटी बंधनों को, 'प्रेम की वेदी' पर अर्पण करती हूं। यही ईश्वर का धर्म है। धन का धर्म, विद्या का धर्म, राष्ट्र का धर्म संघर्ष हो सकता है। खुदा का धर्म

प्रेम है और इसी धर्म को स्वीकार करती हूं। शेष धोखा है। आप फौरन मोटर मंगवाइए। गाड़ी तो दो बजे रात को जाएगी। मैं उसका इंतजार नहीं कर सकती। मोटर से जाऊंगी। सबेरे तक पहुंच जाऊंगी। वहीं प्रभात के शुभ-मुहूर्त में रज्जन से मेरा विवाह होगा, बड़ी धूमधाम के साथ, हवन-कुण्ड की परिक्रमा करके, श्लोक और मंत्र पढ़कर। मेरे लिए आलटर और हवन-कुण्ड में कोई अंतर नहीं रहा। मुझे शक्ति दो ईश्वर ! कि आजीवन इस व्रत को निभा सकूं। परम पिता ! मुझे बल दो, धैर्य दो और बुद्धि दो।

